देशप्राण
स्वतंत्र हिन्दी दैनिक
रविवार
रांची, 21 अप्रैल, 2024

कुदरत से खिलवाड़ का नतीजा है दुबई संकट

संयुक्त अरब अमीरात और खाड़ी के कुछ अन्य देशों में अचानक आई भारी व असामान्य बारिश ने इंसान को तमाम सबक दिए हैं। जिन देशों को अपनी समृद्धि व संपन्नता का दंभ था, वहां आई मूसलाधार बारिश ने सारी आधुनिक व्यवस्थाएं ध्वस्त कर दीं। दुनिया का सबसे ज्यादा आधुनिक व चहल-पहल वाला दुबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट अराजकता का शिकार हो गया। सैकड़ों उड़ानें रद्द हो गईं। दुनिया के चोटी के हवाई अड्डों में शामिल जिस दुबई एयरपोर्ट में पिछले साल आठ करोड़ यात्रियों की आमद थी, एक मूसलाधार बारिश से उसकी सारी व्यवस्थाएं चौपट हो चुकी थीं। इस दौरान ओमान में 19 लोगों की मौत के अलावा अन्य देशों में भी लोगों के हताहत होने की आशंका है। बताते हैं कि अभी भी कई निचले इलाकों में बारिश का पानी भरा हुआ है। संयुक्त अरब अमीरात में पिछले 75 साल बाद रिकॉर्ड बारिश दर्ज की गई है। बाढ़ग्रस्त इलाकों में डूबे वाहन और बारह लेन वाले हाईवे पर लगा जाम बता रहा है कि कुदरत की माया के आगे मानव का विकास अभी भी बौना ही है। फिर मध्य पूर्व के रेगिस्तानी इलाकों में मूसलाधार बारिश का होना निश्चित ही अचरज की बात है। अचानक आई इस बारिश और बाढ़ को जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव कहा जा रहा है। लेकिन वहीं लोग आरोप लगा रहे हैं कि यह घटना विशुद्ध रूप से प्रकृति से मानवीय छेड़छाड़ का नतीजा है आलोचक इस असामान्य बारिश को क्लाउड सीडिंग का नतीजा बता रहे हैं। कृत्रिम तरीके से बारिश कराने की कोशिश को ही क्लाउड सीडिंग कहा जाता है, जिसमें बादल में बारिश के बीज बोने के लिये कृत्रिम तरीके से प्रयास किये जाते हैं। ऐसे कुछ प्रयास यूएई में किये जा रहे थे। एक अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्ट में बताया गया है कि रविवार व सोमवार को यूएई में क्लाउड सीडिंग की योजना बनायी गई थी और मंगलवार को भयावह बाढ़ के हालात पैदा हुए हैं। आशंका जतायी जा रही है कि क्या कृत्रिम बारिश के प्रयासों के चलते यह स्थिति पैदा हुई है? बहरहाल, आने वाले वक्त के अध्ययन हमें बताएंगे कि इस आपदा के आने में क्लाउड सीडिंग की कितनी भूमिका थी। वैसे दुनिया के तमाम देशों में संकट के समय क्लाउड सीडिंग कराने के मामले सामने आते रहते हैं। किन्हीं देशों में सामरिक तो कहीं कृषि उद्देश्यों के लिये कृत्रिम बारिश का सहारा लिया जाता है। लेकिन जलवायु परिवर्तन के चलते बदले हालात में यह संकट गहरा हो जाता है। उल्लेखनीय है कि कृत्रिम बारिश का सहारा तब लिया जाता है, जब हवा की नमी की कमी के चलते बारिश नहीं हो पाती। भारत में साठ के दशक में कृत्रिम बारिश का प्रयोग किया गया था।

हिंदू हारे क्यों और अब हिंदू उत्कर्ष के कारण क्या हैं ?

तरुण विजय

(लेखक पूर्व सांसद और वरिष्ठ पत्रकार हैं)

वर्तमान हिंदू उदय का काल सनातन हिन्दुओं की वीरता और उनके असीम धैर्य के साथ विश्व में दुर्लभ संघर्ष की अद्भुत निरंतरता बताता है तो उसके साथ ही स्मरण रखना होगा पिछले कई सौ वर्षों में हिन्दू द्वारा हिन्दू से विद्वेष, हिंदू की हिंदू से शत्रुता, असंगठन, शत्रु के साथ अपने स्वार्थ के लिए जा मिलना और सामूहिक शत्रु के विरुद्ध अपने ईर्ष्या भाव खत्म कर संगठित बल से उस शत्रु का हनन करने की भावना का ना होना जिसने हिंदुओं को विदेशी क्षुद्र शक्तियों का दास बनाया। हिन्दुओं ने आत्म मुग्धता के साथ केवल अपने बारे में महानता की बातें कीं लेकिन जो सावरकर और हेडगेवार को जानते हैं वे समझते हैं कि अपनी दुर्बलताओं की और ध्यान दिए बिना शक्ति अर्जन का पथ प्रशस्त करना संभव नहीं होता।

हिंदू पर्व केवल लोकाचार- रीति रिवाज और कर्मकांड के पालन द्वारा अपनी क्षुद्र मनोकामनाएं पूरी करवाने का पाखंड नहीं होना चाहिए। हिन्दू क्यों हारा? किन कारणों से आक्रमणकारी जीते? किन कारणों से हमारा संगठन जातियों, धन कुबेरों के स्वार्थों, धार्मिक कुरीतियों और रूढ़िवादिता के कारण छिन्न भिन्न होता रहा? और किन महापुरुषों ने हिन्दू संगठन का बीड़ा उठाया जिस कारण आज सर्वत्र एक हिंदू उत्कर्ष का भाव दिखने लगा है ? इन पर विचार किये बिना भारत के नवीन भाग्योदय पर विमर्श अधूरा ही कहा जायेगा। स्मरण रखिये महाशक्ति संपन्न, विष्णु के अवतार श्री राघव को भी रावण वध से पूर्व भगवती शक्ति का आवाहन कर आशीर्वाद लेना पड़ा था। हमारे अवतारी पुरुष और वीर पराक्रमी गुरु दुष्ट हन्ता, जनसंगठक, मयार्दा रक्षक, प्रजा वत्सल, अत्यंत सौम्य, अक्रोधी, शालीन, भद्र, सबकी सुनने वाले और विनम्र रहे हैं। हमारे महापुरुषों ने जीवन भर जन हित के लिए संघर्ष किया- उनको जीवन में कभी लौकिक सुख नहीं मिला -विलासिता और ऐश्वर्य से कोसों दूर रहे।

ये पांच सौ वर्ष कैसे बीते हमारे ? इन वर्षों में लाखों हिन्दुओं का वध हुआ, उनकी स्त्रियों का अपमान हुआ, बच्चे, नर -नारी गुलाम बनाकर काबुल और बगदाद के बाजारों में बेचे गए। हमारे मंदिरों का ध्वंस हुआ और उनका अपमान हुआ। हमारे पूर्वजों को डरा धमका कर, संहार के भय से इस्लाम में लाया गया। आज उन मतांतरित हिन्दुओं के वंशज ही आक्रमणकारी विदेशियों की भांति हिन्दू धर्म, एवं आस्था स्थलों के प्रति घृणा का भाव रखते हैं, क्यों ? पांच सौ वर्षों के संघर्ष की निरंतरता के बाद हिन्दुओं के असीम धैर्य के बावजूद उनके प्रति मतांतरित जिहाद-अनुयायियों की शत्रुता कम क्यों नहीं हुयी ? हिन्दू इन विषयों पर सोचना भी नहीं चाहता। स्मृति भ्रंश और विगत के बलिदानों का विस्मरण हमारी बड़ी कमजोरी है। मंदिरों की अपरमित आय उच्च जातियों द्वारा नियंत्रित रहती है। हिन्दुओं का कौन सा एक भी मंदिर है जो अपने ही रक्तबंधु दलितों के प्रति समता और सच्चे आत्मीयता का भाव जन जन में पैदा करने के लिए दो चढ़ावा खर्च करता होगा? अथवा देश के कोने कोने मं हिन्दुओं को धर्मान्तरित करने वाली शक्तियों के सामने हिन्दू रक्षक और समरसता के यथार्थ प्रहरी भेजने हेतु अपने करोड़ो रुपये के हिन्दू-धर्म-दान का कोई अंश खर्च करता होगा? इन हिन्दू मंदिरों के संचालक एवं धर्म कोष के अधिपति अपनी राजनीतिक अभीप्साओं की पूर्ति के लिए मंदिर कोष कभी सरकारी कार्यों हेतु, कभी आगंतुक राजनीतिक महानुभाव के सरकारी सहायता कोष हेतु, कभी सड़क पानी बिजली के लिए खर्च कर अपने लिए राजनीतिक पद और प्रतिष्ठा की संभावनाएं ढूंढते हैं। लेकिन अरुणाचल से लेकर अंडमान और लद्दाख तक जो संगठन हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए प्रयासरत हैं उनको कभी दो रुपये की सहायता नहीं देते।

हिंदू पर्व केवल लोकाचार- रीति रिवाज और कर्मकांड के पालन द्वारा अपनी क्षुद्र मनोकामनाएं पूरी करवाने का पाखंड नहीं होना चाहिए। हिन्दू क्यों हारा? किन कारणों से आक्रमणकारी जीते? किन कारणों से हमारा संगठन जातियों, धन कुबेरों के स्वार्थों, धार्मिक कुरीतियों और रूढ़िवादिता के कारण छिन्न भिन्न होता रहा? और किन महापुरुषों ने हिन्दू संगठन का बीड़ा उठाया जिस कारण आज सर्वत्र एक हिंदू उत्कर्ष का भाव दिखने लगा है ? इन पर विचार किये बिना भारत के नवीन भाग्योदय पर विमर्श अधूरा ही कहा जायेगा। स्मरण रखिये महाशक्ति संपन्न, विष्णु के अवतार श्री राघव को भी रावण वध से पूर्व भगवती शक्ति का आवाहन कर आशीर्वाद लेना पड़ा था। हमारे अवतारी पुरुष और वीर पराक्रमी गुरु दुष्ट हन्ता, जनसंगठक, मयार्दा रक्षक, प्रजा वत्सल, अत्यंत सौम्य, अक्रोधी, शालीन, भद्र, सबकी सुनने वाले और विनम्र रहे हैं। हमारे महापुरुषों ने जीवन भर जन हित के लिए संघर्ष किया- उनको जीवन में कभी लौकिक सुख नहीं मिला -विलासिता और ऐश्वर्य से कोसों दूर रहे।

यदि कृष्ण शक्ति, नीति और पराक्रम के योद्धा पुरुष थे जिनको सुदर्शन चक्र के प्रतापी रूप से जाना गया तो राम मयार्दा भक्षक रावण तथा उसके पुत्रों के वध के बाद उसकी स्वर्णमयी लंका भस्म कर- 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कहते हुये अयोध्या लौटे-और कृष्ण ने मथुरा वृंदावन से हजारों मील दूर गुजरात में देहोत्सर्ग किया। दोनों ही अवतारी पुरुष शक्ति और पराक्रम के अन्यतम उदाहरण हैं। अर्थात जहाँ आवश्यक हो वहां अरि हनन कर सज्जनों को अभय देना ही हिन्दू सनातन परंपरा का प्राचीनतम सन्देश रहा है। शक्ति का उपार्जन करना, स्वयं को शत्रु से अधिक बलशाली बनाना, पश्चाताप रहित शत्रु को कभी क्षमा नहीं करना, उसके प्रति कोई दया भाव नहीं दिखाना, सत्य और धर्म रक्षा के लिए प्रत्येक पग उठाने का साहस रखना ही सनातन नियम है।

वर्तमान सन्दर्भों में भारत के आराधकों का विजय पथ पर आरोहण एक नए युग के प्रवर्तन का प्रतीक है। एक ओर यदि हिंदू उत्कर्ष की पुनः प्राप्ति हमारे संघर्ष के अटूट सातत्य का स्वर्णिम अध्याय है तो यह भी सत्य है कि सनातन पथ पर सनातन का नाम लेने वालों ने ही अति दुर्गम कंटक भी बोये, हिन्दू निर्वीर्य दुर्बलताओं का अनुभव भी हुआ, शक्ति अर्जन और जन संगठन में कमियां रहीं। 'तुम विजयी हो गए तो क्या हुआ, पहले यह बताओ मुझको क्या मिला?' इस प्रकार के भाव लेकर सनातन ही सनातन की पराजय का कारण बना। यह इस प्रकार था मानों लंका विजय के बाद हनुमान श्री रघुवीर से पूछें कि अब मुझे कौन सा मंत्रालय मिलेगा? अयोध्या वालों ने तो कोई युद्ध नहीं किया, इसलिए अधिकांश पद, वानर और रीछ जातियों के लिए आरक्षित होने चाहिए। इस भाव के विरुद्ध जन संगठन और राष्ट्र धर्म सर्वोपरि मानने का भाव सनातन की विजय सुनिश्चित करता है। जितना भी यह भाव बढ़ेगा हिंदू उत्कर्ष उतना ही निकट आएगा।

दवा नियामकों के कामकाज की समीक्षा जरूरी

दिनेश सी. शर्मा

तथाकथित सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर भी संभावित खतरनाक स्वास्थ्य उत्पादों के प्रचार में शामिल हो गए हैं। हालांकि, बड़ी दवा कंपनियां भी सीधे ढंग से विज्ञापन देने से बचती हैं लेकिन उन्होंने भी चोर रास्ते निकाल रखे हैं, जिसमें पैसे देकर बनवाई-चलवाई खबरें, मेडिकल सम्मेलनों को प्रायोजित करना और चिकित्सकों को अपनी दवाएं लिखने की एवज में उपहार देना इत्यादि शामिल है। कुछ साल पहले, स्वयं भारतीय मेडिकल संघ पर कुछ उत्पादों की प्रभावशीलता और नैतिकता संबंधी पक्ष पर ध्यान दिए बिना उनका अनुमोदन करने का इल्जाम लगा था। हम लोग इस स्थिति में इसलिए नहीं हैं कि हमारे कानून नाकाफी या नख-दंतहीन हैं। बल्कि इसलिए हैं क्योंकि सरकार द्वारा इनकी अनुपालन करवाने में ढील ढाल की जाती है। नियामक एवं नियंत्रण करने वाले संस्थानों ने मुंह फेरना तय कर रखा है। कानून भी पुराने पड़ चुके हैं और इनमें समय-समय पर सुधार नहीं किया गया। इनकी प्रासंगिकता को लेकर बनी अनेक समितियों ने इन्हें और अधिक कड़ा बनाने की जरूरत बताई है।

पतंजलि आयुर्वेद के विज्ञापनों की तार्किकता को लेकर सर्वोच्च न्यायालय में जारी कानूनी लड़ाई ने अनेकानेक कारणों से काफी जिज्ञासा जगाई है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पतंजलि के कर्ता-धताओं बाबा रामदेव और बालकृष्ण को अदालत की अवमानना के लिए निजी तौर पर पेश होकर बार-बार माफी मांगने पर जोर देना अभूतपूर्व है। इस मामले में अंतिम फैसला अभी आना बाकी है लेकिन अब तक हुई सुनवाई से तमाम संबंधित पक्ष यानी दवा निमार्ता, नियामक, सरकार और सबसे ऊपर, उपभोक्ता के लिए कई अहम सबक सीखने को हैं।

इस मामले के केंद्र में है दवा एवं जादुई उपचार (एतराज योग्य विज्ञापन) कानून 1954, दवा एवं प्रसाधन कानून-1940 और तत्पश्चात 1945 में बनाए नियम। 1954 में बना कानून कुछ दवाओं के विज्ञापन पर रोक लगाता है और कुछ स्थितियों में दवाओं का प्रचार कैसे किया जाए, इसको नियंत्रित करता है। जिन रोगों के इलाज को लेकर विज्ञापन देने पर रोक है उनमें कैंसर, मधुमेह, बच्चा न होना, एड्स, मोटापा, समय पूर्व बुढ़ापा, अंधता इत्यादि हैं। यह कानून विशेष तौर पर उन भ्रामक विज्ञापनों के लिए है जिनमें रोग को ठीक करने हेतु चमत्कारी इलाज या किसी दवा की प्रभावशीलता को लेकर झूठे अथवा बढ़ा-चढ़ाकर किए दावे हों। यह कानून केंद्र सरकार को इन प्रावधानों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई करने की शक्ति प्रदान करता है। भारत में दवाएं, प्रसाधन, मेडिकल उपकरण और अन्य संबंधित उत्पादों का उत्पादन, वितरण और बिक्री के लिए 1940 का कानून और इसके अंतर्गत बनाए गए नियम, मुख्य प्रावधान हैं।

पतंजलि का अपने अनेकानेक जड़ी-बूटी आधारित उत्पादों के बारे में दावा है कि इनसे रोग पूरी तरह ह्यठीकह्न हो जाते हैं, इनमें डायबिटीज, थायरॉयड समस्या और यहां तक कि कैंसर भी शामिल है। कोविड-19 महामारी के दौरान, इसने कोरोनिल नामक उत्पाद जारी किया और कोविड ह्यठीकह्न करने का दावा किया। इस उत्पाद की लॉन्चिंग में तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन भी उपस्थित थे। जब इसकी प्रभावशीलता को लेकर सवाल उठे तो मार्केटिंग पैंतरे के तहत दावे को ह्यउपचारह्न से ह्यप्रबंधनह्न बताना शुरू कर दिया। अनेक अनेक रोगों को ठीक करने का दावा करते अपने विज्ञापनों में पतंजलि संस्थान इलाज की आधुनिक मेडिकल व्यवस्था को निशाना बनाने लगा। यह कहकर कि उसके पास ठीक करने वाला कोई इलाज नहीं है। इसने न केवल स्वास्थ्य कार्यकताओं को असहज किया बल्कि भारतीय मेडिकल संगठन (आईएमए) को भी। उन्होंने पतंजलि आयुर्वेद को दो दवा कानूनों के उल्लंघन करने के लिए अदालत में घसीटा, जहां पर पतंजलि को चेतावनी मिली। तथापि, अदालत की सरासर अवमानना करते हुए, इस संस्थान ने अपने भ्रामक विज्ञापन जारी रखे।

दवाओं, उपायों और स्वास्थ्य से संबंधित भ्रामक विज्ञापन एक बड़ी समस्या है और इस काम में पतंजलि आयुर्वेद ही एकमात्र नहीं है। भारत भर में अखबार और टेलीविजन चैनल (एक विशेष वक्त पर) पर ऐसे विज्ञापनों और प्रायोजित सामग्री की भरमार है, जिनमें हरेक रोग के इलाज और उपचार को लेकर बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं, फिर चाहे यह कब्ज हो या हृदय रोग। ऑनलाइन मंच जैसे कि यू-ट्यूब, इंस्टाग्राम और फेसबुक पर ऐसे चिकित्सकों, कंपनियों की बाढ़ आई हुई है और यह करना कानून का पूरी तरह उल्लंघन है।

तथाकथित सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर भी संभावित खतरनाक स्वास्थ्य उत्पादों के प्रचार में शामिल हो गए हैं। हालांकि, बड़ी दवा कंपनियां भी सीधे ढंग से विज्ञापन देने से बचती हैं लेकिन उन्होंने भी चोर रास्ते निकाल रखे हैं, जिसमें पैसे देकर बनवाई-चलवाई खबरें, मेडिकल सम्मेलनों को प्रायोजित करना और चिकित्सकों को अपनी दवाएं लिखने की एवज में उपहार देना इत्यादि शामिल है। कुछ साल पहले, स्वयं भारतीय मेडिकल संघ पर कुछ उत्पादों की प्रभावशीलता और नैतिकता संबंधी पक्ष पर ध्यान दिए बिना उनका अनुमोदन करने का इल्जाम लगा था।

हम लोग इस स्थिति में इसलिए नहीं हैं कि हमारे कानून नाकाफी या नख-दंतहीन हैं। बल्कि इसलिए हैं क्योंकि सरकार द्वारा इनकी अनुपालन करवाने में ढील ढाल की जाती है। नियामक एवं नियंत्रण करने वाले संस्थानों ने मुंह फेरना तय कर रखा है। कानून भी पुराने पड़ चुके हैं और इनमें समय-समय पर सुधार नहीं किया गया। इनकी प्रासंगिकता को लेकर बनी अनेक समितियों ने इन्हें और अधिक कड़ा बनाने की जरूरत बताई है। बेशक बदलाव की प्रक्रिया में समय लगता है किंतु वर्तमान प्रावधानों का सर्वश्रेष्ठ उपयोग न करने के पीछे क्या वजह है। लेखक ने वर्ष 2008 में रामदेव द्वारा एचआईवी-एड्स को लेकर किए दावों पर सवाल उठाए थे। अंबुमणि रामदॉस जो कि स्वयं प्रशिक्षित चिकित्सक हैं और तत्कालीन केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री थे, ने रामदेव को इस बाबत मंत्रालय से नोटिस भी जारी करवाया था। लेकिन जल्द ही उन्होंने भी यू-टर्न लिया और गुरुग्राम में रामदेव द्वारा आयोजित योग शिविर में भाग लिया, वहां रामदेव ने फिर से एचआईवी-एड्स को ठीक करने के अपने दावे दोहराए। बृंदा करात, जो उस वक्त मार्क्सवादी पार्टी से सांसद थीं, उन्होंने भी उत्तराखंड सरकार से भ्रामक विज्ञापनों का मसला उठाया था, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई।

केरल के स्वास्थ्य एवं आरटीआई कार्यकर्ता डॉ. बाबू केवी ने पतंजलि के खिलाफ सिलसिलेवार शिकायतें दर्ज कराई हैं, उन्होंने पहले उत्तराखंड सरकार के राज्य लाइसेंस प्राधिकरण को लिखा कि वह बताए गए विज्ञापनों को हटवाए, लेकिन न तो पतंजलि आयुर्वेद ने अपना रवैया बदला और न ही उस पर कोई कार्रवाई की गई जबकि विभाग के पास अमल करवाने की शक्ति है। इतना ही नहीं, बल्कि प्राधिकरण ने पतंजलि को चोर रास्ता भी मुहैया करवाया। पतंजलि आयुर्वेद को जारी किया नोटिस 1954 के कानून के तहत न होकर दवा एवं प्रसाधन कानून की एक धारा विशेष के अंतर्गत बनाया गया, जिसको लेकर मुंबई उच्च न्यायालय में मामला पहले से लंबित है। पतंजलि आयुर्वेद ने इस कानूनी केस का हवाला देकर आड़ ली और अपना काम जारी रखा। उक्त नियम 2018 में एक संशोधन के जरिए जोड़ा गया था। इसके तहत स्वास्थ्य संबंधी दावों पर विज्ञापन जारी करने से पहले संबंधित विभाग से अनुमति लेना जरूरी है।

खाद्य उत्पादों के विज्ञापनों में मशहूर हस्तियों द्वारा प्रचार एक अन्य मुख्य चुनौती है। इस मामले में भी, खाद्य सुरक्षा नियामक का रुख ढीला-ढाला है। न्यूट्रास्यूटिकल्स और फूड सप्लीमेंट वह समस्या क्षेत्र है, जिस पर फौरी ध्यान देने की जरूरत है। मीडिया परिदृश्य के बदले स्वरूप और विज्ञापन के सीधे एवं असीधे ढंग के मद्देनजर हमें दवाओं, खाद्य उत्पाद और सप्लीमेंट्स से संबंधित विपणन और विज्ञापनों पर बने तमाम कानून एवं नियमों की बृहद पुनर्समीक्षा करनी होगी। इसमें भारतीय चिकित्सा पद्धति भी शामिल है। भ्रामक विज्ञापन, दावों और संभावित खतरनाक उत्पादों के प्रचार में मशहूर हस्तियों द्वारा अनुमोदन पर बने कानून को और कड़ा करना भी जरूरी है। केंद्रीय एवं राज्यों के खाद्य एवं दवा नियामकों के कामकाज की समीक्षा होनी चाहिए। उन्हें यथेष्ट संसाधन मुहैया करवाए जाएं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

फैसले किसी को डराने या नीचा दिखाने के लिए नहीं

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि उनके पास बड़ी योजनाएं हैं, किसी को डरने की जरूरत नहीं है। उनके फैसले किसी को डराने या नीचा दिखाने के लिए नहीं होते। वे देश के विकास के लिए बने हैं, और 10 साल का उनका काम सिर्फ ट्रेलर है, 2047 के लिए अभी बहुत काम बाकी है। प्रधानमंत्री मोदी ने सोमवार को एक न्यूज एजेंसी को दिए विस्तृत साक्षात्कार में तमाम जिज्ञासाओं और प्रश्नों के खुलकर जवाब दिए। बेशक, चुनावी वेला उनके साक्षात्कार से काफी बातें साफ हुई हैं, और मंतव्यों को सही परिप्रेक्ष्य में समझने में मदद मिल सकती है। चुनावी बॉन्ड से लेकर मोदी की गारंटी कहे जाने के पीछे के मंतव्य का भी उन्होंने खुलासा किया। राम मंदिर को लेकर होती रही राजनीति में अपनी पार्टी और विपक्षी पार्टियों के बीच आरोप-प्रत्यारोपों पर भी उन्होंने तमाम बातें स्पष्ट कीं। दरअसल, यह चुनाव ऐसा है जहां किसी प्रकार की लहर जैसी कोई बात नहीं है, और मुकाबला सीट दर सीट होना तय है। चूंकि भाजपा गठबंधन एनडीए दस साल से सत्ता में है, और चुनाव में कोई लहर न रहने से एनडीए सरकार को सत्ताजनित आक्रोश का सामना रहेगा। ऐसे में गफलत फैलाने का मंसूबा सिरे चढ़ाना किसी के लिए भी आसान रहता है। मोदी सरकार ने शुरू से ही फैसले लेने वाली सरकार की छवि बना ली थी। नोटबंदी जैसे फैसले एकाएक लिए गए और भी तमाम फैसलों की लिस्ट गिनाई जा सकती है, जिनसे लगता है कि उन्हें एकाएक लिया गया। जिस प्रकार कांग्रेसखिलाफ अवधारणा पेश की गई उससे भी लगने लगा कि सरकार किसी भी फैसले में विपक्ष को विश्वास में लेने में विश्वास नहीं करती। न ही किसी मंच पर जनमानस को किसी भी फैसले के प्रभावों के मद्देनजर तैयार करने की ही कोशिश सरकार की ओर दिखलाई पड़ी। कई बार लगा जैसे सरकार पारदर्शिता से काम नहीं कर रही और एकतंत्रीय व्यवस्था जैसे हालात हुए जा रहे हैं। चुनावी बॉन्ड का अधिकांश हिस्सा सत्ताधारी पार्टी को मिलने से भी एक प्रकार के अविश्वास की स्थिति नजर आने लगी।

अच्छी बात है कि प्रधानमंत्री मोदी ऐसे तमाम सवालों के जवाब को लेकर विस्तार से अपनी बात रखी। महसूस कराया कि काफी कुछ ऐसा है जिसका वस्तुस्थिति से कुछ लेना देना नहीं है। बेशक, प्रधानमंत्री का साक्षात्कार गफलत को परे झटकेगा।

सावधानी बरतनी चाहिए

इस बार का चुनाव बिल्कुल फीका है। एक तरफ नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा हिन्दू, मुसलमान, कांग्रेस की नाकामियों को चुनावी मुद्दा बनाए हुए है वहीं चार दशक में बढ़ी सबसे ज्यादा बेरोजगारी, किसान को फसल के उचित दाम न मिलना, बेइंतहा महंगाई और तमाम उन वादों को पूरा न करना, जो मोदी जी ने 2014 व 2019 में किए थे-ऐसे मुद्दे हैं जिन पर भाजपा का नेतृत्व चुनावी सभाओं में कोई बात ही नहीं कर रहा। 'सबका साथ सबका विकास नारे के बावजूद समाज में जो खाई पैदा हुई है, वो चिंताजनक है। रोचक बात यह है कि 2014 के लोक सभा चुनाव को मोदी जी ने गुजरात मॉडल, भ्रष्टाचारमुक्त शासन और विकास के मुद्दे पर लड़ा था। पता नहीं 2019 में और इस बार क्यों वे इनमें से किसी भी मुद्दे पर बात नहीं कर रहे हैं। इसलिए किसान, मजदूर, करोड़ों बेरोजगार युवाओं, छोटे व्यापारियों यहां तक कि उद्योगपतियों को भी उनके भाषणों में रुचि खत्म हो गई है। उन्हें लगता है कि मोदी जी ने उन्हें वादे के अनुसार कुछ भी नहीं दिया। इसलिए यह विशाल मतदाता वर्ग भाजपा सरकार के विरोध में है। हालांकि अपना विरोध खुल कर प्रकट नहीं कर रहा। हालांकि यह उल्लेख करना भी जरूरी है कि प्रति व्यक्ति हर महीने 5 किलो अनाज मुफ्त देने का मोदी जी का फार्मूला कारगर रहा है। जिन्हें अनाज मिल रहा है, वे कहते हैं कि इससे पहले कभी किसी सरकार ने उन्हें ऐसा कुछ नहीं दिया। इसलिए वे मोदी जी के समर्थन में हैं। पर इस मुद्दे पर बुद्धिजीवियों और अर्थशास्त्रियों की राय भिन्न है। वे कहते हैं कि अगर मोदी जी ने अपने वादे के अनुसार हर साल 2 करोड़ युवाओं को रोजगार दिया होता तो अब तक 20 करोड़ युवाओं को रोजगार मिल जाता। तब हर युवा अपने परिवार के कम से कम पांच सदस्यों का भरण-पोषण कर लेता। इस तरह भारत के 100 करोड़ लोग सम्मान की जिंदगी जी रहे होते जबकि आज 80 करोड़ लोग 5 किलो राशन के लिए भीख का कटोरा लेकर जी रहे हैं।

दूसरी तरफ, वे लोग हैं जो मोदी जी के अंधभक्त हैं, और हर हाल में मोदी सरकार को फिर से लाना चाहते हैं। मोदी जी के 400 पार के नारे से आत्ममुग्ध हैं। मोदी सरकार की सब नाकामियों को वे कांग्रेस शासन के मत्थे मढ़कर पिंड छुड़ा लेते हैं क्योंकि इन प्रश्नों का कोई उत्तर उनके पास नहीं है। अभी बताना असंभव है कि कांटे की टक्कर में ऊंट किस करवट बैठेगा। क्या विपक्षी गठबंधन की सरकार बनेगी या मोदी जी की? सरकार जिसकी भी बने, चुनौतियां दोनों के सामने बड़ी होंगी। मान लें कि भाजपा की सरकार बनती है।

विकसित देश भारत के आर्थिक दर्शन को लागू कर अपनी आर्थिक समस्याओं का हल निकाल सकते हैं

आरती कुमारी

विश्व के कुछ विकसित देश, विशेष रूप से अमेरिका और ब्रिटेन, भारत को समय समय पर आर्थिक क्षेत्र में अपना ज्ञान प्रदान करते रहे हैं। परंतु, अब विश्व के आर्थिक धरातल पर परिस्थितियां तेजी से बदल रही हैं और भारत की स्थिति इस संदर्भ में बहुत सुदृढ़ होती जा रही है वहीं विकसित देशों की स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है। अमरीका स्थित निवेश बैंकिंग एवं वित्तीय संस्थान भारत के कुल कर्ज की स्थिति पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहते रहे हैं कि भारत का कर्ज, सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में, तेजी से बढ़ता जा रहा है। जबकि, इसी मापदंड के आधार पर अमेरिका एवं अन्य विकसित देशों की स्थिति देखी जाय तो भारत की तुलना में इन देशों की स्थिति बहुत अधिक दयनीय स्थिति में पहुंच गई है, परंतु यह देश भारत को आज भी ज्ञान देते नहीं चूकते हैं कि भारत अपनी स्थिति में किस प्रकार सुधार करे। अमेरिका के कुल कर्ज की स्थिति यह है कि आज अमेरिका का कुल कर्ज 34 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार करते हुए यह अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद (28 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर) का 123 प्रतिशत हो गया है, जो पूरे विश्व में समस्त देशों के बीच सबसे अधिक प्रतिशत है। अमेरिका आज प्रतिवर्ष अपने आय के कुल स्त्रोतों से अधिक ऋण ले रहा है। जब भी अमेरिकी सरकार को खर्च करने हेतु धन की आवश्यकता पड़ती है, वह बाजार में अमेरिकी बांड्ज जारी कर ऋण लेकर अपना काम चलाता है। यह बहुत ही गलत तरीका है परंतु अमेरिकी सरकार को आज भी इस बात की चिंता नहीं है। हालत यहां तक बिगड़ गए हैं कि अमेरिकी कानून द्वारा अमेरिकी सरकार के बाजार के ऋण लेने के लिए निर्धारित की गई अधिकतम सीमा भी पार हो जाती है एवं लगभग प्रत्येक तिमाही के अंतराल पर अमेरिकी संसद द्वारा ऋण लेने की इस अधिकतम सीमा को बढ़ाया जाता है, इसके बाद अमेरिकी सरकार बाजार से ऋण लेती है और अपने खर्चे चलाती है। यदि बाजार से ऋण लेने की सीमा को प्रत्येक तिमाही पश्चात अमेरिकी संसद द्वारा नहीं बढ़ाया जाय तो शायद अमेरिकी सरकार द्वारा अपने सामान्य खर्चों को चलाना ही असम्भव हो जाएगा। अमेरिका में आर्थिक क्षेत्र में हालत इस स्थिति में पहुंच गए हैं कि अमेरिकी सरकार को ऋण पर ब्याज का भुगतान करने के लिए भी बाजार से ऋण लेना पड़ रहा है। अमेरिकी सरकार द्वारा लगभग प्रत्येक 100 दिनों के अंतराल में 1 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का ऋण बाजार से लिया जा रहा है। ऋण पर अदा किए जाने वाले ब्याज की राशि आज अमेरिका के सुरक्षा बजट से भी अधिक हो गई है। आज प्रत्येक वर्ष अमेरिकी सरकार को 87,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि ऋण पर ब्याज के रूप में अदा करनी होती है जबकि अमेरिका का वार्षिक सुरक्षा बजट 82,200 करोड़ अमेरिकी डॉलर का है। उक्त परिस्थितियों के बीच अभी हाल ही में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, जेपी मोर्गन चेज, बैंक आफ अमेरिका, ब्लैक रॉक, आदि वित्तीय संस्थानों के उच्च अधिकारियों ने अमेरिकी सरकार को चेतावनी दी है कि वह इस प्रकार के तरीकों को अपनाने से बाज आए अन्यथा अमेरिकी अर्थव्यवस्था को डूबने से कोई बचा नहीं सकेगा और इसका प्रभाव पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था पर पड़े बिना नहीं रहेगा। अमेरिका का बढ़ता ऋण पूरे विश्व में ब्याज दरों को प्रभावित कर रहा है, इससे विश्व में कई देशों को ब्याज दरों को बढ़ाना पड़ रहा है और ऋण की लागत के साथ ही विनिर्माण इकाईयों की उत्पादन लागत भी बढ़ रही है। आज विश्व के कई देशों की अर्थव्यवस्थाएं, वैश्वीकरण के इस युग में, आपस में जुड़ी हुई हैं एवं एक दूसरे को प्रभावित कर रही हैं।

आज अमेरिका द्वारा अन्य देशों को ज्ञान देने के बजाय अपनी लगातार गर्त में जा रही अर्थव्यवस्था को सम्हालने के प्रयास करने चाहिए। अमेरिकी सरकार को अपने खर्चों पर नियंत्रण करते हुए अपने आय के साधनों को बढ़ाना चाहिए। न कि, भारत एवं अन्य विकासशील देशों को सीख दे कि ये देश अपने देश में किसानों को दी जा रही सब्सिडी/सुविधाओं में कटौती करें और अंतरराष्ट्रीय व्यापार करते समय अमेरिका द्वारा दी गई सलाह को ध्यान में रखें। आज अमेरिकी अर्थव्यवस्था की जो स्थिति है और विश्व के अन्य देश यदि अमेरिकी सलाह के अनुसार अपनी अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू करते हैं तो सम्भव है कि इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर भी संकट के बादल मंडराने लगें। अमेरिका में पूंजीवाद पर आधारित अर्थव्यवस्था अब अंतिम सांसे लेती दिखाई दे रही है। यदि शीघ्र ही अमेरिकी अर्थव्यवस्था को नहीं सम्हाला गया तो कई अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा। भारत में गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों की संख्या को लेकर भी पश्चिमी जगत अपनी चिंता व्यक्त करता रहता है। हाल ही में ब्रिटेन के एक सांसद ने इस सम्बंध में अपनी राय प्रकट करते हुए कहा है कि भारत को गरीबों की संख्या को कम करने हेतु कुछ विशेष उपाय करने चाहिए। इस प्रकार की सलाह देने वाले विदेशी नागरिक यह भूल जाते हैं कि पिछले 10 वर्षों के दौरान भारत में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले नागरिकों की संख्या में तेजी से गिरावट आई है और अब यह लगभग 10 प्रतिशत तक रह गई है। जब ब्रिटेन ने वर्ष 1947 में भारत छोड़ा था तब भारत को अति गरीब देश बनाकर छोड़ा था और भारत की 50 प्रतिशत से अधिक आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही थी। और, आज ब्रिटेन में ही लगभग 18 प्रतिशत आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है। फिर, किस आधार पर ब्रिटेन एवं अन्य विकसित देशों के नागरिक, आर्थिक क्षेत्र में, भारत को सलाह देने लगते हैं। जबकि, भारतीय अर्थव्यवस्था चूंकि सनातन चिंतन पर आधारित आर्थिक नियमों का अनुपालन करते हुए आगे बढ़ रही है इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था आज इन देशों की तुलना में अधिक मजबूत दिखाई दे रही हैं। विकसित देशों को यदि अपनी आर्थिक समस्याओं को हल करना है तो साम्यवाद एवं पूंजीवाद पर आधारित आर्थिक नीतियों का परित्याग कर भारतीय आर्थिक दर्शन को अपनाकर अपनी आर्थिक समस्याओं का हल निकालने का प्रयास करना चाहिए, न कि समय समय अन्य देशों को इस सम्बंध में अपना ज्ञान बांटना चाहिए।

वित्तीयवर्ष 2023-24 में भारत का व्यापार घाटा 36 प्रतिशत कम हुआ

प्रह्लाद सबनानी

विदेशी व्यापार के क्षेत्र में भारत के लिए एक बहुत अच्छी खबर आई है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारत के व्यापार घाटे में 36 प्रतिशत की कमी दर्ज हुई है। यह विशेष रूप से भारत में आयात की जाने वाली वस्तुओं एवं सेवाओं में की गई कमी के चलते सम्भव हो सका है। केंद्र सरकार लगातार पिछले 10 वर्षों से यह प्रयास करती रही है कि भारत न केवल विनिर्माण के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बने बल्कि विदेशों से आयात की जाने वाली वस्तुओं का उत्पादन भी भारत में ही प्रारम्भ हो। अब यह सब होता दिखाई दे रहा है क्योंकि भारत के आयात तेजी से कम हो रहे हैं एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, रूस-यूक्रेन युद्ध, इजराईल-हम्मास युद्ध, लाल सागर व्यवधान, पनामा रूट पर दिक्कत के साथ ही वैश्विक स्तर पर मंदी के बावजूद एवं विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं के हिचकोले खाने के बावजूद भारत से वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात में मामूली बढ़ौतरी दर्ज हुई है। जिसका स्पष्ट प्रभाव भारत के व्यापार घाटे में आई 36 प्रतिशत की कमी के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। भारत का कुल व्यापार घाटा वित्तीय वर्ष 2022-23 के 12,162 करोड़ अमेरिकी डॉलर की तुलना में कम होकर वित्तीय वर्ष 2023-24 में 7,812 करोड़ अमेरिकी डॉलर हो गया है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारत में वस्तुओं का कुल आयात 67,724 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है जो वित्तीय वर्ष 2022-23 के 71,597 करोड़ अमेरिकी डॉलर की तुलना में 5.41 प्रतिशत कम है। जबकि वस्तुओं के कुल निर्यात वित्तीय वर्ष 2023-24 में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में मामूली 3.11 प्रतिशत गिरकर 43,706 करोड़ अमेरिकी डॉलर के रहे हैं। देश के कुल निर्यात एवं आयात के बीच के अंतर को व्यापार घाटा कहा जाता है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान देश में वस्तुओं के निर्यात एवं आयात के अंतर का व्यापार घाटा 24,017 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है। परंतु, यदि वस्तुओं के निर्यात एवं आयात के आंकड़ों में सेवाओं के निर्यात एवं आयात के आंकड़े भी जोड़ दिए जाएं तो स्थिति बहुत अधिक सुधर जाती है। भारत से वस्तुओं एवं सेवाओं का कुल निर्यात वित्तीय वर्ष 2023-24 में पिछले वर्ष के उच्चत्तम रिकार्ड स्तर से भी आगे बढ़कर 77,668 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया है, यह वित्तीय वर्ष 2022-23 में 77,640 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा था। इसमें वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान किया गया सेवाओं का निर्यात, जो 3.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 33,962 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है, भी शामिल है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारत से निर्यात होने वाली वस्तुओं में विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों, औषधियों एवं इंजीनीयरिंग वस्तुओं का अच्छा प्रदर्शन रहा है। इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों का निर्यात वित्तीय वर्ष 2022-23 के 2,355 करोड़ अमेरिकी डॉलर की तुलना में वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान 2,912 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 23.64 प्रतिशत अधिक है। इसी प्रकार, दवाओं एवं औषधियों का निर्यात भी 9.67 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए वित्तीय वर्ष 2022-23 के 2,539 करोड़ अमेरिकी डॉलर की तुलना में बढ़कर वित्तीय वर्ष 2023-24 में 2,785 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया है। साथ ही, इंजीनीयरिंग वस्तुओं का निर्यात भी 2.13 प्रतिशत की वृद्धि के साथ वित्तीय वर्ष 2023-24 में 10,932 करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार कर गया है। कुल मिलाकर, भारत से वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान निर्यात में वृद्धि इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद, दवाएं एवं चिकित्सा, इंजीनियरिंग उत्पादों, लौह अयस्क (वृद्धि दर 117.74 प्रतिशत), सूती धागा (यार्न एवं फैब्रिक में वृद्धि दर 6.71 प्रतिशत), फल एवं सब्जी (वृद्धि दर 13.86 प्रतिशत), तम्बाकू (19.46 प्रतिशत), मांस, डेयरी और पौलट्री उत्पाद (12.34 प्रतिशत), अनाज एवं विविध प्रसंस्कृत वस्तुएं (8.96 प्रतिशत), मसाला (12.30 प्रतिशत), तिलहन (7.43 प्रतिशत), आयल मील्स (7.01 प्रतिशत), हथकरघा उत्पाद एवं सेरेमिक उत्पाद तथा कांच के बर्तनों (14.44 प्रतिशत) के निर्यात के चलते सम्भव हो सकी है। साथ ही, यह वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारत के प्रमुख निर्यात बाजार में अमेरिका, यूनाइटेड अरब अमीरात, यूरोपीयन यूनियन देशों, ब्रिटेन, सिंगापुर, मलेशिया, बांग्लादेश, नीदरलैंड, चीन व जर्मनी जैसे देशों के शामिल होने से भी सम्भव हो सका है। वैश्विक स्तर पर भू-राजनीतिक तनाव के चलते भी विशेष रूप से मार्च 2024 माह में तो भारत से वस्तुओं का निर्यात वित्तीय वर्ष 2023-24 में अपने उच्चत्तम स्तर 4,168 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है, जबकि वस्तुओं के आयात मार्च 2024 माह में 5.98 प्रतिशत की कमी दर्ज करते हुए हुए 5,728 करोड़ अमेरिकी डॉलर पर नीचे आ गए हैं। इस प्रकार मार्च 2024 माह में वस्तुओं का व्यापार घाटा लगातार कम होकर केवल 1,560 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रह गया है। इसकी पूर्ति सेवाओं के क्षेत्र से निर्यात में हो रही लगातार बढ़ौतरी से सम्भव हो रही है। अब तो सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में भारत कुल विदेश व्यापार में आधिक्य की स्थिति भी हासिल कर ले। वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात में वृद्धि के साथ एवं वस्तुओं एवं सेवाओं के आयात में लगातार हो रही कमी के चलते यह सम्भव हो सकता है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारत के कुल व्यापार घाटे (वस्तुओं एवं सेवाओं को मिलाकर) में आई भारी कमी के चलते अब यह विश्वास पूर्वक कहा जा सकता है कि आगे आने वाले समय में अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय रुपए की मांग भी बढ़ सकती है और पिछले कई दशकों के दौरान भारतीय रुपए में आ रही लगातार गिरावट को रोककर अब भारतीय रुपया न केवल स्थिर हो जाएगा (वैसे पिछले लगभग एक वर्ष के दौरान भारतीय रुपया 83 रुपए प्रति डॉलर के आसपास लगभग स्थिर तो हो ही चुका है) बल्कि भारतीय रुपए की कीमत भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में बढ़ सकती है। भारतीय रुपए की अंतरराष्ट्रीय बाजार में डॉलर के साथ विनिमय दर वर्ष 1982 में 9.46 रुपए प्रति अमेरिकी डॉलर से 31 मार्च 2023 में 82.17 रुपए प्रति अमेरिकी डॉलर हो गई थी। परंतु, पिछले एक वर्ष के दौरान यह विनिमय दर लगभग स्थिर ही रही है। दूसरे, अब कई देश भारत के साथ विदेशी व्यापार को रुपए एवं उन देशों की स्वयं की मुद्रा में करने को सहमत हो रहे हैं। जिसके कारण भारत एवं इन देशों के बीच होने वाले विदेशी व्यापार का भुगतान करने हेतु अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता कम होगी, बल्कि भारतीय रुपए में ही भुगतान सम्भव हो सकेगा। इस प्रकार के व्यवहार यदि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के बीच बढ़ते हैं तो विश्व में विडालरीकरण की प्रक्रिया को भी गति मिल सकती है। भारतीय रुपए में व्यापार करने हेतु रूस, सिंगापुर, ब्रिटेन, मलेशिया, इंडोनेशिया, हांगकांग, संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत, ओमान, कतर सहित लगभग 32 देशों ने भारत के साथ समझौता किया है एवं भारतीय रिजर्व बैंक के साथ अपना वोस्ट्रो खाता भी खोल लिया है ताकि इन देशों को भारत के साथ किए जाने वाले विदेशी व्यवहारों के निपटान को भारतीय रुपए में करने में आसानी हो सके।

मेष राशि : आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। दोपहर तक आपको कोई अच्छी खबर मिल सकती है। कुछ छिपे विरोधी आपके बारे मे अफवाहें फैलाने के लिए तैयार बैठे हैं। ऐसा कोई मौका ही न दें। आज आपकी प्रतिभा मान-सम्मान बढ़ाने में कारगर साबित हो सकती है। आपको कुछ ऐसे काम दिए जायेंगे, जिन्हें आप आसानी से पूरा कर लेंगे।

वृष राशि : आज आपका दिन फेवरेबल रहेगा। आज पूरा दिन माता-पिता के साथ बितेगा। आज खुद से बनाई हुई खीर पैरेन्ट्स को खिलाने पर पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। जिन सीमित विचारों की वजह से आप विचार के दायरे से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं, आज उन्हें तोड़कर जीवन में बदलाव लाने में सफल होंगे। आज सरकारी काम या कोर्ट संबंधित कामों को आगे बढ़ाने की कोशिश करेंगे।

मिथुन राशि : आज आपका दिन अच्छा रहेगा। राजनीति से जुडे लोगों के लिए दिन अच्छा है समाज हित में किये गये कामों की तारीफ़ होगी। आज कार्यस्थल पर लोगों के साथ जुड़े रहने की और मिलने-जुलने की कोशिश करेंगे, लेकिन अपने विचारों में किसी भी प्रकार का बदलाव सोच-समझकर करें। पिछली बातों से मिली सीख को आज ध्यान में रखेंगे। स्वास्थ्य आज पहले से काफी अच्छा रहेगा।

कर्क राशि : आज आपके दिन की शुरुआत खुशियों से भरी होगी। आज अन्य लोगों की समस्याओं को सुलझाने पर आपका ध्यान रहेगा, इस कारण व्यक्तिगत जीवन की कुछ बातों को नजर अंदाज न करें। आज अन्य लोगों की, की गई मदद से आपको लाभ मिलेगा। आज का दिन दोस्तों के साथ मौज मस्ती में बितेगा। आप उसके साथ बाहर जा सकते है जहां किसी दूर के रिश्तेदार से आपकी मुलाकात होगी।

सिंह राशि : आज आपका दिन बेहतर रहेगा। आप नए विचारों से परिपूर्ण रहेंगे। आप जिन कामों को करने के लिए सोचेंगे, वे आपको उम्मीद से ज्यादा फायदा दे सकते हैं। आज के दिन की शुरुआत शुभ संकल्पों से होगी। जो लोग मिट्टी के व्यवसाय से जुड़े है उनके लिए आज का दिन फायदेमंद रहेगा। इससे दूसरे लोग भी आपसे प्रभावित होंगे। बिजनेस बढ़ाने की योजनाओं पर अमल करने के लिए आज का दिन अच्छा है। रिश्तो में मिठास बनी रहेगी।

कन्या राशि: आज भाग्य का आपको पूरा-पूरा साथ मिलेगा। ऑफिस में अपनी प्रगति के बारे में विचार करेंगे। आज शांति से कामकाज निपटाने की कोशिश करेंगे तो बिना गड़बड़ के काम समय से पूरा हो जाएगा। आज आपको दूसरों का मूड समझने में बहुत हद तक सफलता मिलेगी। आगे बढने के लिए आप कुछ नया सीखेंगे। इस राशि के जो लोग सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं, उन्हें तरक्की के नये अवसर प्राप्त होंगे।

तुला राशि : आज आपका दिन शानदार रहेगा। किसी बात को लेकर भाई-बहन से विचार विमर्श करेंगे। आज किसी से भी बेवजह मजाक करने से आपको बचना चाहिए। कोई महत्वपूर्ण काम पूरा होने से मन खुश रहेगा। आज कुछ नए मौके और नये विचार सामने आयेंगे, जिन्हें आप खुले मन से स्वीकार करेंगे। आज आप ज्यादातर मामलों में खुद को भाग्यशाली महसूस करेंगे। छोटी-मोटी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से निजात पाने के लिये घरेलू नुस्खों को अपनाना फायदेमंद रहेगा।

वृश्चिक राशि: आज आपका दिन लकी रहेगा। आज आप जो भी करें, अच्छे से समझकर करें, फायदा होगा। सरकारी कामों में किसी अनुभवी से सलाह मिल सकती है, जो आपके बहुत काम आ सकती है। इस राशि के जो लोग कोचिंग संचालक हैं, उनके लिये अपने काम में कुछ बदलाव करने का आज अच्छा दिन है। स्वास्थ्य को लेकर लापरवाही करने से बचे। जीवनसाथी का सहयोग बना रहेगा।

धनु राशि : आज आपका दिन लाभदायक रहेगा। अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए आज का दिन बढ़िया है। आज सेहत संबंधी समस्या को किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाएंगे। आज आप सकारात्मक बातों पर ध्यान देने की कोशिश करेंगे। आज आपको किसी सम्मानित व्यक्ति से मिलने का मौका मिल सकता है। इस राशि के कॉन्टैक्टर के लिए आज का दिन धनलाभ देने वाला है। मौसम के बदलने से चिडचिडापन हो सकता है, इससे बचने के लिए खूब पानी पीएं लाभ होगा।

मकर राशि: आज का दिन खुशियों से भरा रहेगा। आज थोड़ी मेहनत से किसी बड़े फायदे का योग बन रहा है। जीवनसाथी की मदद से आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा। आज किसी समारोह में जाने का प्लान बनाएंगे, जहां किसी दूर के रिश्तेदार से आपकी मुलाकात हो सकती है। करियर से संबंधित निर्णय की वजह से काम का दबाव बढ़ता हुआ नजर आएगा, लेकिन इसी काम के जरिए आपको सफलता भी मिलेगी।

कुंभ राशि : आज आपका दिन आपके अनुकूल रहेगा। आज किसी ऐसे मित्र से कॉल पर बात होगी जिससे पुरानी यादें ताजा हो जाएगी। आज पिछली बातों की वजह से मन उदास होगा। प्रॉपर्टी डीलर के लिए आज का दिन फायदा देने वाला है। आज आपका आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा।

मीन राशि : आज आपका दिन नई सौगात लेकर आया है। आज करियर संबंधी कोई शुभ समाचार मिलेगा, जिससे घर का वातावरण खुशनुमा हो जाएगा। सेहत आज फिट रहेगी। मन में पैसों को लेकर कई तरह के विचार आ सकते हैं। जीवनसाथी के साथ कहीं घूमने के लिए समय बेहतर है। यात्रा का कोई कार्यक्रम बना सकते हैं।

बेटी से गृहणी

अजय एहसास

एक बेटी जब ससुराल जाती है, वो बेटी का चोला छोड़
गृहणी बन जाती है,
जो बातें घर पर अम्मा से कहती थीससुराल में छिपा जाती है।
थोड़ा सा दर्द होने पर
बिस्तर पकड़ने वाली बिटिया
अब उस दर्द को सह जाती है,
तकलीफें बर्दाश्त कर जाती है
पर किसी से नहीं बताती है।
सिरदर्द होने पर जो अम्मा से
सिर दबवाती थी
अब खुद ही तेल या बाम लगाती है, पर किसी से ना बताती है।
पहले पेटदर्द होने पर पिता जी से
तमाम महंगी दवाइयाँ मंगाती थी,
पर अब पेट पर कपड़ा बांधकर
घुटने मोड़ पेट में लगाकर लेट जाती है,
लेकिन उसके पेट में दर्द है
यह बात किसी को ना बताती है।
उसकी रीढ़ उसकी कमर पर
पूरा घर टिका है
उसके खुश होने पर
पूरा घर खुश दिखा है
झुक कर पूरे घर में झाड़ू लगाना, बैठे बैठे बर्तन कपड़े धोना, खाना बनाना
पानी से भरी बीस लीटर की बाल्टी उठाना
कभी गेहूं कभी चावल बनाना
छत की सीढ़ियों से जाकर कपड़े सुखाना
आखिर कितना बोझ सहती है
पर किसी से कुछ ना कहती है।
जब थक कर कमर दर्द से चूर हो जाती है
तो कमर के नीचे तकिया लगाकर सो जाती है
दर्द हंसते हंसते सह जाती है
पर मदद के लिए किसी को न बुलाती है।
घरों में काम करते करते दौड़ते दौड़ते
चकरघिन्नी की तरह घूमते घूमते
पूरा ही दिन बीत जाता है
खुद के लिए समय न निकाल पाती है।
मायके में मां ने कितना सुकून दिया था
पैर दर्द करने पर मालिश किया था
पर अब तो दौड़ते दौड़ते
काम करते करते पैरों में सूजन आ जाती है।
दर्द बर्दाश्त कर लेती है पर किसी से ना बताती है। नमक पानी गुनगुना कर उसमें पैर डालती है पर किसी से गलती से भी पैर ना दबवाती है।
कभी पति की मार, सास की डांट ससुर की फटकार
सब सह जाती है
पर जुबान नहीं खोलती और ना ही किसी को बताती है।
चुप रहने में ही भलाई है सोचती है
बिटिया होने पर खुद को कोसती है
जो कभी पिता से लड़ जाया करती थी
मां को समझाया करती थी,
अब सब कुछ सुन लेती है सह लेती है
पर जुबान नहीं खोलती है।
क्योंकि उसे पता है जब वह कहेगी
तबियत ठीक नहीं
तो ससुराल वाले कहेंगे तू बीमार तो नही।
वो दर्द से व्याकुलता नहीं देखेंगे दवा कराने के बजाय कोसेंगे। नहीं देखेंगे तुम्हारा
दिन रात का काम करना
वो तो बस कमियाँ निकालेंगे।
ये हमारी बेटियों का
बेटी से गृहणी तक का सफर है
पर अफसोस
हम इस 'एहसास' से बेखबर हैं।

सूडोकू नवताल- 7042

★☆☆☆☆ सरल

3	9				1			
5	4			6	8		1	3
		1		7		9	5	
	8	9		5	3		4	7
6	1		4	9		2	3	
	3	4		1		8		
7	5		8	3			2	4
			6				7	9

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकू नवताल -7041 का हल

9	6	2	3	4	1	7	5	8
1	4	8	9	7	5	6	2	3
5	7	3	2	6	8	1	4	9
3	2	1	6	9	4	8	7	5
4	8	7	5	1	2	9	3	6
6	9	5	8	3	7	4	1	2
8	3	4	7	2	6	5	9	1
2	1	6	4	5	9	3	8	7
7	5	9	1	8	3	2	6	4

https://t.me/AllNewsPaperPaid

ईरानपर जवाबी हमला

जैसा कि अन्देशा पूरी दुनियाको था, अन्ततः वही हुआ। ईरानकी ओरसे बीते १३ अप्रैलको किये गये हमलेके बादसे ही इस बातकी प्रबल सम्भावना व्यक्त की जा रही थी कि इसराइल चुप नहीं बैठेगा और पलटवार करेगा। ईरानने इसराइलपर शनिवारको तीन सौसे ज्यादा ड्रोन और मिसाइल हमले किये थे। उसी समय इसराइलके प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहूने कसम खाई थी कि जवाब जरूर दिया जायगा। इसकी परिणिती ईरानके हमलेके छठे दिन सामने आयी। इसराइलने ईरानके सुप्रीम लीडर अली खामेनेईके ८५वें जन्मदिनपर शुक्रवारको सुबह ईरानी शहरोंको निशाना बनाया जिसका मुख्य केन्द्र इस्फहान शहर रहा। यह शहर ईरानके लिए बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहां उसके परमाणु संयंत्र और एयरबेस हैं। हालांकि इस हमलेमें किसी बड़ी क्षतिकी खबर नहीं है लेकिन पश्चिम एशियामें तनाव बढ़नेका संकेत है। इसराइल और ईरानके बीच जो कुछ हो रहा है वह भारतके लिए गम्भीर चिन्ताका विषय है। भारतका ईरानके साथ लम्बे समयसे रणनीतिक सम्बन्ध है, वहीं प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदीकी सरकारने रक्षाके क्षेत्रमें इसराइलके साथ मजबूत सम्बन्ध विकसित किये हैं। भारतका दोनों देशोंके साथ अच्छे सम्बन्ध हैं। इस सम्बन्धमें भारतके परराष्ट्रमंत्री एस. जयशंकरका यह कहना महत्वपूर्ण है कि पश्चिम एशियामें स्थिरता जरूरी है। यह इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि वहां करीब एक करोड़ भारतीय नागरिक रहते हैं। इसराइल-ईरानके बीच यदि युद्ध उग्र होता है तो इसका सीधा असर तेलकी कीमतोंपर होगा जिसका परोक्ष असर दुनियाके सभी देशोंपर पड़ेगा। इससे महंगी बढ़ेगी जिसे थामना दुष्कर कार्य होगा। प्रधान मंत्री मोदीने पहले ही कहा था कि यह युद्धका समय नहीं है। ईरान और इसराइलकी ओरसे किये गये हमलेको शक्तिका प्रदर्शन कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। इसे प्रतिष्ठाका प्रश्न बना लेना किसीके भी हितमें नहीं है। ईरानपर जवाबी हमला तनावको बढ़ानेवाला है और विश्वशान्तिके लिए बड़ा खतरा है। इससे स्थिति और विषम हो जायगी। युद्ध किसी समस्याका समाधान नहीं है। वार्ता ही एकमात्र विकल्प है जिससे समाधानका रास्ता निकल सकता है। आज जो देश युद्धरत हैं, वे तो मात्र मोहरे हैं। युद्ध तो परदेके पीछेसे कोई और देश लड़ रहे हैं। इन देशोंको मानवीय आधारपर युद्धकी भयावहतापर विचार करनेकी जरूरत है। युद्धको हर हालमें रुकना चाहिए। इसके लिए वैश्विक स्तरपर प्रयास किये जानेकी आवश्यकता है।

पोर्नोग्राफीपर रोक जरूरी

देशके सर्वोच्च न्यायालयके मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति डी.वाई. चन्द्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवालाकी पीठने शुक्रवारको एक याचिकाकी सुनवाईके दौरान अहम टिप्पणी की है। उन्होंने कहा है कि हो सकता है कि बच्चोंसे जुड़ी अश्लील सामग्री देखना अपराध न हो, लेकिन अश्लील सामग्रियोंमें बच्चोंका इस्तेमाल गम्भीर चिन्ताका विषय है। हालांकि न्यायालयमें जिस मामलेकी सुनवाई चल रही थी, वह चाइल्ड पोर्नोग्राफी वीडियोको मोबाइलमें रखने और देखनेको लेकर है, जिसमें मद्रास उच्च न्यायालयने हालमें एक फैसला दिया था। एक युवकके खिलाफ मोबाइलमें चाइल्ड पोर्नोग्राफी वीडियो रखनेके आरोपमें पाक्सो और आईटी एक्टके तहत केस दर्ज हुआ था। इसमें मद्रास उच्च न्यायालयने कहा था कि अपनी डिवाइसपर महज चाइल्ड पोर्नोग्राफी देखना या डाउनलोड करना अपराधके दायरेमें नहीं आता है। आरोपीने उस वीडियोको न ही कहीं शेयर किया है और न ही किसीको दिखाया है, जो दोनों कानूनोंके तहत अपराध तय करनके लिए जरूरी है। मद्रास उच्च न्यायालयने केसको रद करते हुए कहा कि आरोपीको पोर्न देखनेकी लत है तो उसकी काउंसिलिंग करानी चाहिए। मद्रास उच्च न्यायालयके इस फैसलेके खिलाफ बच्चोंके अधिकारोंके लिए आवाज उठानेवाली दो एनजीओने शीर्ष न्यायालयमें याचिका दाखिल करते हुए चिन्ता व्यक्त की है कि इस आदेशसे लोगोंके बीच ऐसी धारणा बनेगी कि चाइल्ड पोर्नोग्राफी डाउनलोड करने या रखनेपर कोई कारवाई नहीं होगी। इससे चाइल्ड पोर्नोग्राफीको बढ़ावा मिलेगा, जबकि पाक्सो एक्टमें बच्चोंका अश्लील कंटेंटके लिए इस्तेमाल करनेपर उम्रकैदतकका प्रावधान है, वहीं चाइल्ड पोर्नोग्राफीसे जुड़ा कंटेंट अपने पास रखनेपर तीन सालतककी जेल और जुर्मानाकी सजा हो सकती है। कानूनोंके बावजूद अश्लील सामग्रियोंमें बच्चोंका इस्तेमाल किया जा रहा है और कम्पनियां इनका व्यावसायिक इस्तेमाल करनेसे भी बाज नहीं आ रही हैं। कानूनोंकी विसंगतियोंका फायदा कम्पनियां उठा रही हैं। इनके खिलाफ सख्त काररवाईके साथ कानूनकी विसंगतियोंको दूर कर उसे और सख्त बनाना होगा।

लोक संवाद

संकल्प-पत्र

महोदय,-समाजके वंचित, पिछड़ा, दलितों, आदिवासियों, किसानों, महिलाओं, युवाओं आदिके लिए भाजपाके संकल्प-पत्रमें सहयोग और कल्याण योजनाओंका लक्ष्य उनको विकसित और सशक्त बनाना है। उदाहरणके लिए आदिवासियोंके लिए एकलव्य विद्यालयोंकी संख्या बढ़ाना तथा और परिष्कृत करना, गरीबोंके लिए चार करोड़ पक्के घरकी योजनाओंका विस्तार कर तीन करोड़ और नये घर जोड़ने, सस्ता गैस सिलैंडर जारी रखना, शहरी और ग्रामीण इलाकोंमें घर-घर पाइपके जरिये गैस पहुंचानेकी योजनापर काम शुरू करनेकी बातोंमें किसीको अव्यावहारिकता नहीं लगेगी। रेहड़ी, पटरी, ठेलेवालोंको ५० हजारतक कर्ज देनेवाली स्वनिधि योजनाका विस्तार छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रोंतक करने तथा ऋणकी सीमा बढ़ाने, किसान सम्माननिधि ज्यादा जारी रखने एवं ग्रामीण इलाकोंमें खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां लगाने आदि छोटे शहरों और गांवके विकासकी अस्थायी आधारभूमि बनानेकी कोशिश ही तो है। प्रधान मंत्रीने कहा भी कि आधारभूत संरचनाका विकास कर हम नये रोजगार पैदा करेंगे लेकिन रोजगारकी गुणवत्ता भी बढ़ायंगे। क्वांटिटी आफ अपॉर्चुनिटीके साथ क्वालिटी आफ अपार्चुनिटी भी। इसमें नये शिक्षण संस्थानोंके निर्माण, पांच प्रतिशतके विस्तार और ६जी की तैयारीके साथ ही सर्विस सैंटर और टैलीमैडिसिनका विस्तारसे साफ पता चलता है कि प्रधान मंत्री आधुनिक तकनीक, आर्टिफिशियल इंटैलीजैंस और संचारके संपूर्ण उपयोगकी जिन योजनाओंपर काम कर रहे हैं उन्हें आगे और सुदृढ़ किया जायगा। संकल्प-पत्रमें इसका उल्लेख तथा प्रधान मंत्री द्वारा भाषणमें चर्चा बताता है कि तीसरे कार्यकालमें यह घोषणा भी मूर्त रूप ले लेगा। विपक्ष यह नहीं कह सकेगा कि आपके वादोंका क्या हुआ। **-ए. कुमार, वाया ईमेल।**

अंततः भारतसे डरा पाकिस्तान

कुछ समयसे पाकिस्तानमें वे आतंकवादी अज्ञात हमलावरोंका शिकार बन रहे हैं जो भारतकी सर्वाधिक वांछित सूचीमें शामिल हैं। इसमें मौलाना रहीमउल्लाह तारिक, अकरम गाजी, ख्वाजा शाहिद, शाहिद लतीफ, रियाज अहमद, मौलाना जिया-उर-रहमान, खालिस्तानी परमजीत सिंह पंजवड़ और बशीर अहमद पीर शामिल हैं।

❐ **बलबीर पुंज**

क्या मोदी सरकारकी आतंकवादविरोधी नीति और पाकिस्तानमें भारतके दुश्मनोंकी हत्यामें कोई संबंध है। अभी हालमें पाकिस्तानने आरोप लगाया है कि १४ अप्रैलको आतंकी संघटन लश्कर-ए-तैयबाके संस्थापक हाफिज सईदके सहयोगी अमीर सरफराज तांबाकी 'अज्ञात बंदूकधारियों' द्वारा हत्यामें 'भारतकी भूमिका' है। आलेख लिखे जानेतक सरफराज जीवित है या गम्भीर रूपसे घायल, इसे लेकर पाकिस्तानी अधिकारियोंमें भ्रमकी स्थिति है। कुछ समयसे पाकिस्तानमें वे आतंकवादी 'अज्ञात हमलावरों' का शिकार बन रहे हैं, जो भारतकी 'सर्वाधिक वांछित सूची' में शामिल हैं। इसमें मौलाना रहीम उल्लाह तारिक, अकरम गाजी, ख्वाजा शाहिद, शाहिद लतीफ, रियाज अहमद, मौलाना जिया-उर-रहमान, खालिस्तानी परमजीत सिंह पंजवड़ और बशीर अहमद पीर शामिल हैं। पाकिस्तानी मंत्री नकवीने सरफराजके साथ इन हत्याओंमें भी भारतके शामिल होनेका आक्षेप लगाया है। आखिर सरफराजने ऐसा क्या किया था कि उसकी हत्याका बेतुका आरोप पाकिस्तानने सीधा भारतपर लगा दिया। माना जाता है कि सरफराज और उसके साथी मुद्दसरने पाकिस्तानी सेना और खुफिया एजैंसी आईएसआईके इशारेपर वर्ष २०१३ में लाहौरकी जेलमें बंद भारतीय नागरिक सरबजीत सिंहकी पीट-पीटकर हत्या कर दी थी। यह हत्या भारतमें आतंकवादी अफजल गुरुकी फांसीके दो माह बाद हुई थी, जो १३ दिसंबर २००१ को भारतीय संसद हमलेका मुख्य षड्यंत्रकर्ता था। कालांतरमें पाकिस्तानकी एक अदालतने सरबजीतकी हत्याके दोनों आरोपियोंको इसलिए बरी कर दिया, क्योंकि जेलमें उपस्थित किसीने भी इनके खिलाफ गवाही नहीं दी। यह स्थिति तब थी, जब पोस्टमार्टममें सरबजीतके शवपर बर्बरताके कई निशान मिले थे। सरबजीत भारत-पाकिस्तान सीमापर बसे तरनतारन जिले (पंजाब) के भिखीविंड गांवके रहनेवाले थे। ३० अगस्त १९९० को वे अनजानेमें पाकिस्तान पहुंच गये थे, जहां उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद सरबजीतको बम धमाका मामलेमें फंसाकर बादमें दोषी ठहराते हुए मौतकी सजा सुना दी। सरबजीतकी बहन दलबीर कौर १९९१ से लेकर २०१३ में उनकी नृशंस हत्यातक रिहाईके लिए पाकिस्तानसे लगातार पैरवी कर रही थी। ११ वर्ष बाद सरबजीतका मामला पुनः अपने हत्यारे सरफराजकी अज्ञात हमलावरों द्वारा हत्याके कारण फिरसे सुर्खियोंमें है। पाकिस्तानसे पहले ब्रिटिश समाचारपत्र द गार्जियनने छह अप्रैलको प्रकाशित अपनी रिपोर्टमें दावा किया था कि भारत विदेशी धरतीपर रहनेवाले अपने सर्वाधिक वांछितोंको समाप्त करनेकी रणनीतिके अंतर्गत पाकिस्तानमें लोगोंकी हत्या कर रहा है। रिपोर्टके अनुसार, २०१९ में हुए पुलवामा हमलेके बादसे भारतीय खुफिया एजैंसी रॉ ने २० हत्याएं करवायीं। इन सभीको भारत अपना दुश्मन मानता था। भारत सरकार इस रिपोर्टको सिरेसे खारिज कर चुकी है। यह तीसरी बार है, जब भारतपर विदेशी धरतीपर अपने दुश्मनोंकी हत्या या हत्याका प्रयास करनेका आरोप लगाया गया है। इससे पहले, गत वर्ष कनाडाई प्रधान मंत्री जस्टिन ट्रूडोने दावा किया था कि खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जरकी हत्यामें भारतका हाथ था। इसके बादमें अमेरिकाने भी कह दिया कि भारतने खालिस्तानी अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नूकी भी हत्याकी कोशिश की थी, जिसे उसने विफल कर दिया। मोदी सरकार इस प्रकारके सभी आरोपोंका खंडन कर चुकी है। परन्तु क्या अमेरिका या किसी अन्य पश्चिमी देशोंको इस मामलेमें भारतको कोई उपदेश देनेका अधिकार है। सच तो यह है कि अमेरिकाका स्वयंका इतिहास विदेशमें अपने शत्रुओंको ठिकाने लगानेका रहा है। २ मई २०११ को पाकिस्तानमें मध्यरात्रिको घुसकर अमेरिकी सेनाने उस ओसामा बिन लादेनको मार गिराया था, जिसने सितंबर २००१ में अमेरिकाके न्यूयॉर्कमें भीषण ९/११ आतंकवादी हमलेकी साजिश रची थी। यही नहीं, कई देशोंके विरोधको नजरअंदाज करते हुए अमेरिकाने वर्ष २००३ में इराक पर यह कहकर हमला कर दिया था कि उसके तानाशाह सद्दाम हुसैनके पास सामूहिक विनाशके घातक हथियार हैं। बादमें अमेरिकाको कोई हथियार नहीं मिले। इसी तरह २०१९ में अमेरिकाने सीरियामें आईएसआईएस सरगना अबु अल-बगदादी, २०२० में ईरानमें शीर्ष सैन्य अधिकारी कासिम सुलेमानी और जुलाई २०२२ में अफगानिस्तानके काबुलमें आतंकवादी अल-जवाहिरीको मौतके घाट उतार दिया था। इतना ही नहीं, अमेरिकी जांच एजैंसी सीआईएने क्यूबाके नेता फिदेल कास्त्रोकी हत्याके आठ असफल प्रयासतक किये थे। इसरायल भी आत्मरक्षामें अपने दुश्मनोंको दुनियाके किसी भी छोरमें ठिकाने लगानेमें पारंगत है। १९७२ के म्यूनिख ओलंपिकमें ११ इसराईली खिलाड़ियोंकी हत्या करनेवाले फिलिस्तीनी आतंकवादियोंको इटली, फ्रांस, नार्वे, लेबनान और साइप्रसमें ढूंढ़कर मारना इसका उदाहरण है। आज भी इसरायल इस प्रकारके कदम उठानेसे नहीं हिचकिचाता। गत वर्ष हमासके हमलेके बाद इसरायल द्वारा गाजा-पट्टीको मलबेके ढेरमें परिवर्तित करना इसका उदाहरण है। यही नहीं, डेढ़ माह पहले ईरानी सैन्यबलोंने पाकिस्तानकी सीमामें घुसकर सुन्नी आतंकवादी संघटन जैश अल-अदलके कमांडर इस्माइल शाहबख्श सहित अन्य जिहादियोंको मार डाला था। वास्तवमें शेष विश्वमें भारतके आलोचक इस बातसे हत्प्रभ हैं कि मई २०१४ के बाद मोदी सरकार राष्ट्रीय सुरक्षाको लेकर शून्य सहनशक्ति प्रदत्त नीति अपना रही है कि वे आवश्यकता पड़नेपर सीमा पार करनेसे भी नहीं हिचकते। वर्ष २०१६ और २०१९ में भारतीय सेनाकी सर्जीकल स्ट्राइकके साथ देशमें आतंकवादी हमलोंमें एकाएक कमी आना इसका प्रमाण है। इस पृष्ठभूमिमें भारतपर पाकिस्तान, अमेरिका और कनाडा द्वारा अपने दुश्मनोंकी हत्या करनेका आरोप लगाना शेष विश्वमें उस राजनीतिक, वैचारिक, गैर-सरकारी संघटनों और निजी संस्थाओंकी संयुक्त बौखलाहटका परिचायक है, जो भारतकी मौलिक सनातन पहचान, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, आर्थिक प्रगति, देशहित केंद्रित विदेश-नीति, तुलनात्मक रूपसे सुरक्षित सीमाओं और आत्मनिर्भरता (आयुध सहित) की ओर बढ़ते कदमोंसे कुंठित हो चुके हैं।

विश्वमें भारतके आलोचक इस बातसे हतप्रभ हैं कि मई २०१४ के बाद मोदी सरकार राष्ट्रीय सुरक्षाको लेकर शून्य सहनशक्ति प्रदत्त नीति अपना रही है कि वे आवश्यकता पड़नेपर सीमा पार करनेसे भी नहीं हिचकते। वर्ष २०१६ और २०१९ में भारतीय सेनाकी सर्जिकल स्ट्राइकके साथ देशमें आतंकवादी हमलोंमें एकाएक कमी आना इसका प्रमाण है। इस पृष्ठभूमिमें भारतपर पाकिस्तान, अमेरिका और कनाडा द्वारा अपने दुश्मनोंकी हत्या करनेका आरोप लगाना शेष विश्वमें राजनीतिक और निजी संस्थाओंकी संयुक्त बौखलाहटका परिचायक है, जो भारतके बढ़ते कदमोंसे कुंठित हो चुके हैं।

प्रशासनिक अधिकारियोंकी जिम्मेदारी

❐ **हृदयनारायण दीक्षित**

भारतीय प्रशासनिक सेवाकी योग्यता और प्रतिभा बेजोड़ रही है। लेकिन प्रशासन और भारतीय जनताके मध्य दूरी है। प्रशासन एक तरहसे स्थायी कार्यपालिका है। इसके कामकाजमें आमजनोंके साथ सम्पर्कोंमें संवेदनशीलताका अभाव देखा गया है। संविधान सभामें अनेक सदस्योंने अंग्रेजीराजके सिविल ढांचेको समाप्त करनेकी मांग की थी। सरदार पटेलने कहा था कि हमने इनके साथ कठिन समयमें काम किया है। मेरे ख्यालसे इन्हें बनाये रखना जरूरी है। पटेलने स्वतंत्र भारतके सिविल अधिकारियोंकी पहली खेपको २१ अप्रैल, १९४७ में सम्बोधित किया था। यह एक महत्वपूर्ण क्षण था। इसीलिए इस तिथिको सिविल सेवा दिवसके रूपमें मनाया जाता है। तबसे ७७ वर्ष बीत गये। संवेदनशील प्रशासन राष्ट्रीय अपरिहार्यता है। उत्कृष्ट प्रशासन प्राचीन कालसे ही किसी न किसी रूपमें समाजके लिए जरूरी रहा है। भारतका वर्तमान प्रशासन प्राचीन कालकी प्रशासनिक व्यवस्थाओंका विकास है। इसका प्राचीनतम स्वरूप ऋग्वैदिक कालमें भी मिलता है। ऋग्वेदके समाजकी सबसे छोटी इकाई कुटुम्ब या परिवार थी। परिवारका सबसे वरिष्ठ कुटुम्बका प्रधान संचालक होता था। घरके मुखियाकी बात सब लोग मानते थे। अनेक परिवारोंसे मिलकर बननेवाली राजनीतिक इकाई ग्राम थी। राजनीतिक दृष्टिसे ग्रामका प्रमुख ग्रामणी कहलाता था। वह स्वयं ग्रामका प्रशासनिक अधिकारी भी था। अनेक ग्रामोंसे बनी बड़ी इकाई विश कहलाती थी। विशके प्रशासनिक अधिकारीको विशपति कहते थे। विशसे बड़ी इकाई जन होती थी। जनके संचालक प्रशासनिक अधिकारीको गोप कहा जाता था। गोप प्रायः राजा ही होते थे। ऋग्वैदिक समाजमें गणतंत्र भी थे। राजा निरंकुश नहीं था। राजा राज्याभिषेकके समय प्रजाके हितमें काम करनेकी शपथ लेता था। राजाको जवाबदेह बनानेवाली दो लोकतांत्रिक संस्थाएं भी थीं। इन्हें सभा और समिति कहा गया। लुडविगने लिखा है कि समिति जन-साधारणकी संस्था थी। सभा वरिष्ठोंकी संस्था थी। उस समयके नियम सबको मान्य थे। नियम या विधिको ऋग्वेदमें धर्मन् कहा गया है। ग्रिफ्थने धर्मनका अनुवाद लॉ या लॉज किया है। ग्राममें न्याय करनेके लिए ग्रामवादिन नामकी न्यायायिक संस्था भी थी। वैदिक कालके बाद सिन्धु घाटीकी सभ्यताका समय (२२५० ईसापूर्वसे १७५० ईसापूर्व तक) आता है। ह्वीलर और पिगटके अनुसार मोहनजोदड़ो और हड़प्पाके राज्य ठीकसे संचालित थे। सिन्धु सभ्यतामें सड़कें सुनियोजित थी। जल निकासीकी व्यवस्था थी। अनुमान किया जाता है यहां नागरिक संस्थाएं थीं। पिगटके अनुसार व्यवस्थित निर्माण कार्यसे अनुमान लगता है कि यहां नगर पालिकाएं जैसी संस्थाएं भी रही होंगी। सम्पूर्ण सिन्धु क्षेत्रमें प्रशासन व्यवस्थित था। उत्तर वैदिक कालमें शक्तिशाली राजाओंका उदय दिखाई पड़ता है। उत्तर वैदिक कालमें प्रशासनिक काम करनेवालोंकी संख्या बढ़ी है। महाभारतमें बड़े राज्योंका उल्लेख है। चन्द्रगुप्त मौर्यके कालमें भारतने पहली बार राजनीतिक एकता हासिल की। यह विशाल साम्राज्य था। चन्द्रगुप्त मौर्य स्वयंमें योग्य प्रशासक थे। कौटिल्यका अर्थशास्त्र, मैगस्थनीजकी इंडिका, अशोकके शिलालेख एवं यूनानी साहित्यमें मौर्य शासन व्यवस्थाकी तमाम जानकारी हैं। भारतीय प्रशासनके विकासमें मौर्य शासनके अनेक तत्व हैं। भारत परम्परा प्रिय देश है। यहांके समाजमें कालवाह्यको छोड़ने और कालसंगतको जोड़नेकी क्षमता रही है। वैदिक कालसे लेकर आधुनिक कालतक लोक प्रशासनको जनोनमुखी बनानेके प्रयास चलते रहे हैं। आदर्श राजव्यवस्थाके संवेदनशील प्रशासनके विवरण कौटिल्यके अर्थशास्त्रमें मिलते हैं और महाभारतमें भी। कौटिल्य संवेदनशील प्रशासनके व्याख्याता हैं। वाल्मीकिकी रामायणमें श्रीरामकी आदर्श राजव्यवस्थाके उल्लेख हैं। वाल्मीकि द्वारा लिखी आदर्श राजव्यवस्था काल्पनिक नहीं है। तुलसीदासने आजसे ४५० वर्ष पहले रामचरितमानस लिखी थी। रामचरितमानसमें भी आदर्श राजव्यवस्थाकी खूबसूरत झांकी है।

राम राज्य कल्पना नहीं है। आदर्श राजव्यवस्थाके सूत्र ऋग्वेदसे लेकर आधुनिक कालतक एक जैसे हैं। अंग्रेजी सत्ताके समय भारतको साम्राज्यवादका शोषण क्षेत्र बनानेकी कोशिशें की गयीं। अंग्रेजी सत्ताका उद्देश्य भारतकी जनताको सुन्दर प्रशासन देना नहीं था। वे यहांसे कच्चा माल इंग्लैंड ले जाते थे। उसके उपयोगसे अंग्रेजी ब्रांडकी वस्तुएं बनाते थे। यहांसे कपास इंग्लैंड जाता था। वहांसे मेड इन इंग्लैंडके कपड़े बनकर आते थे। भारतीय व्यापारी और किसान कर्जमें डूब गये थे। अंग्रेजोंका प्रशासन संवेदनहीन था। ईसाई मिशनरी अंग्रेजी सत्ताके दुरुपयोगसे धर्मांतरण कराते थे। लेकिन भारतीय संस्कृति और दर्शनका डंका चारों ओर पिट रहा था। भारतीय प्रशासनके लिए इंग्लैंडसे सिविल अधिकारी आते थे। मैक्समूलर भारतीय दर्शन और संस्कृतिके व्याख्याता थे। उन्होंने भारत आनेवाले सिविल अधिकारियोंको पढ़ाया था कि दुनियाका सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क भारतवासियोंका है। संस्कृत दुनियाकी आदर्श भाषा है। भारतीय दर्शन विज्ञानको ध्यानसे समझकर स्वयंका निजी जीवन और समाजको श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। यह बातें भारतका कोई व्यक्ति नहीं कह रहा था। जर्मनीके विद्वान मैक्समूलर भारत जानेवाले सिविल अधिकारियोंको भारतको समझनेकी प्रेरणा दे रहे थे। उनका सारा भाषण ह्वाट इंडिया कैन टीच असके नामसे संकलित है। अंग्रेजी प्रशासकोंको भारत समझना जरूरी था। मोटे तौरपर अंग्रेजी शासन और वैधानिक व्यवस्थाकी वास्तविक शुरुआत भारत शासन अधिनियम १९३५ से होती है। संविधान निर्माताओंने भारतीय प्रशासनके गठनमें १९३५ के अधिनियमकी बातें लगभग यथावत रखी हैं।

राजनीतिक कार्यपालिका विधायी सदनोंके प्रति जवाबदेह है। मंत्रीगणोंको सम्बंधित प्रश्नोंके उत्तर तैयार करानेमें प्रशासनकी मुख्य भूमिका होती है। प्रश्नोत्तरोंकी तैयारीमें हुई त्रुटिका खामियाजा सदनमें मंत्रीको भुगतना पड़ता है। जन-प्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियोंके मध्य भी उत्साहवर्द्धक सम्बंध नहीं दिखाई पड़ते। बहुधा विधायकों और सांसदोंसे प्रशासनिक अधिकारियोंके बीच अप्रिय कलहकी खबरें आती रहती हैं। टेलीफोन न उठाने और जन-प्रतिनिधियोंके पत्रोंके उत्तर न देनेकी शिकायतें पुरानी हैं। विधायी सदनोंकी समितियोंमें प्रशासनिक अधिकारियोंको सम्बंधित विषयपर साक्ष्यके लिए आमंत्रित किया जाता है। अध्यक्ष विधानसभाके रूपमें मेरा अनुभव रहा है कि समितिके भीतर जन-प्रतिनिधियों द्वारा पूछे गये उत्तर अधिकारियोंको नागवार लगते हैं। निर्वाचित सरकारके द्वारा बनाये गये कार्यक्रमोंको पूरा करना सिविल अधिकारियोंकी जिम्मेदारी है। विकास कार्योंको ठीकसे सम्पन्न कराना भी इन्हींकी जिम्मेदारी है। लेकिन तमाम राज्योंमें भिन्न-भिन्न विभागोंके लिए निर्धारित बजटका बड़ा भाग उपयोगमें ही नहीं आता। आजके इस महत्वपूर्ण दिवसपर सिविल अधिकारियोंकी जिम्मेदारियों और उनकी कठिनाइयोंपर बेबाक चर्चा होनी ही चाहिए।

स्वयंको पाना

❐ **ओशो**

विराटको पानेके लिए कुछ पानेकी आकांक्षा नहीं होनी चाहिए, हो तो फिर बाधा हो जायगी। ध्यान किसलिए करते हैं। यदि कोई आपसे पूछे, प्रेम किसलिए करते हैं तो क्या कहेंगे। प्रेम अपनेमें ही आनन्द है। उसके बाहर और कोई कारण नहीं जिसके लिए प्रेम करते हों और यदि कोई किसी कारणसे प्रेम करता हो तो हम फौरन समझ जायंगे कि गड़बड़ है, यह प्रेम सच्चा नहीं है। मैं आपको इसलिए प्रेम करता हूं कि आपके पास पैसा है, वह मिल जायगा तो फिर प्रेम झूठा हो गया। मैं इसलिए प्रेम करता हूं कि मैं परेशानीमें हूं, अकेला हूं, आप साथी हो जायंगे। वह प्रेम झूठा हो गया। वह प्रेम न रहा। जहां कोई कारण है वहां प्रेम न रहा, जहां कुछ पानेकी इच्छा है वहां प्रेम न रहा। प्रेम तो अपने आपमें पूरा है। ठीक वैसे ही, ध्यानके आगे कुछ पानेको जब हम पूछते हैं क्या मिलेगा। वह हमारा लोभ पूछ रहा है। मोक्ष मिलेगा कि नहीं, आत्मा मिलेगी कि नहीं। वह पूछ रहा है हमारा लोभ। वही जो हमारी हमेशा लाभ, लोभकी जो चिंतना है, वह काम कर रही है। नहीं, मैं आपसे कहता हूं, कुछ भी नहीं मिलेगा और जहां कुछ भी नहीं मिलता वहीं वह मिल जाता है, सब कुछ जिसे हम कहें। जिसे हमने कभी खोया नहीं, जिसे हम कभी खो नहीं सकते, जो हमारे भीतर मौजूद है। यदि उसको पाना हो जो हमारे भीतर मौजूद है तो कुछ और पानेकी चेष्टा सार्थक नहीं हो सकती है। सब पानेकी चेष्टा छोड़कर जब हम मौन, चुप रह जायंगे तो उसके दर्शन होंगे जो हमारे भीतर निरन्तर मौजूद है। कुछ वहां मौजूद है, उसे पानेके लिए अक्रियामें हो जाना जरूरी है, सारी क्रियाएं छोड़कर अक्रियामें हो जाना जरूरी है। यदि मुझे आपके पास आना हो तो दौड़ना पड़ेगा, चलना पड़ेगा और यदि मुझे मेरे ही पास आना हो तो फिर कैसे दौड़ूंगा और कैसे चलूंगा। यदि कोई आदमी कहे कि मैं अपनेको ही पानेके लिए दौड़ रहा हूं तो हम उससे कहेंगे, तुम पागल हो, दौड़नेमें तुम समय खराब कर रहे हो। दौड़नेसे क्या होगा। दौड़ते हैं दूसरेतक पहुंचनेके लिए, अपनेतक पहुंचनेके लिए कोई दौड़ना नहीं होता। अपनेतक पहुंचनेके लिए सब दौड़ छोड़ देनी होती है। क्रिया होती है कुछ पानेके लिए, लेकिन जिसे स्वयंको पाना है उसके लिए कोई क्रिया नहीं होती, सारी क्रिया छोड़ देनी होती है। जो क्रिया छोड़कर ठहर जाता, वह स्वयंको उपलब्ध हो जाता है। यह स्वयंको उपलब्ध कर लेना सब उपलब्ध कर लेना है। जो इसे खो देता है वह सब पा ले तो भी उसके पानेका कोई मूल्य नहीं। अज्ञानकी स्थितिमें सिवाय ध्यानके कोई और मार्ग नहीं है और ध्यान अज्ञानका कृत्य नहीं है। ध्यानका मतलब है जो सब हमारे स्मरणमें हैं उन सबको गिरा देना और एक स्थिति लानी है केवल चेतना मात्र रह जाय।

महावीर के जन्मोत्सव पर ढोल बजाओ गली-गली

विजय कुमार जैन मंत्री भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर समिति भगवान महावीर का नाम लेते ही जैनधर्म की स्मृति मन मस्तिक में ताजा हो जाती है। वर्तमान समय में सारा विश्व जैनध ार्म के अस्तित्व को भगवान महावीर से स्वीकार करता है। जबकि वास्तविकता यह है कि भगवान महावीर जैनधर्म के 24वें तीर्थकर है, भगवान महावीर से पूर्व 23 तीर्थकर और हो चुके हैं। आज भगवान महावीर के संदेशों की अत्यधिक आवश्यकता है। यदि सारा विश्व जीओ और जीने दो के मार्ग पर चले तो सम्पूर्ण विश्व में शांति की स्थापना की जा सकती है। अहिंसा परमो धर्म सुनने में आज पुराना लगता है लेकिन इस पंक्ति का अर्थ बहुत गहरा और तात्विक है। अभी कुछ समय पूर्व वर्तमान प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी फेसबुक के ऑफिस में लंदन गये थे, तो उनसे वहां के अधिकारियों ने बोर्ड पर एक मैसेज लिखने को कहा, उन्होंने मैसेज में अहिंसा परमो धर्म ही लिखा। महात्मा गांधी जैसे महापुरुष ने इसका मनन और चिंतन किया और अपने जीवन में उतारा, जिससे देश में आजादी की स्थापना की गयी। आइये जाने भगवान महावीर के बारे में - प्राचीन मान्यतानुसार भगवान महावीर का गर्भ एवं जन्मकल्याणक- जैन मान्यतानुसार भगवान की जीवन चरित्र को पाच कल्याणकों में विभक्त किया है-गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान एवं मोक्षकल्याणक। सर्वप्रथम भगवान गर्भ में आते हैं। भरतक्षेत्र के विदेह नामक देश संबंधी कुण्डलपुर नगर के राजा सिद्धार्थ के आंगन में प्रतिदिन साढ़े सात करोड रत्नों की धारा होने लगी। आषाढ शुक्ला षष्ठी के दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्र में राजा सिद्धार्थ की महारानी प्रियकारिणी (त्रिशला) ने सात खण्ड के नद्यावर्त महल में पिछली रात्रि के अतिम प्रहर में सुंदर-सुंदर सोलह स्वप्न देखें, जिससे उसके मन में प्रसन्नता हुई। सोलह स्वप्नों के पश्चात् देखा कि मुख में हाथी प्रवेश कर रहा है, जिसका अर्थ महारानी त्रिशला प्रातः उठकर अपने प्राणप्रिय महाराज से पूछती है और महाराजा बताते है कि महारानी इन स्वप्नों को देखने से इस युग के महापुरुष व तीनो लोकों में जगत पूज्य पुत्र को जन्म देगी और वह बालक का जीव तुम्हारे गर्भ में प्रवेश कर चुका है। तत्काल जम्बूद्वीप के मध्यलोक से देविया महारानी की सेवा को आती है और निरतर 9 महीने तक आठो देविया श्री, ह्री, घृत्ति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी, शांति, पुष्टि माता की सेवा में तत्पर रहती है। महारानी त्रिशला खूब प्रसन्नमना आंदित होती है एवं देवियों के नाना प्रकार के गूढ़ (कठिन) प्रश्नों के उत्तर देती है। धीरे-धीरे वह दिन भी आ जाता है, जिसका तीनों लोकों में प्राणी मात्र को इंतजार था। तीर्थंकर बालक के जन्म के विषय में आगम (शास्त्र) में लिखा है-

जनम चैत्र सित तेरस के दिन कुण्डलपुर कन वरना।
सुर गिरि, सुर गुरु पूज, रचायो मै पूजो भव हरना।।

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन आर्यमा नाम के शुभ योग में माता त्रिशला ने पूर्व दिशा के सदृश तीर्थकर बालक को सूर्यरूप में जन्म दिया। उस समय तीनों लोकों में बाजे बिना बजाये बज उठते है। शास्त्रों में उल्लेख है कि भगवान के जन्म के समय साढ़े बारह करोड प्रकार के बाजे बिना बजाये बज उठते है। सौधर्म इन्द्र का आसन कम्पायमान हो जाता है एवं नरको में भी क्षणभर को शाति हो जाती है। कल्पवृक्षो से पुष्प बरसने लगते हैं। सभी स्थानों पर आनंदमयी वातावरण हो जाता है। भगवान के जन्मकल्याणक मनाने हेतु स्वर्ग से सौधर्म इन्द्र कुण्डलपुर नगरी आ जाता है। पिता की आज्ञा से नवजात तीर्थकर शिशु को सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर ले जाकर 1008 कलशों से महाभिषेक करता है एवं स्वर्गों से लाये हुए सुंदर वस्त्राभूषण से प्रभू को सुसज्जित करता है। असख्यात देव-देविया प्रभु का जन्मकल्याणक मनाने स्वर्गों से आते हैं।एक बार संजय और विजय नामक दो महामुनियों को किसी पदार्थ में सदेह हुआ और वे भगवान महावीर के समीप दर्शन करने पहुंचे। भगवान के दर्शन मात्र से उनका संदेह दूर हो गया। खूब भक्तिपूर्वक उन्होंने बालक को सन्मति नाम प्रदान किया। किसी समय स्वर्ग में वीर प्रभु के गुणों की चर्चा इन्द्र सभा में हो रही थी। एक संगम नामक देव ने भगवान की परीक्षा लेने की सोची। भगवान अनेक राजकुमारों के साथ बालकीड़ा कर रहे थे, तब वह देव भयंकर सर्प बनकर वृक्ष से लिपट गया। सभी बालक भयभीत हो गये, लेकिन महावीर तीर्थंकर बालक साप के फन पर चढ़कर खेलने लग गये। जैसे माता की गोद मे बालक खेलते है। उस समय उस निर्भीकता के कारण भगवान का नाम संगम देव ने महावीर रखा।

भगवान महावीर के पांचों कल्याणक के पवित्र है बिहार की धरती

तपकल्याणक- धीरे-धीरे कुमार काल बीत गया यौवन में प्रवेश हुआ और माता-पिता बेटे को लेकर सुंदर स्वप्न सजाने लगे कि एक सुंदर सी बहु घर लेकर आयेंगे। घर में बहु के साथ-साथ खुशहाली आयेगी। लेकिन होनी को कुछ और मजूर था। विवाह का प्रस्ताव युवराज ने ठुकरा दिया। माता-पिता के सपने बिखर गये। बहुत समझाया कि अपने महलों में क्या कमी है, किसी प्रकार की कमी हो, तो हमें बताओ, लेकिन युवराज महावीर नहीं माने। उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया। तत्क्षण ही भगवान को पूर्व भव का स्मरण हो गया और सोचने लगे संसार क्षणभंगुर है एक दिन सबको जाना है। वैराग्य भावना का चिंतन करते हुए मगसिर वदी दशमी के दिन प्रभु ने दीक्षा ग्रहण कर ली। सभी वस्त्राभूषण उतारकर फेंक दिया। दिगम्बर दीक्षा ग्रहण कर ली। नग्न हो गये और अपनी आत्मा में लीन होकर तप में खड़े हो गये। कूल ग्राम के राजा कूल ने भक्तिपूर्वक पडगाहन किया एवं नवधा भक्तिपूर्वक भगवान महावीर को प्रथम आहार दिया। फलस्वरूप राजा कूल के घर पंचाश्चर्य (रत्नों) की वृष्टि हुई। पुनः भगवान महावीर वन जाकर ध्यान में लीन हो गये।

भगवान महावीर पर उपसर्ग- भगवान महावीर पर उज्जयिनी के अतिमुक्त वन में उपसर्ग हुआ। लेकिन भगवान प्रतिमायोग में विराजमान थे। रुद्र अपनी दुष्ट विद्याओं से भगवान पर उपसर्ग कर रहा था एवं पाप कर्म को संचित कर रहा था। अंत में जब उपसर्ग करके हार गया, तब भगवान को %महति महावीर% नाम से सबोधन किया। भगवान ने सती चंदना के उपसर्ग का निवारण किया। सती चंदना बेडियों में जकड़ी थी। भगवान महावीर को देखते ही बेडिया टूट गई व सती चंदना ने भगवान का पडगाहन करके नवधाभक्तिपूर्वक आहार दिया। पुनः चंदना ने भी आगे चलकर दीक्षा ग्रहण कर ली।

केवलज्ञानकल्याणक- भगवान महावीर ने बारह वर्ष तक तप किया। बिहार के जृंभिका ग्राम के समीप ऋजुकूला नदी के तट पर भगवान मनोहर नाम के वन में रत्नमयी एक बड़ी शिला पर शाल वृक्ष के नीचे बेला का नियम लेकर प्रतिमायोग से विराजमान हुए। वैशाख शुक्ला दशमी के दिन भगवान को केवलज्ञान प्राप्त हो गया। आत्मा ने परमात्मा का रूप ले लिया। स्वर्ग से सौधर्म इन्द्र व धनकुबेर एवं अन्य इन्द्रों ने भगवान महावीर के केवलज्ञान कल्याणक की पूजा की। भगवान की दिव्यध्वनि (प्रवचन) राजगृही के विपुलाचल पर्वत पर हुई, जो आज भी प्रथम देशना स्मारक के नाम से प्रथम पहाड पर स्थित है।भगवान महावीर के मुख्य उपदेश- जैनधर्म के शाश्वत नियमानुसार तीर्थंकर महावीर ने प्राणीमात्र के कल्याण हेतु अनेक अमूल्य सिद्धान्त बताएं, उनमें से कुछ मुख्य है।पांच अणुव्रत का उपदेश दिया-हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह। इन पांचों पापों के अणु अर्थात् एक देश त्याग को अणुव्रत कहते हैं एवं इनके नाम अहिसाणुद्र, सत्याणुव्रत, अचौर्याणुव्रत, ब्रह्मचर्याणुव्रत, परिग्रहपरिमाण अणुव्रत ये मुख्य है। भगवान महावीर ने मुख्यरूप से जिओ और जीने दो को अति महत्व दिया। अहिसा परमोधर्मः भगवान का मुख्य उपदेश था, प्राणी मात्र के ऊपर दया का भाव रखो एवं सात व्यसनों का पूर्णरूप से त्याग करो।

मोक्षकल्याणक- अंत में विहार (चलते) हुए भगवान महावीर बिहार प्रदेश के पावापुरी नगर में पहुंचे। वहां मनोहर नाम के वन के भीतर अनेक सरोवरों के बीच मणिमयी शिला पर विराजमान हो गये। कार्तिक कृष्णा अमावस्या को भगवान ने मोक्ष प्राप्त कर अघातिया कर्मों का नाश कर दिया। भगवान महावीर 72 वर्ष की आयु में मोक्ष चले गये। जैनधर्मानुसार तभी से दीपावली का पर्व प्रारंभ हुआ एवं आज तक पावापुरी जल मंदिर में दीपावली की प्रत्युष बेला में निर्वाणलाडू चढाकर दीपावली मनाते हैं।

महावीर जयती कैसे मनाते हैं- इस दिन प्राय जैन समाज में सभी धर्मावलम्बी प्रातः प्रभातभेरी (शोभा यात्रा) में सारे नगर में भगवान की जय-जयकार व हाथों में पचरगी एव केशरिया ध्वज लेकर भगवान के प्रतिपादित सिद्धान्तों के नारे लगाते है। मध्यान्ह काल में भव्य शोभायात्रा निकालते हैं, जिसमें भगवान की प्रतिमा लेकर रथ पर बैठते हैं एवं बैण्ड बाजे के साथ शहर के मुख्य मार्गों से रथयात्रा निकालते है। सभी जैन समाज अपने प्रतिष्ठान बद रखते हैं। जगह-जगह प्याऊ से पानी एवं शर्बत पिलाते हैं एवं फल बाटते है।जैन समाज के पुरुष लोग केशरिया धोती दुपट्टा व स्त्रिया केशरिया साड़ी पहनकर प्रभु का नारियल जल, मौसमी रस, सतरारस, दूध, दही, घी, सर्वोषधि, हरिद्रा आदि से भगवान का महाभिषेक करते हैं। जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने देखा कि कुण्डलपुर तीर्थ पर आज काल के प्रभाव से जीर्ण-क्षीर्ण हो गया है। कुण्डलपुर नगरी भी समय के साथ-साथ वैभव हीन हो गयी।

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा

https://t.me/AllNewsPaperPaid

संपादकीय

अकेले-अकेले ही दुनिया में बसर करने आए हैं लोग!

सभी को पता है। इस जहान में हर कोई अकेले ही आता है, अकेले ही जाता है। इस दुनिया में आंखें खुलते ना जाने कितने रिश्ते नाते जूडते हैं और कहने के लिए तो पूरी दुनिया अपनी है, लोग अपने

हैं, परिवार- समाज के लोग, एक कोई दूसरा नहीं, अपने ही सब लोग हैं। पर आधुनिक जमाना पूरी तरह से बदल चुका है। संस्कार और अपनत्व की भावना बस कहने के लिए ही रह गई है।अपना बना कर ही लोग अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं।अगर आप से स्वार्थ सिद्ध नहीं हो सकता है, तो वे आपसे दूरी बनाते हैं और अपनी बात कुछ ऐसे करेंगे, जैसे लगेगा कि आप उनके लिए बेगाने हो। यही समय में दुनिया के आधुनिकता का चलन है। इस चलन को सभी ने अपना लिया है। घर के लोगों भी जिन्हें परिवार कहते हैं, समाज कहते हैं, सबने बस अपने स्वार्थ सिद्धि का ही माध्यम बना लिया है, अपना कहलाने के लिए। यह भी कि इस जहान में अकेले हम, अकेले तुम। इस सच्चाई को हर कोई, जो इस धरा पर आया है, वह जानता है। उस अदृश्य शक्ति को? जिसे हमें सभी भगवान कहते हैं, इस धरा पर माता पिता को माध्यम बनाकर अवतरित किया है। उनके सिवाय कौन है अपना। कहने भर के लिये तो सभी अपने ही हैं, पर इस आधुनिक काल में संस्कार कुछ इस कदर कुंद हो गया है कि अपना कहाने के लिए हर कोई तैयार है। लेकिन अपना बनने के लिए कोई तैयार नहीं। सभी अपने स्वार्थ में हीं, आपको अपना कहेंगे और स्वार्थ पूर्ति के बाद आप से मुंह मोड़ लेंगे। यह सत्य है आज के इस आधुनिक काल में कहां कोई अपना है? स्वार्थ के वशीभूत हो सभी अपने को एक दूसरे को अपना ही कहते हैं। लेकिन संगे भी अपना नहीं हो पाते, कहने को तो सभी अपने होते हैं। अपना तो वही होता है, जो आपके हर दुख- दर्द, समस्याओं के उलझन में आपके साथ खड़ा हो। आपके हर एक बात को सही मानकर उसे पूरा करता हो। पर आज स्थिति यह है कि जिनसे एक बार बात कर लिजिए वही कहेंगे, हम आपसे अलग थोड़े ही हैं ? लेकिन इन बातों में सच्चाई क्या है, कौन अपना होता है, जगत में, सभी तो एक दूसरे से अलग होते हैं, रंग रुप में बोलचाल में, भाषा में और तो और अपनी बातों में ही अलग पहचान देते हैं।कोई लाख कहे कि हम आपसे अलग नहीं, हम तो आपके ही हैं, लेकिन यह बात भर की बात है, जो सही हो ही नहीं सकती और आज के आधुनिक जुग जमाने में तो यह बिल्कुल ही सत्य नहीं हो सकता। क्योंकि सभी अपने अपने फेरे में लगे हैं, सबका अपना ही स्वार्थ होता है और जहां स्वार्थ होता है, वहां अपनापन होता ही नहीं।अपनापन तो एक भाव है, जो आदमी यानी मनुष्य के अंदर समाहित होता है और वह भाव तभी उत्पन्न होता है, जब व्यक्ति एक दूसरे के प्रति आत्म विभोर हो जाए, आत्मा आत्मा का संबंध आत्मा का भाव ही अपनापन कहलाता है। लेकिन आज आत्माता के भाव का ही अभाव है। लोग लाख कहे कि हम आपसे अलग नहीं हैं, लेकिन वह अपने स्वार्थ में वशीभूत होकर ऐसा कहते हैं। क्योंकि वह जानते हैं कि आपसे उनको जो मिलना है, बस यही कह कर मिलना है। वह आप को पटाना चाहते हैं। इसीलिए ऐसी बात बोल कर आपके साथ आत्मीयता जगाते हैं। लेकिन जान लीजिए आज कई लोग बस यही चाहते हैं कि आप से उनका मतलब सधता रहे, उनका कम चलता रहे। वे आपके मतलब के नहीं हो सकते। वह जानते हैं कि वह आपके लिए कुछ नहीं कर सकते और थोड़ा बहुत कर दिया, तो उसका इतना उलाहना इतना देगे। जैसे आपके लिए उन्होंने पहाड़ तोड़ डाला है, और आप उनके लिए जो किया है वह रत्ती भर का काम था, जो आपने कर दिया। उनका एहसान आप पर पर होगा।आपका नहीं। आज के लोग बस बात बनाकर अपने स्वार्थ में जी रहे हैं। दूसरे को धूर्त और मूर्ख समझते हैं और अपने को काफी चालाक हर व्यक्ति में यही भाव समा चुका है। खासकर आज के युवा पीढ़ी में तो या कुछ ज्यादा ही पैठ बना लिया है। बस कुछ लोग ही बचे हैं, इनके पास संस्कार है सच्चाई है और बुड़बक समझ कर जिन्हें लोग ठगते रहते हैं। जिन लोगों में यह सब बातें होती हैं, वे एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं और एक दो बार के बाद वे उनसे कन्नी कटाने लगते हैं।करनी धरनी कुछ नही, बस बोलनी होती है। आज ऐसे ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं, जो अपना कह कर गला काट लेते हैं। धूर्त बना कर निकल जाते हैं, आप बस उन्हें अपना कहते रह जाते हैं। वही उलट कर फिर आपको दुश्मन साबित करता है। अपना काम निकालने वाले लोगों की, ठगने वाले लोगों की संख्या, इस आधुनिक युग में काफी बढ़ गई है। कोई भी अपना नहीं है। यहा तक कि बाप बेटे का नहीं है, बेटा बाप का नही होता, पति-पत्नी की नहीं है, पत्नी-पति का नहीं, भाई भाई का नहीं है, भाई बहन का नहीं। कोई रिश्तेदारी सच्ची नहीं है। सभी रिश्तेदारिया बस मतलब की ही हो कर गई है। घर में अपना कोई नहीं, समाज में अपना कोई नहीं, देश में अपना कोई नहीं, यही आज के युग की सच्चाई है। बस अपने बल पर, अपने व्यक्तित्व पर, आपको जीना है। किसी भी व्यक्ति के इस बात पर नहीं चलना है कि वह आपका अपना है। अगर आप उसकी बातों पर चलते हैं, तो निश्चित रूप से इस जीवन में कठिनाइयों का अंबार खड़ा कर सकते हैं, कर लेंगे यह सच्चाई है। आज की यह भी सच्चाई है कि लोग अपना कार्य कर आपको बरगलाते हैं। बरगला कर आंखों में धूल झोकते है और आप बस पछतावे में उन्हें देखते रहते हैं।उनके साथ आप कुछ कर भी नहीं सकते। आज जिंदगी जीने वाले लोगों को यह मानकर चलना चाहिए कि अपने अलावा कोई और उनका नहीं है।जो है, बेखुद है और अगर कोई है, तो वह उनके साथ हाथ और आत्मा में विश्वास। अपना शरीर, अपना मस्तिष्क और अपनी चिंता। बस यही है, आज की सच्चाई और इस सच्चाई से कोई दूर नहीं जा सकता, क्योंकि अब वो संस्कार नहीं रहे, अब वो बात नहीं रही, जो कभी हुआ करता था। समाज में, व्यक्तित्व के विकास में, व्यक्ति के सहयोग में और व्यक्ति की भलाई बाली सोच में। अब तो सोच ही बदल गई है।आधुनिकता का छाया सगर छाया हुआ है और यही छाया सबको अपनापन से दूर किए हुए हैं। आज अपना कहने वालों की संख्या बहुतायत है, लेकिन अपना होने वालों की संख्या नगण्य है। इस जहान में बस अपने को अकेला खड़ा देखना ही, अपने व्यक्तित्व की बस की बात रह गई है। क्योंकि लोग आज उनके ही होते हैं, जो अपना कह कर झूठा दावा करते हैं। बस गीत के बोल हैं ना कि -"कहे के त सब केहू आपन, आपन कहावे वाला कौन बा? यही सच्चाई है और इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता। अपना कहने वाले लोगों की संख्या अब नहीं रही। अपना कहने वाला कौन, यह तो सभी कहते हैं, लेकिन आज की सच्चाई वस यही है कि कोई अपना नहीं है। इस धरा पर अकेले ही आए हैं और अकेले ही जाना है।बस इस बात को मान कर चलिए कि आप हैं, तो सब है आप नहीं तो कुछ भी नहीं और इसी मूल मंत्र से अपने जीवन को सवारिए, कुछ ऐसा कीजिए जिंदगी में जो जिंदगी से जाने के बाद भी लोगों के आप जेहन में बसे रहे।यही तो जिंदगी की सार्थकता कहलाएगी। जरूरी यह भी है कि अपने जीवन को लोगों की सेवा में समर्पित कीजिए, भले ही लोग आपके कर्म को लोग सराहे या न सराहे कोई फर्क नहीं पड़ता, हां कहने के लिए सब अपने हैं, लेकिन अगर आप ने उनके मकसद को पूरा नहीं किया तो, फिर वह आप को तरजीह नहीं ही देंगे। यह तो तय सी बात है। लेकिन इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता और लोग अपना कह कर के ही अपने स्वार्थ को साधते रहते, आज यही चलन चल गया है इस आधुनिक काल में, हर कोई अपने हित साधन में ही लगा है, स्वार्थ सिद्धि के उपरांत वह किस तरह सेआँखे मोड़ लेता है, जैसे उसने पहले कभी आपसे मिला ही नहीं। दुनिया के लोग आज इस संस्कार में अपने आप को ढाल चुके हैं कि पता ही नहीं चलता मानवता का यह कौन सी रीत है, संस्कृति और संस्कार तो समाज से विलुप्त हो ही चुका है। बस सबको अपने आप से मतलब रह गया है और अपना बना कर स्वार्थ सिद्ध करना! चलिए जब इस दुनिया में आए हैं, तो सबके साथ चलना भी है।

प्रभात वर्मा

चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर: एक कालजयी महापुरुष

भगवान महावीर का जन्म किसी अवतार का पृथ्वी पर शरीर धारण करना नहीं है, नारायण का नर शरीर धारण करना नहीं है, नर का ही नारायण हो जाना है। साधना की सिद्धि परमशक्ति का अवतार बनकर जन्म लेने में अथवा साधना के बाद परमात्मा में विलीन हो जाने में नहीं है, बहिरात्मा के अन्तरात्मा की प्रक्रिया से गुजरकर स्वयं परमात्मा हो जाने में है। महावीर मानव ही नहीं महामानव थे। उन्होंने हिंसा से पूरी तरह विरत रहने की बात कही। सादगी और ब्रह्मचर्य के मार्ग को सर्वोत्तम बताया। आज विश्व में भगवान महावीर के उपदेशों की प्रासंगिकता बढ़ गई है। भगवान महावीर की जयंती को हम जन्म कल्याणक कहते हैं। जन्म, जयंती जैसे शब्द जैन परंपरा में प्रयोग नहीं किए जाते हैं। भगवान का जन्म पूरे विश्व के कल्याण के लिए हुआ है। महावीर स्वामी द्वारा दिए गये उपदेश हो या श्लोक, पत्थर पर खुदे आलेख हो या चित्रित मुद्राएँ, पवित्र मंत्र हो या भावपूर्ण भजन जैन अनुयायियों के लिए तो महत्वपूर्ण है ही साथ-साथ उनके जीवन जीने के सिद्धांत भी है। वे सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, दान, सेवा, पूजन, व्रत, साधना, प्रार्थना आदि का अनुसरण करते हुए जीवन यापन करते हैं और बड़ी धूम से जयंती मनाते हैं। भगवान महावीर का जन्म और परिवार: ईसा से 599 वर्ष पहले वैशाली के कुण्डलपुर गांव में पिता सिद्धार्थ और माता त्रिशला के यहाँ तीसरी संतान वर्द्धमान के रूप में चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि को जन्म लिए। मान्यताओं के अनुसार, भगवान महावीर ने 12 वर्ष कठोर तप किया था, जिससे उन्होंने अपनी सभी इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर ली थी। बाद में उन्होंने दिगंबर स्वरूप को स्वीकार कर लिया। यही वर्द्धमान बाद में स्वामी महावीर बना। महावीर को ह्यवीरह्ल, ह्यअतिवीरह्ल और ह्यसन्मतिह्ल भी कहा जाता है। बिहार के मुजफ्फरपुर जिले का आज का जो बसाढ़ गाँव है वही उस समय का वैशाली था। वर्द्धमान के बड़े भाई का नाम था नंदिवर्धन व बहन का नाम सुदर्शना था। वर्द्धमान का बचपन राजमहल में बीता। वे बड़े निर्भीक थे। जन्म से ही अतींद्रिय ज्ञानी थे। आठ बरस के हुए, तो उन्हें पढ़ाने, शिक्षा देने, धनुष आदि चलाना सिखाने के लिए पाठशाला में भेजा गया। भगवान महावीर के उपदेश जीवनस्पर्शी है: जब विश्व में हिंसा का बोलबाला था, उस समय महावीर ने जन्म लिया और विश्व को अहिंसा का पाठ पढ़ाते हुए सभी कुरीतियों को खत्म किया। सभी मानवों को जियो और जीने दो का मूलमंत्र दिया। इसी मंत्र से समग्र विश्व में शांति की स्थापना हुई और सर्व समाज के व्यक्तियों ने अहिंसा को अपनाकर सुख और शांति से जीवन यापन करने लगे। महावीर का संपूर्ण जीवन तप और ध्यान की पराकाष्ठा है। महावीर के उपदेश जीवनस्पर्शी हैं, जिनमें जीवन की समस्याओं का समाधान निहित है। ह्यजियो और जीन दोह्ल जैन पंथ का मूलमंत्र है। जैन पंथ में अहिंसा, कायरों का शस्त्र नहीं, वीरों का शस्त्र है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की मंगल भावना, अहिंसा का अमूल्य विचार है। महावीर ने कहा हिंसा से हिंसा शांत नहीं होती : महावीर स्वामी ने मांसाहार का विरोध कर, शाकाहार को हर दृष्टि से लाभप्रद बताया। वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो भी मांसाहार मनुष्य में हिंसक प्रवृत्ति को जन्म देता है। उच्च रक्त-चाप, मधुमेह, हृदय रोग जैसे गंभीर बीमारियां विकसित होती हैं। अहिंसा के महानायक महावीर स्वामी ने जल, वृक्ष अग्नि, वायु और मिट्टी तक में जीवत्व स्वीकार किया है। महावीर ने अहिंसा की व्याख्या करते हुए जल और वनस्पति के संरक्षण का भी उद्घोष किया। राग आदि दोष हिंसा के मूल कारण होते हैं। भगवान महावीर ने कहा था कि आत्मा में रागादि की उत्पति का होना हिंसा है और रागादि का नहीं होना अहिंसा है। भगवान महावीर ने 2500 साल पहले अहिंसा का सिद्धांत दिया था, वह आज पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। ढाई हजार साल पहले पत्थरों से युद्ध होते थे, लेकिन आज जो आधुनिक अस्त्रों का इस्तेमाल होता है, वह अधिक घातक व हिंसक है। आज निर्दयता एवं हिंसा की भावनाएं बढ़ी हैं। ऐसे में भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलने पर हम शांत हो सकते हैं। काया, वाणी और मन से हिंसा होती है। इनमें काया की हिंसा तो सरकार रोकती है और वाणी की हिंसा समाज रोकता है, लेकिन मन की हिंसा को धर्म ही रोक सकता है। उन्होंने अहिंसा को अमृत बताया तथा कहा कि इसे अपना कर व्यक्ति सुखी होगा और परिवार, समाज या देश द्वारा अहिंसा अपनाई जाएगी तो वे भी सुखी बन जाएंगे। महावीर के दर्शन सभी के जीवन दर्शन के लिए: लोक में महापुरुषों का जन्म जन-जीवन को ऊँचा उठाने और उनका हित करने के लिए होता है। भगवान् महावीर ऐसे ही महापुरुष थे। उनमें लोककल्याण की तीव्र भावना, असाधारण प्रतिभा, अद्वितीय तेज और अनुपम आत्मबल था। महावीर ने जीवन पर्यन्त अपने अमृत वचनों से समस्त मानव जाति को ऐसी अनुपम सौगात दी, जिन पर अमल करके मानव चाहे तो इस धरती को स्वर्ग बना सकता है। आज के परिवेश में हम जिस प्रकार की समस्याओं और जटिल परिस्थितियों में घिरे हैं, उन सभी का समाधान महावीर के सिद्धांतों और दर्शन में समाहित है। अपने जीवनकाल में उन्होंने ऐसे अनेक उपदेश और अमृत वचन दिए, जिन्हें अपने जीवन तथा आचरण में अमल में लाकर हम अपने मानव जीवन को सार्थक बना सकते हैं। भगवान महावीर का कहना था कि जो मनुष्य स्वयं हिंसा करता है या दूसरों से हिंसा करवाता है अथवा हिंसा करने वालों का समर्थन करता है, वह जगत में अपने लिए बैर बढ़ाता है। अहिंसा की तुलना संसार के सबसे महान् व्रत से करते हुए उनका कहना था कि संसार के सभी प्राणी बराबर हैं, अतः हिंसा को त्यागिए और ह्यजीओ व जीने दोह्ल का सिद्धांत अपनाइए। वे कहते थे कि संसार में प्रत्येक

जीव बराबर है, अतः आवश्यक बताकर की जाने वाली हिंसा भी हिंसा ही है और वह जीवन की कमजोरी है। उनके अनुसार छोटे-बड़े किसी भी प्राणी की हिंसा न करना, बिना दी गई वस्तु स्वयं न लेना, विश्वासघाती असत्य न बोलना, यह आत्मा निग्रह सद्पुरुषों का धर्म है। जो लोग कष्ट में धैर्य को स्थिर नहीं रख पाते, वे अहिंसा की साधना नहीं कर सकते। अहिंसक व्यक्ति तो अपने से शत्रुता रखने वालों को भी अपना प्रिय मानता है। उनका कहना था कि संसार में रहने वाले चल और स्थावर जीवों पर मन, वचन एवं शरीर से किसी भी तरह के दण्ड का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जैन परंपरा में ब्रह्मचर्य की महिमा: ब्रह्मचर्य की महिमा का गुणगान भारतीय संस्कृति, विशेषतः जैन धर्म की विशेषता रही है। ह्यब्रह्मह्ल शब्द का अर्थ हैं ह्यनिर्मल ज्ञान स्वरूप आत्माह्ल और उस आत्मा में लीन होने का नाम ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य आत्मा की आंतरिक शक्ति है, अनुशासित आचरण है। जैन धर्म एवं दर्शन में ब्रह्मचर्य के द्वारा अब्रह्म पर नियंत्रण का विस्तार से वर्णन है। ब्रह्मचर्य की महिमा का गुणगान करते हुए कहा गया है— एकमेव व्रतं श्लाघ्यं ब्रह्मचर्य जगत्त्रये। यद् विशुद्धि सामापन्नाः पूजयन्ते पूजितैरपि।। अर्थात एक ब्रह्मचर्य व्रत ही तीनों लोकों में प्रशंसनीय है जो कि विशुद्धि को प्राप्त हुए पूज्य पुरूषों के द्वारा भी पूजा जाता है। अनगार धमार्मृत में कहा गया है— ह्यजो पुरूष ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं, वे ही पुरूष सच्चे सुख—मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं ह्ल ह्यब्रह्मणि आत्मनि चरणं ब्रह्मचर्यं ह्ल स्वयं की आत्मा में रमण करना ब्रह्मचर्य है। इन्द्रिय संयम ही ब्रह्मचर्य है। आचार्यों ने कहा है जिस तरह रोग से मुक्ति पाने के लिये औषधि का सेवन आवश्यक है, उसी तरह भव रूपी रोग से मुक्त होने के लिये ब्रह्मचर्य की परम आवश्यकता है। ह्यब्रह्मव्रते परिनिष्ठो भव्य जीवो लौकान्तिकों भवेत्ह्ल ब्रह्मचर्य में निष्ठ भव्य जीव एक भवावतारी लौकान्तिक देव होता है। व्यवहार नय और निश्चय नय की अपेक्षा से मैथुन त्याग की क्रिया को व्यवहार ब्रह्मचर्य और अपने विशुद्ध आत्म स्वरूप में ही रमण करने का नाम निश्चय ब्रह्मचर्य है। अणुव्रत, महाव्रत, स्वदारसंतोषव्रत, ब्रह्मचर्य प्रतिमा आदि ब्रह्मचर्य के ही स्वरूप हैं/ नाम हैं। आचार्य प्रणीत ग्रंथों में ब्रह्मचर्य की महिमा का गुणगान किया गया है। अन्य धर्मों में भी ब्रह्मचर्य व्रत को महत्व दिया गया है। वीर शिवाजी, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी आदि अनेक उदाहरण हैं जब उन्होंने ब्रह्मचर्य की महिमा को बताया। इसके विपरीत कामवासना में फसकर गर्त में गिरने वालों के भी अनेक उदाहरण हैं। जैसे रावण यशोधरा (कुवडे के संग) चारूदत्त (वेश्या) धनश्री आदि। किसी भी देश या समाज का युवा वर्ग उसकी संपदा होती है। पर आज के परिप्रेक्ष्य में ब्रह्मचर्य व्रत को ध्यान में रखकर यदि हम दृष्टिपात करें, तो हम पाते हैं कि यह पीढ़ी यद्यपि साहस और बुद्धि से सम्पन है पर शांति से अशांति की ओर, सरलता से विषमता की ओर, सादगी से विलासता की ओर, संतोष से असंतोष की ओर यर्थाथ से दिखावा की ओर बढ़ रही है। भौतिकवाद ने सुखसुविधाओं के ढेर लगाकर मनुष्य को विलासी बना दिया और भोगवादी संस्कृति ने उसके विवेक पर परदा डालकर उसे विषय भोगों की उस अंधी दौड़ में शामिल कर दिया जिसका कोई अंत नहीं है। वस्तुतःदेखा जाये तो आज का वातावरण और दिनचर्या इस तरह से हो गयी है कि हम पाँचों इन्द्रिय और मन के विषयों के दास होते जा रहे हैं। दिन भर अनंत इच्छाओं का सागर हमारे मन में लहराता है हम वाणी और काया की अपेक्षा मन से अधिक पाप करते हैं। भगवान् महावीर का निर्वाण बिहार के पावापुरी में: भगवान महावीर ने 72 वर्ष की अवस्था में ईसापूर्व 527 में पावापुरी (बिहार) में कार्तिक (आश्विन) कृष्ण अमावस्या को निर्वाण प्राप्त किया। इनके निर्वाण दिवस पर घर-घर दीपक जलाकर दीपावली मनाई जाती है। भगवान् महावीर एक कालजयी और असाम्प्रदायिक महापुरुष थे। वे सचमुच प्रकाश के तेजस्वी पुंज और सार्वभौम धर्म के प्रणेता हैं। महावीर के दर्शन और सिद्धांतों में ही आधुनिक मानव जीवन की समस्याओं का समाधान निहित है। आवश्यकता है हम बदलें, हमारा स्वभाव बदले और हम हर क्षण महावीर बनने की तैयारी में जुटे। उनके उपदेश को अपने जीवन और आचरण में उतारें। महावीर की अहिंसा केवल उपदेशात्मक और शब्दात्मक नहीं है। उन्होंने उस अहिंसा को जीया और फिर अनुभव की वाणी में दुनिया को उपदेश दिया। आज विश्व हिंसा की ज्वाला में झुलस रहा है। अहिंसा के शीतल जल से ही उसे राहत मिल सकती है।

दस्तक प्रभात/राकेश बिहारी शर्मा

अभिनंदन

प्रेमवृष्टि कर कभी नयनघन सरसाते थे मन का उपवन। तिरस्कार की आग उगल वे जला गये मेरा चंदनवन।1। हां विनीति की देवि अचानक आज हुई इतनी उद्दण्डी। झूम रहे अरमां कदली से उन्मूलित कर गयी वितुण्डी।2। मिटा गयी अवदात ज्योत्स्ना चुरा ले गयी चांद बदरिया। पूनम की निशि में निरमोहिन अनवगाह भर गयी अंधिरिया।3। तोड़ दिया वह तरु निदाघ से चैन मिला जिसकी छांवों में। छोड़ दिया वह मीत निरंतर प्यार पला जिसकी बांहों में।4। किया उसे व्यपनीत हृदय से जिसे बिठाया था पलकों पर। दिया उसे ही फेंक प्रणय से जिसे सजाया था अलकों पर।5। किंतु कहां विलगाव भाव से मुझको छोड़ परे जाओगी। मेरे अंतर के दर्पण में गहरी ही धंसती जाओगी।6। फंसती जाओगी उलझन के तुम अपने ही बुने जाल में। जलती जाओगी जीवन भर स्वयं जलायी हुयी ज्वाल में।7। तिरस्कार की ठोकर खाओ रह जाओ हाथों को मलके। उतर जाय यह रूप खुमारी खुल जायें अलसायी पलकें।8। मुरझाये अधखिली कली और मिट जाये संसार स्वप्न का। पछताये खो चांद विभावरी साथ पकड़कर के उडगन का।9। बचा रहे विश्वास तनिक भी तो मत खो देना उस क्षण को। पलक बिछे होंगे स्वागत में व्याकुल होगा हृदय मिलन को। 10। बरस उठेंगें नयना विह्वल हाथ बढ़ेंगे आलिंगन को। गायेंगी यशगान दिशायें प्रिये तुम्हारे अभिनंदन को।11।

दस्तक प्रभात/शिवनाथ

उजाला

उजाला अपने जीवन में स्वयं उजागर करना पड़ता है, अँधियारा दूर करने के लिए दीपक स्वयं जलाना पड़ता है। सुख-दुख, अँधेरा- उजियारा, ये मन के वे भाव है जिन्हें इंसान को स्वयं अपनी कर्मठता से पाना और पार करना होता है। सुख और उजाला भगवान की वह देन है जो इंसान अपने मेहनत से वह अपने अच्छे भाग्य से प्राप्त करता है। वहीं दूसरी ओर अँधियारा हटाने के लिए और दुखों को सहने के लिए सहनशीलता की आवश्यकता पड़ जाती है। जो इंसान समभाव जीवन जी लेता है वही सही अर्थों में जीवन जीता है। जीवन की गतिशीलता में किसी को नहीं मालूम कि अगला पल कैसा होने वाला है। पर, यदि जीवन को हम मेहनत से सत्कर्मों से आगे बढ़ते हैं तो जीवन में उजाला ही उजाला होता है। साक्षरता का दीपक वह दीपक है जो इंसान के अपने जीवन को तो उजाला देता ही है साथ में दूसरों को भी प्रकाशित कर देता है। जो इंसान पढ़ लिखकर अपनी मंजिल पा लेता है वह जीवन में आने वाले हर अँधेरे को, दुख को दूर कर खुशी का जीवन जी लेता है। विद्या रूप धन जहाँ भी जाएगा अज्ञानता के अँधेरे को दूर हटा ज्ञान का प्रकाश ही फैलाएगा। बस याद रखनी है तो केवल एक ही बात, कभी स्वयं पर घमंड नहीं करना वरना सब पढ़ाई- लिखाई शून्य हो जाती है। ज्ञान रूपी प्रकाश भी अँधकार के साए में चला जाता है। ज्ञान रूपी उजाला अगर जीवन में साथ चलता है तो अंधकार रूपी बाधा कभी जीवन में नहीं आती। उजालों को अगर पाना है तो साक्षरता का दीप जलाइए मंजिल हमेशा पाएँगे, इस विश्वास से आगे बढ़ते जाइए।

दस्तक प्रभात/नीरजा शर्मा

सुभग वृत्तांत

भाई की शादी में अंततः भारत का भ्रमण दस वर्ष बाद उसे जीवन के महत्त्वपूर्ण उत्सव सा प्रतीत हो रहा था।न्यूयॉर्क में रहना भारतीय संस्कृति में जन्में व्यक्ति के लिए कारावास समान है।अगर जीवन यापन के लिए सुख सुविधा की लालसा न हो तो कोई भी देश छोड़ के विदेश में सांस लेने का स्वप्न भी न देखे।माता पिता और अपने घर को त्याग करना एक बहुत दुख दायक प्रक्रिया है। भारत में रहते हुए तो अगर कोई व्यक्ति अपने गांव या अपने घर समय न होने के कारण वापस भी न आएं तब भी उतना एकांकी अनुभव नहीं करता है।माता पिता की याद उसे देश वापसी के कुछ अवसर तो दे ही देता है। न्यूयॉर्क से दस वर्ष पूर्व जब वो भारत आई थी तब दोनों बेटों को दिल्ली, बंगलौर और बंबई के भ्रमण के साथ जयपुर भी लें गई थी।तब बड़ा बेटा ध्रुव थोड़ा समझदार था पर छोटा बेटा तब देश विदेश जैसे शब्द से अनभिज्ञ था।बेटे ध्रुव ने गाड़ी में बैठते ही कहा लुक मोम वो कुतुब मीनार है न यू शोड मी वी लास्ट विजिटेड।उसने बाहर झांक के देखा तो कचरे के ढेर के बीच पुतलीघर दिख रहा था। भोपाल में जन्म और फिर शिक्षा इंदौर से उसे अंततः पुणे में नौकरी की सेवा तक ले जाने वाला ये कठिन जीवन सच में जीवन नहीं अपितु एक पर्वत ही प्रतीत होता है।विवाह ऐसे तो परिचित में हुआ था उसका लेकिन एक निशब्द सा कुछ जो उनके बीच था वो अभी भी भावार्थ से कोसों परे था।पति जयैश आज जापान में अपनी सेवाएं पूरी निष्ठा से दे रहे है लेकिन सच है कर्तव्य निर्वाह करते करते हम बहुत से पारिवारिक और आनंद पूर्ण क्षणों से अछूते रह जाते है। उसके पति दिल्ली जैसी इतिहास पूर्ण जगह से थे इसलिए शायद वो अपने शहर में भी इतिहास समेटते भवनों में अब रूची लेने लगी है।इतिहास का जीवन में क्या महत्व है? ये प्रश्न भी अच्भित कर जाता है।इतिहास व्यक्ति को उसके जीवन परिदृश्य का मूल्यांकन करना सिखाता है।उसके देवर के फोटोग्राफर जैसे रचनात्मक कार्य से जुड़े होने के कारण भी उसमें अब घूमने फिरने और अनुभव करने का गुण अपने अंकुर से उसके विचारों को कलात्मक दृष्टिकोण देने लगा है। ध्रुव के इस प्रश्न से उसे सच में दिल्ली का कुतुब मीनार याद आ गया।दिल्ली में उसके पिता जी ने सब से पहले जब वो शायद ८ वर्ष की रही होगी कुतुब मीनार से कुछ ऐसे परिचय करवाया था के वो आज तक भूल नहीं पाई है। दक्षिण दिल्ली में कुतुब मीनार महरौली भाग में स्थित है।ये ईंट से बनी विश्व की सबसे ऊँची मीनार है। इसकी ऊँचाई 73 मीटर (239.5 फीट) और व्यास १४.३ मीटर है, जो ऊपर जाकर शिखर पर 2.75 मीटर (9.02 फीट) हो जाता है। फिर पिता जी ने आगे बढ़ते हुए कहां था इसमें ३७९ सीढियाँ हैं।मीनार के चारों ओर बने अहाते में भारतीय कला के कई उत्कृष्ट नमूने हैं, कुछ पास ले जाते हुए अपनी उंगलियों से चिन्हित करते हुए उन्होंने ये बताया था। उन्होंने अपनी मधुर अपितु भारी वाणी में बताया था के इसके निर्माण काल सन 1192 का हैं। यह परिसर युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर के रूप में स्वीकृत भी किया गया है। कहा जाता है कि ये मीनार पास के 27 किलों को तोड़कर और दिल्ली विजय के उपलक्ष्य मे किला के मलबे द्वारा बनाई गयी थी। इसका प्रमाण मीनार के अंदर कुतुब के चित्र से मिलता है। एक तथ्य के अनुसार ये मीनार वराहमिहिर का खगोल शास्त्र वेधशाला थी।

कुतुब मीनार परिसर में एक कुतुब स्तंभ भी है जिसपर जंग नहीं लगता है। वो बताते थे के अफगानिस्तान में स्थित, जाम की मीनार से प्रेरित एवं उससे आगे निकलने की इच्छा से, दिल्ली के प्रथम मुस्लिम शासक कुतुबुद्दीन ऐबक, ने सन ११९३ में इसके निर्माण कार्य को आरंभ करवाया, परंतु केवल इसका आधार ही बनवा पाएं थे। इससे ही उसे अनुभव हुआ था के कोई भी शासक हो वो अपने देश की उन्नति और प्रजा की प्रसन्नता के लिए ही कार्य करता है। पिता जी बताते थे के उसके उत्तराधिकारी इल्तुतमिश ने इसमें तीन मंजिलों को बढ़ाया और सन १३६८ में फीरोजशाह तुगलक ने पाँचवीं और अंतिम मंजिल बनवाई । इसकी मीनार को लाल बलुआ पत्थर से बनाया गया है, जिस पर कुरान की आयतों की एवं फूल बेलों की महीन नक्काशी की गई है।इसके निर्माण की कहानी पिता जी ने कितनी ही बार उसे सुनाई है। हर बार कुछ नए तथ्य से पिता जी उसे अचंभित कर जाते थे।वो कभी कभी बताते थे के कुतुब मीनार का निर्माण ढिल्लिका के गढ़ लाल कोट के खंडहरों पर किया गया था।कुतुब मीनार लाल और बफ सेंड स्टोन से बनी भारत की सबसे ऊंची मीनार है। अलाइ मीनार जो 13वीं शताब?दी में निर्मित कुतुब मीनार के उत्तर में खड़ी है ऐसे देखा जाए तो एकदम सममित जैसे छोटी बहन बड़ी बहन। गाड़ी के हॉर्न के साथ उसने यथार्थ में फिर प्रवेश कर लिए। वो शाहजहांनाबाद भोपाल के पुतली घर को बहुत देर तक देखती रही हाँ भोपाल का पुतली घर भी कुतुब मीनार के समरूप ही है। झीलों के शहर भोपाल में भी ऐतिहासिक धरोहरों की कमी नहीं है।पुतली घर बस स्टैंड के पास ही एक लंबी मीनार है, जिसे पुतली घर के रूप में जाना जाता है। शहर में कुतुब मीनार की तरह नजर आने वाली इस चिमनी की करीब दस फीट तक सीढियां अब टूट गई है। ये वो स्मारक है जिसे भोपाल रियासत का सबसे पहला उद्योग होने का गौरव प्राप्त है, लेकिन अतिक्रमण और जिम्मेदारों की अनदेखी के चलते अब यह सिर्फ खंडहर ही दिखता है। उसके पिता उसे बचपन में यहां अधिकतर लाया करते थे।

उन्होंने ही बताया था के 1890 में सात लाख रुपए से विकसित किए गए पुतली घर में वो मशीनें लगाई गई थीं, जिनसे रूई के सामान बनाने के अलावा आटा भी पीसा जाता था। इन मशीनों को 40 घोड़े खींचा करते थे। उस समय यहां 200 श्रमिक काम करते थे।जिनमें उसके पर दादा और उनका परिवार भी शामिल था।उसके दादा बताते थे के आज ये शहर कंक्रीट का जंगल बना हुआ है लेकिन एक जमाने में पुतली घर की चिमनी पूरे शहर से नजर आती थी। लोगों को इसके बारे में जानने की जिज्ञासा रहती है। यह कोई कटपुतली की कहानी नहीं है बस यहां धागा बनता था और उसे जिस पे लपेटा जाता था उसे पुतली कहते थे इसलिए इसे पुतलीघर कहने लगे थे पर दादी के हांथ से बनी एक एक धागा जोड़ के उंगलियों पे नाचती कठपुटली उसके जीवन के रंग बिरंगे स्वप्नों का आयोजन है। उसे तो लगता था के पुतलीघर में कठपुटली नाचती रहती होंगी हर क्षण। मूक कठपुतली धागे की डोर पे नाचती और जीवन का पाठ पढ़ाती थी।इतने में ध्रुव ने उसको यथार्थ में ला दिया... टेल मि मोम इस ईट कुतुब मीनार बट वी आर नॉट इन दिल्ली राइट वी अर इन भोपाल न... उसने ध्रुव के बाल सहलाते हुए कहां येस बेटा वी आर इन भोपाल एंड थाट इज पुतलीघर। ध्रुव ने तपाक से कहां था वॉट मोम यू मीन पपेट हाउस इस ईट।उसने ध्रुव और विक्रांत दोनों को अपने पास समेटते हुए कहां...बेटा लेट में टेल यू नाउ जस्ट लिस्टन ओके... विक्रांत ने उसका मुंह अपनी ओर करते हुए कहां मोम आप को याद है वी हाड़ सीन पपेट इन जयपुर इस ईट।तो विक्रांत की स्मृतियों में पपेट आज भी था क्योंकि वो कठपुतली की उस कहानी द्वारा भारत की संस्कृति से बहुत प्रभावित हुआ था।उसके समर प्रोजेक्ट का वो एक अहम हिस्सा था और इसके कारण उसने अ ग्रेड प्राप्त किया था। विक्रांत ने तुरंत पूछा मोम पपेट क्या है।व्हाट इज पप्पेट? कठपुतली क्या मोम?तब फिर उसने विक्रांत को मोबाइल पे एक कठपुतली जो उसकी दादी ने उसे दी थी उसकी तस्वीर दिखाते हुए बताना शुरू किया के पपेट क्या है लेकिन ध्रुव ने जब कहां के मोम दिस प्लेस इस सो अनहायजेनिक तब उसे लगा के इसके मेंटेनेंस की ओर ध्यान नहीं देने से ये ऐतिहासिक चिमनी अब जर्जर हो रही है। इस चिमनी को सहेजने और संवारने की जरूरत है। नगर निगम ने जिस तरह से पुतली घर बस स्टैंड के लिए बहुमंजिला कॉम्प्लेक्स बनाने की योजना बनाई है।उसी तर्ज पर पुतली घर को भी सहेजा जाए तो आने वाले समय में पीढ़ियां हमारे पूर्वजों के परिश्रम को सम्मान से देख पाएगी। इसके अलावा यहां खाली पड़ी जमीन पर पार्क का निर्माण कर इमारत से जुड़ी जानकारी दर्ज की जाना चाहिए।

दस्तक प्रभात/फराह नसीम

सम्पादकीय

क्रिकेट मैच के टिकटों की कालाबाजारी पर रोक क्यों नहीं लग पा रही

जयपुर में हो रहे आईपीएल मैचों में टिकटों की कालाबाजारी में बड़ा रेकेट काम कर रहा है। यही कारण है कि सब कुछ साफ होने के बावजूद अब तक टिकटों की कालाबाजारी करने वालों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है। समाचार पत्रों में आईपीएल मैचों के टिकटों की कालाबाजारी को लेकर लम्बी-लम्बी रिपोर्ट्स प्रकाशित हो चुकी हैं। जयपुर में इंडियन प्रीमियर लीग का आखिरी मुकाबला 22 अप्रैल को राजस्थान रॉयल्स और मुंबई इंडियंस के बीच खेला जाएगा। हर बार की तरह इस बार भी टिकटों की कमी दर्शकों को हताश और निराश कर रही है। 22 अप्रैल को होने वाले मैच के टिकट्स ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों ही तरीकों से नहीं मिल रहे हैं, जिसको लेकर अब दर्शकों में काफी हताशा का माहौल है। पिछले लंबे वक्त से मुंबई इंडियंस के मैच को देखने के लिए लोग ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों ही मोड पर टिकट लेने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन कहीं पर भी मैच का टिकट नहीं मिल रहा है। लोग टिकट काउंटर पर घंटों लाइन में लग चुके लेकिन वहां पर भी हताश ही हाथ लगी। सरकार को चाहिए कि वह जयपुर में होने वाले मैचों में टिकट की बिक्री की व्यवस्था को पारदर्शी करे ताकि आम खेल प्रेमी भी आईपीएल का नजारा देख सके। क्रिकेट प्रेमियों का तो यहां तक आरोप है कि राजस्थान रॉयल्स प्रबंधन द्वारा सिर्फ बेवकूफ बनाने का काम किया जा रहा है। स्टूडेंट को किसी तरह के रियायती दर पर कोई टिकट नहीं मिल रही है। बल्कि, स्टूडेंट टिकट को भी 1200 से 1600 रुपए के दाम पर बेचा जा रहा है, जबकि नियमों के तहत वह टिकट स्टूडेंट्स को 500 रुपए में मिलनी चाहिए थी, लेकिन शासन और प्रशासन कोई इस और ध्यान नहीं दे रहा है। इससे अब हम ठगा सा महसूस करने लगे हैं। आरोप तो ये भी हैं कि एक राजनीतिक पार्टी के नेता अपने कार्यकर्ताओं को फ्री पास बांट रहे हैं, जिन्हें भी वह लोग ब्लैक में बेच रहे हैं। ऐसे में पुलिस और प्रशासन को इस पूरे मामले पर सख्त एक्शन लेना चाहिए। बता दें कि इंडियन प्रीमियर लीग के 17वें सीजन में राजस्थान रॉयल्स टीम ने अब तक सात मुकाबले खेले हैं। जिनमें से 6 मुकाबलों में राजस्थान ने जीत दर्ज की है। इनमें 4 मैच जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित हुए हैं। इनमें 3 मैच राजस्थान टीम ने जीते हैं, जबकि एक मैच में गुजरात के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। सभी मैचों के दौरान टिकटों को लेकर कालाबाजारी देखने मिली है।

लोकसभा चुनाव : पहले चरण के मतप्रतिशत पर सियासी सपने

लोकसभा चुनाव के पहले चरण में उत्तर प्रदेश की 8 लोकसभा सीटों, अरुणाचल प्रदेश की 2, असम की 14, बिहार की चार, छत्तीसगढ़ की 11, मध्य प्रदेश छह सीट, महाराष्ट्र की पाँच, मणिपुर की दो सीट, मेघालय की सभी दो सीट, मिजोरम की एक, सिरिजस्थान पत्रिका म की एक, नगालैंड की एक, राजस्थान की 12, तमिलनाडु की सभी 39, त्रिपुरा की एक सीट, लक्षद्वीप की इकलौती, पुडुचेरी की इकलौती सीट, उत्तराखंड की सभी पाँच, पश्चिम बंगाल की तीन, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की इकलौती सीट और जम्मू-कश्मीर की एक लोकसभा सीट पर मतदान की प्रक्रिया पूरी हो गई।

रामस्वरूप रावतसरे

लोकसभा चुनाव 2024 में पहले चरण का मतदान पूरा हो गया है। देश के 21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों औसतन 60.03 प्रतिशत मतदान हुआ है। पहले चरण में कुल 102 लोकसभा सीटों पर मतदान हुआ था। चुनाव आयोग के मुताबिक, पहले चरण के मतदान में राज्यों के हिसाब से 102 सीटों पर शाम 7 बजे तक कुल 60.03: मतदान हुआ। इसमें उत्तर प्रदेश में 57.61 प्रतिशत, उत्तराखंड में 53.64 प्रतिशत, बिहार में 47.49 प्रतिशत, छत्तीसगढ़ में 63.41 प्रतिशत, जम्मू-कश्मीर में 65.08 प्रतिशत, मध्य प्रदेश में 63.33 प्रतिशत, महाराष्ट्र में 55.29 प्रतिशत, मणिपुर में 68.62 प्रतिशत, मेघालय में 70.26 प्रतिशत, मिजोरम में 54.18 प्रतिशत, नगालैंड में 56.77 प्रतिशत, अंडमान निकोबार में 56.87 प्रतिशत, अरुणाचल प्रदेश में 65.46 प्रतिशत, असम में 71.38 प्रतिशत, लक्षद्वीप में 59.02 प्रतिशत, पुडुचेरी में 73.25 प्रतिसत, राजस्थान में 50.95 प्रतिशत, सिक्किम में 68.06 प्रतिशत, तमिलनाडु में 62.19 प्रतिशत, त्रिपुरा में 79.90 प्रतिशत और पश्चिम बंगाल में 77.57 प्रतिशत मतदान हुआ है।

लोकसभा चुनाव के पहले दौर में कुल 1625 उम्मीदवारों की किस्मत का फैसला हो चुका है और ये ईवीएम में कैद हो चुका है। इन उम्मीदवारों में 1491 पुरुष और 134 महिला उम्मीदवार हैं। पहले चरण के लिए 8 केंद्रीय मंत्रियों, 2 पूर्व सीएम और एक पूर्व राज्यपाल की किस्मत भी ईवीएम में कैद हो चुकी है। इस चरण के प्रमुख उम्मीदवारों में केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, सर्बानंद सोनोवाल और भूपेन्द्र यादव, कांग्रेस के गौरव गोगोई, और द्रमुक की कनिमोई शामिल हैं। पिछले चुनाव में यूपीए ने इन 102 सीटों में से 45 और एनडीए ने 41 सीटें जीती थीं। लोकसभा चुनाव के पहले फेज के साथ ही अरुणाचल प्रदेश की 60 विधानसभा सीटों और सिक्किम की 32 सीटों पर भी मतदान कराया गया है।

गौरतलब है कि 19 अप्रैल को लोकसभा की 102 सीटों पर मतदान हो चुका है। चुनाव कार्यक्रम के अनुसार, लोकसभा चुनाव सात चरण में होंगे। दूसरे चरण के तहत 26 अप्रैल को 89, तीसरे चरण के तहत 7 मई को 94, चौथे चरण के तहत 13 मई को 96, पाँचवें चरण के तहत 20 मई को 49, छठे चरण के तहत 25 मई को 57 और सातवें चरण के तहत 1 जून को लोकसभा की 57 सीटों पर मतदान होगा। नतीजों की घोषणा 4 जून को होगी। लोकसभा चुनाव 2024 के पहले चरण के तहत राजस्थाान की 12 लोकसभा क्षेत्रों में मतदान संपन्न हो गए। शुक्रवार 19 अप्रैल को हुए मतदान के दौरान प्रदेश के करीब 58 फीसदी मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। निर्वाचन विभाग के अनुसार प्रदेश के 12 लोकसभा क्षेत्रों में 57.88 प्रतिशत मतदान हुआ। शनिवार को चुनाव आयोग की ओर से फाइनल आंकड़े जारी किए जाएंगे। पहले चरण के तहत गंगानगर में 65.64 प्रतिशत, बीकानेर में 53.96 प्रतिशत, चूरू में62.98 प्रतिशत, झुंझुनूं में 51.62 प्रतिशत, सीकर में 57.28 प्रतिशत जयपुर ग्रामीण में 56.58 प्रतिशत, जयपुर में 62.87 प्रतिशत, अलवर में 59.79 प्रतिशत, भरतपुर में 52.69 प्रतिशत, करौली-धौलपुर में 49.29 प्रतिशत, दौसा में 55.21 प्रतिशत और नागौर में 56.89 प्रतिशत मतदान हुआ। मतदान के दौरान नव विवाहित जोड़ों, दिव्यांग, थर्ड जेंडर, आदिवासियों, वृद्धों और युवाओं सहित सभी मतदाताओं ने उत्साहपूर्वक भागीदारी निभाई। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में पिछले चुनाव यानी 2019 के दौरान हुए चुनाव से करीब 6 वोट प्रतिशत कम रहा। साल 2019 में राजस्थान के इन 12 लोकसभा क्षेत्रों में 64.02 फीसदी मतदान हुआ था। इससे पहले वर्ष 2014 में इन 12 लोकसभा क्षेत्रों में 61.66 प्रतिशत मतदान हुआ था। मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता के अनुसार इन क्षेत्रों में इस बार यानी 2024 में लगभग 57.87 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया है। गंगानगर लोकसभा निवार्चन क्षेत्र में सर्वाधिक 65.64 प्रतिशत मतदान हुआ है। जबकि जयपुर ग्रामीण लोकसभा सीट पर 56.58 प्रतिशत वोटिंग हुई। चुनाव आयोग की ओर से जारी आंकड़ों में 12 लोकसभा सीटों पर 57.87 फीसदी मतदान रहा है। ऐसे में सियासी गलियारों में वोटिंग परसेंट घटने पर कई के मायने निकाले जा रहे हैं। वोटिंग परसेंटेज घटने को कांग्रेस अपने लिए फायदेमंद मान रही है। कांग्रेस इससे खुश नजर आ रही। जबकि भाजपा का दावा है कि राजस्थान में 25 में से 25 सीटों पर जीत हासिल होगी। राजस्थान में पहले चरण के तहत वोटिंग प्रतिशत घटने पर कांग्रेस में खुश दिखाई दे रही है। कांग्रेस का अपना कयास हैं कि उन्हें फायदा मिलेगा। दूसरी ओर बीजेपी भी अपनी जीत को लेकर पूरी लेकर पूरी तरह निश्चित हैं। पहले चरण में गंगानगर, बीकानेर, चूरू, झुंझुनूं, सीकर, जयपुर ग्रामीण, जयपुर अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, दौसा, नागौर पर मतदान हुआ। लेकिन इन सीटों पर पिछली बार 2019 में 63.71 प्रतिशत मतदान हुआ। जबकि इस बात काफी प्रयास के बाद भी इस बार इन सीटों पर 57.87 फ़ीसदी ही वोटिंग रही। जो पिछले आंकड़ों की अपेक्षा 5.84 प्रतिशत कम है। वोटिंग प्रतिशत घटने और बढ़ाने को लेकर कई सियासी मायने माने जाते हैं। जब भी वोटिंग प्रतिशत बढ़ता है तो, माना जाता है कि लोगों ने सत्ता के विरोध में वोट किया है और वोटिंग प्रतिशत घटता है तो, यही कयास होते हैं कि मतदान सत्ता के पक्ष में हुआ है। यह अब तक के चुनाव में देखने को आया है। इस फार्मूले को राजनीतिक जानकार भी मानते हैं, लेकिन इस बार वोटिंग प्रतिशत घटने को कांग्रेस अपने लिए फायदेमंद मान रही है। जबकि भाजपा अपनी जीत के लिए आश्वस्त है। हालांकि, वोटिंग प्रतिशत घटने से भाजपा में भी कुछ चिंता भी है। इस मामले में पीसीसी मेम्बर और प्रदेश कांग्रेस के पूर्व सचिव सुशील असोपा का कहना है कि अब तक की धारणा यहीं हैं कि जब भी वोटिंग परसेंटेज घटता है तो, सत्ता को फायदा मिलता है, लेकिन मेरा मानना है कि इस बार महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी से आमजन बुरी तरह परेशान है। इसके कारण लोग वोट देने में उदासीन रहे हैं। इसके कारण वोटिंग परसेंटेज भी घटा है। कांग्रेस के प्रदेश महासचिव ललित तुनवाल का भी यही कहना है कि वोटिंग परसेंटेज घटने से भाजपा को नुकसान हो सकता है। उन्होंने बताया कि शुक्रवार को हुए 12 लोकसभा सीटों के मतदान में कांग्रेस करीब आधा दर्जन सीटों पर मजबूत स्थिति पर है। मतदाताओं ने मोदी सरकार से उदासीन होकर वोट नहीं दिया है। इसका कांग्रेस को निश्चित रूप से फायदा मिल सकता है। उधर, राजस्थान में चुनाव में वोटिंग परसेंटेज कम होने पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि किन्हीं कारणों के वोटिंग परसेंटेज घट सकता है। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। भाजपा राजस्थान में सभी 25 सीटे जीतेगी। इसी तरह भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष और पूर्व मंत्री डॉ प्रभुलाल सैनी का कहना है कि भाजपा चुनाव को लेकर पूरी तरह उत्साहित है। ग्रामीण क्षेत्रों में फसल कटाई और शादी ब्याह होने के कारण वोटिंग परसेंटेज कम हुआ है, लेकिन शहरी क्षेत्र में वोटिंग परसेंटेज अच्छा रहा है। खैर कम वोटिगं प्रतिशत से किसे लाभ हुआ है यह तो 4 जून को ही मालूम चलेगा।

आज का इतिहास

21 अप्रैल की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- लोदी राजवंश का संस्थापक बहलोल खां लोदी 1451 में दिल्ली का शासक बना।
- मुगल साम्राज्य का शासक बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच 1526 में पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोदी मारा गया।
- फ्रांस और इंग्लैंड के बीच 1572 में स्पेन के खिलाफ सैन्य समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।
- इंग्लैंड और स्वीडन के बीच 1654 में व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर।
- बाजी राव प्रथम, 1720 में पेशवा बालाजी विश्वनाथ के उत्तराधिकारी बने।
- स्पेन और आस्ट्रिया के बीच 1739 में शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।
- बैंकाक शहर की स्थापना 1782 में हुई।
- उर्दू भाषा के मशहूर शायर मोहम्मद इकबाल का 1938 में पाकिस्तान के लाहौर में निधन।
- यूनान ने 1941 में नाजी जर्मनी के समक्ष आत्मसमर्पण किया।
- 1945 में दूसरे विश्व युद्ध के दौरान आज के सोवियत संघ की सेना ने बर्लिन शहर पर कब्ज़ा करने और हिटलर को मात देने की कोशिशों में आज के दिन मिली जीत को काफ़ी महत्वपूर्ण माना जाता है।
- ब्राजीलिया 1960 में ब्राजील की राजधानी बन गई।
- यूनान में 1967 में सैन्य तख्तापलट हुआ।
- श्रीलंका की राजधानी कोलंबो में 1987 में हुए एक बम धमाके में तक़रीबन सौ से अधिक लोगों की मौत हुई।
- भारतीय वायु सेना के संजय थापर को 1996 में पैराशूट के जरिए उत्तरी धुव्र पर उतारा गया।
- बांग्लादेश में भारतीय जवानों की नृशंस हत्या पर 2001 में भारत ने कड़ा विरोध दर्ज कराया।
- बसरा में 2004 में मिसाइल हमले में 68 लोगों की मृत्यु।
- नेपाल नरेश ने चुनी हुई सरकार को 2006 में सत्ता सौंपने की घोषणा की।
- ब्रायन लारा ने 2007 में एक दिवसीय क्रिकेट से सन्यास लिया।

21 अप्रैल को जन्मे व्यक्ति

- 1864 में प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक एवं इतिहासकार मैक्स वेबर का जन्म।
- 1891 में भारतीय रिज़र्व बैंक के प्रथम उप-गवर्नर और ओसबोर्न स्मिथ के बाद दूसरे गवर्नर जेम्स ब्रेड टेलर का जन्म।
- 1924 में 1961 के 'अर्जुन पुरस्कार' से सम्मानित भारत के पहले निशानेबाज़ कर्णी सिंह का जन्म।
- 1926 में 54 राष्ट्रों और राज्य क्षेत्रों की प्रमुख महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय का जन्म।

21 अप्रैल को हुए निधन

- सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा। लिखने वाले कवि मोहम्मद इकबाल का 1938 में निधन।
- आकंड़ों की बाजीगरी में मशीन को मात देने वाली शकुन्तला देवी का 2013 में निधन हुआ था।
- टॉम सायर तथा हकलबरी फिन जैसे जिंदादिल किरदारों के रचियता अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन का 1910 में निधन।
- भारतीय राजनीतिज्ञ एवं राष्ट्रीय कॉंग्रेस के वरिष्ठ नेता जानकी बल्लभ पटनायक का 2015 में मृत्यु।

'वासुकि' के इतिहास पर विज्ञान की मुहर!

रामस्वरूप रावतसरे

हम सब ने वासुकि नाग की कथा सुनी है? हमारे शास्त्रों में वासुकि की कथा है, जिसे रस्सी की तरह इस्तेमाल कर के देवताओं एवं दानवों ने मिल कर समुद्र मंथन किया था। वासुकि नाग को भगवान शिव ने अपने गले में स्थान दिया। अब गुजरात में खुदाई में कुछ ऐसा मिला है, जो इस तरह के विशालकाय जीवों के अस्तित्व की पुष्टि करता है। ऐसे साँपों के जीवाश्म कच्छ में खुदाई के दौरान प्राप्त हुए हैं। ये अब तक का सबसे बड़ा साँप है, जिसका जीवाश्म प्राप्त हुआ है। इसकी लंबाई 11-15 मीटर थी। इसकी गोलाई 17 इंच थी।

जानकारी के अनुसार ये 28 डिग्री सेल्सियस के औसत तापमान पर पनपता था। इसे 'वासुकि इंडिकस' नाम दिया गया है। आईआईटी रुड़की के वैज्ञानिकों ने शोध के दौरान इसका पता लगाया है। इस खोज से न सिर्फ प्राणियों के इवोल्यूशन का पता चला है बल्कि प्राचीन सरीसृपों से भारत के संबंध की भी जानकारी होना बताया गया है। 'वासुकि' साँपों का जन्म मूल रूप से भारत में हुआ और यूरेशिया के माध्यम से ये उत्तरी अफ्रीका तक पहुँचे। इन्हें गोंडवाना साँपों की श्रेणी में डाला गया है। ये शोध-पत्र 'नेचर ' मैगजीन में भी प्रकाशित हुआ है। आईआईटी रुड़की के 'डिपार्टमेंट ऑफ अर्थ साइंसेंज' के अध्यक्ष सुनील वाजपेयी के अनुसार ''इन साँपों की लंबाई 36 फ़ीट से लेकर 49.22 फ़ीट होती थी। ये कोलंबिया के टाइटेनोबोआ से भी बड़ा है, जो डायनासोर के काल में पाया जाता था और जिसे अब तक का सबसे बड़ा साँप माना गया है। 'वासुकि इंडिकस' धीमे-धीमे चलता था, घात लगा कर शिकार पर हमला करता था और इसकी चाल-ढाल एनाकोंडा की तरह थी। कच्छ के पनान्ध्रो गाँव में भूरे कोयले के खादानों से इसके जीवाश्म प्राप्त हुए हैं। ये कछुए, व्हेल और मगरमच्छ की प्राचीन प्रजातियों को खाता रहा होगा। ये लगभग 12,000 वर्ष पहले विलुप्त हुआ।'' ये खोज हमें आदिनूतन युग तक लेकर जाती है, यानी 5.60 से 3.39 करोड़ वर्ष पूर्व तक। वैज्ञानिकों ने 27 ऐसे अस्थिखंड प्राप्त किए हैं, जो पूरी तरह सुरक्षित हैं। ये जीवाश्म 2005 में ही मिले थे लेकिन अन्य प्रोजेक्ट्स की प्राथमिकता के कारण इस पर गहन अध्ययन नहीं हुआ था। पहले सबको लगा था कि ये मगरमच्छ का है, लेकिन दोबारा अध्ययन होने के बाद ये इतिहास में दर्ज हो गया। इसी तरह राजस्थान के जैसलमेर में शाकाहारी डायनासोर की खोज हुई थी। ये 16.70 करोड़ वर्ष पहले अस्तित्व में था। हालाँकि, अब तक साँप का सिर नहीं मिला है। वैज्ञानिकों ने अंदाज़ा लगाया है कि ये अपने सिर को किसी ऊँचे स्थान पर टिकाने के बाद अपने बाकी के शरीर को चारों ओर लपेट लेता रहा होगा। ये कुछ उसी तरह का है, जैसा 'जंगलबुक' का विशालकाय साँप। ये दलदली जमीन पर किसी ट्रेन की तरह विचरण करता था। इसे 'मैडसोइड' सर्प-प्रजाति के अंतर्गत डाला गया है। इसकी रीढ़ की हड्डी का सबसे बड़ा हिस्सा 4 इंच का होता था। बताया जा रहा है कि ये ज़हरीला नहीं होता था।

विशेष आलेख

भाग्य के फूटेंगे को हिये के फूटेंड़े ही मिलते हैं...

राजेन्द्र सारस्वत

उदमीराम जी ठोडी को हथेलियों पर टिकाये उस भव्य और विशाल मंदिर की सीढ़ियों पर उदास से बैठे थे। मंदिर की भव्यता के मध्येनज़र मंदिर परिसर में भक्तों की उतनी उपस्थिति नहीं थी। यह हमारे देश के लोगों का दुर्भाग्य है कि यहां भगवान के मंदिरों पर जितना धन व्यय होता है। उसके मुकाबले शिक्षा के मंदिर सरकारी स्कूलों पर उतना खर्च नहीं किया जाता। कारण यह है कि मंदिर भक्त बनवाते हैं और स्कूलों को सरकारें। उदमीराम जी आए तो भगवान को माथा टेकने। मगर उनके चेहरे के निराशाजनक हाव भाव से लग रहा था उनकी कोई महत्वपूर्ण वस्तु उनसे पृथक हो गईं है। कुछ समय बाद वो चलने उद्यत हुए। एक काईयां सा आदमी उनके पास आया। उसकी शक्ल और चाल-ढाल से कोई भी समझदार आदमी यह कयास लगा सकता था कि वो जरूर कोई उठाईगिरा है। उसने उनसे पूछा-''के होयो भाई जी निराश सा क्यूं लागो हो !'' उदमीराम जी ने उस पर एक उचटती सी दृष्टि डाली। फिर धीरे से बोले- ''मेरी एकदम नई नकोर महंगी चप्पल कोई उठा ले गया। उस व्यक्ति ने जासूसों के से अंदाज में इधर उधर नजरें दौड़ाई। जैसे कि कोई बहुत ही गूढ रहस्य की बात कहने जा रहा हो और बात किसी तीसरे कान में न पहुँच जाए। कारण कि तीसरे कान में गई बात हजार कानों में जाते देर नहीं लगती। उसने फुसफुसाते हुए कहा- ''बस इती सी बात ! तुम तो ऐसे रिएक्ट कर रहे हो जैसे ताजा ताजा ही मायत को ब्रह्मधाम पहुंचाकर मसाणो से आ रहे हो। सुनो वो गंभीरता से बोला- ''सुना नहीं आजकल कथाओं में कथा कहने वाले महाराज इस बात पर बहुत जोर देते हैं कि समस्या से मत उलझो. समाधान पर ध्यान केंद्रित करो। ध्यान से सुनो एक तरीका बताता हूं। कोई तुम्हारी चप्पल पहन गया। तुम ऐसे करो, इधर उधर नज़र दौड़ाओ। अपने नाप की बढिया से बढिया चप्पल बूंट जो देखो, पहनो और चलते बनो। उसने चुटकी बजाई ''टिट फोर टैट'' मैंने ग़लत कहा क्या ? उदमीराम जी ठहरे भक्ति और श्रध्दा भाव वाले माणस। उन्हें यह प्रस्ताव नहीं जंचा। कम से कम मंदिर जैसे पवित्र स्थान पर आकर तो चोरी चकारी जैसे पाप से बचना चाहिए। उन्होंने कहा-'' क्षमा करें मुझे आपका सुझाव नहीं जमा। कारण कि हम झूठ, छल और कपट में दिन गुजार देते हैं। यदि ईश्वर के द्वार पर आकर भी पाप कर्म किया तो हम क्या नरक के अधिकारी नहीं होंगे!'' मगर उस ढीठ ने उनका मार्ग रोक लिया। सुनो , ये पाप पुण्य की अवधारणा हर किसी के मुंह शोभा नहीं देती और एक बात और सुनलो।''

उसने उनके कान के पास मुंह ले जाकर धीमें से कहा- ''यह मंदिर है भगवान का घर है। यहां आने वाले सभी लोग धर्मात्मा नहीं होते, और बताऊं'' वो गंभीरता से बोला- जैसे कोई तत्वज्ञान की बात बताने जा रहा हो। तुम्हें पता है मंदिर में सिर्फ धार्मिक, दानी और पुण्य लाभ अर्जित करने वाले ही नहीं आते। कारण कि भगवान का अस्तित्व ही पापियों से है। धर्मात्मा को भगवान का भय नहीं होता, और मंदिर में या तो अधिकतर डरपोक आते हैं अथवा लालची और भगवान से कुछ मांगने वाले। मगर पुण्यात्माओं को भरोसा होता है कि मन ही मन भगवान को स्मरण कर लें तो हो गई उनकी पूजा अर्चना। और सुनो मंदिर के पुजारी अक्सर मेरे सामने कहते रहते हैं कि ज्यादातर तो लोग सिर्फ प्रसाद लेने ही आते हैं। पता है मंदिर में आरती के बाद आरती की थाली में भक्त एक का सिक्का रखते हैं। पुजारी बता रहे थे आरती में 28 भक्त आए तो सिक्के चढ़ते हैं 19, यहां सभी भांति और विचारों के लोग आते हैं। सुनते नहीं रोज़ मंदिरों में भी गुल्कों के ताले टूटते हैं। कभी चोर पकड़ा गया!'' पुलिस भी ऐसी चोरियों को गंभीरता से नहीं लेती। उदमीराम जी ने उसकी बातें हवा में उछाल दी और वे नंगे पांव ही घर की ओर चल दिए। वे थोड़ा दूर जूते बनाने वाले एक कारीगर के पास गए, उसे नए जूते बनाने का आर्डर दिया। अगली सुबह उदमीराम जी नए जूते पहन कर मंदिर आए। गेट के पास ही वो कल समस्या का समाधान करने वाला फिर मिल गया। नए जूतों की चमक देख उसकी आँखों में भी चमक आ गई। उसने उदमीराम जी के कान के पास मुंह लेजाकर कहा - ''वोव नए जूते'' एक अनुभवी दार्शनिक के से भाव से उसने कहा-''एक तरीका बताता हूँ. तुम दोनों जूते एक स्थान पर मत उतारना। एक जूता यहाँ तो दूसरा दूर कहीं अलग उतारकर मंदिर के भीतर जाना। फिर देखना जूता कैसे चोरी होता है। उन्होंने वैसे ही किया। कहते हैं न कि- ''भाग्य के फूटेड़े को हीये का फूटेड़ा '' ही मिलता है। हे भगवान. जब उदमीराम जी बाहर आए तो देखा उनका एक जूता नदारद था। वो कहीं इधर तो कहीं उधर तलाश कर हार लिए। फिर सोचा- ''बुढ़ापे में आदमी की याददाश्त साथ छोड़ जाती है। वो सोच रहे थे कि जरूर उनसे भूल हुई है। तलाश करते करते थक गए। अब क्या करें, उन्होंने दिल को समझाया। जगत में होनी है बलवान। वो एक अखबार में एक जूता लपेट कर फिर उसी कारीगर के पास गए। रूंआंसे से हो रहे थे। कहा- ''एक जूता खो गया है। इसी नाप का दूसरा जूता बना दो। उसने कहा- ''चार सौ रूपये लूंगा, कल ले जाना।'' वे नंगे पांव घर की ओर रवाना हुए। गली के नुक्कड़ पर मंदिर वाला वही आदमी कंधे पर एक झोला लटकाये मिल गया। पूछा-''के होयो, भाईजी, नंगे पांव कियां? स्वभाव के भले दिल के भोले उदमीराम ने सारा किस्सा बयान कर दिया। उस आदमी ने कहा-''सुनो मैंने खोज-खबर की और जूते चप्पल चोरी करने वाले को उसके घर जा दबोचा। मैंने उसके कान के नीचे दो जड़ी। कहा -'कल जिस भले माणस की चप्पल पार की वो कहां बेची। उसने कहा कहीं नहीं बेची, और उसने झोले में से चप्पल निकाल कर दिखाई यही है न तुम्हारी चप्पल। बताओ कितने की आई ! उदमीराम ने कहा - ''तीन सौ की।'' उसने कहा ''चलो डेढ़ सौ निकालो और अपनी चप्पल संभालो।'' उदमीराम जी प्रसन्न हुए, उन्होंने राजीखुशी उसे डेढ़ सौ दिए और चप्पल पहन घर की ओर हो लिए। और थोड़ी देर बाद वो ठग दबे पांव उस जूते वाले कारीगर के पास पहुंचा। अपने झोले में से एक बूंट निकालकर दिखाया। कहा-''आपनै म्हारा भाईजी जो बूंट बणान गो आर्डर दियो, बो कैंसिल करद्यो। ओ बांगो बूंट लाधग्यो। ल्याओ पीसा पाछा करद्यो और बो बूंट भी देद्यो। कारीगर ने बूंट दे दिया और चार सो रुपये लौटा दिए। ठग ने जूता झोले में और पैसे खीसे में डाले और फटाफट वहां से नौदौ ग्यारह हो गया।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, आपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारम्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संताप और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष
सरकारी कामों में सफलता मिलेगी। पेट दर्द से परेशानी हो सकती है। आज आप किसी भी कार्य को दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास के साथ करेंगे। उसमें सफलता भी प्राप्त भी करेंगे। पिता की ओर से आपको लाभ हो सकता है।

वृष
आज अचानक धन खर्च होने का योग है। यह खर्च स्वास्थ्य के कारण भी हो सकता है। व्यावहारिक या सामाजिक काम के लिए बाहर जाना हो सकता है। खान-पान में ध्यान रखें। क्रोध तथा नकारात्मक विचारों से दूर रहें। वाहन सुख मिलेगा।

मिथुन
विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में लगेगा। सरकारी कामों में आर्थिक लाभ आपको मिल सकता है। संतान के लिए पूंजी निवेश करेंगे। नई योजना का आरंभ करने के लिए आज अनुकूल दिन है। सरकारी काम में लाभ होगा।

कर्क
आज का दिन आपके लिए अच्छा होगा। व्यापार स्थल पर वातावरण अनुकूल रहेगा। उच्च अधिकारी आप पर प्रसन्न रहेंगे। आप का हर काम आज सफलता से पूरा होगा। नौकरी में पदोन्नति भी हो सकती है। आपकी मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

सिंह
मानसिक रूप से स्वस्थता का अनुभव नहीं करेंगे। निराशा और असंतोष की भावना से काम में मन नहीं लगेगा। कुंटुंबजनों के साथ किसी विषय पर वाद-विवाद हो सकता है। विद्यार्थियों को अभ्यास का अपेक्षित परिणाम नहीं मिलेगा।

कन्या
आपका आज का दिन शुभफलदायी है। कई क्षेत्रों से आपको लाभ होगा। मित्रों से लाभ होगा और उनके पीछे धन खर्च भी हो सकता है। पर्यटन स्थल की सैर आपको रोमांचित करेगी। परिजनों से मुलाकात आनंददायी हो सकती है।

तुला
रोमांस के लिए आज अनुकूल दिन है। आज का हर कार्य आप दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास से पूरा करेंगे। प्रवास-पर्यटन की संभावनाएं है। अच्छा भोजन और नए वस्त्र मिलने का अवसर मिल सकता है। भागीदारी से लाभ होगा।

वृश्चिक
अधिकारियों से काम का उचित फल भी मिल सकता है। भाई-बंधुओं के साथ कोई झगड़ा दूर होगा। विचार लगातार परिवर्तन होते रहेंगे। आर्थिक विषय में सावधानी बरतनी आवश्यक है। नेगेटिव विचारों से मन परेशान रह सकता है।

धनु
आज आपका स्वास्थ्य नरम-गरम रह सकता है। शारीरिक रूप से आलस्य और अशक्ति का अनुभव करेंगे। व्यापार में बाधाएं उपस्थित होंगी। गलत कामों से दूरी बनाए रखें। किसी भी योजना को सावधानीपूर्वक करें।

मकर
आपको उग्र स्वभाव पर संयम रखने की सलाह दी जाती है। आज आप मानसिकरूप से थकान का अनुभव करेंगे। अधिक परिश्रम की तुलना में कम फल की प्राप्ति होगी। संतान के विषय में आपको चिंता हो सकती है।

कुंभ
आज इगो के कारण किसी से बातचीत में मनमुटाव हो सकता है। मित्रों के साथ किसी बात विवाद हो सकता है। स्वभाव में आवेश और क्रोध की मात्रा अधिक रहेगी। धार्मिक कामों में धन का खर्च हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
आप में आज आत्मविश्वास कूट-कूटकर भरा रहेगा। किसी भी काम को करने के लिए आप जल्दबाज़ी में निर्णय ले सकते हैं। पिता तथा बड़ों की ओर से लाभ होगा। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि हो सकती है। वाणी में उग्रता ना रखें। मन में चिंता रह सकती है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हमीदपुरा रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 ''प्रतीक्षा'' सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान*। प्रधान संपादक-राम बिलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

हिंदू हारे क्यों और अब हिंदू उत्कर्ष के कारण क्या हैं ?

हिन्दुओं ने आत्म मुग्धता के साथ केवल अपने बारे में महानता की बातें की लेकिन जो सावरकर और हेडगेवार को जानते हैं वे समझते हैं कि अपनी दुर्बलताओं की और ध्यान दिए बिना शक्ति अर्जन का पथ प्रशस्त करना संभव नहीं होता। वर्तमान हिंदू उदय का काल सनातन हिन्दुओं की वीरता और उनके असीम धैर्य के साथ विश्व में दुर्लभ संघर्ष की अद्भुत निरंतरता बताता है तो उसके साथ ही स्मरण रखना होगा पिछले कई सौ वर्षों में हिन्दू द्वारा हिन्दू से विद्वेष, हिंदू की हिंदू से शत्रुता, असंगठन, शत्रु के साथ अपने स्वार्थ के लिए जा मिलना और सामूहिक शत्रु के विरुद्ध अपने ईर्ष्या भाव खत्म कर संगठित बल से उस शत्रु का हनन करने की भावना का ना होना जिसने हिंदुओं को विदेशी क्षुद्र शक्तियों का दास बनाया।और आकार) आपको चौंका देगी। हिन्दुओं ने आत्म मुग्धता के साथ केवल अपने बारे में महानता की बातें कीं लेकिन जो सावरकर और हेडगेवार को जानते हैं वे समझते हैं कि अपनी दुर्बलताओं की ओर ध्यान दिए बिना शक्ति अर्जन का पथ प्रशस्त करना संभव नहीं होता।

इसे भी पढ़ें: बाबा साहब के सपनों को पूरा करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

ये पांच सौ वर्ष कैसे बीते हमारे ? इन वर्षों में लाखों हिन्दुओं का वध हुआ, उनकी स्त्रियों का अपमान हुआ, बच्चे नर नारी गुलाम बनाकर काबुल और बगदाद के बाजारों में बेचे गए, हमारे मंदिरों का ध्वंस हुआ और उनका अपमान हुआ, हमारे पूर्वजों को डरा धमका कर, संहार के भय से इस्लाम में लाया गया। आज उन मतांतरित हिन्दुओं के वंशज ही आक्रमणकारी विदेशियों की भाँति हिन्दू धर्म, एवं आस्था स्थलों के प्रति घृणा का भाव रखते हैं, क्यों ? पांच सौ वर्षों के संघर्ष की निरंतरता के बाद हिन्दुओं के असीम धैर्य के बावजूद उनके प्रति मतांतरित जिहाद-अनुयायियों की शत्रुता काम क्यों नहीं हुयी ? हिन्दू इन विषयों पर सोचना भी नहीं चाहता। स्मृति भ्रंश और विगत के बलिदानों का विस्मरण हमारी बड़ी कमजोरी है। मंदिरों की अपरमित आय उच्च जातियों द्वारा नियंत्रित रहती है। हिन्दुओं का कौन सा एक भी मंदिर है जो अपने ही रक्तबंधु दलितों के प्रति समता और सच्चे आत्मीयता का भाव जन जन में पैदा करने के लिए दो चढ़ावा खर्च करता होगा? अथवा देश के कोने कोने में हिन्दुओं को धर्मांतरित करने वाली शक्तियों के सामने हिन्दू रक्षक और समरसता के यथार्थ प्रहरी भेजने हेतु अपने करोड़ो रुपये के हिन्दू-धर्म-दान का कोई अंश खर्च करता होगा ? इन हिन्दू मंदिरों के संचालक एवं धर्म कोष के अधिपति अपनी राजनीतिक अभीप्साओं की पूर्ति के लिए मंदिर कोष कभी सरकारी कार्यों हेतु, कभी आगंतुक राजनीतिक महानुभाव के सरकारी सहायता कोष हेतु, कभी सड़क पानी बिजली के लिए खर्च कर अपने लिए राजनीतिक पद और प्रतिष्ठा की संभावनाएं ढूंढते हैं। लेकिन अरुणाचल से लेकर अंडमान और लद्दाख तक जो संगठन हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए प्रयासरत हैं उनको कभी दो रुपये की सहायता नहीं देते।

हिंदू पर्व केवल लोकाचार- रीति रिवाज और कर्मकांड के पालन द्वारा अपनी क्षुद्र मनोकामनाएं पूरी करवाने का पाखंड नहीं होना चाहिए। हिन्दू क्यों हारा ? किन कारणों से आक्रमणकारी जीते ? किन कारणों से हमारा संगठन जातियों, धन कुबेरों के स्वार्थों, धार्मिक कुरीतियों और रूढ़िवादिता के कारण छिन्न भिन्न होता रहा ? और किन महापुरुषों ने हिन्दू संगठन का बीड़ा उठाया जिस कारण आज सर्वत्र एक हिंदू उत्कर्ष का भाव दिखने लगा है ? इन पर विचार किये बिना भारत के नवीन भाग्योदय पर विमर्श अधूरा ही कहा जायेगा। स्मरण रखिये महाशक्ति संपन्न, विष्णु के अवतार श्री राघव को भी रावण वध से पूर्व भगवती शक्ति का आवाहन कर आशीर्वाद लेना पड़ा था। हमारे अवतारी पुरुष और वीर पराक्रमी गुरु दुष्ट हन्ता, जनसंगठक, मर्यादा रक्षक, प्रजा वत्सल, अत्यंत सौम्य, अक्रोधी, शालीन, भद्र, सबकी सुनने वाले और विनम्र रहे हैं। हमारे महापुरुषों ने जीवन भर जन हित के लिए संघर्ष किया- उनको जीवन में कभी लौकिक सुख नहीं मिला -विलासिता और ऐश्वर्य से कोसों दूर रहे।

क्या हम अपने अवतारी महापुरुषों के जीवन से कुछ सीखते हैं ? यदि कृष्ण शक्ति, नीति और पराक्रम के योद्धा पुरुष थे जिनको सुदर्शन चक्र के प्रतापी रूप से जाना गया तो राम मर्यादा भक्षक रावण तथा उसके पुत्रों के वध के बाद उसकी स्वर्णमयी लंका भस्म कर- 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कहते हुवे अयोध्या लौटे- और कृष्ण ने मथुरा वृंदावन से हजारों मील दूर गुजरात में देहोत्सर्ग किया। दोनों ही अवतारी पुरुष शक्ति और पराक्रम के अन्यतम उदाहरण हैं। अर्थात जहाँ आवश्यक हो वहां अरि हनन कर सज्जनों को अभय देना ही हिन्दू सनातन परंपरा का प्राचीनतम सन्देश रहा है। शक्ति का उपार्जन करना, स्वयं को शत्रु से अधिक बलशाली बनाना, पश्चाताप रहित शत्रु को कभी क्षमा नहीं करना, उसके प्रति कोई दया भाव नहीं दिखाना, सत्य और धर्म रक्षा के लिए प्रत्येक पग उठाने का साहस रखना ही सनातन नियम है। वर्तमान सन्दर्भों में भारत के आराधकों का विजय पथ पर आरोहण एक नए युग के प्रवर्तन का प्रतीक है। एक ओर यदि हिंदू उत्कर्ष की पुनः प्राप्ति हमारे संघर्ष के अटूट सातत्य का स्वर्णिम अध्याय है तो यह भी सत्य है कि सनातन पथ पर सनातन का नाम लेने वाले ही अति दुर्गम कंटक भी बोये, हिन्दू निर्बलताओं का अनुभव भी हुआ, शक्ति अर्जन और जन संगठन में कमियां रहीं। 'तुम विजयी हो गए तो क्या हुआ, पहले यह बताओ मुझको क्या मिला ?' इस प्रकार के भाव लेकर सनातन ही सनातन की पराजय का कारण बना। यह इस प्रकार था मानों लंका विजय के बाद हनुमान श्री रघुवीर से पूछें कि अब मुझे कौन सा मंत्रालय मिलेगा? अयोध्या वालों ने तो कोई युद्ध नहीं किया, इसलिए अधिकांश पद, वानर और रीछ जातियों के लिए आरक्षित होने चाहिए। इस भाव के विरुद्ध जन संगठन और राष्ट्र धर्म सर्वोपरि मानने का भाव सनातन की विजय सुनिश्चित करता है। जितना ही यह भाव बढ़ेगा हिंदू उत्कर्ष उतना ही निकट आएगा।

- तरुण विजय

ईरान इजराइल युद्ध

आज कल ईरान और इजराइल के बीच युद्ध जैसी स्थिति पैदा हो गई है। जिसमें ईरान ने इजराइल पर बहुत बहुत बड़ा हमला कर के इजराइल को चुनौती दे दिया। इजराइल भी पीछे हटने वाला नहीं है। जो कि एक भयानक युद्ध की स्थिति पैदा हो गई हैं। यह स्थिति दुनिया के लिए बहुत ही बुरी स्थिति हैं। जिसके वजह से अंतरराष्ट्रीय समुदाय को बहुत नुकसान उठाना पड़ सकता है। जहाँ एक तरफ रूस ईरान का साथ दे रहा है, वहीं दूसरी तरफ अमेरिका इजराइल का साथ दे रहा हैं जिसका नतीजा हो सकता है कि एक भयानक युद्ध पूरे विश्व बिरादर को सोचना चाहिए कि युद्ध किसी भी समस्या का समाधान नहीं है इसके लिए एक साथ मिलकर समस्या का समाधान निकाला जा सकता है। मनुष्य एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं और वह अपने समस्या का खुद हल निकाल सकता है और अगर इस मामले का कोई हल नहीं निकला तो यह एक बहुत भयानक रूप ले लेगा ' इस युद्ध का दुनिया पर भयानक असर पड़ेगा और नए समस्याओं को जन्म देगी ' क्योंकि दो प्रमुख हस्तियों के टकराने से परमाणु युद्ध का खतरा मंडरा ने लगेगा । और युद्ध भयानक होने से पूरे विश्व के लिए एक खतरा पैदा होने लगेगा । दूसरी तरफ भारत भी इस युद्ध से अछूता नहीं रहेगा क्योंकि कि बहुत सारे भारतीय गल्फ देश में काम करते हैं तथा वे हमारे भारत की अर्थव्यवस्था को काफी सहयोग पहुँचाते हैं, मुद्रा के रूप मे हो या सेवा के क्षेत्र मे हो. आज भी हमे 80% तेल को आयात करना पड़ता है और अधिकांश तेल हम गल्फ देश से लेते हैं और युद्ध की स्थिति में तेल की पूर्ति कम होगी तथा तेल की कीमत में इजाफा होगा जिसका असर हमारी अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक असर पड़ेगा और हमारी ग्रोथ भी कम होगी ' अतः हम कह सकते हैं कि युद्ध हमारे विचार किसी के लिए भी अच्छा नहीं है । मिडल इस्ट में पूरे विश्व में हमेशा से ही असंतुलन रहा हैं और जिसकी अशांति पूरे विश्व की राजनीति एवं अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है।अतः इस समस्या का हमे कोई स्थाई समाधान खोजने की जरूरत है ताकि जो समय समय पर उठा पटक को बंद किया जा सके। एक तरफ हम चंद्रमा पर जा रहे हैं और दूसरी तरफ ऐसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। इस समय पूरे विश्व को एक साथ मिलकर इस समस्या का समाधान निकालना है तथा लोगों को यह बताना होगा कि इससे कुछ मिलने वाला नहीं है और यह का नतीजा केवल नुकसान ही होता है।

- प्रोफेसर अजय कुमार चतुर्वेदी
IEC विश्वविद्यालय

26 अप्रैल के बाद अमेठी-रायबरेली के पत्ते खोलेगी कांग्रेस

- अजय कुमार

अमेठी से राहुल तो रायबरेली से प्रियंका वाड्रा होंगी प्रत्याशी!

लखनऊ। केरल की वायनाड लोकसभा सीट पर दूसरे चरण में 26 अप्रैल को और अमेठी में 20 मई को पांचवें चरण में होना है। दूसरे चरण और पांचवें चरण के बीच 24 दिनों का अंतराल गांधी परिवार के लिये सियासी रूप से बहुत चौकानें वाला हो सकता है। कयास लगाये जा रहे हैं कि वॉयनाड के मौजूदा और अमेठी के पूर्व सांसद राहुल गांधी वॉयनाड में 26 अप्रैल को मतदान होने के बाद अमेठी से चुनाव लड़ने की घोषणा कर सकते हैं। इस बात को हवा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी दी है। महाराष्ट्र के नांदेड में एक रैली को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा पीएम ने कहा कि राहुल गांधी पहले अमेठी छोड़कर केरल के वायनाड गए, अब उन्हें वायनाड से भी हार का डर सता रहा है। पीएम ने कहा, शहजादे अब वायनाड छोड़कर दूसरी सेफ सीट ढूंढ रहे हैं।वैसे मोदी ने इसी के साथ कांग्रेस नेता सोनिया गांधी पर भी निशाना साधा था।

वैसे कांग्रेस पार्टी सूत्रों के अनुसार भी राहुल गांधी अमेठी से पार्टी के प्रत्याशी हो सकते हैं। पार्टी की ओर से इस बारे में संकेत भी दिया गया। सूत्रों के अनुसार राहुल गांधी आगामी 26 अप्रैल के बाद अमेठी सीट से अपना नामांकन भरेंगे। तब तक दूसरे चरण में वायनाड में मतदान हो चुका होगा, जहां से वह अभी पार्टी प्रत्याशी हैं। पार्टी का मानना है कि अब भी गांधी परिवार को इन परंपरागत सीटों पर अधिक प्रचार की आवश्यकता नहीं है। शायद इसी वजह से अब तक पार्टी ने दोनों ही सीटों पर अपने पत्ते खोलने से परहेज किया है।

उधर, कुछ दिनों पूर्व अखिलेश के साथ प्रेस कांफ्रेस करते हुए राहुल गांधी ने गोलमोल जबाव देकर सस्पेंस बरकरार रखा था। अमेठी से चुनाव लड़ने पर राहुल गांधी ने कहा कि यह पार्टी की केंद्रीय चुनाव समिति का अधिकार क्षेत्र है और वह इसके फैसले का पालन करेंगे। जबकि भाजपा ने स्मृति ईरानी को अमेठी सीट से फिर से उम्मीदवार बनाया है।राहुल गांधी ने कहा कि सीईसी और कांग्रेस अध्यक्ष मुझ से जो भी करने को कहेंगे, मैं करूंगा। ऐसे फैसले हमारी सीईसी में होते हैं। हाल ही में अमेठी से बीजेपी उम्मीदवार और केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने राहुल गांधी पर तंज कसते हुए कहा था कि राहुल गांधी 26 अप्रैल के बाद अमेठी आएंगे और वह धर्म और जाति के नाम पर बांटने की कोशिश करेंगे. इसके साथ ही स्मृति ईरानी ने कहा था कि राहुल गांधी से हमें सचेत रहना होगा राहुल सनातन विरोधी पहले से हैं। स्मृति ईरानी 29 अप्रैल को नामांकन करेंगी।

बहरहाल,जब कांग्रेस नेता जयराम रमेश से पूछा गया कि अमेठी-रायबरेली सीट से कांग्रेस किन्हें उम्मीदवार बनाएगी. इस सवाल पर जयराम रमेश ने कहा कि हम लोग चाहते हैं राहुल और प्रियंका गांधी अमेठी-रायबरेली से चुनाव लड़ें. ऐसा ही कांग्रेस संगठन भी चाहता है. हालांकि राहुल गांधी ने पहले ही साफ कर दिया है कि उम्मीदवारों के संबंध में कांग्रेस चुनाव समिति (सीईसी) तय करेगी.

बता दें कि माना जा रहा है कि अमेठी सीट से राहुल गांधी और रायबरेली सीट से प्रियंका गांधी चुनाव लड़ सकती हैं. हालांकि अभी कोई ऑफिशियल जानकारी सामने नहीं आई है. जहां अमेठी से बीजेपी ने फिर से स्मृति ईरानी को उम्मीदवार बनाया है तो वहीं रायबरेली सीट पर बीजेपी ने प्रत्याशी के नाम का एलान नहीं किया है.

उत्तर प्रदेश की अमेठी सीट पर आगामी 20 मई को पांचवें चरण में मतदान होना है। आगामी 27 अप्रैल से यहां नामांकन की प्रक्रिया शुरू होगी। सूत्रों के अनुसार कांग्रेस वायनाड के मतदाताओं को मतदान से पहले यह संदेश नहीं देना चाहती है कि राहुल गांधी यह सीट छोड़ सकते हैं। अथवा वायनाड के विकल्प के रूप में अमेठी सीट भी है। इसलिए अभी तक कांग्रेस ने रणनीति के तहत अमेठी से पार्टी प्रत्याशी घोषणा नहीं की है। 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी अमेठी के साथ ही केरल की वायनाड सीट से भी चुनावी मैदान में उतरे थे। लेकिन वह अमेठी में केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी से चुनाव हार गए थे।

रामायण में काण्ड का नाम सुन्दर काण्ड क्यों?

- आत्माराम यादव

महर्षि वाल्मीक रचित रामायण हो या गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरित्रमानस, दोनों में बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, उत्तरकाण्ड नामकरण कर रामकथा के प्रसंगों को इन काण्डों में समाहित किया है। जिसमें सुंदरकाण्ड नामकरण किए जाने की विशेषताओं का रहस्य विरले ही समझ पाते है। विशेषकर वे लोग जो नित्य प्रतिदिन सुंदरकाण्ड का पाठ करते है। वे इससे भलीभाँति अनभिज्ञ है। रामायण जनमनोहरमादिकाव्यम रामायण जन-जन को प्रिय है यह आदिकाव्य है जिसके सभी पात्र ओर उनकी कथायेँ सुंदर है इसलिए काण्ड का नाम सुंदरकाण्ड रखा गया। रामायण सबके मन में बसी होने से मनोहर है ओर सुंदरकाण्ड अत्यंत मनोहर ओर सर्वश्रेष्ठ है। सर्वश्रेष्ठ बतलाते हुये कहा है-सुंदरे सुंदरों रामरू सुंदरे सुंदरी कथा। सुंदरे सुंदरी सीता सुंदरे किन्न सुंदरम। सुंदरकाण्ड में राम सुंदर है, सुंदर की कथाएँ सुंदर है, सुंदर में सीता सुंदरी है , सुंदर में क्या सुंदर नहीं है ? सुंदर में राम की कथा नहीं है, भक्त हनुमान की कथा ओर सीता की व्यथा हृदय को द्रवित कर देती है, यही सुंदरतम है, प्रश्न उठता है फिर सुंदरे सुंदरों रामः क्यो कहा गया है ? सुंदर काण्ड के दो प्रमुख ओर प्रधान चरित्र है सीता ओर हनुमान। हनुमान तो भक्त है ओर सीता शक्ति है ओर राम शक्तिमान। श्रीराम सीता अभिन्न है उन्हे प्रथक करके नही देखा गया है, क्योकि सीता के हृदय में राम बसे है ओर ऐसा कोई पल नहीं आया जब सीता ने राम को विस्मृत किया हो तथा हनुमान ने भी जो भी पराक्रम दिखाये, कही आभास नही होने दिया की वे उनके द्वारा किए गए है, अहंकाररहित हनुमान ने जो भी दुर्गम, दुर्जेय वीरोचित कार्य किए उस सभी कार्य का श्रेय उन्होने अपने प्रभु श्रीराम को दिया है, यही सुंदर कथा है, जो सुंदरकाण्ड की शोभा बढ़ाती है।

रामायण के प्रत्येक काण्डों का नामकरण करते समय व्यक्तित्व, चरित्र, जीवन ओर स्थान विशेष प्रासंगिक रखे गए है जहां हरेक व्यक्तित्व के चरित्र व गुणों के प्रगट होते ही उनके गुणों की सर्वोत्तमता शिखर पर देखने को मिलती है। बालकाण्ड में राम के बचपन के बाल स्वरूप से ताड़का-सुबाहु वध, अहिल्या उद्धार, धनुष भंग कर सीता स्वंवर का चित्रण है तो उत्तरकाण्ड में रावण वध का चरित्र के पश्चात को विस्तार रूप दिया गया है। अयोध्या काण्ड, अरण्यकाण्ड ओर किष्किंधा काण्ड में अयोध्या का उल्लेख, वन प्रदेशों का उल्लेख के आलवा किष्किंधा का उल्लेख है। राम ओर रावण के युद्ध को लंका काण्ड नाम दिया गया जबकि सुंदरकाण्ड इन सारे पहलुओ से प्रथक है ओर यह नाम सर्वथा उच्चासन पर होने से अन्य किसी कथा या प्रसंग सुंदरकाण्ड के आसन पर आसीन नही हो सका है।

सुंदरकाण्ड में सभी के चरित्र है विशेषकर इसमें सीता ओर हनुमान की कथा सुंदर है। सीता शक्ति है ओर राम शक्तिमान है।शक्ति ओर शक्तिमान के अनन्य भक्त हनुमान है। शक्तिस्वरूप सीता का हृदय श्रीराम को नहीं छोड़ सकता है। राम के सौंदर्य को लेकर सीता त्रेलोक्य सुंदरी है अतएव राम ही सीता बनकर सुंदर हो रहे है। रामतापनीय उपनिषद में कहा गया हैः-ह्यो वै श्रीरामचन्द्ररूस भगवान, या जानकी भुभूर्वः। स्वस्तस्ये वै नमो नमः ह्रश्रीराम साक्षात भगवान है ओर देवी जानकी रमा है। राम ही जानकी है, इसीलिए राम के सौंदर्य में ही राम मानस-सरो-भरालिका सौंदर्य है। सुदरकाण्ड में जिस कुंतलाकुल कपोलसुंदरी सीता के रूप गुण का विकास है, वह क्या जाग्रत क्या स्वप्न, सर्वदा श्रीराम के चरण कमलों में सब कुछ समर्पित है इसलिए कहा गया हैः-सुंदरे सुंदरों रामः। वाल्मीक जी रचित सुंदरकाण्ड में उन्होने हनुमान के चरित्र को प्रधानता देते हुये उच्च शिखर पर रखा ओर हनुमान के समक्ष रावण की तुलना करते हुये हनुमान के सामने रावण को अति तुक्ष्य मानकर कहा है-न मे समा रावणकोटयोधमाः रामस्य दासोंहमपारविक्रमः ।रावण जैसे करोड़ों अधम मेरी समता नहीं कर सकते। मैं श्रीराम का दास हूँ। अतः मेरे पराक्रम का कोई थाह नहीं पा सकता है। राम का दास होने के कारण मुझमे अपार विक्रम है। दास होने से जहां इतना शौर्य वीर्य प्रस्फुटित हो उठता है,वहाँ भक्त का सौंदर्य भगवान का ही है। इसी से सुंदरे सुंदरों रामः कहा गया है। सुंदरे सुंदरों रामःह्वका अर्थ तो यहा प्रगट हो गया किन्तु सुंदर में सभी सुंदर है इसका अभिप्राय समझने के लिए कथा के मूल में हनुमान ओर सीता के समस्त गुण विकास को समझना होगा तभी सुंदरकाण्ड के सुंदर होने का रस्वास्वादन प्राप्त हो सकेगा।

गोस्वामी तुलसीदास ने सुंदर काण्ड की पहली ही चोपाई की शुरूआत सुंदर वचनों से की है कि- जामवंत के वचन सुहाए, सुनि हुनुमंत हृदय अति भाए। वे हनुमान को अपने विस्मृत हो चुके पराक्रम की याद कराने के बाद उन्हे अपने बल का बखान करते है जो एक ऋषि के श्राप से वे भूल चुके थे। हनुमान जी को स्मरण आता है तो उसकी परीक्षा के लिए वहाँ एक पर्वत का प्रसंग गोस्वामी जी रखते है कि- सिंधु तीर एक भूधर सुंदर में सुंदर शब्द का पहली बार उल्लेख किया ओर हनुमान जी जैसे ही उस पर्वत पर पाँव रखकर कूदते है तो वह पर्वत पाताल में धस जाता है।

सुंदरकाण्ड में सुदर क्या है हनुमान का स्वरूप जो भीमाकर कर लिया है जो अगाध गगनाकार सागर को लांघने के लिए है। शत योजन सागर को पार करते समय देवताओं ने उनकी परीक्षा लेने सुरसा को विघ्न बनाकर प्रस्तुत किया जो उन्होने अपने बुद्धिवल से सुरसा की परीक्षा पास करने के लिए सुरसा के शरीर के आकार से दुगुना चैगुना रूप धरने के बाद उनके मुख से वापिस आकार विदा मांगी। मैनाक पर्वत समुद्र से आ जाना ओर हनुमान से कहना की थक गए होंगे विश्राम कर ले ओर कुछ भोजन ग्रहण कर ले तब हनुमान द्वारा कहना की राम काज किन्हे बिना मोहि कहा विश्राम। मैं राम के काम से जा रहा हूँ इस समय मुझे भोजन ओर विश्राम के लिए समय नहीं है मुझे शीघ्र जाना है, हनुमान की बात सुनकर मैनाक पर्वत सागर में लौट जाता है। हनुमान सागर लांघते आगे बढ़ते है तभी एक निशाचर जो आकाश में उड़ने वाले पक्षियों जीव जन्तुओ की परछाई सागर के जल में पड़ते ही उनकी परछाई पकड़ उन्हे खा जाती है वह राक्षसी हनुमान की परछाई पकड़ लेती है हनुमान जी तुरंत उसे मारकर समुद्र पार कर लंका पहुचते है। जिसपर तुलसीदास जी सुंदर शब्द का दूसरी बार प्रयोग कर लिखते है कि -कनककोट विचित्रा मनि कृत सुन्दरायतना घनाह्वह्व अर्थात लंका का वह सोने का परकोटा रंग विरंगी मणियों से जड़ा है जिसके अतिसुंदर घर है।

लंका पहुचकर हनुमान जी द्वारा दक्षिण किनारे से त्रिकुट शिखर पर चढ़कर लंकापूरी को देखना, संध्याकाल मसक/मच्छर के समान सूक्ष्म शरीर धारण कर लंका में प्रवेश करते समय राक्षसीवेश धारण करने वाली लंकिनी को घूंसा मारकर रक्तरंजित करना तथा लंकिनी द्वारा हनुमान को लंका के विनाश के प्रसंग सुनकर शुभ संकेत देना सुंदर ही तो है जिसका विस्तार से पढ़ने के बाद सुंदरकाण्ड के अन्य प्रसंगो का सुंदरतम वर्णन से सभी आभिभूत होते है ओर हनुमान के द्वारा उनके मार्ग में बाधक बनी तीन स्त्रियों के साथ अपनाए गए व्यवहार उनकी बुद्धि का प्रमाण है जहा वे पहली स्त्री सुरसा के सामने विनय करते है, दूसरी स्त्री सिहिंका को यमलोक पहुचाते है ओर लंका को एक मुसठिका मारकर ठीक करते है।

सुंदरकाण्ड के कथा वर्णनों में माता सीता की खोज में हनुमान लंका के हर महल ओर घरों का अन्वेषण करते है। गोस्वामी जी लिखते है ह्व मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा, देखे जंह तंह अगनित जोधा। गयउ दसानन मंदिर माहीं, अति विचित्र कहि जात सो नाही। ह्वह्वहनुमान ने हर घर जिन्हे मंदिर कहा गया है में सीता की तलाश की परंतु उन्हे असंख्य योद्धा दिखे। रावण के महल में भी देखा जो विचित्र बना हुआ था जहा भी सीता नही दिखी। तब हनुमान को एक सुंदर घर दिखा जिसमे रामनाम अंकित था तुलसी की पुजा होती थी तब उन्होने सोचा यहा निश्चरों के बीच कौन सज्जन पुरुष है ह्वह्व लंका निसिचर निकर निवासा, इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा। मन महु तरक करें कपि लागा, तेही समय विभिसनु जागा। ह्वह्व हनुमानजी ने ब्रम्हण का वेश धर कर बिभीषन से मिले जहा से उन्हे सीता माता के अशोक वाटिका में होने कि जानकारी मिली ओर वे सीतामाता से मिलने के लिए अशोकवाटिका कि ओर चल दिये।

एकवेन्णी कृशां दीनां मलिनाम्बरधारिणिम ।
भूमौ शयानां शौचंती रामरामेति भाषिनिम॥

हनुमान जी ने अशोकवाटिका में अशोक वृक्ष के नीचे पृथ्वी पर माता जानकी को देखा,मानो कोई देवांगना एक वेणी धारण किए हुये है ओर उसका शरीर अत्यंत दुर्बल हो, आकृति दीन थी, वस्त्र मलिन थे ओर चिंतन कि मुद्रा में राम राम कि रट लगाए हुये थी। हनुमान जी ने जनकनंदिनी के दर्शन रात में किए तब बीस भुजा वाले नीलांजन राशि के समान रावण का सीता के पास आना ओर सीता के दर्शन कर अपनी कठोर ओर कटु वाणी बोलना ओर सीता का उत्तर प्रतिउत्तर सुनकर जानकी के वध के लिए रावण का खड़ग उठाना ओर मन्दोदरी द्वारा उसे रोका जाना, रावण का सीता को दो माह का समय देना तथा राक्षसीगण को सीता को भयभीत करने के आदेश के उपक्रम में सीता को उत्पीड़न करना ओर धमकी देना कि ह्वह्वमास दिवस महँ कहा न माना तो मैं मारिब काढ़ि कृपाना ।त्रिजटा का स्वप्नवृतांत सुनाकर राक्षसीवृंद को भयभीत ओर निंदित करना , सीता का रुदन करना ओर प्राणत्याग कि चेष्टा का भाव लाने पर हनुमान द्वारा अवसर जानकार सीता को रामवृतांत सुनाना ओर फिर राम द्वारा दी गई मुद्रिका/अंगूठी सीता को प्रदान कर उनका विश्वास अर्जित करने के लिए अंगूठी सीता जी से सामने डाल दी। तब देखि मुद्रिका मनोहर, राम नाम अंकित अति सुंदर। सीताजी अंगूठी पहचान कर हर्ष ओर दुख के साथ व्याकुल हो गई तब हनुमान से वानरराज सुग्रीव से मित्रता कि बात बताकर वानरों के बल बुद्धि का बखान कर कर उनकी ताकत का भरोसा दिलाया जिसपर पर संतुष्ट होकर सीता ने उन्हे आशीर्वाद दिया-आशीष दीन्ही रामप्रिय जाना होहु तात बल सील निधाना। अजर अमर गुन निधि सुत होहु। करहु बहुत रघुनायक छोहु।

सीता जी से अजय अमर होने का आशीर्वाद प्राप्त कर हनुमान जी ने उनसे कहा माँ मुझे भूख लगी है अगर आप कहे तो मैं अशोकवाटिका से कुछ पल खा लूँ-लागि देखि सुंदर फल रूखा। इसके बाद आज्ञा पाकर अशोकवाटिका में सुंदर फलों का आहार कर वाटिका उजाड़ना, रावण के सेना ओर उसके बेटे अक्षयकुमार को मारना फिर मेघनाथ द्वारा हारने कि स्थिति में हनुमान पर ब्रम्हपाश छोडना ओर हनुमान का उसमे बंधाना, रावण की सभा में जाना, रावण को उपदेश देना, रावण का क्रोधित होना, पुंछ में आग लगाना ओर उस आग से हनुमान द्वारा पूरी लंका का दहन करना,सागर में पुंछ बुझाकर वापिस सीता के पास अशोकवाटिका में आना उनसे चुड़ामणि लेकर सागर के पार आना, वानर साथियो के साथ मिलना। मधुबन के फल खाना ओर उसे उजाड़ना, राम जी के पास सीता का संदेश सुनाना, राम द्वारा हनुमान को गले लगाना सुदरकाण्ड की ये सारी कथाएँ बड़ी ही सुंदरतम है।

हनुमानजी का सबसे बड़ा गुण ओर उनकी शक्ति अनेक स्थानों पर वर्णन गई है। वे दुरदर्शी थे कि सन्यासी का रूप रखकर निशाचर लोग छलते है,रावण के द्वारा सन्यासी के रूप में सीता का हरण जगजाहिर हो गया था । कालनेमि ने भी सन्यासी का रूप रखकर हनुमान को संजीवनी लाने से रोका था। दुरदर्शी हनुमान ने संभवतया ब्राम्हण रूप को उपयुक्त माना जो सत्य संभाषण ओर वेद पुराण ओर धर्म के आचार्य भी रहे इसलिए उन्होने ब्राम्हण का रूप रखा जिसका पहला प्रयोग हनुमानजी जी ने तब किया जब सुग्रीव को भय हुआ कि कोई मुनिकुमार उसके भाई बालि के भेजे उसे नुकसान पहुचा सकते है तब हनुमान ब्राम्हण वेष बनाकर रामलक्ष्मण के पास जाते हैं और सुग्रीव राम की मित्राता कराके दोनों का हित साधते हैं ।विभीषण के पास भी वे रात्रि के अंत में ब्राम्हण बनकर जाते हैं और उनसे सीता अशोक वाटिका में बन्दिनी है, यह जानकारी प्राप्त करते है। आकार वे विचार करते हैं कि कैसे मैं जनकनंदिनी से बातें करूं कि सीता जी का विश्वास अर्जित कर लूं। यदि संस्कृत में वातार्लाप करूंगा तो कहीं वैदेही मुझे रावण समझबैठे। अतः मैं जनभाषा में बातें करूंगा, यह विचार करने के बाद वे माता सीता के सामने अपने असली रूप वानर के रूप में परिचय देते है। या कहे जगजननी के सामने भक्त जैसा है वैसे ही समर्पित होता है उनके सामने भक्त की माया का क्या मूल्य, वास्तविक रूप को माता स्वीकारती भी है। जब लक्ष्मण को शक्ति लगी तब वे संजीविनी बूटी लेने गये तो वे हक्काबक्का हो गये। वैद्यराज सुषेण ने बताया था कि संजीवनी का वृक्ष प्रकाशित रहता है। रात्रि में हनुमानजी ने पचासों पेड़ों को प्रकाशमय पाया। कोई दूसरा होता तो सोचता मैं क्या करूं चलो बता दूंगा वहां संजीवनी वृक्ष नहीं था, सारे वृक्ष प्रकाशमय थे, मैं किसे लाता ? बुद्धि सागर हनुमान जी ने यह पर्वत खंड ही उखाड़ लिया जिस पर वे समस्त वृक्ष खड़े थे और प्रकाश दे रहे थे।

सुंदरे सुंदरी सीता के विषय में सुंदरकाण्ड, सीता के प्रधान चरित्र को प्रगट करता है यह अलग बात है कि हम अब तक हम भक्त हनुमान ओर अन्य प्रसंगो के चिंतन में खोये रहे। सम्पूर्ण नारी जगत को गौरवान्वित करने वाली सीता अपने नाम, रूप, गुण ओर चरित्र में सती के सतीत्व का तेज लिए हुये सर्वव्यपिनी चैतन्यस्वरूप त्याग की मूर्ति है। श्रीराम के निकट रहने के कारण वे जगदानन्दकारिणी है जो कुछ देहविशिष्ट है सबकी उत्पत्ति,स्थिति ओर संहारणी सीतादेवी ही कही गई है इसलिए कहा गया है कि सीता ही प्रणय होने के कारण प्रकृति है।

अध्यात्म रामायण में उल्लेख किया गया है कि ह्वएको विभासि त्वं माया बहुरुपया। तथा- योगमायापि सीतेति ह्वह्व लोकविमोहिनी हरिनेत्रकृतालया श्रीसीताजी ने श्रीरामचन्द्र जी के अभिप्रायानुसार श्रीसीता जी राम के एक सर्वश्रेष्ठ भक्त को ज्ञान का पात्र जानकार एक वार तत्वज्ञान प्रदान किया था। श्रीसीता जी कहती है कि रामको परब्रम्ह सच्चिदानंद ही जानना चाहिए। एकमात्र सत्यवस्तु श्रीराम ही बहुरूपिणी माया को स्वीकार कर विश्वरूप में भासित हो रहे है ओर सीता ही योगमाया है। ह्वह्वमूलप्रकृतिस्वरूप होने से सीता सत्वरजस्तमोगुणात्मिका प्रकृति है जिन्हे त्रिवर्णात्मा साक्षात माया कहा है जो प्रपंच बीज, मायामयी कही गई है तथा वे अविद्यास्वरूपणी भी है ओर विघास्वरूपणी भी है। रामायण में जो कुछ होता है सीता उसकी कर्ता है,विश्व का सारा कार्य शक्तिरूप ही करती है। सीता हरण, रावण मरण सारे कर्म के मूल में कर्ता सीता कही गई है, वास्तव में निर्विकार एवं अखिल विश्व कि आत्मा सीता ही है। राम कुछ नही करते,जो कुछ होता है माया के गुणों के अनुग्रह से होता है।

दुष्टधीनाशयित्रिम॥
जनकधरणीपुत्री दर्पिदर्पप्रहत्री।
हरिहरविधिकत्री नौमि सदभक्तभत्रिम॥

भगवती सीता जी कि अपार महिमा है। वेद शास्त्र पुराण इतिहास तथा धर्म ग्रंथो में इनकी अनंत लीलाओ का शुभ वर्णन किया गया है। ये भगवान श्रीराम कि प्राणप्रिया आघ्याशक्ति है। इन्ही के भृकुटी विलास मात्र से उत्पत्ति-स्थिति -संहारादि कार्य हुआ करते है। श्रुति का वाक्य है- उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी सर्वदेहिनाम। सा सीता भगवती ज्ञेया मूलप्रकृतिसंज्ञिता ॥ (श्रीरामतापनीय-उत्तरार्द्ध) समस्त देह धारियों की उत्पत्ति,पालन तथा संहार करने वाली आघ्याशक्ति मूल प्रकृति संगयक श्री सीता जी ही है। अतः सुंदरकाण्ड में हनुमान ओर सीता का प्रसंग सुंदर है इसलिए ह्वसुंदरे सुंदरी सीता ह्वह्व जैसे मांगलिक भाव का रसास्वादन लेने के लिए ही रामायण में काण्ड का नाम सुंदरकाण्ड रखा गया है जो उत्तम है।

नक्सलवाद : आखिर कब थमेगी अपने ही युवाओं से खून की होली

छत्तीसगढ़ में पिछले 14 सालों के भीतर 1582 नक्सली मुठभेड़ हुई है। इन मुठभेड़ के दौरान 1452 नक्सली मारे गए हैं। इस बीच 1002 आम नागरिकों की भी मौत हुई है। वहीं इन हमलों में 1222 जवान शहीद हो चुके हैं।

छत्तीसगढ़ के कांकेर में सुरक्षाबलों ने 29 नक्सलियों को ढेर कर दिया। इस ऑपरेशन के लिए सुरक्षाबलों को कड़ी मेहनत करनी पड़ी है। जवान नक्सलियों के अड्डे तक पहुंचने के लिए 20 घंटे तक पैदल चले हैं। नक्सलियों के समूह को देखने के बाद पुलिस ने फायरिंग शुरू की थी। जब बंदूकें शांत हुईं, तो जंगल के फर्श पर सूखे पत्तों के बीच 29 माओवादी मृत पड़े थे। इनमें ललिता, शंकर और दूसरे कमांडर विनोद गावड़े के शवों की पहचान सबसे पहले की गई। मृतकों में पंद्रह महिलाएं भी थीं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नक्सलियों के खिलाफ मिली सफलता को केन्द्र और राज्य में भाजपा सरकार की उपलब्धि बताया। उन्होंने विश्वास जताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में बहुत कम समय में देश से नक्सलवाद को उखाड़ फेंका जाएगा। छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनने के बाद से इस अभियान को गति मिली है। नक्सली इलाकों में सुरक्षा बल कैंप लगाए जा रहे हैं। 19 के बाद इनकी संख्या 250 हो गई है। नक्सलियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में छत्तीसगढ़ पुलिस से भी मदद मिल रही है। राज्य में भाजपा सरकार बनने के बाद तीन महीने में 80 से ज्यादा नक्सली मारे गए हैं। 125 गिरफ्तार हुए हैं और 150 ने आत्मसमर्पण किया है। देश के 10 राज्यों में 70 जिलों में नक्सलवाद का प्रभाव है। इसमें सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य झारखंड जहां 16 जिले हैं। वहीं छत्तीसगढ़ में नक्सल प्रभावित 14 जिले शामिल हैं। छत्तीसगढ़ में पिछले 14 सालों के भीतर 1582 नक्सली मुठभेड़ हुई है। इन मुठभेड़ के दौरान 1452 नक्सली मारे गए हैं। इस बीच 1002 आम नागरिकों की भी मौत हुई है। वहीं इन हमलों में 1222 जवान शहीद हो चुके हैं। छत्तीसगढ़ में नई सरकार के गठन के बाद नक्सलियों को आशंका थी कि सरकार उनके खिलाफ अभियान तेज करेगी और हुआ भी ऐसा ही। राज्य की नई सरकार ने शान्ति का प्रस्ताव भी सामने रखा था लेकिन नक्सल नेताओं की तरफ से इस प्रस्ताव पर कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आई। वहीं दूसरी तरफ पुलिस और सुरक्षाबलों को बस्तर में फ्री हैण्ड कर दिया गया हैं। ऐसे में पिछले तीन महीनों में नक्सलियों को कई बड़े नुकसान उठाने पड़े हैं। अब तक जहां माओवादियों के बटालियन स्तर के नेता ही ढेर हुए थे तो इस बार शंकर राव जैसे डिवीजन लेवल का नेता पुलिस के गोली का शिकार हुआ हैं। ऐसे में नक्सली प्रदेश में पूरी तरफ से बैकफुट में हैं। अब लगातार सवाल किये जा रहे हैं कि आखिर कब तक छत्तीसगढ़ को इस नक्सल दंश से छुटकारा मिल पायेगा और बस्तर में खून की होली थमेगी। सरकार, सुरक्षा बलों एवं स्थानीय लोगों की संयुक्त कोशिशों का परिणाम है कि पिछले एक दशक में वामपंथी अतिवाद संबंधी घटनाओं, मौतों और उनके भौगोलिक प्रसार में काफी कमी आई है। जहाँ वर्ष 2010 में वामपंथी अतिवाद से प्रभावित जिलों की संख्या 96 थी वहीं वर्ष 2018 में प्रभावित जिलों की संख्या 60 रह गई है। वर्ष 2009 में जहाँ नक्सलवाद की घटनाओं और इन घटनाओं में मरने वालों की संख्या क्रमश 2258 व 1005 थी वहीं वर्ष 2018 में यह संख्या घटकर क्रमश 833 एवं 240 रह गई। देश के जिन 8 राज्यों के लगभग 60 जिलों में यह समस्या बनी हुई है उनमें ओडिशा के 5, झारखंड के 14, बिहार के 5, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ के 10, मध्य प्रदेश के 8, महाराष्ट्र के 2 तथा बंगाल के 8 जिले शामिल हैं। वर्ष 2015 के बाद से नक्सलियों के 90 प्रतिशत हमले लगभग चार राज्यों- छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार और ओडिशा में हुए हैं। माओवादियों के थिंक-टैंक और प्रथम पंक्ति के नेता या तो मारे जा चुके हैं या इस विचारधारा को छोड़ चुके हैं।

t.me/AllNewsPaperPaid

आम आदमी पार्टी की स्टार प्रचारक लिस्ट में अरविन्द केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल नम्बर दो हो गई हैं। सुनीता जी का स्थान, पंजाब के सीएम भगवंत मान और दिल्ली के डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया से भी ऊपर है। फिर अन्य सांसदों का नीचे रहना स्वाभाविक है। अरविंद जी पॉलिटिक्स बदलने आए थे!

— रंगनाथ सिंह, लेखक/पत्रकार@rangnathsingh_

बेहतर दुनिया

भारत डोगरा

अमन- शांति की बुनियाद मजबूत करें

गाजा में, यूक्रेन में, सुडान में और कितने ही स्थानों पर आज विश्व बुरी तरह हिंसा से त्रस्त है। महाविनाशक हथियारों की ऐसी बहुत खतरनाक होड़ पहले से और तेज हो रही है जो दुनिया को किसी बड़े संकट की ओर ले जाएगी। जो अंतरराष्ट्रीय संस्थान विश्व शांति और निशस्त्रीकरण के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार हैं, वे कभी असहाय नजर आते हैं तो कभी केवल चिंता प्रकट करने या बयानबाजी तक ही अपनी जिम्मेदारी को समेट लेते हैं।

इस बिगड़ती स्थिति को संभालना बहुत जरूरी है। उम्मीद की एक किरण हम सब जनसाधारण अपने प्रयासों से भी ला सकते हैं। बेशक, हम जनसाधारण प्रत्यक्ष रूप से बड़े युद्ध समाप्त नहीं कर सकते पर अपने आसपास की हिंसा को समाप्त कर या न्यूनतम कर एक अमन-शांति पर आधारित दुनिया बनाने के लिए अच्छी शुरुआत जरूर कर सकते हैं। दुनिया आखिर करोड़ों परिवारों के मिलने से ही तो बनती है, लाखों समुदायों के मिलने से ही तो बनती है। यदि परिवार और समुदाय स्तर से ही अहिंसक विश्व बनाने की बड़ी पहल हो तो इसका असर दूर तक भी जा सकता है। यदि परिवार और समुदाय के स्तर पर हम अहिंसा की जो सीख प्राप्त करते हैं, उसका उपयोग आगे, अधिक व्यापक स्तरों पर अमन-शांति के प्रयासों के लिए करते रहें। इस सोच के मूल में यह समझ है कि हिंसा मनुष्य के दुख-दर्द का एक प्रमुख कारण है। हर मनुष्य दुख-दर्द कम करना चाहता है और इसके लिए एक प्रमुख मार्ग यह है कि वह अपने भीतर की हिंसा और अपने आसपास की हिंसा को कम करे। यह मार्ग हम सबको उपलब्ध है, पर फिर भी यह प्रायः उपेक्षित है। यहां तक कि अपने भीतर की हिंसा को एक समस्या के रूप में पहचानने की प्रवृत्ति भी कम ही नजर आती है। पर वास्तविकता तो यह है कि मनुष्य के भीतर की हिंसा और आसपास की हिंसा अधिकांश समाजों में एक बड़ी समस्या है। भारत हो या अमेरिका इसकी एक बड़ी अभिव्यक्ति घरेलू हिंसा के बेहद चिंतित करने वाले आंकड़ों में उपलब्ध होती है।

अमेरिका जैसे 'विकसित' समाज में भी एक वर्ष में 110 से 120 लाख व्यक्ति घरेलू हिंसा अपने नजदीकी साथी (इंटीमेट पार्टनर) की हिंसा का शिकार होते हैं (प्रति मिनट 20) और इनमें से बहुत बड़ा हिस्सा महिलाओं का है। 19 प्रतिशत घरेलू हिंसा की घटनाओं में किसी न किसी हथियार का उपयोग भी होता है। घरेलू हिंसा की बड़ी वारदात को रहने दें तो भी कितने ही दिन जनसाधारण के ऐसे गुजरते हैं जिसमें छोटी-छोटी बातों में, क्रोध के आ जाने से जो कहा-सुनी हो जाती है उसके कारण दिन खराब हो जाता है, दुख भी होता है। हमारे समाज में परिवार में प्रेम और लगाव बहुत है, पर झगड़े भी कम नहीं हैं-फिर चाहे पति-पत्नी के झगड़े हों, भाई-भाई या सास-बहू के। अंत में अधिक सहना तो महिलाओं और बच्चों को ही पड़ता है, जबकि घरेलू हिंसा के दौर में बच्चे जो सहते हैं उसका अहसास भी कई बार व्यस्क सदस्यों को नहीं होता। बाद में मन में आता है कि ओह, क्रोध में हम क्यों नाहक अपने प्रियजनों को परेशान करते हैं और स्वयं भी होते हैं, पर यह सोचने के बाद भी बार-बार ऐसी वारदात होती ही रहती हैं। इसकी वजह यह है कि अपने भीतर की हिंसा को पहचानने और उसे कम करने के जरूरी प्रयास नहीं होते। इसके साथ कहीं न कहीं आधिपत्य की भावना जुड़ी होती है। यह लिंग आधारित हो सकती है (पुरुष द्वारा महिला पर आधिपत्य समझना), आयु-आधारित या धन-संपत्ति आधारित हो सकती है।

वास्तव में अहंकार, क्रोध, आधिपत्य, हिंसा यह सब आपस में जुड़े हुए हैं। फिर इन के साथ यदि नशे की प्रवृत्ति जुड़ जाए, विशेषकर शराब के नशे की प्रवृत्ति, तो इन सब की अभिव्यक्ति और भयानक रूप में हो सकती है। यदि इस सब को एक गंभीर समस्या के रूप में समझ कर इसे कम करने का प्रयास होगा तो विभिन्न व्यक्तियों और परिवारों में दुख-दर्द, परेशानी, तनाव, अपमान, आहत होने के अहसास और अवसाद में बहुत कमी आ सकती है, तथा दूसरी ओर खुशहाली, परस्पर प्रेम और सम्मान में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।

इस तरह समाज की सबसे छोटी पर बुनियादी इकाई के स्तर पर अहिंसा के प्रयासों को जो सफलता मिलेगी, उसके आधार पर जनसाधारण को, महिलाओं और पुरुषों को, युवाओं और छात्रों को प्रेरित कर समुदाय के स्तर पर अधिक व्यापक भूमिका के लिए तैयार किया जा सकता है। समुदाय में जो धर्म, जाति, लिंग आदि के स्तर पर भेदभाव हैं, वह भी मन के अंदर की हिंसा की एक अभिव्यक्ति है। हिंसा, आधिपत्य, अहंकार के मिले-जुले असर से किसी अन्य मनुष्य को धर्म, जाति के आधार पर हीन भावना से देखा जाता है। धर्म, जाति उप-जाति के आधार पर किसी को हीन मानना या उससे भेदभाव करना बुनियादी तौर पर अनुचित और अन्यायपूर्ण है पर जब सामुदायिक स्तर पर लोगों के दिलों में हिंसा, आधिपत्य और अहंकार की प्रवृत्ति है तो वह इन अनुचित रूपों में प्रकट होती रहती है जिससे अंत में क्षति पूरे समुदाय की ही होती है। जिनसे भेदभाव या अन्याय होता है वे तो आहत ही होते हैं, किन्तु जो अन्याय और भेदभाव करते हैं, वे भी सही मानवीय विकास की संभावनाओं से दूर हो जाते हैं, उनका सही विकास नहीं होता है और वे संकीर्ण विचारों के जाल में फंसे हुए अपने और अपने निकटस्थों के लिए कई समस्याएं उत्पन्न करते रहते हैं।

दूसरी ओर अहिंसा और अमन-शांति का संदेश सही ढंग से पूरे समाज में पहुंचता है तो समुदाय के सभी लोगों की उचित न्यायसंगत प्रगति के अवसर बढ़ते हैं, पूरे समुदाय की एकता और मजबूती बढ़ती है, खुशहाली बढ़ती है। इस तरह के सामुदायिक प्रयास पूरे देश में होते हैं तो पूर्ण राष्ट्र की खुशहाली, समता, एकता और प्रगति मजबूत होती है। यह इस रूप में मजबूत होती है कि अपने सभी लोगों में प्यार और सद्भावना बढ़ते ही हैं, पर देश की यह बढ़ती एकता और मजबूती किसी अन्य देश के लिए खतरा नहीं बनती है क्योंकि यह प्रगति मूलतः अमन-शांति और अहिंसा पर आधारित है। इस तरह यदि राष्ट्र की प्रगति होती है तो राष्ट्र की यह क्षमता भी साथ-साथ बढ़ती है कि वह हिंसा से बुरी तरह आहत दुनिया को अमन-शांति की राह दिखा सके। कल्पना कीजिए कि यदि विभिन्न देश इस तरह समाज की छोटी इकाई से ऊपर तक अमन-शांति और अहिंसा के प्रसार का प्रयास निरंतरता से करें तो क्या पूरे विश्व में अमन-शांति की संभावना नहीं बढ़ सकती है? क्या युद्ध की संभावना को न्यूनतम करते हुए विनाशक और महाविनाशक हथियारों की होड़ और दौड़ को भी नहीं रोका जा सकता? यह सब कोरी कल्पना नहीं है, वास्तविक संभावना है। कहा भी गया है, बहुत सी बड़ी उपलब्धियों की शुरुआत छोटे स्तर पर ही होती है।

अहिंसा और अमन-शांति का संदेश सही ढंग से पूरे समाज में पहुंचता है तो समुदाय के लोगों की न्यायसंगत प्रगति के अवसर बढ़ते हैं, समुदाय की खुशहाली बढ़ती है। इस तरह के सामुदायिक प्रयास पूरे देश में होते हैं तो पूर्ण राष्ट्र की खुशहाली, समता, एकता और प्रगति मजबूत होती है। इस रूप में कि अपने सभी लोगों में प्यार और सद्भावना बढ़ती ही हैं, पर देश की यह बढ़ती एकता और मजबूती किसी अन्य देश के लिए खतरा नहीं बनती क्योंकि यह प्रगति मूलतः अमन-शांति और अहिंसा पर आधारित है। इस तरह राष्ट्र की प्रगति होती है तो राष्ट्र की यह क्षमता भी साथ-साथ बढ़ती है कि वह हिंसा से आहत दुनिया को अमन-शांति की राह दिखा सके। विभिन्न देश समाज की छोटी इकाई से ऊपर तक अमन-शांति और अहिंसा के प्रसार का प्रयास करें तो क्या विश्व में अमन-शांति की संभावना नहीं बढ़ सकती है

ताली का मनोविज्ञान

मीडिया

सुधीश पचौरी

ऐसे सीनों को देख लगता है कि हमारी चुनावी राजनीति भी एक प्रकार की 'स्टैंडअप कामेडी' है, और अपने कई नेता टॉप के 'स्टैंडअप कामेडियंस' हैं। जिस तरह 'स्टैंडअप कामेडियन' हर 'आइटम' में एकाध ऐसी पंच लाइन लगाते हैं कि जिसे सुन दर्शक तुरंत ताली मारें। जो जितना ताली पाता है, उतना ही हिट होता है

इन चुनावी दिनों में हम अपने एक मित्र के घर बैठे थे। उनके ड्राईंग रूम में रखे टीवी में एक पॉपूलर खबर चैनल चालू था जो पीएम की एक रैली को लाइव दिखा रहा था। अपने मित्र की देखादेखी हम भी रैली के लाइव प्रसारण को देखने लगे। अचानक पीएम ने कहा, 'अभी तो ये ट्रेलर है...' कि सामने मौजूद अनगिनत श्रोताओं ने ताली मारी। फिर जब पीएम ने 'राम मन्दिर' का जिक्र किया तो ताली पड़ी, जब 'रामनवमी' की बात की तो ताली पड़ी, जब 'शाहजादे' कह कर कटाक्ष किया तो ताली पड़ी।

कुछ देर बाद वही चैनल 'बेलेंस' करने के लिए, विपक्ष के कुछ नेताओं की रैलियों में बोले गए जब ऐसे ही 'कटाक्ष' दिखाने लगा तो लगा तालियों की भी राजनीति होती हैं। उस चैनल ने दिखाया कि जैसे ही एक विपक्षी नेता ने कहा कि मैं युवकों, महिलाओं को हर साल लाख रुपये 'खटाखट खटाखट' पहुंचाऊंगा तो उनके 'खटाखट' वाली बात पर ताली पड़ती दिखी। ऐसे ही जब एक विपक्षी नेता ने कहा कि हमारा राज आने दो हम इनको अंदर कर देंगे तो कुछ पत्रकारों के चेहरे खिले दिखे। ऐसे सीनों को देख लगता है कि हमारी चुनावी राजनीति भी एक प्रकार की 'स्टैंडअप कामेडी' है, और अपने कई नेता टॉप के 'स्टैंडअप कामेडियंस' हैं। जिस तरह 'स्टैंडअप कामेडियन' हर 'आइटम' में एकाध ऐसी पंच लाइन लगाते हैं कि जिसे सुन दर्शक तुरंत ताली मारें। जो जितना ताली पाता है, उतना ही हिट होता है। लेकिन हमें 'हेटस्पीच' और तालीपूर्ण 'कटाक्ष' में फर्क करना होगा। 'हेटस्पीच' प्रतिक्रिया में 'हेट' पैदा करती है जबकि 'कटाक्ष' मनोरंजन। यों राजनीतिक नेताओं के भाषणों में 'कटाक्ष' के नाम पर 'हेटस्पीच' भी पेल दी जाती है।

हेटस्पीच भी खूब ताली पड़वाती है। लेकिन बेहतरीन 'स्पीच' होती है जो 'हेटस्पीच', 'गाली-गलौज की जगह, मजाहिया कमेंट से विपक्षी को धराशायी करे। यों इस चुनाव से पहले बहुत सी 'हेटस्पीचें' दी जा चुकी हैं जिनकी शिकायतें अदालतों तक गई हैं लेकिन समकालीन चुनाव प्रचार में उतनी मात्रा में 'हेटस्पीचें' नहीं दिखाई दीं। इसका एक कारण 'चुनाव आयोग' की आचार संहिता है तो दूसरा कुछ नेताओं की 'समझदारी' भी है कि टीवी पर दी जाती 'हेटस्पीच' से 'देने वाले' की कमजोरी ही जाहिर होती है, और शायद यह बात भी कई नेताओं की समझ में आ गई है कि जैसी मार कटाक्ष या व्यंग्य करता है वैसी मार 'हेटस्पीच' नहीं करती।

हमारा मानना है कि टीवी और सोशल मीडिया के जमाने में चुनाव प्रचार परंपरागत प्रचार मात्र नहीं रह गया है, बल्कि एक प्रकार का 'राजनीतिक कामेडी शो' बन चला है। इसीलिए इस चुनाव में कई नेता अपनी राजनीति के 'स्टैंडअप कामेडियन' अधिक नजर आते हैं। भाषणों में ऐसी पंच लाइनें मारते हैं कि जनता आनंदित होकर ताली पीटने लगती है। जो नेता जितनी बार ताली पड़वाता है। उतना ही हिट होता है। मीडिया भी ऐसे 'शोज' को पसंद करता है। इसीलिए मैं चैनलों पर मीडिया कवरेजों में 'तालियां' ढूंढता रहता हूं ताकि मालूम हो कि कौन नेता कितना पॉपूलर है।

स्पष्ट है 'ताली' का भी 'मनोविज्ञान' और 'समाजशास्त्र' होता है। ताली का होना 'जन स्वीकृति' का होना है। नेता से जनता के दिल के तार का मिलना है। ताली का होना बताता है कि नेता ने जो बोला वह जनता के दिल में उतर गया है। नेता भी तालीप्रिय होते हैं। जानते हैं कि उनको ताली न मिली तो वे गए। इसलिए अक्सर ऐसे 'कटाक्षों' का सहारा लेते हैं कि तुरंत 'ताली' मिले। ताली का मतलब है सुनने वाली जनता का 'अप्रूवल' यानी 'जनता की मुहर'। सुनने वाले भी ताली तभी मारते हैं, जब कोई 'कटाक्ष' और 'कमेंट' से उन्हें मजा देता है, उनके दिल की बात कहता है, उसका मनोरंजन करता है।

इस मानी में आजकल के चुनाव 'परफॉरमेंस' की तरह आते हैं, और नेता 'परफॉर्मर' की तरह काम करते हैं ताकि सुनने वाली जनता उनको सराहे, दिल की बात कहने वाला समझे। तेज गरमी में भी जनता अपने नेता को सुनने आती है तो पैसे से नहीं आती। जो पैसा लेकर आती है वो सही वक्त पर ताली नहीं मार सकती। ताली वही जनता मारती है जो नेता के विचार की 'फोलोअर' होती हुई, उसकी 'फैन' हो जाती है क्योंकि वही उसके 'कटाक्ष कमेंट' के मानी समझ सकती है। हमारा मानना है सबसे अधिक ताली लेने वाले नेता मोदी हैं, दूसरे नंबर पर राहुल, तीसरे पर अखिलेश और चौथे पर ममता नजर आती हैं।

संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन

वैश्विकी

डॉ. दिलीप चौबे

फिलहाल, ईरान और इस्राइल के बीच अखाड़े में युद्ध का पहला राउंड खत्म हो गया है और दोनों पहलवान सुस्ताने की मुद्रा में हैं। पूरी संभावना है कि फिर पूरे दम-खम के साथ वे अखाड़े में उतरेंगे। विश्व समुदाय दर्शक गैलरी से तब तक तमाशा देखेगा जब तक कि यह भयावह खेल उनके लिए प्रत्यक्ष खतरा नहीं बनता

संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन की सदस्यता को लेकर रखा गया प्रस्ताव अमेरिका के वीटो के कारण पारित नहीं हो सका। प्रस्ताव के पक्ष में बारह मत पड़े और केवल अमेरिका ने इसके विरोध में वोट दिया। ब्रिटेन और स्विटजरलैंड ने मतदान में भाग नहीं लिया। जातीय एकजुटता के कारण ब्रिटेन अमेरिका का विरोध नहीं कर सकता लेकिन स्विटजरलैंड का रवैया विचारणीय है। स्विटजरलैंड आम तौर पर पूरी तरह तटस्थता का रवैया अपनाता रहा है, लेकिन फिलिस्तीन की सदस्यता पर उसका मौन रहना समझ से परे है। इससे यह पता लगता है कि यूक्रेन संघर्ष के बाद दुनिया में शांति की बजाय युद्ध की भावना बलवती हो रही है। अमेरिका के दबाव में जापान और स्केंडिनेवियाई देशों स्वीडन और नार्वे जैसे देशों ने भी संघर्ष और युद्ध की मनोवृत्ति को अपनी विदेश नीति का मानो हिस्सा बना लिया है।

करीब पैंतीस हजार लोगों की मौत और लाखों लोगों के घायल होने के बावजूद अमेरिका मानवीय रवैया अपनाने की बजाय इस्राइल के युद्ध प्रयासों का समर्थन कर रहा है। दो राज्यों (इस्राइल और फिलिस्तीन) की स्थापना के पक्ष में बयानबाजी करने के बावजूद यह जाहिर है कि अमेरिका का सत्ता प्रतिष्ठान इस्राइल की ही तरह स्वतंत्र फिलिस्तीन के पक्ष में नहीं है। राष्ट्रपति चुनाव के दौर में मतदाताओं के दबाव में बाइडन प्रशासन फिलिस्तीन में मानवीय संकट को लेकर बयानबाजी अवश्य कर रहा है, लेकिन कोई ठोस कदम उठाने में दिलचस्पी नहीं रखता। अमेरिका में फिलिस्तीन के पक्ष में युवा वर्ग और छात्र समुदाय सड़कों पर उतरा है। लेकिन सत्ता प्रतिष्ठान इसे लगातार नजरअंदाज करता रहा है।

कुछ विश्लेषक आरोप लगाते हैं कि अमेरिका में 'यहूदी लॉबी' हावी है। कोई भी राष्ट्रपति इस लॉबी का विरोध नहीं कर सकता। इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू स्वतंत्र फिलिस्तीन राज्य के पूरी तरह खिलाफ हैं। निकट भविष्य में कभी फिलिस्तीन पूर्ण एवं स्वतंत्र राज्य बन सकेगा, इसकी संभावना नहीं है। इस बीच, पश्चिम एशिया में संघर्ष के इस मुख्य मुद्दे का समाधान हो सकेगा, इसकी संभावना अभी नहीं है।

ईरान और इस्राइल के बीच संघर्ष ने पश्चिम एशिया के पूरे परिदृश्य को भयावह कर दिया है। चिंता की बात यह है कि अमेरिका में राजनीतिक नेतृत्व अब ईरान-रूस-चीन के शैतानी त्रिगुट की बात कर रहा है। इसमें उत्तर कोरिया को भी शामिल किया जा सकता है जिसके बाद यह शैतानी क्वाड बन जाएगा। एक क्षेत्रीय मुद्दा विश्व नेताओं की लापरवाही के कारण किस तरह विश्वव्यापी अशांति का कारण बन सकता है, इसका यह सटीक उदाहरण है। फिलहाल, ईरान और इस्राइल के बीच अखाड़े में युद्ध का पहला राउंड खत्म हो गया है और दोनों पहलवान सुस्ताने की मुद्रा में हैं। पूरी संभावना है कि पूरे दम-खम के साथ वे फिर अखाड़े में उतरेंगे। विश्व समुदाय दर्शक गैलरी से तब तक तमाशा देखेगा जब तक कि यह भयावह खेल उनके लिए प्रत्यक्ष खतरा नहीं बनता।

हाल के महीनों में रूस ने इस्राइल के खिलाफ तीखे तेवर अपनाए हैं। उसने इस्राइल के विरुद्ध प्रतिबंध लगाने तक की मांग की है। वास्तव में रूस इस्राइल से अधिक उसके पैरोकार अमेरिका को निशाना बना रहा है। भारत ने ईरान और इस्राइल के संघर्ष में अपनी संतुलन की नीति को कायम रखा है। जिहादी आतंकवाद का सामना करने वाला भारत इस्राइल का एक स्वाभाविक सहयोगी है, लेकिन साथ ही भारत ग्लोबल साउथ के अन्य देशों की तरह फिलिस्तीन का समर्थक भी है। ईरान के बारे में भी भारत इस्राइल का साथ देने की स्थिति में नहीं है।

ईरान में इस्लामी क्रांति के बावजूद भारत और ईरान एक ही सभ्यागत भू-भाग के हिस्से हैं। सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से अरब देशों की तुलना में ईरान हमारे अधिक नजदीक है। साथ ही, मध्य एशिया और रूस तक संपर्क सुविधा के लिहाज से भी ईरान का केंद्रीय महत्त्व है। ईरान में चाबहार बंदरगाह का एक हिस्सा भारत संचालित करता है। अंतरराष्ट्रीय दक्षिण-उत्तर परिवहन गलियारा इसी बंदरगाह पर निर्भर है। अमेरिका यदि चाबहार बंदरगाह के संदर्भ में प्रतिबंध लगाता है, तो यह भारत के लिए बहुत चिंता की बात होगी।

बुजुर्गों को दें सामाजिक और आर्थिक प्रतिष्ठा

चर्चा

विनोद के. शाह

कभी संयुक्त परिवार में अमूल्य धरोहर के रूप में स्थापित बुजुर्ग; बदलते जीवन मूल्यों एवं आर्थिक उपार्जन में निर्बलता के कारण उपेक्षित, एकाकी एवं वृद्धाश्रम का जीवन गुजारने को मजबूर हैं। यह समस्या देश के अस्सी फीसद बुजुर्गों की बन चुकी है।

नीति आयोग की 'भारत में वरिष्ठ नागरिक देखभाल-प्रतिमान परिकल्पना' शीर्षक से प्रकाशित रपट कहती है कि 2050 में भारत का हर चौथा व्यक्ति बुजुर्ग की श्रेणी में होगा। वर्तमान में देश की आबादी में बुजुर्गों की हिस्सेदारी 10.40 करोड़ है, जो 2050 में जनसंख्या का 19.5 फीसद यानी 35 करोड़ होगी।

सामाजिक मूल्यों में हो रहे क्षरण की चुनौती के साथ देश में बुजुर्गों के लिए ससम्मान सुरक्षित भविष्य को तलाशना देश एवं सरकार, दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है। आर्थिक आवश्यकताओं के लिए देश के 48 फीसद बुजुर्ग पूर्णतः संतानों पर निर्भर हैं। उनके पास आय के संसाधन नहीं हैं। मात्र 34 फीसद बुजुर्ग आबादी को सेवानिवृत्त पेंशन मिलती है। एक सामाजिक आकलन यह भी कहता है कि तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी से सेवानिवृत्त अस्सी फीसद बुजुर्गों को मिलने वाली पेंशन राशि उनकी संतान परिवार खर्चे के लिए छीन लेती हैं। हावी होती उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण 60 फीसद बुजुर्ग पारिवारिक प्रताड़ना सहने को मजबूर हैं। इनमें से मात्र 30 फीसद ही अत्यधिक प्रताड़ना से तंग आकर पारिवारिक हिंसा की शिकायत दर्ज कराने कानून की चौखट तक पहुंचते हैं।

देश के बुजुर्गों को पारिवारिक परिवेश सहित संस्थागत माहौल में भी दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ रहा है। मारपीट, चोट पहुंचाना, मानसिक उत्पीड़न, आर्थिक तंगी के हालात; परिवार या निकटतम व्यक्ति द्वारा पहुंचाने वाली सर्वाधिक घरेलू हिंसा में शामिल है। लेकिन भारतीय न्याय व्यवस्था में भी इन अपराधों को सामान्य अपराध के रूप में ही तवज्जो दी जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले 75 फीसद बुजुर्ग पारिवारिक हिंसा के शिकार हैं, लेकिन उन्हें कानूनी संरक्षण तक भी नहीं मिल पाता।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) की इंडिया एजिंग रपट 2023 कहती है कि 2046 तक भारत की बुजुर्ग आबादी उसके देश के बच्चों की आबादी के बराबर हो जाएगी। देश में 15 साल से कम उम्र के बच्चों की संख्या में तेजी से गिरावट दर्ज हो रही है जो परिवार में अधिक तनाव, फासला पैदा करने के साथ ही बुजुर्गों के एकाकीपन में वृद्धि करने वाला बड़ा कारक साबित होगी। सामाजिक मूल्यों में गिरावट देश में बुजुर्गों के भविष्य को लेकर एक बड़ी चिंता खड़ी करती है। अर्थशास्त्र इसमें यह कहकर एक बड़े निवेश की संभावनाओं को टटोल कर इसे युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने की संभावनाओं वाले सेवा उद्योग का दर्जा भी देता है। बुजुर्गों की मदद के बहाने रोजगार स्थापना के लगभग डेढ़ सौ से अधिक स्टार्टअप्स इस सेवा क्षेत्र में आ चुके हैं। देश में 2023 में बुजुर्ग सेवा सेक्टर के नाम पर रोजगार स्थापित करने के लिए लगभग 210 करोड़ रुपये का निवेश हुआ है। निवेशकों पर गौर करें तो भारत में विकसित होती ओल्डएज होम संस्कृति एवं बुजुर्गों का एकाकीपन, युवाओं का रोजगार तलाश में घर छोड़कर चले जाना एंव पारिवारिक क्लेश इस उद्योग को अवसर उपलब्ध कराते हैं। लेकिन देश में विकसित हो रहा ओल्डएज होम बाजार देश की वसुधैव कुटुंबकम की संस्कृति पर आघात करता है।

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

झूठ का सच, सच का झूठ

बतंगड़ बेतुक

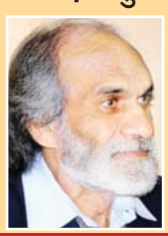

विभांशु दिव्याल

झल्लन बोला, 'ददाजू, जाने क्यों हमें ये बार-बार आभास हो रहा है कि हमारा छोटा सा दिमाग अपना संतुलन बनाए रखने के चक्कर में संतुलन खो रहा है।' हमने कहा, 'झल्लन, ये तो बुरा हो रहा है लेकिन तुझे अपनी इस बीमारी का अहसास क्यों और कब से हो रहा है?' झल्लन बोला, 'दरअसल ददाजू चुनाव के इस मौसम में जो नेता अपने सच होने के जितने बड़े-बड़े दावे करता है वो न जाने क्यों हमें उतना ही बड़ा झूठा लगने लगता है और झूठा-झूठा कह के जिसे जितनी गालियां दी जाती हैं हमें उसमें उतनी ही सच्चाइयां नजर आती हैं। जब हमारे मन में किसी के झूठे होने का भाव उतरता है तो उसका सच सामने उतरने लगता है और जब हमें किसी के सच होने का अहसास होता है तो तुरत ही बगल में झूठ उभरने लगता है। जब झूठ-सच लगने लगे, सच में झूठ दिखने लगे, झूठ और सच का फर्क मिटने लगे, झूठ-सच का यह चक्कर बवंडर बनने लगे, झूठ को सच से अलग करने के चक्कर में दिमाग फटने लगे, तो बताइए हमारे जैसा आदमी क्यों न घबराने लगे। इसीलिए हमें लगता है कि हम झूठ-सच के चक्कर में बीमार हो रहे हैं और इस लोकतंत्र में पैदा होने पर आठ-आठ आंसू रो रहे हैं। आप बताइए, हम अपने दिमाग को बचाएं तो कैसे बचाएं और बचाने के लिए जायें तो कहां जायें?'

हमने कहा, 'झल्लन, यह तेरे अकेले की बीमारी नहीं है, यह बीमारी सबके दिमागों से खेल रही है और चुनावों से पहले तेजी से पूरे देश में फैल रही है। किसी भी बीमारी का वायरस तभी फैलता है जब उसे अनुकूल वातावरण मिल जाता है, इसी वातावरण के कारण हर व्यक्ति वायरस का शिकार बन जाता है। झूठ के वायरस को राजनीति का भरपूर साथ मिल रहा है इसलिए यह वायरस दिनोंदिन खतरनाक हो रहा है। वैसे बता, किस घटना ने तुझे ऐसा छुआ है कि यह वायरस तुझ पर इस कदर हावी हुआ है?'

झल्लन बोला, 'सच बताएं ददाजू, जब से चुनावी बांड का जिन्न सुप्रीम कोर्ट की फूंक से आरबीआई की बोतल से बाहर आया है तभी से हमारे दिमाग का संतुलन ज्यादा गड़बड़ाया है। अब देखिए, हमारे राहुल बबुआ घूम-घूमकर चुनावी बांड को दुनिया का सबसे बड़ा घोटाला बता रहे हैं, इसे जबरन वसूली योजना का तमगा पहना रहे हैं और इसका मास्टर माइंड प्रधानमंत्री मोदी को बता रहे हैं। कह रहे हैं कि जिन लोगों ने उन्हें चुनावी बांड का चंदा दे दिया तो मानो उसने अपनी पवित्रता का प्रमाणपत्र ले लिया, उसे या तो कोई मनचाहा ठेका दे दिया गया या फिर उसे सीबीआई के जालिम शिकंजे से सुरक्षित बाहर कर दिया गया। अगर हम राहुल बबुआ को सच मानते हैं तो हमें हमारे जननायक मोदी जी प्रचंड खलनायक जैसे लगने लगते हैं और हमारे विश्वास के पैर हिलने लगते हैं। और दूसरी तरफ जब मोदी जी बांड पर बात करते हैं, अपनी बात समझाने लगते हैं तो हमारे हिलते विश्वास के पांव फिर से जमने लगते हैं, मोदी जी सही और स्वयं राहुल बबुआ ही गलत लगने लगते हैं।'

हमने कहा, 'मोदी जी की कौन सी बात तुझे भा जाती है जो तेरे विश्वास की हिलती धरती अपनी जमीन पर जम जाती है?' वह बोला, 'मोदी जी कहते हैं कि चुनावी बांड को लेकर विपक्ष कोरा झूठ फैला रहा है, एक अच्छी योजना पर कलंक का टीका लगा रहा है। योजना में खामी हो सकती है जिसे हटाया जा सकता है, चुनाव में काले धन के भ्रष्टाचार को रोकने के लिए किसी अधिक सक्षम व्यवस्था को लाया जा सकता है। वो यह भी कहते हैं कि एजेंसियों की कार्रवाई के बाद जिन 16 कंपनियों ने चंदा दिया था उसमें से केवल 37 प्रतिशत भाजपा ने पाया जबकि बाकी 63 प्रतिशत भाजपा विरोधी दलों के हिस्से में आया। दूसरे, इस योजना को इसलिए सफल माना जाना चाहिए कि इसी के कारण यह पता लग पाया कि किससे किस पार्टी ने कितना खाया। अब इस योजना पर रोक लगाकर ज्यादा बुरा कर दिया गया है और देश को पूरी तरह चुनावी काले धन के दौर में धकेल दिया गया है। अब आप बताइए ददाजू, हम मोदी जी को सच मानकर भाजपा के पक्ष में झंडा उठाएं, या राहुल बबुआ की बात को सही मानकर उनकी बारात में शामिल हो जायें? आप ही हमें बताइए, ठीक से समझाइए।'

हमने कहा, 'इस दौर की चुनावी राजनीति में न कोई पूरी तरह सच बोलता है, न कोई पूरी तरह झूठ बोलता है। जो सच बोल रहा होता है उसमें भी कुछ झूठ छिपा होता है और जो झूठ बोल रहा होता है उसके पीछे भी थोड़ा सा सच लगा हुआ होता है। तेरा राहुल बबुआ जब मोदी पर आरोप लगाता है तो उसकी अपनी पार्टी के पास पैसा कहां से आया इसका सच छिपा जाता है और जब मोदी पक्ष चुनावी बांड के पक्ष में बात चलाता है तो बड़ी सफाई से आधा सच दबा जाता है। जब तक यह चुनावी लोकतंत्र रहेगा तब तक झूठ-सच का खेल ऐसे ही चलेगा। सो अपने दिमाग को दुरुस्त कर ले, दोनों में से कोई रास नहीं आये तो किसी तीसरे पक्ष का वरण कर ले।'

हमने कहा, 'मोदी जी की कौन सी बात तुझे भा जाती है जो तेरे विश्वास की हिलती धरती अपनी जमीन पर जम जाती है?' वह बोला, 'मोदी जी कहते हैं कि चुनावी बांड को लेकर विपक्ष कोरा झूठ फैला रहा है, एक अच्छी योजना पर कलंक का टीका लगा रहा है। योजना में खामी हो सकती है जिसे हटाया जा सकता है, चुनाव में काले धन के भ्रष्टाचार को रोकने के लिए किसी अधिक सक्षम व्यवस्था को लाया जा सकता है। वो यह भी कहते हैं कि एजेंसियों की कार्रवाई के बाद जिन 16 कंपनियों ने चंदा दिया था उसमें से केवल 37 प्रतिशत भाजपा ने पाया जबकि बाकी 63 प्रतिशत भाजपा विरोधी दलों के हिस्से में आया। दूसरे, इस योजना को इसलिए सफल माना जाना चाहिए कि इसी के कारण यह पता लग पाया कि किससे किस पार्टी ने कितना खाया। अब इस योजना पर रोक लगाकर ज्यादा बुरा कर दिया गया है और देश को पूरी तरह चुनावी काले धन के दौर में धकेल दिया गया है। अब आप बताइए ददाजू, हम मोदी जी को सच मानकर भाजपा के पक्ष में झंडा...

https://t.me/AllNewsPaperPaid

राष्ट्रीय सहारा

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। । समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।

दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750

वर्ष-33, अंक 249 आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

सफल व्यक्ति अपने को स्वस्थ रखने, परिवार को समय देने, पढ़ने-लिखने और तरोताजा रहने पर ध्यान देता है, अपनी इन रुचियों को आदतों में ढालकर अपने जीवन में बेहतर संतुलन लाता है, अपनी सोच और दृष्टिकोण को व्यापक बना लेता है और अच्छे से जीने का सलीका ईजाद कर लेता है।

—हर्ष गोयनका, उद्योगपति@hvgoenka

महावीर जयंती

योगेश कुमार गोयल

सिद्धांतों और दर्शन में सब समाहित

'अहिंसा परमो धर्मः' सिद्धांत के लिए जाने जाते रहे भगवान महावीर का अहिंसा दर्शन आज के समय में सर्वाधिक प्रासंगिक और जरूरी प्रतीत होता है क्योंकि वर्तमान समय में मानव अपने स्वार्थ के वशीभूत कोई भी अनुचित कार्य करने और अपने फायदे के लिए हिंसा के लिए भी तत्पर दिखाई देता है। महावीर का जन्म होते ही उनके पिता राजा सिद्धार्थ के राज्य, मान-प्रतिष्ठा और धन-धान्य में वृद्धि होने लगी थी, इसीलिए उनका नाम वर्धमान रखा गया था और चूंकि वर्धमान बचपन से ही साहसी और निर्भीक थे, इसलिए अपने पराक्रम के कारण आगे चलकर महावीर के नाम से प्रसिद्ध हुए।

प्रति वर्ष चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के दिन जैन धर्म के 24वें और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्मोत्सव मनाया जाता है। जैन धर्म के जानकारों के अनुसार भगवान महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व बिहार के कुंडलपुर के राजघराने में हुआ था। इस साल महावीर जयंती 21 अप्रैल को मनाई जा रही है। भगवान महावीर ने जीवनपर्यंत अपने अमृत वचनों से समस्त मानव जाति को ऐसी अनुपम सौगात दीं, जिन पर अमल करके मानव चाहे तो धरती को स्वर्ग बना सकता है। आज के परिवेश में हम जिस प्रकार की समस्याओं और जटिल परिस्थितियों में घिरे हैं, उनका समाधान महावीर के सिद्धांतों और दर्शन में समाहित है। भगवान महावीर कहा करते थे कि जिस जन्म में कोई भी जीव जैसा कर्म करेगा, भविष्य में उसे वैसा ही फल मिलेगा। वह कर्मानुसार ही देव, मनुष्य, नरक और पशु-पक्षी की योनि में भ्रमण करेगा। कर्म स्वयं प्रेरित होकर आत्मा को नहीं लगते, बल्कि आत्मा कर्मों को आकृष्ट करती है। वह कहते थे कि रुग्णजनों की सेवा-सुश्रुषा करने का कार्य प्रभु की परिचर्या से भी बढ़कर है।

अपने जीवनकाल में उन्होंने अनेक उपदेश और अमृत वचन दिए जिन्हें अपने जीवन तथा आचरण में अमल में लाकर हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। भगवान महावीर का कहना था कि जो मनुष्य स्वयं प्राणियों की हिंसा करता है, या दूसरों से हिंसा करवाता है, अथवा हिंसा करने वालों का समर्थन करता है, वह जगत में अपने लिए वैर बढ़ाता है। अहिंसा की तुलना संसार के सबसे महान व्रत से करते हुए उनका कहना था कि संसार के सभी प्राणी बराबर हैं, अतः हिंसा को त्यागिए और 'जीओ और जीने दो' का सिद्धांत अपनाइए। वे कहते थे कि संसार में प्रत्येक जीव अवध्य है, अतः आवश्यक बता कर की जाने वाली हिंसा भी हिंसा ही है, और वह जीवन की कमजोरी है।

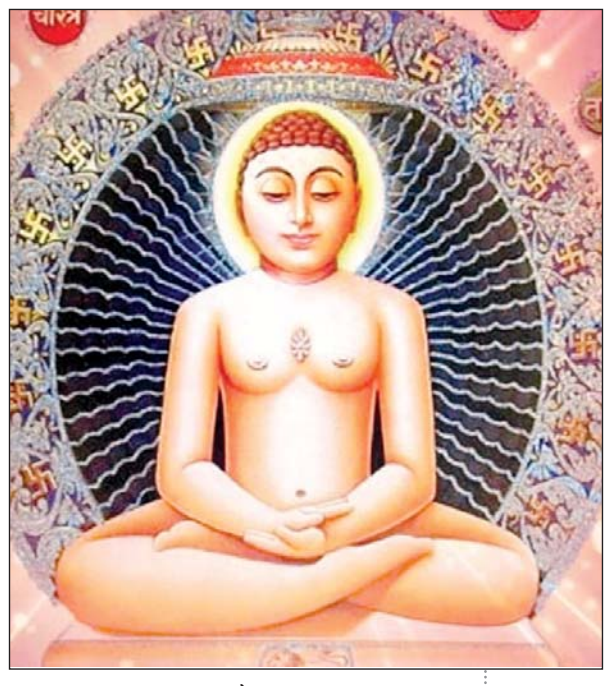

उनके अनुसार छोटे-बड़े किसी भी प्राणी की हिंसा न करना, बिना दी गई वस्तु स्वयं न लेना, विश्वासघाती असत्य न बोलना, यह आत्मा निग्रह सद्पुरुषों का धर्म है। जो लोग कष्ट में धैर्य को स्थिर नहीं रख पाते, वे अहिंसा की साधना नहीं कर सकते। अहिंसक व्यक्ति तो अपने से शत्रुता रखने वालों को भी अपना प्रिय मानता है। उनका कहना था कि संसार में रहने वाले चल और स्थावर जीवों पर मन, वचन एवं शरीर से किसी भी तरह के दंड का प्रयोग नहीं करना चाहिए। भगवान महावीर के अनुसार किसी भी प्राणी की हिंसा न करना ही ज्ञानी होने का एकमात्र सार है, और यही अहिंसा का विज्ञान है। जिस प्रकार

अणु से छोटी कोई वस्तु नहीं और आकाश से बड़ा कोई पदार्थ नहीं, उसी प्रकार अहिंसा के समान संसार में कोई महान व्रत नहीं। महावीर के शब्दों में कहें तो ज्ञानी होने का यही एक सार है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे और यही अहिंसा का विज्ञान है। धर्म को लेकर भगवान महावीर का मत था कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है, और अहिंसा, तप और संयम उसके प्रमुख लक्षण हैं। जिन व्यक्तियों का मन सदैव धर्म में रहता है, उन्हें देव भी नमस्कार करते हैं। अपने प्रवचनों में वह कहते थे कि ब्राह्मण कुल में पैदा होने के बाद यदि कर्म श्रेष्ठ हैं, तो वही व्यक्ति ब्राह्मण है किन्तु ब्राह्मण कुल में जन्म लेने के बाद भी यदि वह हिंसाजन्य कार्य करता है तो वह ब्राह्मण नहीं है जबकि नीच कुल में पैदा होने वाला व्यक्ति अगर सुआचरण, सुविचार एवं सुकृत्य करता है तो वह बाह्मण है।

आत्मा के बारे में भगवान महावीर का तर्क था कि आत्मा शरीर से भिन्न है, आत्मा चेतन है, आत्मा नित्य है, आत्मा अविनाशी है। उनका कहना था कि मानव और पशुओं के समान पेड़-पौधों, अग्नि, वायु में भी आत्मा वास करती है, और पेड़-पौधों में भी मनुष्य के समान दुख अनुभव करने की क्षमता होती है। वे कहते थे कि क्रोध प्रेम का नाश करता है, मान विषय का, माया मित्रता का नाश करती है, और लालच सभी गुणों का। जो व्यक्ति अपना कल्याण चाहता है, उसे पाप को बढ़ाने वाले इन चारों दोषों-क्रोध, मान, माया और लालच-का त्याग कर देना चाहिए। ■

महावीर के शब्दों में कहें तो ज्ञानी होने का यही एक सार है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे और यही अहिंसा का विज्ञान है। धर्म को लेकर भगवान महावीर का मत था कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है और अहिंसा, तप और संयम उसके प्रमुख लक्षण हैं। जिन व्यक्तियों का मन सदैव धर्म में रहता है, उन्हें देव भी नमस्कार करते हैं। अपने प्रवचनों में वह कहते थे कि ब्राह्मण कुल में पैदा होने के बाद यदि कर्म श्रेष्ठ हैं, तो वही व्यक्ति ब्राह्मण है किन्तु ब्राह्मण कुल में जन्म लेने के बाद भी यदि वह हिंसाजन्य कार्य करता है तो वह ब्राह्मण नहीं है जबकि नीच कुल में पैदा होने वाला व्यक्ति अगर सुआचरण, सुविचार एवं सुकृत्य करता है तो वह बाह्मण है

आतिफ रब्बानी

इश्क तेरा सताए तो मैं क्या करूं

इश्क तेरा सताए तो मैं क्या करूं- जब तबले की थाप हो और पखावज की धाप हो; सारंगी की खनक हो और ढोल की गमक हो, हारमोनियम की झंकार हो और नगमों की तकरार हो; रागों की बंदिश हो और रौबीली पाटदार आवाज की आमेजिश हो तब बनती है कव्वाली। वह कव्वाली जो आपको आलमे-हस्ती कुंए से निकाल कर आलमे-बेखुदी की दुनिया में पहुंचा दे; जो आपको आलमे-यास के अंधेरे से उठा कर आलमे-आस की रौशनी में ले आए; और जो आपको कैफो-मस्ती के गर्त से खींच कर प्रेम और भक्ति की सीढ़ियां तय करा दे। वह कव्वाली जो इश्क के राज खोले; मोहब्बत की बात बोले; तखय्युल की परवाज हो; अकीदत की आवाज हो; जिंदगी की हकीकत दरयाफ्त करे; प्रेम की गुत्थी सुलझाए ऐसी कव्वालियों के पुरोधा हैं अजीज मियां कव्वाल।

अजीज मियां शहंशाहे-कव्वाली हैं। उनका अंदाज सबसे अनोखा है। सबसे अनूठी बात तो यह है कि वे कव्वाली की दुनिया में खुदसाख्ता हैं, सेल्फमेड हैं। किसी कव्वाल घराने से नहीं हैं। यहां इस बात का जिक्र लाजमी है कि संगीत की दुनिया में घरानों का चलन है। जहां संगीत खानदानी पेशा बन जाता है। पुश्त-दर-पुश्त संगीत की विरासत के पासदार होते हैं। अपनी जिंदगी संगीत के नाम कर देते हैं। रियाजत की मंजिलें तय करते हैं। तप कर निखरते हैं। कव्वाली का मामला यह ठहरा कि जितने भी नामवर घराने हैं, सब 'कव्वाल बच्चों का घराना' के वारिस हैं।

कव्वाली के जनक हजरत अमीर खुसरो हैं। माना जाता है कि वे अपनी कव्वालियां खुद नहीं गाते थे, बल्कि उन्होंने बारह बच्चों को कव्वाली गायकी की ट्रेनिंग दी थी। यही बच्चे उनकी कव्वालियों को हजरत निजामुद्दीन औलिया के सामने गाते थे। इन्हीं बच्चों से जो घराना शुरू हुआ वह 'कव्वाल बच्चों का घराना' कहलाया। भारतीय महाद्वीप में जितने भी घराने हैं इसी घराने के विस्तार हैं। उस्ताद नुसरत फतेह अली खां, साबरी ब्रदर्स, नियाजी बंधु, अबू अयाज और बेगम आबिदा परवीन सबका तअल्लुक इसी कव्वाल बच्चों का घराने से है। कव्वाल बच्चों का घराने से दूसरी रवायत यह भी मंसूब है कि यह घराना सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तुतमिश के काल में शुरू हुआ और इसके संस्थापक दो भाई सावंत और बूला थे। किस्सा कोताह यह कि इस घराने का संस्थापक कोई भी रहा हो, सच्ची बात तो यह है कि संगीत कि दुनिया में घरानों के मार्फत ही संगीतज्ञ अपना नाम पैदा करता है।

इसके बरक्स अजीज मियां का तअल्लुक किसी घराने से न होने के बावजूद वे अपनी लगन और रियाजत से लोकप्रियता

शहंशाहे-कव्वाली अजीज मियां

के उस मकाम पर पहुंचे जहां कोई शाज-ओ-नादिर ही पहुंचता है। इश्के-हकीकी को उन्होंने रूहानी शराब में डुबाकर आशिकों के लिए कभी न उतरने वाला ऐसा नशा तैयार किया जिसमें सुनने वाले का खुमार कभी नहीं टूटता।

कव्वाली की दुनिया में अजीज मियां सबसे पढ़े-लिखे कव्वाल थे, उन्होंने बाकायदा उर्दू और अरबी में पंजाब यूनिवर्सिटी से एमए की डिग्री हासिल की थी। वे शायद इकलौते अनोखे कव्वाल थे जो, अमूमन, अपनी कव्वालियां खुद लिखते थे। अगर किसी दूसरे का कलाम गाते भी तो जाने-माने शायरों के ही कलाम पेश करते। अल्लामा इकबाल उनके पसंदीदा शायर थे। अपनी महफिलों में अक्सर उनका यह मशहूर शेर पढ़ते

बागे-बहिश्त से मुझे हुक्मे-सफर दिया था क्यूं
कारे-जहां दराज है अब मेरारा इंतिजार कर।
और फिर इसके आगे इस शेर से वजाहत करते
मुझे तो इस जहां में बस इक तुझी से इश्क है
या मेरा इम्तहान ले या मेरा एतबार कर।

अजीज मियां और साबरी ब्रदर्स में हमेशा लाग-डाट लगी रहती थी। उनमें प्रतिद्वंद्विता चलती रहती थी। जब 1975 में अजीज मियां का अल्बम 'मैं शराबी' आया और इस अल्बम ने उनको मकबूलियत के अर्श पर बैठा दिया तब साबरी ब्रदर्स कहां चुप बैठने वाले थे, इसके मुकाबले उनका भी अल्बम 'भर दो झोली मेरी या मुहम्मद' मंजरे-आम पर आया जिसके गीत पुरनम इलाहाबादी ने लिखे थे। दोनों अल्बम बेइंतहा प्रसिद्ध हुए। जब साबरी ब्रदर्स की कव्वाली 'ओ शराबी! छोड़ दे पीना' आई तब अजीज मियां कहां चुप रहने वाले थे। फिर क्या था? उन्होंने हाथों-हाथ एक कव्वाली लिख डाली 'हाय कम्बख्त! तूने पी ही नहीं'। यह उनका रचनात्मक उत्तर था साबरी बंधुओं को।

अजीज मियां को उर्दू अदब के साथ-साथ फलसफे पर भी मलका हासिल था। इसलिए वे अपनी कव्वाली में एक शेर की वजाहत में घंटों समां बांध सकते थे। उनकी कव्वाली में मूसीकी से ज्यादा यहां मजमून होता है। मसलन, 'हश्र के रोज मैं यह पूछूंगा' का दौरानिया 1 घंटा 55 मिनट है! उनकी मशहूर कव्वालियों में 'तेरी सूरत निगाहों में फिरती रहे', 'अल्लाह ही जाने कौन बशर है', 'नबी नबी या नबी नबी', 'मेरी आरजू मोहम्मद', 'बेवफा तेरा मुस्कराना' वगैरा हैं। अजीज मियां पहले छोटी-मोटी प्राइवेट महफिलों में गाया करते थे। उनकी जिन्दगी ने एक नया मोड़ तब लिया जब 1966 में उन्हें ईरान के शाह रजा पहलवी के सामने कव्वाली पेश करने का मौका मिला। शाह कव्वाली से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अजीज मियां को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। इसके बाद तो प्रसिद्धि उनका मुकद्दर बन गई। उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

अजीज मियां का जन्म मेरठ शहर में 17 अप्रैल, 1942 में हुआ था। विभाजन के बाद वे अपने परिवार के साथ पाकिस्तान चले गए। उनका असल नाम अब्दुल अजीज था और मियां उनका तकिया कलाम था। बातचीत और यहां तक कि प्रोग्राम में मियां लफ्ज बहुत प्रयोग करते थे इसलिए वे अजीज मियां के नाम से जाने जाने लगे। उनकी वफात 6 दिसम्बर, 2000 को तेहरान में हुई। जब तक दुनिया में फने-कव्वाली मौजूद है उनका नाम रहेगा। ■

पुस्तक समीक्षा | संगीता कुमारी

अपराध के सच पर साहित्यिक नक्काशी

अपराध समाज का जितना बड़ा सच है, अपराध कथाओं को सच से उतना ही काटा गया है। एक पंथ की मानें तो सृष्टि की रचना ही अपराध के आकर्षण से हुई। वर्जित फल को खाने का अपराध। वर्जित के प्रति यही आकर्षण मनुष्य को उस दायरे में ले जाता है, जिसे समाज का कायदा-कानून अपराध की संज्ञा देता है।

अभी तक की अपराध कथाओं के सृजन में भी एक अघोषित सा अपराध होता रहा है। जर, जोरू, जमीन जोड़ के नहीं तो किसी और के...जैसे सामंती सोच को आगे बढ़ाने का अपराध। संपत्ति और स्त्री को ही अपराध की बुनियाद बताया जाता रहा है। इसलिए अपराध के आख्यानकारों ने स्त्री को महज जासूस की उत्प्रेरक ही माना है।

मुकेश भारद्वाज ने 'मेरे बाद...' में जिस तरह अपराध को सामाजिक-सांस्कृतिक समझ के साथ लिखा उसने बता दिया था कि अपराध कथा में 'सत्य कथा' के नाम पर सामंती सोच के खिलाफ एक कलम उठ खड़ी हुई। दूसरे उपन्यास बेगुनाह के बाद तीसरे उपन्यास नक्काश के जरिए मुकेश भारद्वाज ने साबित कर दिया है कि उनका नायक अभिमन्यु जासूसी की कथा से स्त्री विरोधी, सामंती नजरिए के बिल्ले को हटा देगा। 'नक्काश' जासूस अभिमन्यु के बनने की कहानी है।

नक्काश की पृष्ठभूमि में है किसान आंदोलन और जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय। जब पूरे देश में जेएनयू जैसे संस्थान को राष्ट्रवाद के मैदान में खलनायक की तरह पेश किया जा रहा था, उस समय मुकेश भारद्वाज ने पढ़ते-लिखते, सोचते-समझते जेएनयू वालों की तस्वीर लाकर शायद अपनी अकादमिक शिक्षा को 'गुरु दक्षिणा' दी है। जेएनयू के दो पात्र अभिमन्यु और जायरा खान के जरिए बढ़ती कहानी आज की राजनीतिक-सामाजिक दिल्ली की

'सत्य कथा' को सामने लाती है। दिल्ली-एनसीआर की राजनीति में बिल्डरों का अपना दखल हो चुका है। खासकर देश के आधुनिक नक्शे पर बसा आधुनिक अमीरों का शहर नोएडा अपने-आप में सत्ता और साजिश की कई कहानियां छुपाए हुए है। घटती जमीन और बढ़ते बिल्डर के बीच बंटवारा तो सत्ता ही करेगी और अपना मुनाफा भी लेगी। अपराध कथा की समीक्षा का सबसे बड़ा खतरा अंत के रहस्योद्घाटन का हो जाता है। मुकेश भारद्वाज के शुरू और अंत के बीच पाठक ऐसे मानसिक खेल में फंसता है कि अंत के बाद थोड़ी देर के लिए तो राहत मिलती है, लेकिन बाद में एक बेचैनी भी शुरू हो जाती है।

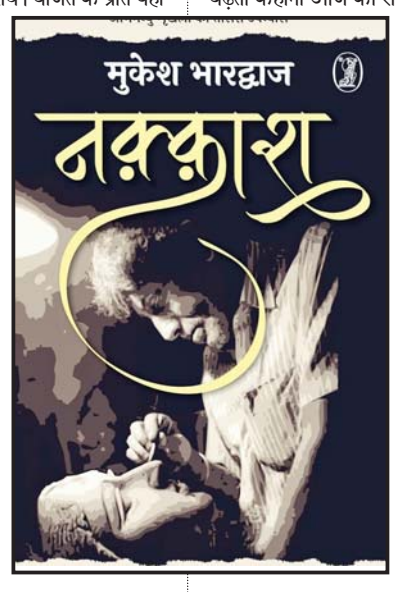

अपराध की सजा तो संवैधानिक मूल्य ही तय करेंगे, लेकिन सामाजिक-राजनीतिक गैर-बराबरी के बीच मुकेश भारद्वाज की साहित्यिक नक्काशी बेहतरीन किरदारों वाली ऐसी किताब के रूप में उभरती है, जिसे पढ़ा जाना चाहिए।

पुस्तक : नक्काशी
लेखक : मुकेश भारद्वाज
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन
मूल्य : 274/-रु. ■

राग रंग | आलोक पराड़कर

परंपरा के तैराक का सम्मान

प्रसिद्ध रंगकर्मी, रंग संगीत के विशेषज्ञ और मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय के पूर्व निदेशक संजय उपाध्याय अक्सर कहा करते हैं कि परंपरा में हमें तैरना है, डूबना नहीं है क्योंकि डूब जाना आत्मघाती है। उनकी ख्याति 'बिदेसिया' के कारण विशेष रूप से है, लेकिन उन्होंने इस लोक परंपरा में प्रयोग को शामिल किया है। उपाध्याय को अभियान थिएटर ग्रुप ने इसी 14 अप्रैल को गोरखपुर में आयोजित समारोह में नरेंद्र देव पांडेय स्मृति राष्ट्रीय रंगमंच सम्मान से सम्मानित किया। उपाध्याय रंगमंच की ऐसी दूसरी शख्सियत हैं, जिन्हें नाटककार नरेंद्र देव पांडेय की स्मृति में यह सम्मान दिया गया है। पहला सम्मान राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व निदेशक और उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक सुरेश शर्मा को दिया गया था।

गोरखपुर से अपने लंबे रिश्ते को याद करते हुए अभिभूत संजय उपाध्याय ने कहा कि यह घर में मिले सम्मान जैसा है। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि किस प्रकार पारंपरिक चीजों को रचनात्मक विस्तार देने की सीख उन्हें घर से ही जाने-अनजाने मिलती गई। होश संभाला तो घर में हारमोनियम देखा जिसे पिता जी बजाया करते थे। मां संस्कार गीत गाती थी, बहुत सुरीली थी। बचपन में गोद में लेकर गीत गाती रहती जिन्हें सुन-सुनकर मैं बड़ा हुआ। लेकिन एक बात और होती थी। मां जब लोक गीत गाती थी तो पिता जी उसे हारमोनियम पर बजाते हुए थोड़ा बदल देते थे। इस पर मां और पिता में बहस होती थी। मां कहती थी कि यह ऐसे नहीं है, आप धुन बिगाड़ दिए हैं, तो पिता जी कहते थे कि ऐसे क्यों नहीं हो सकता है, यह ऐसे भी हो सकता है। इस प्रकार मां और पिताजी में यह रचनात्मक लड़ाई चलती थी। जब मैं रंगमंच में आया तो मुझे समझ में आया कि रंग संगीत वास्तव में यही तो करता है। पिता जी उन लोक धुनों को बिगाड़ते नहीं थे, बल्कि उनका विस्तार करते थे। पिता जी जो करते थे, शायद वही बात मेरे अंदर भी आई। रंग संगीत में मैंने पारंपरिक चीजों को विस्तार देने की कोशिश की और आज भी कर रहा हूं। उपाध्याय ने इस मौके पर यह भी बताया कि मैं बचपन में फुटबाल खेलता था और दसवीं कक्षा तक इसे खेलता रहा। आगे भी फुटबाल ही खेल रहा होता या अपने साथी खिलाड़ियों की तरह खेल कोटे में कोई नौकरी कर रहा होता अगर विद्यालय में 'कोणार्क' नाटक का मंचन न होता। विद्यालय में एक अतिथि ने इसके मंचन की शर्त रखी थी। मंचन के पहले विद्यार्थियों से इसका पाठ कराया गया। शुद्ध और स्पष्ट पाठ के कारण नाटक में चयन हो गया और फिर अभिनय पर पुरस्कार भी मिला। ऐसा इस कारण संभव हुआ कि मेरे नाना संस्कृत के शिक्षक थे और उन्होंने मुझे बचपन से ढेर सारे श्लोक याद कराए थे। फुटबाल छूट गया, रंगकर्म शुरू हो गया।

समारोह में संस्था के रंगकर्मियों द्वारा संजय उपाध्याय द्वारा नाटकों के दौरान सिखाए गए गीतों की प्रस्तुतियां भी की गईं। संस्था के अध्यक्ष श्रीनारायण पांडेय तथा गोरखपुर रंग महोत्सव के अध्यक्ष डॉक्टर हर्षवर्धन राय द्वारा महापौर डॉक्टर मंगलेश श्रीवास्तव, भारतेंदु नाट्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष रविशंकर खरे, गोरखपुर विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर शिवसरन दास, शहरनामा गोरखपुर के संपादक डॉक्टर वेद प्रकाश पांडेय तथा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर ब्रजेंद्र नारायण की उपस्थिति में संजय उपाध्याय को सम्मान प्रदान किया। यह अभियान थिएटर ग्रुप की 23वीं वर्षगांठ का भी अवसर था और इस मौके पर दूसरे गोरखपुर रंग महोत्सव (23-27 अक्तूबर, 2024) की घोषणा भी की गई। इस मौके पर बताया गया कि अभियान थिएटर ग्रुप के टिकट आधारित प्रदर्शनों को दर्शकों ने काफी प्रोत्साहित किया है। 31 मार्च को श्रीनारायण पांडेय के निर्देशन में हुए 'पंचलाइट' (कहानी-फणीश्वरनाथ रेणु) और 'दुश्मन उर्फ सैंया मगन पहलवानी में' (लेखक-दयाप्रकाश सिन्हा) नाटकों के प्रदर्शन में टिकट द्वारा प्रवेश होने के बावजूद हाउसफुल रहे।

याद करते चलें कि पहला गोरखपुर रंग महोत्सव एक से पांच नवम्बर तक आयोजित किया गया था और इसके सभी नाटकों में सभागार खचाखच भरा हुआ था। महोत्सव में एक नवम्बर को सुरेश भारद्वाज के निर्देशन में ड्रामा टॉकीज (मुंबई) की प्रस्तुति 'जीना इसी का नाम है', दो नवम्बर को संजय उपाध्याय के निर्देशन में निर्माण कला मंच (पटना) की प्रस्तुति 'बिदेसिया' और तीन नवम्बर को ट्रेजर आर्ट एसोसिएशन (नई दिल्ली) ने जॉय मिताई के निर्देशन में 'अंधा युग' का मंचन किया था। चार नवम्बर को रूपवाणी थिएटर ग्रुप (वाराणसी) ने व्योमेश शुक्ल के निर्देशन में 'राम की शक्ति पूजा' प्रस्तुत की थी तो समागम रंग मंडल (जबलपुर) द्वारा स्वाति दुबे के निर्देशन में 'भूमि' के मंचन के साथ महोत्सव का समापन हुआ था। ■

कैनवस | जय त्रिपाठी

विंची : अमिट मुस्कान कला की

मोनालिसा की रहस्यमय मुस्कान एवं द लास्ट सपर जैसे अनेक अमर चित्रों के रचनाकार लियोनार्दो दा विंची पुनर्जागरण काल के सबसे अग्रणी इतालवी कलाकार हैं। वे चित्रकला, मूर्तिकला, साहित्य के साथ-साथ वास्तुशिल्प एवं विज्ञान जैसे अनेक विषयों के अद्भुत ज्ञानी थे। उन्होंने तब विकसित हो रहे विज्ञान में निहित कला की विश्वदृष्टि पर एक ऐसी भाषा विकसित की, जो उनके ब्रह्मांड का केंद्र बनी। आज से 572 वर्ष पूर्व विंची का जन्म 15 अप्रैल को हुआ था, जिसे 'विश्व कला दिवस' के रूप में मनाया जाता है। वास्तुशिल्प-चित्रकार के रूप में विंची ने चर्च की इमारतों की ध्वनि के माध्यम से दुनिया को ध्वनि की आध्यात्मिक आइकनोग्राफी से परिचित कराया। एक ऐसे वास्तुशिल्प संयोजन की खोज की जो उपदेशक की आवाज़ को इमारत के सबसे दूर के कोने तक पहुंचाए। इसके लिए 'टीट्रो दा प्रेडिकेयर' के रूप में एक एम्फीथिएटर व्याख्यान कक्ष का आविष्कार उनकी रचनात्मक तकनीकी समृद्धता का अवदान है। एक विज्ञानी के रूप में उन्होंने पुलों, इमारतों, महलों और गिरजाघरों के वास्तुशिल्प चित्र तैयार किए। विंची यहीं नहीं रुके उन्होंने शुरुआती नगर योजनाकारों के विचारों एवं अपने खुद के नजरिए से नगर-शहरों की डिज़ाइन भी तैयार किए। एक वास्तुकार के रूप में भी दा विंची असाधारण हैं।

एक वास्तुकार के रूप में विंची ने मौन और रचनात्मक स्वरों की रंगीन पैलेट का पूर्ण कलात्मक आनंद लिया। दा विंची के प्रसिद्ध चित्रों में से एक 'द विट्रुवियन मैन' है, जिसमें एक के ऊपर एक नग्न व्यक्ति की आकृति दो स्थितियों में रची गई है। इसे मूर्धन्य कलाकार ने मानव शरीर के अनुपात के अध्ययन के रूप में बनाया गया था, जो कि एक वृत्त और एक वर्ग के भीतर पूरी तरह से फिट बैठी हुई आकृति है। आकार के अनुपात की आकृति उनकी वास्तुकला का एक केंद्रीय सिद्धांत प्रतीत होती है। मानव शरीर रचना के प्रति उनका यह आकर्षण एंथ्रोपोमेट्रिक और एर्गोनोमिक अध्ययनों को भी जन्म देता है।

लियोनार्दो के कई चित्रों की आकृतियां एक काल्पनिक परिदृश्य लिए रहती हैं। वहीं एक विज्ञानी के दृष्टिकोण से पृष्ठभूमि में चट्टानी संरचनाओं को चित्रित करके दूरी का भ्रम पैदा किया ताकि वे नीले-ग्रे दिखाई दें और नजदीक के दृश्य की तुलना में कम विस्तृत हों। इस तकनीक का प्रयोग उन्होंने अपनी कई कृतियों में भिन्न भिन्न रूपों में किया, जिनमें 'मोनालिसा' और 'द वर्जिन ऑफ द रॉक्स' जैसी कलाकृतियां भी थीं। विंची के रेखांकन को देखकर समझा जा सकता है कि उनके चित्रों में रचनात्मक प्रारूप, संरचनात्मकता बोध और अभियांत्रिकी का गुण समाहित था। उसमें भी उनकी प्रसिद्ध पेंटिंग्स में ऐसे तत्व है, जिनके बहुत गहरे अर्थ हैं। 'मोनालिसा' की रहस्यमय मुस्कान, जिससे हमारी नज़रें हटाना मुश्किल हो जाता है, जो वास्तव में दा विंची के वर्षों के मानव शरीर के रचना विज्ञान और कलात्मक कौशल के अध्ययन का परिणाम थी। वहीं, उन्होंने प्रकाश और बदलते दृश्य परिप्रेक्ष्य का भ्रम पैदा करके 'द लास्ट सपर' के माध्यम से प्रेक्षकों को आकृष्ट किया। आज से 529 वर्ष पूर्व पुनर्जागरण काल में लियोनार्दो ने अपनी कल्पना से एक ऐसी तकनीक का प्रयोग चित्रों में किया था, जो अचम्भित करती है। इसे उन्होंने एक वास्तुकार के रूप में भी रचा, जहां छाया-प्रकाश के साथ वे खाली स्पेस का भ्रम पैदा करते थे। उनके आकर्षक रेखांकन वास्तुशिल्प की विशेषताओं को दर्शाते हैं।

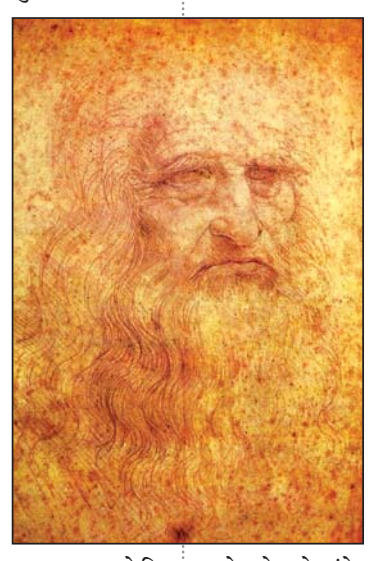

विंची को चमगादड़ों और पक्षियों की उड़ान में गहरी दिलचस्पी थी और उन्होंने यह समझने के लिए कई पन्ने रेखांकन से गढ़ डाले कि ये जीव कैसे उड़ते हैं। उन्होंने 1480 के दशक के अंत से 1490 के मध्य चमगादड़ जैसे पंख के एक स्केच के साथ मानव उड़ान की खोज पर अपना ध्यान केंद्रित किया था। इन अध्ययनों में से अधिकांश जहाज़ों को उड़ाने के लिए मानव मांसपेशियों की शक्ति पर निर्भर थे। विंची का मानना था कि यह संभव है, और वह अपने विचारों के माध्यम से उन्हें चित्रित करते रहे और एक एयर-स्क्रू फ्लाइंग मशीन को भी चित्रित कर डाला।

लियोनार्दो के लंबे समय तक स्व-चित्र के रूप में माने जाने वाले, लंबे लहराते बालों और दाढ़ी वाले एक बूढ़े व्यक्ति की लाल चाक ड्राइंग को जब प्रस्तुत किया गया है। वह यह परिभाषित करता है कि ज्यादातर लोग लियोनार्दो की उपस्थिति के बारे में कैसे सोचते हैं। कुछ विद्वानों का तर्क है कि यह आकृति, टेढ़ी-मेढ़ी विशेषताओं, झुकी हुई भौंहों और झुकी हुई आंखों के साथ, लियोनार्दो की अब तक की आयु से कहीं अधिक पुरानी प्रतीत होती है। 'द वर्जिन एंड चाइल्ड विद सेंट ऐनी' लियोनार्दो की आखिरी पेंटिंग थी। इसमें तीन पीढ़ियों-सेंट ऐनी और अपनी बेटी वर्जिन का चित्रांकन मानवीय रिश्तों का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता को प्रकट करता है। लियोनार्दो अपने पूरे जीवन में कई मायनों में एक उत्सुक बच्चे की तरह रहे। 2 मई, 1519 में 67 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया पर उनका कला जगत में प्रभाव आज भी जीवित है। ■

https://t.me/AllNewsPaperPaid

कल्पमेधा

इस नाशात्मक जगत में प्रत्येक वस्तु नष्ट होगी, पर विचार, आदर्श और स्वप्न जीवित रहेंगे। भले कोई व्यक्ति विचार के लिए मर जाए, पर वह विचार उसकी मृत्यु के बाद भी जीवित रहेगा।
– सुभाषचंद्र बोस

पंथ–पूजा और परिणाम

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

> **भ्रष्टाचार के खिलाफ तथाकथित धर्मयुद्ध का उद्देश्य सभी विपक्षी दलों को नष्ट करना और विपक्षी नेताओं को राजनीतिक कार्रवाई से बाहर करना है। भाजपा के घातक गठजोड़ ने पहले ही कई क्षेत्रीय (एकल–राज्य) पार्टियों को महत्त्वहीन बना दिया है।**

पिछले सप्ताह के स्तंभ (जनसत्ता, रविवार, 14 अप्रैल) में, मैंने इस तथ्य पर अफसोस जताया था कि मैं कांग्रेस और भाजपा के घोषणापत्रों की तुलना करने में असमर्थ हूं। उसी रविवार को सुबह साढ़े आठ बजे भाजपा ने अपना घोषणापत्र जारी किया, जिसका शीर्षक है 'मोदी की गारंटी'। उससे यह पूरी तरह स्पष्ट हो चुका है कि भाजपा अब राजनीतिक पार्टी नहीं, एक पंथ का नाम है। संकल्प पत्र जारी होने के साथ ही पूर्ववर्ती राजनीतिक दल में पंथ–पूजा 'मूल' सिद्धांत के रूप में स्थापित हो गया है।

यह संकल्प पत्र भाजपा–एनडीए सरकार के पिछले 5–10 वर्षों में किए गए कार्यों के बखान का संचयन है। भाजपा ने अपने उन सभी चल रहे कार्यक्रमों को उनकी खामियों और विसंगतियों के साथ फिर से तैयार किया और सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना, उन्हें आगे बढ़ाने की कसम खाई है।

मोदी की गारंटी अनेक गलत किस्म की दाहक क्षमताओं से युक्त है। उनमें सबसे प्रमुख हैं– समान नागरिक संहिता (यूसीसी) और एक राष्ट्र एक चुनाव (ओएनओई)। दोनों को, या कम से कम एक को, प्रमुख संवैधानिक संशोधनों की आवश्यकता होगी; लेकिन भाजपा नेतृत्व इसे लेकर निश्चिंत दिख रहा है। उसका पहला उद्देश्य एक ऐसे राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचे का निर्माण करना है, जिसमें सभी शक्तियां केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री में निहित होंगी। दूसरा, जहां तक संभव हो सके, सामाजिक और राजनीतिक व्यवहार के संदर्भ में आबादी को एकरूप बनाना है। तीसरा उद्देश्य, तथाकथित भ्रष्टाचार विरोधी अभियान के लिए प्रधानमंत्री की 'व्यक्तिगत प्रतिबद्धता' को लागू करना है, जो विपक्षी दलों और राजनेताओं के खिलाफ लक्षित है।

मोदी की बाकी गारंटियों में पिछले दस वर्षों के दावों और दंभों का थकाऊ दोहराव है। पुराने नारे किनारे कर दिए गए हैं और नए नारे गढ़े गए हैं। मसलन, अब इसमें अच्छे दिन आने वाले हैं की जगह विकसित भारत शामिल कर लिया गया है। मानो दस वर्षों में जादुई बदलाव हो गया हो और देश विकासशील से विकसित बन गया हो। यह एक हास्यास्पद दावा है। आइए, मोदी की गारंटी, 2024 में मुख्य वादों की ओर बढ़ते हैं:

समान नागरिक संहिता

भारत में कई नागरिक संहिताएं हैं, जिन्हें कानूनी तौर पर 'रिवाज' के रूप में मान्यता प्राप्त है। हिंदू, मुसलिम, सिख, ईसाई, पारसी और यहूदियों की संहिताओं में अंतर जगजाहिर है। विभिन्न समुदायों के अलग–अलग धार्मिक त्योहार होते हैं; विवाह, तलाक और गोद लेने के विभिन्न नियम और रीति–रिवाज हैं; उत्तराधिकार के विभिन्न नियम और जन्म तथा मृत्यु पर मनाए जाने वाले अलग–अलग रीति–रिवाज हैं। पारिवारिक संरचना, खान–पान, पहनावे और सामाजिक व्यवहार में अंतर होता है। जो बात लोगों को बहुत अच्छी तरह से पता नहीं है, वह यह कि प्रत्येक धार्मिक समूह के भीतर, समूह के विभिन्न वर्गों के बीच भी कई अंतर होते हैं।

दरअसल, यूसीसी समरूपीकरण की एक मीठी वचनबद्धता है। राज्य को समुदायों को एकरूप बनाने की दिशा में कदम उठाना ही क्यों चाहिए? किस समूह के किन पुरुषों और महिलाओं को समान नियम लिखने–बनाने का काम सौंपा जाएगा? क्या ऐसा समूह लोगों के बीच व्याप्त अनगिनत मतभेदों को प्रतिबिंबित करने के लिए पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व कर सकेगा? समरूपीकरण हर व्यक्ति को एक ही सांचे में ढालने और नागरिकों के जीवन को नियंत्रित करने का एक शरारती प्रयास है– ठीक उसी तरह जैसे चीन ने सांस्कृतिक क्रांति के दौरान किया और बुरी तरह विफल हुआ था। यूसीसी मानव की स्वतंत्रता की भावना का अपमान है और यह भारत की सुपरिचित 'अनेकता में एकता' को मिटा देगा।

व्यक्तिगत कानूनों में सुधार आवश्यक है, लेकिन सुधारों को प्रज्वलित करने वाली चिंगारी समुदाय के भीतर से आनी चाहिए। राज्य–निर्मित कानून केवल समुदायों द्वारा स्वीकृत या मौन रूप से स्वीकृत सुधारों को मान्यता दे सकता है। यूसीसी विभिन्न समुदायों और संस्कृतियों के बीच कड़वी बहस को जन्म देगा, बहस से कटुता, गुस्सा और नाराजगी पैदा होगी और नाराजगी संघर्ष में बदल जाएगी, जो हिंसक हो सकती है।

एक राष्ट्र एक चुनाव

एक राष्ट्र एक चुनाव क्षेत्रीय मतभेदों, प्राथमिकताओं और संस्कृतियों को मिटाने का एक परोक्ष प्रयास है। भारत की लोकतांत्रिक संरचना संयुक्त राज्य अमेरिका की संस्थाओं से प्रेरित थी। संयुक्त राज्य अमेरिका एक महासंघ है और वहां हर दो साल में प्रतिनिधि सभा के लिए, हर चार साल में राष्ट्रपति पद के लिए और हर छह साल में सीनेट के लिए चुनाव कराए जाते हैं। आस्ट्रेलिया और कनाडा जैसी संघीय संसदीय प्रणालियों में भी एक साथ चुनाव नहीं होते हैं। एक राष्ट्र एक चुनाव इस सिद्धांत के विपरीत है कि कार्यकारी सरकार हर दिन विधायिका के प्रति जवाबदेह होती है। एक राष्ट्र एक चुनाव, सरकार का भारत निर्वाचन आयोग से चुनाव कैलेंडर पर नियंत्रण छीनने का प्रयास है।

भ्रष्टाचार विरोधी धर्मयुद्ध

भ्रष्टाचार के खिलाफ तथाकथित धर्मयुद्ध का उद्देश्य सभी विपक्षी दलों को नष्ट करना और विपक्षी नेताओं को राजनीतिक कार्रवाई से बाहर करना है। भाजपा के घातक गठजोड़ ने पहले ही कई क्षेत्रीय (एकल–राज्य) पार्टियों को महत्त्वहीन बना दिया है। इन कानूनों को कांग्रेस और सत्तारूढ़ क्षेत्रीय दलों से निपटने के लिए हथियार बनाया गया है। मुझे विश्वास है कि ईडी, एनआइए और एनसीबी द्वारा अपनाई गई गिरफ्तारी और हिरासत की प्रक्रिया को किसी दिन खत्म कर दिया जाएगा। यह धर्मयुद्ध भ्रष्टाचार के खिलाफ नहीं, आधिपत्य के लिए है।

भाजपा यूसीसी और ओएनओई को आगे बढ़ाने के लिए क्यों प्रतिबद्ध है? क्योंकि, अयोध्या में मंदिर निर्माण के बाद, भाजपा उन मुद्दों की तलाश में है, जिनमें उत्तर भारत के राज्यों में हिंदीभाषी, रूढ़िवादी, परंपराबद्ध, जाति–सचेत और पदानुक्रमित हिंदू समुदाय की बहुसंख्यक आकांक्षाओं को पूरा करने की क्षमता हो। ये राज्य उस राजनीतिक समर्थन का स्रोत हैं, जो आरएसएस और भाजपा ने पिछले तीस वर्षों में हासिल किया है। यूसीसी और ओएनओई उस राजनीतिक आधार को मजबूत करने की रणनीति का हिस्सा हैं। अगर भारत के क्षेत्रीय दल या धार्मिक, नस्लीय और भाषाई समूह अपनी भाषाई या सांस्कृतिक पहचान का दावा करेंगे, तो वे उत्तर भारत के राज्यों के चुनावी वजन से बाहर हो जाएंगे।

समान नागरिक संहिता और एक राष्ट्र एक चुनाव की मोदी की गारंटी ने चुनावों में तीखी बहस छेड़ दी है। मैं भविष्यवाणी कर सकता हूं कि तमिलनाडु (19 अप्रैल) और केरल (26 अप्रैल) के लोगों का फैसला क्या होगा। अन्य राज्यों, खासकर उत्तर भारत के हिंदीभाषी, रूढ़िवादी और जाति–जागरूक राज्यों के बारे में, मैं दुआ करूंगा।

लोकतंत्र और विकास का सपना

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

> **एक तरफ हैं वे लोग, जो अपने आप को लोकतंत्र और संविधान का ठेकेदार मानते हैं और दूसरी तरफ हैं वे, जो विकसित भारत का सपना साकार करने के लिए वोट मांग रहे हैं। एक तरफ हैं वे लोग जो उसी पुराने, गरीब, जातियों में बंटे हुए भारत को वापस लाना चाहते हैं और दूसरी तरफ हैं वे, जो बार–बार याद दिलाते हैं कि जातियों को बांटने से देश का नुकसान होता है, लाभ नहीं।**

इस तरह शुरू हो गया है वह लोकसभा चुनाव, जो चुनाव न होकर महासंग्राम बन गया है। नरेंद्र मोदी की सुनें तो उनको तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना जरूरी है, ताकि भारत को विकसित देश बनाने में अपना काम पूरा कर सकें। मोदी कहते हैं कि अभी तक जो उनका काम देखा है, वह सिर्फ 'ट्रेलर' है, 'पिक्चर' अभी बाकी है। यह 'पिक्चर' कैसी होगी, हमने 'ट्रेलर' में देख लिया है। इसमें धर्म, उग्र राष्ट्रवाद और हिंदुत्व का ऐसा मिश्रण है कि जिसमें कई विदेशी राजनीतिक पंडितों को फासीवाद की परछाई दिखने लगी है। उनको मोदी अभी से तानाशाह दिखते हैं, लेकिन भारत के आम मतदाताओं का दृष्टिकोण अलग है। उनको मोदी पसंद हैं, इसलिए कि उनके जीवन में कई तरह से परिवर्तन आया है मोदी के आने के बाद।

देश के आम मतदाता चाहते हैं कि जिस रफ्तार से उनके जीवन में परिवर्तन आया है पिछले दशक में, उस रफ्तार से आगे भी काम होता रहे। मोदी के दुश्मन भी मानते हैं कि विकास का काम बहुत तेजी से हुआ है पिछले दशक में, लेकिन साथ में यह भी कहते हैं कि इस विकास की कीमत भविष्य में शायद यह होगी कि मोदी अपने तीसरे दौर में लोकतंत्र को समाप्त कर देंगे। कहते हैं मोदी के आलोचक कि तानाशाही के आसार अभी से दिखते हैं। यहां तक कि भारतीय जनता पार्टी के 'संकल्प पत्र' पर भी मोदी की 'गारंटियां' हैं और प्रचार में मोदी ऐसे छाए रहे हैं इस बार कि कभी–कभी याद रखना मुश्किल है कि मोदी के पीछे एक राजनीतिक दल भी है। आम मतदाता भी जैसे भूल गए हैं कि उनका वोट भारतीय जनता पार्टी के लिए होगा, सिर्फ मोदी के लिए नहीं। तो क्या मान लिया जाए कि मोदी वास्तव में तानाशाही के रास्ते पर निकल चुके हैं?

इस 'तानाशाही' को विपक्ष के नेता इतनी गंभीरता से ले रहे हैं कि कहते हैं अपनी आम सभाओं में कि ये चुनाव खास इसलिए है कि इसके बाद कोई चुनाव नहीं होने वाले हैं। राहुल गांधी बहुत बार कह चुके हैं कि मोदी अगर तीसरी बार प्रधानमंत्री बनते हैं तो न लोकतंत्र रहेगा और न संविधान। यही बात कह रहे हैं विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के सारे बड़े राजनेता, लेकिन ये राजनेता हैं कौन? सारे के सारे वारिस हैं किसी पुराने राजनेता के, जिसकी मेहरबानी से उनको विरासत में मिला है एक पूरा राजनीतिक दल। मार्क्सवादी और आम आदमी पार्टी राजनेताओं के अलावा विपक्षी गठबंधन में एक भी राजनेता नहीं है, जिसने अपने बल पर राजनीति की ऊंचाइयों तक अपनी यात्रा तय की है। इसी परिवारवादी राजनीतिक सभ्यता के कारण मोदी एक अलग किस्म के राजनेता दिखते हैं भारत के मतदाताओं की नजर में।

पिछले दिनों मेरी बातें हुई हैं कुछ विदेशी पत्रकारों से, जो मुझसे एक ही सवाल करते हैं बार–बार कि मोदी कैसे जीत सकते हैं, जब उन्होंने खुल कर लोकतांत्रिक परंपराओं का उल्लंघन किया है। पूछते हैं मुझसे कि क्या भारत के आम मतदाताओं को दिखता नहीं है कि किस तरह दिल्ली के मुख्यमंत्री को जेल में डाल दिया गया है? क्या दिखता नहीं है उनको कि किस तरह से कांग्रेस पार्टी पर अचानक पुराने आयकर के मामले दर्ज करके उसको पंगु बनाने की कोशिश हुई है? मैं जब उनसे कहती हूं कि आम मतदाता शायद इन चीजों की अनदेखी इसलिए करते हैं कि उनके लोकतांत्रिक अधिकार अभी तक सुरक्षित रहे हैं।

ऊपर से शायद उनको यह भी दिखता है कि मोदी के सामने अभी तक उनको राष्ट्रीय स्तर पर कोई दूसरा राजनेता नहीं दिखता है, जिस पर वे विश्वास कर सकते हैं। विदेशी पत्रिकाओं में पिछले दिनों राहुल गांधी की खूब तारीफें पढ़ी हैं मैंने। मैं जब इन तारीफों को पढ़ती हूं तो कई बार ऐसा लगता है कि लिखनेवाले ऐसे लोग हैं, जिन्होंने दशकों से नेहरू–गांधी परिवार को भारत का असली राज परिवार माना है। इंदिरा गांधी के खिलाफ तभी हुए थे ये लोग जब उन्होंने आपातकाल लगाया था, लेकिन यह सिर्फ कुछ दिनों की मुखालफत थी। उनकी हत्या के बाद जब राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने तो याद है मुझे कि किस तरह जाने–माने पश्चिमी अखबारों ने लिखना शुरू किया था कि भारत का एक सुनहरा दौर शुरू हो गया है।

मैं उस समय इंग्लैंड के 'संडे टाइम्स' अखबार के लिए लिखती थी और 1989 वाले लोकसभा चुनाव से पहले जब मैंने अपने संपादक से कहा कि राजीव चुनाव हारने वाले हैं, तो उन्होंने मुझे टोकते हुए कहा कि राजीव कैसे हार सकते हैं, जब वे विश्वनाथ प्रताप सिंह से कहीं ज्यादा सुंदर दिखते हैं। ये संपादक आस्ट्रेलिया से थे, इसलिए मुझे उनको समझाना पड़ा था कि शायद भारत के मतदाता सुंदरता के अलावा कुछ और ढूंढ़ते हैं अपने राजनेताओं में। मोदी की तरफदारी नहीं करना चाहती हूं, लेकिन इतना कहना जरूरी है कि उनके साथ पश्चिमी पत्रकारों ने नाइंसाफी की है कई बार और गांधी परिवार के साथ कुछ ज्यादा ही रहमदिली रही है।

रही बात इस चुनाव की, तो इसका कुछ शब्दों में निचोड़ निकालना हो तो यही कहना पड़ेगा कि एक तरफ हैं वे लोग, जो अपने आप को लोकतंत्र और संविधान का ठेकेदार मानते हैं और दूसरी तरफ हैं वे, जो विकसित भारत का सपना साकार करने के लिए वोट मांग रहे हैं। एक तरफ हैं वे लोग जो उसी पुराने, गरीब, जातियों में बंटे हुए भारत को वापस लाना चाहते हैं और दूसरी तरफ हैं वे, जो बार–बार याद दिलाते हैं कि जातियों को बांटने से देश का नुकसान होता है, लाभ नहीं। किस तरफ आकर्षित होते हैं भारत के मतदाता, वह देखना अभी बाकी है। फिलहाल महासंग्राम शुरू हो गया है, आगे–आगे देखते हैं होता है क्या!

कलम का संकट

संदर्भ

राकेश सिन्हा

> **शाश्वत समस्या के स्थान पर नश्वर चुनौतियों से जूझना मौलिक चिंतन और बौद्धिक क्षमता में ह्रास का सूचक है। भौतिकता के पीछे जो ताकतें हैं, वे बौद्धिकता की सीमाएं ही तय नहीं कर रही हैं, कलम की स्याही का रंग भी निर्धारित कर रही हैं। इसने सूक्ष्म स्तर पर बौद्धिक सृजन को रोकने का काम किया है।**

किस्सा रोचक, पर गंभीर प्रश्न को सामने लाने वाला है। मूर्धन्य साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु बिहार विधानसभा चुनाव में 1972 में उम्मीदवार बने, तब उनके मित्रों, शुभचिंतकों और सम्मान करने वालों की एक समान आपत्ति थी कि साहित्यकार, विचारक और अच्छे इंसान के रूप में दशकों से अर्जित उनकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचेगी। पर वे नहीं माने। प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची या नहीं, पर बौद्धिकता की भूमिका क्या हो, यह सवाल अनुत्तरित रहा। जो रेणु से कहा गया, वह आज भी शायद कहा जा सकता है। इसका कारण राजनीतिक संस्कृति में गिरावट कही जा सकती है। पर इसका दोष किसका है? राजनीति और बौद्धिकता किसी भी समाज में साथ–साथ उपजते हैं। आखिर बौद्धिक पुरुषार्थ आदर्श समाज की कल्पना तक सीमित है या उसकी भूमिका कुछ और है! रूस के दो नामी चिंतकों और साहित्यकारों– लियो टाल्सटाय और मैक्सिम गोर्की– की अपनी भूमिका थी। पर यथार्थ से संवाद में जो अल्पता थी, उस पर हग मेकलियन ने उन दोनों की भूमिका को 'क्लैश आफ यूटोपिया' में समेटा है। विचारक निरर्थकता और सार्थकता के बीच जूझता है। यहां निरर्थकता का तात्पर्य निम्न बौद्धिक उत्पादकता नहीं है। उसके उच्च बौद्धिक सृजन का उपयोग मानसिक विलासिता के लिए किया जाना है। सार्थकता का अर्थ विचार को पुस्तक लेखन या व्याख्यान के पार, समाज के यथार्थ से साक्षात्कार कराना है।

स्वतंत्रता आंदोलन में दो युग पुरुषों– गोपालकृष्ण गोखले और महात्मा गांधी के बीच सहज संबंध था। इसलिए गोखले बनाम गांधी सुनकर अटपटा लगेगा। पर यह इसलिए सत्य है कि दोनों के बीच परस्पर समझ होते हुए भी दोनों के बौद्धिक उपयोग में जमीन–आसमान का अंतर था। गोखले युगीन बौद्धिक चिंतन और अभिव्यक्ति में श्रेष्ठता के प्रतीक थे। वे लिख और बोलकर समाज/ राजनीति/ संस्कृति में बदलाव के सारथी थे। उनकी अलग प्रकार की प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा थी, जिसके कारण लोग बड़ी संख्या में उन्हें देखने और सुनने आते थे। सामाजिक, अकादमिक और राजनीतिक कुलीनों की जमात का वे हिस्सा होते थे। बाल गंगाधर तिलक हों या मोहन गोविंद राणाडे, सभी कमोबेश उसी प्रवृत्ति से परिश्रम और त्याग करते थे।

गांधी ने उस बौद्धिक सामंतवाद को नकार दिया। 1915 में भारत आए और 1917 में चंपारण चले गए। उन्होंने श्रेष्ठ बौद्धिकों को आकर्षित किया और उन्हें महानगरों या शहरों से दूर गांव, तहसील, जिला स्तर पर वहां के यथार्थ, लोगों को समझने और राजनीतिक दृष्टि से साक्षात्कार करने की प्रेरणा दी। यह बौद्धिकता का अद्भुत प्रयोग था, जिसे न तो अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम, न ही फ्रांस या बोल्शेविक क्रांति में देखी गई थी। इस नई प्रवृत्ति ने स्वतंत्रता संग्राम को सशक्त तो किया ही, सूदूर गांवों में जहां पाठशाला भी नहीं थी, वहां लोगों में स्वचिंतन और आलोचनात्मक दृष्टि का विकास किया। जब तक वह पीढ़ी रही, राजनीतिक संस्कृति में विमर्श तार्किक रहा। उस पीढ़ी के अवसान के साथ–साथ बौद्धिक सामंतवाद फिर अपनी चौहद्दी में आ गया। उस काल के गांधी, पटेल, नेहरू, मालवीय, आंबेडकर, सावरकर, मौलाना आजाद आम लोगों के बीच साक्षात्कार, संघर्ष करते हुए स्वाध्याय और स्वलेखन को दुर्बल नहीं होने दिया। गांधी का 'यंग इंडिया' और 'हरिजन', मालवीय का 'लीडर' और 'अभ्युदय', आंबेडकर का 'जनता' और 'बहिष्कृत भारत', डाक्टर हेडगेवार का 'स्वातंत्र्य' काल्पनिक बौद्धिकता (यूटोपिया) का शिकार नहीं था। ये पीढ़ियों को स्थानीयता से वैश्विकता को संदेश देते थे।

समकालीन समाज में बौद्धिकता सुरक्षित घेरे में रहना चाहती है। इसलिए उसकी चाह और राजनीतिक संस्कृति में बड़ा अंतर रहता है। अगर गोखलेवादी प्रवृत्ति की जगह बौद्धिक वर्ग गांधीवादी राजनीतिक प्रयोग को अपना ले, तो राजनीतिक संस्कृति में बदलाव अवश्यंभावी होगा। फिर किसी रेणु को कृत्रिम दुनिया में रहने का सुझाव या उलाहना नहीं मिलेगा। समकालीन समाज का संकट भौतिक प्रगति में अल्पता न होकर बौद्धिकता का व्यवसायवादी बन जाना है। आज आक्सफोर्ड, हावर्ड से लेकर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय तक समान विमर्श की प्रवृत्ति विद्यमान है। दिन–प्रतिदिन की झंझटों से जूझना ही बौद्धिक पुरुषार्थ बन गया है।

शाश्वत समस्या के स्थान पर नश्वर चुनौतियों से जूझना मौलिक चिंतन और बौद्धिक क्षमता में ह्रास का सूचक है। भौतिकता के पीछे जो ताकतें हैं, वे बौद्धिकता की सीमाएं ही तय नहीं कर रही हैं, कलम की स्याही का रंग भी निर्धारित कर रही हैं। इसने सूक्ष्म स्तर पर बौद्धिक सृजन को रोकने का काम किया है। ऐसा सृजन सर्वदा अनियोजित और अनौपचारिक रूप में ही होता है। मार्क्सवादी मुख्यधारा से अलग हटने पर जर्मनी की चिंतक और क्रांतिकारी रोजा लक्जमबर्ग की हत्या कर दी गई थी। पर उन्होंने जो 1916 में जेल में जो लिखा था, वह अत्यंत प्रासंगिक हैः 'अलग हटकर सोचने वाले की स्वतंत्रता ही हमेशा स्वतंत्रता होती है।' भारत ही नहीं, दुनिया के अन्य हिस्सों में उस स्वतंत्रता की खोज और बौद्धिकों को व्यावहारिक भूमिका में संकट से जूझ रहे समाज–संस्कृति का समाधान निहित है। भारत के पास जो विरासत है, उस पर सिंहावलोकन की जरूरत है। बौद्धिकता का ठोस स्वरूप वर्तमान और भविष्य, यथार्थ और आदर्श, दोनों का सेतु बनता रहा है। बौद्धिकों की कठोर साधना ने भारत को वैचारिक श्रेष्ठता दी है। प्राचीन काल का नैमिषारण्य (जिसका अर्थ बुद्धि का जंगल है) में 88,000 ऋषि–विचारकों ने बारह वर्ष तक विमर्श किया था। कलम के संकट के समाधान की कुंजी नैमिषारण्य से चंपारण तक के प्रयोगों में विद्यमान है।

भए प्रकट कृपाला

बाखबर

सुधीश पचौरी

> **इस बार के 'जनमत सर्वेक्षण' भी विभक्त हैं। कुछ कहते हैं कि इस बार तमिलनाडु और केरल में भाजपा चमत्कार कर सकती है, तो कुछ कहते हैं कि तमिलनाडु या केरल में भाजपा को कुछ नहीं मिलने वाला।**

चालीस तापमान, लेकिन प्रचार धुंआधार। एक पत्रकार के जवाब में एक विपक्षी नेता कहिन कि 'ईवीएम' का खेला न हुआ, तो भाजपा को 180 से ज्यादा नहीं मिलने वाली। दूसरे ने फरमाया कि पहले 180 लगती थी, लेकिन अब 150 से ज्यादा नहीं मिलने वाली। एक दक्खिनी नेता कहिन कि 200 से 220 तक ही आ सकती हैं। जब एंकर ने पूछा कि आपकी कितनी आएंगी, तो कोई जवाब न आया! एक चर्चक कहिन कि ये सब 'माइंड गेम्स' हैं। पहले भाजपा ने 'चार सौ पार' का दांव चला तो ये 'चार सौ हार' का दांव चल रहे हैं।

ईवीएम का मामला कोर्ट में। एक चर्चा में चुनाव आयोग के एक पूर्व अधिकारी ने बताया कि ईवीएम हर तरह से 'सुरक्षित' है। जो जनता को साथ नहीं ले पाते, वही 'ईवीएम' का बहाना बनाते हैं। इस पर एक विपक्षी प्रवक्ता भड़क गए। जितना 'चार सौ पार' ने विपक्ष को तंग किया है, उतना ही 'मोदी की गारंटी' ने तंग किया है, लेकिन मोदी जैसे ही भीड़ को बोलते हैं कि 'अभी तो ये ट्रेलर है' तो जनता और जोर से ताली मारती दिखती है।

बहरहाल, इस बार की रामनवमी तो एकदम 'भए प्रकट कृपाला' वाले दृश्यों को लेकर आई! रामनवमी के दोपहर ऐन सवा बारह बजे सूर्य किरणें पांच मिनट तक रामलला के मस्तक का अभिषेक करती रहीं। 'जय श्रीराम' की जयकार दुनिया भर में सीधे प्रसारित होती रही। उधर, मोदी भी एक रैली के बीच अपने 'टैबलेट' पर इस दृश्य को देखते हुए और जनता को रामनवमी की याद दिलाते हुए 'जय श्रीराम' व 'सियावर रामचंद्र की जय' बोलते–बुलवाते दिखे! चर्चा में 'इसरो' के एक वैज्ञानिक ने रामलला के मस्तक पर किरण पहुंचाने की तकनीक और उन ज्योतिष गणनाओं को सही बताया, जिनके अनुसार उन्नीस वर्ष बाद हर रामनवमी पर ऐसे ही सूर्य तिलक के दर्शन होंगे। इसके बाद शुरू हुई 'डेमोक्रेटिक हाय हाय' कि देखो राजनीति में धर्म मिलाया जा रहा है। रामनवमी से ठीक पहले फिर बंगाल से 'दंगा उवाच' सुनाई दिए और रामनवमी के ही दिन मुर्शिदाबाद में 'रामनवमी जुलूस' पर पथराव खबरें भी आती दिखीं। एक भक्त प्रवक्ता कहिन कि रामनवमी के पहले ही 'दंगा दंगा' बोलकर क्या दंगे को निमंत्रण दिया जा रहा था?

इसी सप्ताह भाजपा, कांग्रेस, सपा और तृणमूल के घोषणापत्र आए। भाजपा ने साफ कहा कि 'समान नागरिक संहिता' लागू करेंगे। 'एक राष्ट्र एक चुनाव' होगा। दुनिया में रामायण उत्सव मनाएंगे और तिरुवल्लुवर सांस्कृतिक संस्थान बनाएंगे। तीन करोड़ गरीबों को घर देंगे, सत्तर बरस से ऊपर वाले सभी बुजुर्गों को मुफ्त इलाज मिलेगा। इस पर दिल्ली के भाजपा उम्मीदवार मनोज तिवारी इतने विह्वल हुए कि पत्रकार से कहने लगे कि जिन वृद्धों को कोई नहीं पूछता, उनको मोदी ने पूछा है। तृणमूल ने कहा कि बंगाल में न सीएए लागू होगा, न एनआरसी न यूसीसी।

इस बार के 'जनमत सर्वेक्षण' भी विभक्त हैं। कुछ कहते हैं कि इस बार तमिलनाडु और केरल में भाजपा चमत्कार कर सकती है, तो कुछ कहते हैं कि तमिलनाडु या केरल में भाजपा को कुछ नहीं मिलने वाला। फिर भी अगर मोदी–शाह, नड्डा आदि वहां 'रोड शो' किए जा रहे हैं तो शायद इसीलिए कि उनको लगता है कि इस बार कुछ जरूर निकल सकता है। फिर खबर आई कि इक्कीस सेवानिवृत्त जजों ने प्रधान न्यायाधीश को शिकायत भेजी है कि अदालत पर दवाब डालते रहते हैं। अफसोस कि एकाध को छोड़ किसी चैनल ने इसे चर्चा के योग्य न समझा।

इसके बाद आया 'एएनआइ' को दिया गया डेढ़ घंटे लंबा मोदी का साक्षात्कार, जिसे लगभग हर हिंदी चैनल ने दिखाया। मोदी ने साफ कहा कि लोकतंत्र लोगों की रग–रग में है। संविधान हमारी आस्था का केंद्र है। उसे कोई नहीं बदल सकता। बाबा साहब तक नहीं बदल सकते। अगले कार्यकाल में रफ्तार बढ़ानी है। 2019 की तरह इस बार भी सौ दिन की योजना बनवा रहा हूं। 'मोदी की गारंटी' का मतलब कि हम जो कहते हैं, वह करते हैं... कई चर्चकों ने इस साक्षात्कार के लिए 'एएनआइ' की पत्रकार को शाबासी दी। एक धर्मनिरपेक्ष ने कहा कि मैं नहीं मानता कि राम मंदिर धर्मनिरपेक्षता के खिलाफ था।

सप्ताह की आखिरी कहानी केजरीवाल द्वारा उनके घर से आते ही पूड़ी, आलू की सब्जी, मिठाई, केले, आम खाने और उनकी बढ़ती शुगर की रही, तो ईडी का कहना रहा कि यह सब जमानत पाने के लिए किया जा रहा है।

एक मधुमेह विशेषज्ञ ने साफ कहा कि जो खाना केजरीवाल खा रहे हैं, वह किसी मधुमेह के मरीज के लिए सही नहीं है। अगले रोज अदालत में केजरीवाल के पक्षकार ने स्पष्ट किया कि पूड़ी–मिठाई आदि रामनवमी पर दी गई थी। सच जो हो, बेहतर यही है कि कोई बड़ा विशेषज्ञ केजरीवाल की खुराक और इंसुलिन की देखरेख करे, क्योंकि मधुमेह के रोगी का मामला खासा नाजुक होता है!

www.readwhere.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

पूरे देश में मोदी सरकार के लिए प्रचंड जनमत: योगी

● बोले मुख्यमंत्री, पीएम मोदी के नेतृत्व ने दुनिया को दिया है विकास, सुरक्षा और सुशासन का मॉडल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि लोकतंत्र के महापर्व में यूपी की 8 सहित देश के 21 राज्यों की 102 लोकसभा सीटों पर चुनाव संपन्न हुए हैं। अब तक के रुझान इस बात को बहुत स्पष्टता के साथ प्रदर्शित करते हैं कि पूरे देश में आम जन का मत मोदी सरकार के लिए प्रचंड रूप से सामने आ रहा है। स्वभाविक रूप से पीएम के नेतृत्व में देश में सुरक्षा का बेहतर माहौल बना है, यह अद्भुत और अभिनंदनीय है। सीएम योगी शनिवार को अपने सरकारी आवास पर मीडिया से बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आधी आबादी तो पूरी तरह से मोदी जी के सुरक्षा के मॉडल को अंगीकार कर रही है। पीएम के नेतृत्व में देश में सुरक्षित माहौल के साथ सुशासन का मॉडल भारत ने पूरी दुनिया को दिया है। मुख्यमंत्री ने पश्चिम बंगाल सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि एक तरफ भाजपा शासित राज्यों में मोदी जी के मार्गदर्शन में सुरक्षा का बेहतर मॉडल दिया है, इसका हालिया उदाहरण रामनवमी का सकुशल आयोजन है, जबकि अपने तुष्टिकरण की नीति के लिए कुख्यात पश्चिम बंगाल में टीएमसी सरकार के कारण वहां रामनवमी की शोभायात्राओं पर हमले हुए हैं। सनातन आस्था को आहत करने की किस हद तक कुचेष्टाएं हो रही हैं, यह एक बार फिर वहां देखने को मिला है। उन्होंने कहा कि सुशासन की पहली शर्त रूल ऑफ लॉ है। मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा पूरे देश और प्रदेशों में सुरक्षा का बेहतर माहौल देने का कार्य किया किया है। प्रथम चरण के जो रुझान देखने को मिले हैं, पूर्ण विश्वास है कि सातों चरण में भी यही माहौल देखने को मिलेगा। सीएम योगी ने राजस्थान के चुनावी दौरे पर निकलने से पहले कहा कि राजस्थान परिवारवाद नहीं बल्कि राष्ट्रवाद, विकास, सुरक्षा और सुशासन के मोदी मॉडल को स्वीकार करते हुए प्रचंड बहुमत के साथ जिताने का कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि मुझे दूसरी बार राजस्थान में चुनावी जनसभाओं के लिए जाने का अवसर मिल रहा है, जिसे लेकर मैं उत्साहित हूं। वहां हर बार नये स्वरूप में लोगों में उत्साह देखने को मिलता है। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस बार भी शत प्रतिशत सीटें राजस्थान की जनता भाजपा को देने का कार्य करेगी।

राजस्थान के चुनावी समर में जनमानस ने यूपी के मुख्यमंत्री पर की गुलाब की पंखुड़ियों की वर्षा

● योगी ने चित्तौड़गढ़ से सांसद व उम्मीदवार सीपी जोशी के लिए किया रोड शो

● कहा, पहले चरण के तूफान ने मोदी को सत्ता सौंपने का कर लिया है प्रण

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ चित्तौड़गढ़

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और भारतीय जनता पार्टी के स्टार प्रचारक योगी आदित्यनाथ लोकसभा चुनाव-2024 के मद्देनजर शनिवार को दूसरी बार राजस्थान के चुनावी समर में उतरे। योगी आदित्यनाथ ने भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष, चित्तौड़गढ़ से सांसद और भाजपा उम्मीदवार सीपी जोशी के लिए रोड शो किया। बेतहाशा गर्मी में भी राजस्थान की सड़कों पर 'मोदी-मोदी, योगी-योगी' की ही गूंज रही। आमजन से मिले स्नेह से अभिभूत योगी ने इस सीट पर फिर से 'कमल का फूल' खिलाने की अपील की तो मतदाताओं ने विश्वास दिलाया- अबकी पार 400 पार, फिर एक बार-मोदी सरकार। सीएम योगी व सीपी जोशी ने भैरो सिंह शेखावत की प्रतिमा पर माल्यार्पण भी किया।

रोड शो के समापन स्थल पर मतदाताओं को संबोधित करते हुए योगी आदित्यनाथ ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि से वीरभूमि मेवाड़ को प्रणाम करने आया हूं। इस धरा का इतिहास है कि यह राष्ट्रवाद के मुद्दे से कभी विचलित नहीं हुई। भारत मां के सर्वस्व बलिदान के लिए यह वीरभूमि सदा तत्पर रही है। आधुनिक भारत के तीर्थ के रूप में इस धरा को पूरा भारत कोटि-कोटि प्रणाम करता है। सीएम योगी ने कहा कि शुक्रवार को संपन्न हुए पहले चरण के 102 लोकसभा सीटों के रुझान बताते हैं कि पूरे देश की आवाज है-फिर एक बार मोदी सरकार। अबकी बार-400 पार का लक्ष्य सफल होने जा रहा है। प्रचंड तूफान ने फिर से मोदी जी को सत्ता सौंपने का प्रण कर लिया है। कांग्रेस की जातिवादी-सांप्रदायिक सोच के कारण देश ने बहुत नुकसान सहा है। कांग्रेस सुरक्षा व आस्था से खिलवाड़ करने वाली पार्टी है। आज भारत में पटाखा फूटने पर भी पाकिस्तान सफाई देता है कि मेरा हाथ नहीं है, लेकिन कांग्रेस के समय आतंकियों को बिरयानी खिलाई जाती थी। कांग्रेसी बोलते थे कि राम हुए ही नहीं। ऐसे लोगों को सत्ता में आने का अधिकार नहीं है। योगी ने आह्वान किया कि सीपी जोशी ने साबित किया है कि वे चित्तौड़गढ़ के सबसे उपयुक्त प्रत्याशी हैं। जनता 2014 व 2019 के वोटों को मिलाकर उससे अधिक वोटों से जोशी को जिताकर सदन में भेजें।

सार्वजनिक व निजी स्थानों से अब तक 10914326 प्रचार सामग्री हटाई गई

लखनऊ। मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री नवदीप रिणवा ने बताया कि आदर्श आचार संहिता का प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित कराने में अब तक सार्वजनिक एवं निजी स्थानों से कुल 1,09,14,326 प्रचार-प्रसार सामग्री हटायी गयी। इसमें सार्वजनिक स्थानों से 66,24,047 तथा निजी स्थानों से 42,90,279 प्रचार-प्रसार सामग्री हटायी गयी। इस दौरान सार्वजनिक स्थानों से वालराइटिंग के 7,17,342, पोस्टर के 30,89,149, बैनर के 18,74,926 एवं अन्य 9,42,630 मामलों में कार्यवाही की गयी। इसी प्रकार निजी स्थानों में से वालराइटिंग के 5,72,099, पोस्टर के 19,64,354 बैनर के 10,51,295 एवं अन्य 7,02,531 मामलों में कार्यवाही की गयी। इसी प्रकार अब तक वाहनों में बीकन लाइट, फ्लैग के दुरुपयोग के 1271 मामलों में तथा लाउडस्पीकर एक्ट के उल्लंघन के 2191 मामलों में कार्यवाही की गयी। बिना अनुमति के सभा व भाषण करने, मतदाताओं को लुभाने के लिए नकदी बांटने, वाहनों में बीकन लाइट, फ्लैग के दुरुपयोग एवं अन्य मामलों में 79 एफआईआर दर्ज, 06 एनसीआर सहित कुल 85 प्रकरण में रिपोर्ट दर्ज की गयी है।

तीसरे चरण की दस सीटों पर हुए 182 नामांकन, जांच में 78 निरस्त

● 104 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन के तृतीय चरण में प्रदेश की 10 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए कुल 182 प्रत्याशियों ने नामांकन दाखिल किया। तृतीय चरण के लिए भरे गये नामांकन पत्रों की आज 20 अप्रैल को हुई जांच में 104 प्रत्याशियों के नामांकन वैध पाये गये तथा 78 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र निरस्त किए गए।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि तृतीय चरण में प्रदेश की 10 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए जिन विभिन्न राजनैतिक दलों और निर्दलीय प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए उनमें सम्भल लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए कुल 21 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें 8 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र निरस्त हुए तथा 13 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए। हाथरस लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए कुल 18 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें 8 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र निरस्त हुए तथा 10 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए। आगरा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए सभी 11 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए। फतेहपुर सीकरी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए कुल 19 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें 9 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र निरस्त हुए तथा 10 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए। फिरोजाबाद लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए कुल 22 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें 15 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र निरस्त हुए तथा 7 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए। मैनपुरी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए कुल 12 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें 4 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र निरस्त हुए तथा 8 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए। एटा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए कुल 14 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें 4 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र निरस्त हुए तथा 10 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए। बदायूं लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए कुल 16 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें 4 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र निरस्त हुए तथा 12 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए। ऑवला लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए कुल 21 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें 12 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र निरस्त हुए तथा 9 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए। बरेली लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए कुल 28 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें 14 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र निरस्त हुए तथा 14 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए।

कांग्रेस, सपा, बसपा का है अपने परिवार की समृद्धि का एजेंडा: धर्मपाल सिंह

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने शनिवार को जौनपुर एवं गाजीपुर में लोकसभा संचालन समिति, लोकसभा व विधानसभा के प्रभारी व संयोजकों सहित जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक में बूथ विजय का मंत्र सौंपा। प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने कहा कि भाजपा का लक्ष्य बड़े अंतर के साथ प्रदेश की सभी 80 सीटों पर चुनाव जीतना है। लोकसभा चुनाव की तैयारियों की समीक्षा करते हुए कहा कि नियमित प्रवास के साथ बूथ पर सक्रियता, सम्पर्क व संवाद से बूथ विजय का लक्ष्य प्राप्त करना है। प्रत्येक कार्यकर्ता को जिम्मेदारी सौंपना है तथा प्रत्येक बूथ पर सभी को मतदान के लिए प्रेरित करना है। उन्होंने टिफिन बैठक की तैयारियों की समीक्षा करते हुए कहा कि टिफिन बैठक में कार्यकर्ता अपने आस पास के लोगो को भी जोड़े। प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने शनिवार को कहा कि भाजपा का संकल्प मोदी की गारंटी के साथ देश के सामने है। उन्होंने कहा कि एक ओर कांग्रेस, सपा, बसपा का अपने परिवार की समृद्धि और खुशहाली का ऐजेंडा है। वहीं दूसरी ओर मोदी की देश की समृद्धि और देशवासियों की खुशहाली की गारंटी है।

चौथे चरण में अब तक 33 प्रत्याशियों ने भरा नामांकन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि चतुर्थ चरण में 13 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में अब तक 33 प्रत्याशियों द्वारा नामांकन पत्र दाखिल किये गये। 20 अप्रैल को 21 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसके पहले 12 प्रत्याशियों ने नामांकन किया था। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्रदेश में चतुर्थ चरण की 13 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए 20 अप्रैल को चतुर्थ चरण की 13 लोकसभा सीटों के लिए नामांकन पत्र भरा गया। शाहजहांपुर लोकसभा सीट के लिए 1 प्रत्याशी द्वारा नामांकन किया गया। खीरी लोकसभा सीट के लिए 2 प्रत्याशियों, धौरहरा लोकसभा सीट के लिए 3 प्रत्याशियों द्वारा नामांकन पत्र भरे गये। सीतापुर लोकसभा सीट के लिए 1 प्रत्याशी, हरदोई लोकसभा सीट के लिए 1 प्रत्याशी द्वारा नामांकन किया गया। मिश्रिख लोकसभा सीट के लिए 1 प्रत्याशी द्वारा नामांकन किया गया। उन्नाव लोकसभा सीट के लिए 2 प्रत्याशियों तथा फर्रूखाबाद लोकसभा सीट के लिए 1 प्रत्याशी द्वारा नामांकन पत्र भरा गया। इटावा लोकसभा सीट के लिए 2 प्रत्याशियों द्वारा नामांकन पत्र भरा गया। कानपुर लोकसभा सीट के लिए 3 प्रत्याशियों तथा अकबरपुर लोकसभा सीट के लिए 3 प्रत्याशियों द्वारा नामांकन पत्र भरे गये। बहराइच लोकसभा सीट के लिए 1 प्रत्याशी द्वारा नामांकन पत्र भरा गया। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव के निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रदेश में लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 के चतुर्थ चरण की 13 लोकसभा सीटों के लिए नामांकन भरने की अंतिम तिथि 25 अप्रैल बृहस्पतिवार निर्धारित है। नामांकन पत्रों की जांच 26 अप्रैल शुक्रवार को की जायेगी। 29 अप्रैल सोमवार को अपराह्न 3 बजे तक नाम वापसी की अंतिम तिथि निर्धारित है। इसके उपरान्त इन निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों की सूची अन्तिम हो जायेगी। चतुर्थ चरण का मतदान 13 मई सोमवार को सम्पन्न होगा। उन्होंने कहा कि नामांकन के दौरान सुरक्षा की व्यापक व्यवस्था की गयी है। सम्पूर्ण नामांकन प्रक्रिया की वीडियोग्राफी भी करायी जा रही है।

सपा छात्रसभा का प्रतिनिधिमंडल धरने पर बैठे छात्रों से मिला

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर शनिवार को समाजवादी छात्र सभा का एक प्रतिनिधिमंडल बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ पहुंचा। मालूम हो कि विश्वविद्यालय में अम्बेडकर जयंती कार्यक्रम मनाए जाने से रोकने के विरोध में विश्वविद्यालय प्रशासन से मिलने जा रहे दलित छात्रों को प्रशासन के निर्देश पर 17 अप्रैल 2024 को करीब 40 सुरक्षा कर्मियों द्वारा बेरहमी से पीटा गया। वहीं प्रशासन द्वारा 4 दलित छात्रों अश्विन, विकास, राहुल, आलोक राव सहित 25 अन्य छात्रों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर दिया गया। आरोपी प्रशासन के खिलाफ कारवाई व दोषी प्राक्टर को हटाए जाने की मांग को लेकर विश्वविद्यालय में धरने पर बैठे छात्रों से शनिवार को समाजवादी छात्र सभा के राष्ट्रीय महासचिव मनोज पासवान के नेतृत्व में गए प्रतिनिधिमंडल को गेट पर ही रोक दिया गया। धरना स्थल पर जाने से रोके जाने पर समाजवादी छात्र सभा का प्रतिनिधिमंडल गेट पर ही धरने पर बैठ गया। धरने को सम्बोधित करते हुए समाजवादी छात्र सभा के राष्ट्रीय महासचिव मनोज पासवान ने कहा कि भाजपा की जबसे केन्द्र में सरकार आयी है विश्वविद्यालय को बर्बाद करने की कोशिश की जा रही है, आरक्षण की वजह से विश्वविद्यालय में प्रवेश कर रहे दलित, पिछड़े, अल्पसंख्यक छात्रों का उत्पीड़न किया जा रहा है। साथ ही उनकी अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता, संस्कृति, शिक्षा का दमन किया जा रहा है। समाजवादी छात्र सभा के राष्ट्रीय महासचिव दिलीप कृष्णा ने छात्रों की लड़ाई को वाजिब बताते हुए आरोपी प्राक्टर को हटाने की मांग की।

फिर से सत्ता सुख भोगने के लिए आतुर हैं सपा मुखिया: भूपेन्द्र सिंह चौधरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने अखिलेश यादव द्वारा चुनावी रैली में लगाए गए आरोपों पर करारा पलटवार किया। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव पीडीए का नारा दे रहे हैं, जिसका असली अर्थ पारिवारिक डेवलपमेंट अथॉरिटी है। जिस तरह से उन्होंने अपने परिवारीजनों को टिकट बांटे हैं, उससे स्पष्ट है कि उनकी नीयत पीड़ित और दलितों के विकास की नहीं, बल्कि अपने परिवार के विकास को लेकर है।

प्रदेश की जनता उनकी हकीकत अच्छी तरह जान चुकी है और इन आम चुनावों में वो एक बार फिर उनकी मंशा को नकार रही है। उन्होंने कहा कि वो जानते हैं कि अकेले दम पर वह उत्तर प्रदेश में भाजपा का सामना नहीं कर सकते। इसीलिए वो दूसरे दलों के साथ गठबंधन कर रहे हैं, लेकिन अफसोस कि उन्होंने जिन दलों से गठबंधन किया है, उनका वजूद ही यूपी से खत्म हो चुका है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि प्रदेश में अपनी जमीन खो चुके समाजवादी पार्टी के मुखिया फिर से सत्ता सुख भोगने के लिए आतुर हैं। इसके लिए वो अलग-अलग पार्टियों से गठबंधन करते फिर रहे हैं। इसके बावजूद वह जनता का दिल जीतने में बार-बार नाकाम रहे हैं। उन्होंने कहा कि जनता जनार्दन पहले ही दो लड़कों और बुआ-बबुआ की जोड़ी को सिरे से नकारा चुकी है। एक बार फिर वही पुरानी दो लड़कों की जोड़ी यूपी आई है और फिल्म की शूटिंग कर रही है। लेकिन प्रदेश की जनता को रील नहीं रियल डेवलपमेंट चाहिए जो विगत 10 वर्ष में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और 7 वर्ष में मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में मिल रहा है। वो पश्चिम को लेकर क्या बात कर रहे हैं, उनकी पश्चिम से लेकर पूरब तक हार सुनिश्चित है। प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि मेरठ की जनता को उनके झूठे वादों पर भरोसा नहीं हैं। वो जानती है कि ये किसानों का, युवाओं का और गरीबों का हक मारने वाले लोग हैं।

हर मुद्दे पर फेल हो गई है भाजपा: अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि लोकसभा चुनाव में पश्चिम की हवा ने सब पलट दिया है। भाजपा का पहला शो फ्लॉप हो गया है। भाजपा को कोई वोट नहीं देना चाहता है। भाजपा नेताओं की घिसीपिटी कहानी अब कोई नहीं सुनना चाहता है। अखिलेश यादव शनिवार को मेरठ लोकसभा क्षेत्र से समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन प्रत्याशी सुनीता वर्मा के समर्थन में चुनावी सभा की। उन्होंने कहा कि मेरठ की धरती क्रान्तिकारी है। मेरठ ने देश को अंग्रेजों से आजादी दिलायी थी। अब मेरठ की जनता भाजपा के दस साल के कुशासन से आजादी दिलायेगी। भाजपा ने किसानों को धोखा दिया। तीन काले कानून लाकर किसानों के खिलाफ कानून बनाया था। किसानों ने भाजपा सरकार के काले कानूनों के खिलाफ आंदोलन किया। हजारों किसान शहीद हुए। किसान पीछे नहीं हटे। भाजपा सरकार काले कानून वापस लेने पर मजबूर हुई। यादव ने कहा कि किसान सरकार से फसलों के

पहले फेज के मतदान में सपा, बसपा और कांग्रेस का सूपड़ा साफ: केशव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने शनिवार को कानपुर लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी रमेश अवस्थी के नामांकन जुलूस से पहले आयोजित जनसभा में कार्यकर्ताओं को कांग्रेस मुक्त भारत और सपा-बसपा मुक्त उत्तर प्रदेश का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि पहले फेज के मतदान में जनता ने सपा, बसपा और कांग्रेस का सूपड़ा साफ कर दिया है। फ्लॉप जोड़ी को इस बार सुपर फ्लॉप करके जनता वापस भेजने का काम करेगी। मोदी जी एक बार फिर तीसरी बार जनता के आशीर्वाद से प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं ।

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सभी से दोनों हाथ उठाकर मेरा बूथ ,सबसे मजबूत का नारा दिलाते हुए सबसे ज्यादा वोट लाने का वचन दिलाया। उन्होंने कहा कि सपा की साइकिल तो कानपुर में पहले ही पंक्चर हो चुकी है। इसलिए कानपुर में सपा का प्रत्याशी नहीं है और पंजा प्रदेश से लगभग मुक्त ही है। इसलिए भाजपा से मुकाबले में कोई नहीं है और रही सही कसर दो युवकों की जोड़ी घूम-घूमकर पूरा कर देगी। ये जितना घूमेंगे भाजपा की जीत का मार्जिन उतना बढ़ता जाएगा। मौर्य ने कहा कि यह चुनाव देश को पांच साल नहीं 100 साल आगे ले जाने वाला है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में कानपुर से बुंदेलखंड तक पेयजल की सभी समस्याएं खत्म की जा चुकी हैं। अब कोई पानी वाली ट्रेन उत्तर प्रदेश में नहीं आती है। केन-बेतवा लिंक परियोजना के पूरे होने के बाद पूरे बुंदेलखंड में पानी की समस्या समाप्त हो जाएगी। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि, भाजपा सरकार भरोसे का दूसरा नाम है और श्री नरेंद्र मोदी उस भरोसे पर खरा उतरने की गारंटी है। इसलिए भाजपा के उम्मीदवार जीतेंगे तो दिल्ली में मोदी जी को ताकत मिलेगी। मोदी जी की सरकार गरीब कल्याण के लिए संकल्पित सरकार है। उन्होंने अपील की कि, गरीब, युवा, अन्नदाता और नारीशक्ति को समर्थ बनाने के लिए, भाजपा की जीत सुनिश्चित करने के लिए सभी एकजुट होकर कमल का बटन दबाएं।

सपा नेता व पूर्व पार्षद समेत बड़ी संख्या में लोग भाजपा में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कैसरबाग स्थित भाजपा लखनऊ महानगर कार्यालय पर लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने समाजवादी पार्टी के पूर्व प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सुमेश मिश्रा एवं पूर्व पार्षद प्रत्याशी ओम नगर वार्ड समीर मिश्रा के साथ बड़ी संख्या में आए कार्यकर्ताओं को भाजपा की सदस्यता दिलायी।

लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने बीजेपी परिवार में सम्मिलित होने पर बधाई देते हुए कहां कि अब लोकसभा चुनाव के कुछ ही दिन शेष बचे हैं केंद्र एवं राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के साथ लखनऊ सांसद एवं भारत सरकार रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा लखनऊ महानगर में किए गए विकास कार्यों को जनता तक पहुंचने का कार्य करेंगे। छोटे समूह में टोलिया बनाकर प्रचार प्रसार करें। वोटिंग वाले दिन अपना तथा अपने परिवार के साथ आसपास के क्षेत्रवासियों को शत प्रतिशत मतदान करने साथ भाजपा को वोट दिलाने का काम करें तथा लखनऊ बोले पांच लाख पार संकल्प को पूरा करने में सहयोग प्रदान करें। सदस्यता ग्रहण करने में धीरज कटापलिया, अर्पित दीक्षित जिला सचिव समाजवादी छात्र सभा, सुनील मालानी, जुगल किशोर भवानी, जय रामदास खत्री, दीपक उपाध्याय, अंशु शुक्ला, अभिषेक सदाना, मुकेश यादव, कुलदीप वाजपेई, रमाकांत दुबे, अभिषेक तिवारी, गुलशन मोहला, नलिन शुक्ला, प्रभात मिश्रा, दीपक अग्रवाल, मोहम्मद आसिफ खान, डॉ दलजीत सिंह, शरद यादव, राजकुमार शर्मा, सौरभ प्रताप सिंह, अभिषेक शुक्ला, अजीत यादव, विनय मिश्रा, सरिता मिश्रा, धीरज तिवारी, आशीष पाठक, अनिल कुमार सिंह, आर्य वर्मा, मोहित चावला, दीप भारती, पूजा वर्मा, अरविंद मिश्रा, सचिन रस्तोगी, शिवम, अमित त्रिवेदी, हर्ष खन्ना प्रशांत तिवारी आदि पदाधिकारी ने भाजपा की सदस्यता ली।

अमरोहा व गायिजाबाद में मायावती की चुनावी जनसभा आज

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती देश में 18वीं लोकसभा के लिए हो रहे आमचुनाव में अपनी पार्टी के उम्मीदवारों के समर्थन में देश भर में की जाने वाली जनसभाओं के क्रम में 21 अप्रैल दिन रविवार को उत्तर प्रदेश राज्य के अमरोहा व गाजियाबाद ज़िले में चुनावी जनसभा को सम्बोधित करेंगी। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बहन मायावती की पहली चुनावी जनसभा अमरोहा जिंले में निर्माणाधीन पुलिस लाइन के पास जोया रोड स्थित मैदान में होगी जबकि दूसरी चुनावी जनसभा गाजियाबाद जिले के कविनगर स्थित रामलीला मैदान में आयोजित की गयी है।

पिछले 10 सालों में देश की दशा और दिशा पूरी तरह से बदल गई: दिनेश शर्मा

● नुक्कड़ सभाओं में तीसरी बार मोदी सरकार बनाने का किया गया आवाह्न

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी लखनऊ महानगर द्वारा तीसरी बार मोदी सरकार और लखनऊ लोकसभा से सांसद राजनाथ सिंह को विजयी बनाने के लिए महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी के नेतृत्व में वृहद स्तर पर बैठको, जनसंपर्क के साथ ही नुक्कड़ सभाओं का आयोजन भी आरंभ कर दिया है।

शनिवार को आयोजित नुक्कड़ सभा में राज्यसभा सांसद डॉक्टर दिनेश शर्मा ने विधायक डॉक्टर नीरज बोरा के साथ उत्तर मंडल 2 के अयोध्या दास प्रथम शक्ति केंद्र पर शिवचरण होटल चौराहे पर, महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने कैंट में नेहरू रोड चर्च के पास और पश्चिम मंडल एक के शीतला देवी शक्ति केंद्र में अंजनी श्रीवास्तव के साथ मनपूर्णा मंदिर के समीप, लोकसभा संयोजक एमएलसी मुकेश शर्मा ने पश्चिम विधानसभा के न्यू हैदरगंज द्वितीय और तृतीय शक्ति केंद्र में है हेमिल्टन न स्कूल के सामने पार्क में और ओवर ब्रिज के नीचे नुक्कड़ सभाओं को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए भाजपा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी और अबकी बार 400 पर के नारे के साथ तीसरी बार मोदी सरकार बनाने का आवाहन किया। डॉ दिनेश शर्मा ने कहा कि पिछले 10 सालों में देश की दशा और दिशा पूरी तरह से बदल गई है प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर है। चाहे आर्थिक व्यवस्था हो, विकास के पैमाने हो या मानवीय संवेदना की बात हो या फिर कोविड का कठिन काल रहा हो हर चुनौतियों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने नेतृत्व को सफल सिद्ध किया है। राजनाथ सिंह के नेतृत्व में देश की सीमाएं तो सुरक्षित हुई है वही लखनऊ भी विश्व के खूबसूरत शहरों में शुमार हुआ है। महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने कहा कि मतदान के दिन आप स्वंय अपना,अपने परिवार और मित्र जनों का वोट डलवाने का प्रण ले। आपके वोट की ही ताकत है कि आज लखनऊ से सांसद के रूप में प्रतिनिधित्व करते हुए यशस्वी रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शहर के विकास के साथ ही देश की सीमा को सुरक्षित रखने और रक्षा मंत्रालय बड़ी संख्या में सैन्य उपकरणों का एक्सपोर्ट करने में सक्षम हुआ है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 21 अप्रैल, 2024

दैनिक जागरण

बिना निराश हुए असफलता सह लेना साहस की बड़ी परीक्षा है

चुनावी चंदे पर चर्चा

यह अच्छा हुआ कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने यह स्पष्ट किया कि सभी पक्षों से बात करके चुनावी चंदे की कोई नई व्यवस्था लाई जाएगी। यह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है, क्योंकि यदि चंदे की कोई नई व्यवस्था नहीं बनाई जाती या फिर चुनावी बांड की पुरानी योजना में वांछित परिवर्तन कर उसे नए रूप में नहीं लाया जाता तो देश की राजनीति फिर से कालेधन से संचालित होने लगेगी। विडंबना यह है कि न तो कोई यह बता रहा है कि क्या चुनावी बांड की खत्म की गई योजना में कुछ बदलाव कर उसे पारदर्शी बनाया जा सकता है और न ही यह कि चंदे की नई पारदर्शी व्यवस्था क्या होनी चाहिए? यह तो स्वीकार्य नहीं कि चंदे का लेन-देन उसी तरह होने लगे, जैसे चुनावी बांड योजना के पहले होता था और जिसमें किसी को पता नहीं चलता था कि किसने किसको कितना पैसा दिया? यदि विपक्षी दलों को वित्त मंत्री के कथन पर आपत्ति है तो फिर उन्हें यह बताना चाहिए कि चुनावी चंदे की कोई नीर-क्षीर व्यवस्था क्या हो सकती है? क्या यह विचित्र नहीं कि सुप्रीम कोर्ट की ओर से चुनावी बांड योजना खत्म किए जाने पर विपक्षी नेताओं समेत अन्य अनेक लोगों ने खुशी तो खूब जताई, लेकिन किसी ने भी यह नहीं बताया कि भविष्य के लिए चंदे के लेन-देन का कौन सा तरीका उपयुक्त रहेगा और कैसे राजनीति में कालेधन के इस्तेमाल को रोका जा सकता है?

कई विपक्षी नेताओं ने चुनावी बांड योजना को लूट और उगाही तो करार दिया, लेकिन वे इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके कि आखिर जिन कंपनियों ने भाजपा को चंदा दिया, उन्होंने उन्हें भी क्यों दिया? क्या वे यह कहना चाहते हैं कि भाजपा को मिला चंदा बुरा था और उनके दलों को मिला अच्छा? निःसंदेह कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि राजनीति का काम बिना पैसे यानी चंदे के चल जाएगा। प्रत्येक लोकतांत्रिक देश में राजनीति चंदे के पैसे से ही चलती है, लेकिन विकसित देशों ने उसके लेन-देन की प्रक्रिया एक हद तक पारदर्शी बना रखी है। इससे जनता को यह पता चलता है कि राजनीतिक दलों को कौन और कितना चंदा देता है। चुनावी बांड योजना भी इसी उद्देश्य से लाई गई थी, लेकिन वह इसलिए पूरा नहीं हो सका, क्योंकि इस योजना में वांछित सुधार नहीं किए गए। वास्तव में इसीलिए सुप्रीम कोर्ट ने उसे रद कर दिया। अब इसके बाद इस पर विचार तो होना ही चाहिए कि चंदे की नई व्यवस्था कैसे बने? यह तभी संभव होगा, जब सभी राजनीतिक दल इस पर गंभीरता से चर्चा करेंगे। उन्हें यह बुनियादी बात समझनी होगी कि चुनावी बांड योजना के खत्म होने पर खुश होना भर पर्याप्त नहीं है। चंदे की कोई नई पारदर्शी व्यवस्था जितनी जल्दी बने, उतना ही बेहतर।

मतदान के प्रति उदासीनता

बिहार में लोकसभा चुनाव के प्रथम चरण में चार सीटों पर 50 प्रतिशत से भी कम मतदान होना चिंता का विषय है। यह मतदाताओं की उदासीनता दर्शा रहा है, जहां वे मताधिकार के प्रति सजग नहीं दिखे। 2019 में हुए चुनाव में यही मतदान प्रतिशत 53.47 प्रतिशत था, जो इस बार लगभग छह प्रतिशत कम हो गया है। लोकतंत्र में जनता के मत से ही प्रतिनिधि चुने जाते हैं, सरकार चुनी जाती है। इस प्रक्रिया में अधिक से अधिक भागीदारी ही लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूती प्रदान करती है। यह आम जन का वह अधिकार है, जो जिसमें शासन जनता में निहित होता है। मत के इस अधिकार से दूरी बनाना कतई ठीक नहीं है। पहले चरण में गया, नवादा, औरंगाबाद और जमुई की जिन चार सीटों पर चुनाव हुए, वहां ग्रामीण क्षेत्रों में तो मतदाता थोड़े उत्साह में दिखे, लेकिन शहरी क्षेत्रों में लोग उदासीन बने रहे। लोकतांत्रिक साक्षरता की बात करें तो ग्रामीण कहीं अधिक सजग रहे, जिन्होंने अपने अधिकार को समझ मत का प्रयोग किया। ऐसे भी दृश्य रहे, जहां जंगल-पहाड़ लांघकर करीब 40 किलोमीटर तक की दूरी पांव-पैदल ही तय की। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में ऐसे मतदाताओं की आस्था प्रणम्य है, वे प्रेरणा के स्रोत हैं। 80 से 100 वर्ष तक की उम्र के बुजुर्गों ने भी जो उत्साह दिखाया, वह वैसे लोगों के लिए एक प्रेरणा हैं, जो मतदान से दूर रहे। यह एक सकारात्मक पक्ष है, पर मत प्रतिशत घटने के कारण की समीक्षा जरूर की जानी चाहिए कि ऐसा क्यों हुआ। वे कौन से कारण रहे, जिसके कारण लोग मतदान के लिए नहीं निकले। यह सभी का समेकित प्रयास होना चाहिए कि अधिक से अधिक मतदान हो, ताकि पहले चरण में जो कमी रह गई, उसकी भरपाई की जा सके। बिहार राजनीतिक रूप से एक जागरूक प्रदेश है। यहां के मतदाता जागरूक रहे हैं। गर्मी का मौसम है, पर इसी समय पहले भी चुनाव होते रहे हैं और लोगों ने बढ़-चढ़कर मतदान में भाग लिया है। उसी उत्साह के साथ लोकतंत्र के महापर्व में भाग लेने की तैयारी अभी से करनी होगी, ताकि इस तरह की स्थिति नहीं रहे।

वैकल्पिक एजेंडे का अभाव

संजय गुप्त

मोदी सरकार की नीतियों का विरोध कर रहे विपक्षी दल अपने घोषणा पत्रों में देश को आगे ले जाने वाला कोई कारगर खाका नहीं खींच सके

सभी प्रमुख दलों के घोषणा पत्र सामने आ चुके हैं। यह कहना तो कठिन है कि मतदाता इन घोषणा पत्रों को देखकर ही अपने मत का निर्धारण करेंगे, लेकिन उनमें किए गए वादों की अनदेखी भी नहीं की जा सकती। जहां भाजपा अपने दस साल के कार्यों और नीतियों को आगे बढ़ाते हुए अपने चुनावी वादों को मोदी की गारंटी बता रही है, वहीं कांग्रेस ने यह भरोसा दिलाया है कि यदि वह सत्ता में आई तो अग्निवीर योजना समाप्त करने के साथ जीएसटी कानून बदलने का काम करेगी। उसने विभिन्न समुदायों के पर्सनल कानून जारी रखने का वादा भी किया है। कांग्रेस का एक प्रमुख वादा एमएसपी की गारंटी वाला कानून बनाने का भी है। उसने कर्ज माफी का भी वादा किया है। उसने जातिगत जनगणना कराने और आरक्षण सीमा 50 प्रतिशत से अधिक बढ़ाने का भी वचन दिया है। उसके घोषणा पत्र में ऐसे भी वादे हैं, जिन्हें रेवड़ी कहा जा रहा है। कांग्रेस ने गरीबी खत्म करने के साथ सरकारी नौकरियों पर भी जोर देते हुए 30 लाख सरकारी पदों को भरने की बात कही है, लेकिन उसने पुरानी पेंशन योजना और नागरिकता संशोधन कानून यानी सीएए पर चुप्पी साध ली है।

कांग्रेस के अलावा उसके सहयोगी दलों ने भी अपने घोषणा पत्रों में भाजपा की नीतियों का विरोध करते हुए लोक-लुभावन वादों पर जोर दिया है। कांग्रेस के साथ खड़े डीएमके, सपा, राजद और वामदलों के भी ऐसे वादों से यह साफ है कि उन्होंने राज्यों की वित्तीय स्थिति की परवाह नहीं की है। वे यह देखने को तैयार नहीं कि समृद्ध माने जाने वाले केरल, तमिलनाडु, पंजाब आदि की वित्तीय हालत खराब हो रही है। इन दलों के चुनावी वादों में उस वामपंथी सोच की छाप दिख रही है, जो अब एक बड़े वर्ग को आकर्षित नहीं करती। कांग्रेस और उसके साथी दल गरीबी हटाने, नौकरियां देने, सरकारी आर्थिक सहायता देने के वादे तो खूब कर रहे हैं, लेकिन देश में आर्थिक समृद्धि लाने की कोई ठोस योजना उनके घोषणा पत्रों में नहीं दिखती। कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों को घोषणा पत्रों में विरोधाभास भी दिखता है, जैसे माकपा परमाणु हथियार खत्म करने की बात कह रही है। उसने पीएमएलए जैसे कानून खत्म करने का वादा करते हुए अमीरों पर टैक्स बढ़ाने की भी घोषणा की है। आम आदमी पार्टी का दावा है कि हम दिल्ली और पंजाब में रामराज्य की अवधारणा पर जो काम कर रहे हैं उसे ही देश भर में फैलाएंगे।

अवधेश राजपूत

जिन मुद्दों पर कांग्रेस और साथी दल अपने को कठघरे में खड़ा पाते हैं या भाजपा के निशाने पर हैं, उन पर वे मोदी सरकार को घेर रहे हैं, जैसे कि भ्रष्टाचार। विपक्षी दल ईडी यानी प्रवर्तन निदेशालय की शक्तियों में कटौती चाह रहे हैं। यह तब है, जब ईडी की कार्रवाई का सामना करने वालों में महज तीन प्रतिशत नेता हैं। क्या विपक्षी दल यह नहीं चाहते कि भ्रष्ट नेताओं के खिलाफ कार्रवाई हो? क्या वे जांच एजेंसियों के हाथ बांध देंगे? क्या वे इसकी अनदेखी कर सकते हैं कि बीते दस साल में ईडी ने संप्रग शासन की तुलना में भ्रष्ट तत्वों के खिलाफ कहीं अधिक व्यापक कार्रवाई की है? विपक्षी दल चुनावी बांड पर मोदी सरकार को घेर रहे हैं और कांग्रेस ने तो यहां तक कहा है कि वह इस योजना की जांच कराएगी, लेकिन उसके पास इस सवाल का जवाब नहीं कि आखिर उन अनेक कंपनियों ने उसके समेत अन्य विपक्षी दलों को चंदा क्यों दिया, जिन्हें लेकर वे भाजपा को घेर रहे हैं? विपक्ष दल जिस तरह सीएए और यूसीसी का विरोध कर रहे हैं, उससे यह साफ है कि वे अल्पसंख्यकों और विशेष रूप से मुस्लिम तुष्टीकरण की अपनी नीति नहीं छोड़ पा रहे हैं, जबकि सीएए का किसी भारतीय नागरिक से कोई लेना-देना नहीं। यह भी अल्पसंख्यकों को डराने वाली बात है कि यूसीसी से उनके अधिकार कम होंगे। कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों के घोषणा पत्रों से यही झलकता है कि रोजगार का मतलब सरकारी नौकरियां हैं और सरकार का काम उद्योग-धंधे चलाना है। किसी ने यह स्पष्ट नहीं किया कि वह इतनी संख्या में नौकरियां कैसे देगा? शायद वे इस तथ्य से अनजान रहना चाहते हैं कि जब भी कहीं सरकारों ने उद्योग चलाने की कोशिश की, तब उनकी गुणवत्ता और सेवा में कमी आई। ऐसे उद्योग घाटे की चपेट में आए।

कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने मोदी सरकार की आर्थिक-सामाजिक मोर्चे पर हासिल उपलब्धियों को तो नकारा ही है, यह देखने से भी इन्कार किया है कि बीते दस वर्ष में किस तरह देश का कद बढ़ा और भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि निखरी। क्या यह सामान्य बात है कि दस वर्ष में देश पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया और अब तीसरे स्थान पर पहुंचने वाला है? विपक्षी दल राष्ट्रवाद के उभार और भारतीय संस्कृति के प्रति लोगों के जुड़ाव के साथ इसे भी अनदेखा कर रहे हैं कि लोग अब विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति को लेकर आशान्वित हैं। विपक्षी दल मोदी सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों की सफलता और आर्थिक प्रगति के साथ आधारभूत ढांचे के उल्लेखनीय निर्माण का भी महत्व नहीं समझ रहे हैं। कांग्रेस और सहयोगी दलों ने सामाजिक और आर्थिक प्रगति का अपना जो खाका पेश किया है, वह पहले भी कई दल पेश कर चुके हैं और सत्ता भी हासिल कर चुके हैं। सब जानते हैं कि उससे न तो सामाजिक-आर्थिक न्याय का लक्ष्य हासिल किया जा सका और न ही देश को आगे ले जाया जा सका।

विपक्षी दलों के चुनावी वादे देश को 1970-80 के दशक वाले उसी दौर में ले जाने वाले हैं, जिससे देश बड़ी मुश्किल से बाहर निकला और मोदी सरकार ने अपनी नीतियों और योजनाओं से उसे एक नई दिशा और गति दी। इन्हीं नीतियों और कार्यक्रमों से भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। इसके विपरीत विपक्षी दल के वादे लोगों की सरकार पर निर्भरता बढ़ाने वाले हैं। एक तरह से वे देश की प्रगति की दिशा को पलटने की कवायद करते दिख रहे हैं। इसीलिए उनके चुनावी वादों को देखकर यह कहना कठिन है कि वे देश की जनता के सामने कोई ठोस वैकल्पिक एजेंडा रख सके।

response@jagran.com

वादे करने का सुनहरा अवसर

हास्य-व्यंग्य

मेरे पड़ोस में एक बड़का नेताजी रहते हैं। आमतौर पर उनकी हरकतें सामान्य नहीं होती हैं, पर जैसे ही चुनाव की घोषणा हुई, उनकी काया में अजीब-सी हरकत होने लगी। आंखें सुनने लगीं और कान देखने लगे। उनकी जुबान में मिसरी-सी घुल गई। उन्होंने एलान कर दिया कि बहुत हुआ। अब वह जनता से मिले बिना नहीं रह सकते। पांच साल हो गए, जब वह आखिरी बार लोगों के बीच गए थे। देश-सेवा में ऐसा फंसे कि जेल जाने तक की नौबत आ गई थी। यह तो कहो समय रहते वह सही समय पर जाग गए और साथ ही उनकी किस्मत भी। जागते ही मंत्री-पद की कसम उठा ली और फिर उसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस व्यस्तता में उनका चुनाव क्षेत्र भी लपेटे में आ गया। फिर किस्मत ने पलटी खाई। चुनावी-शंखनाद होते ही वह अब उसी क्षेत्र के लोगों से मिलने की चाहत में छटपटा उठे।

अपने वातानुकूलित कक्ष से बाहर आकर उन्होंने फौरी तौर पर मुआयना किया। गर्मी तो थी, पर सत्ता की गर्मी के आगे कुछ भी नहीं। उन्होंने तुरंत अपने करीबी कार्यकर्ताओं को नसीहत दी कि वे मैदानी-कार्यकर्ताओं से तमीज से पेश आएं। उन्होंने पहला संकल्प यही लिया कि किसानों, गरीबों, पीड़ितों और शोषितों से भरी-दुपहरी में मिलना चाहते हैं। उनके दौरे का इंतजाम फौरन किया जाए। वह अपना जीवन देश के लिए पहले ही समर्पित कर चुके हैं। उसी 'समर्पण' को फिर से ऊंचे रेट पर 'रिडीम' करवाने का 'टैम' आ गया है। उन्हें खुद से ज्यादा अपनी जनता पर भरोसा है। यही सोचकर नेताजी मिशन 'बेड़ा पार' के लिए जुट गए।

संतोष त्रिवेदी

चुनावी वादों की खासियत यह होती है कि नए वादे करते ही पुराने स्वतः पूरे हुए मान लिए जाते हैं

सूरज अभी निकला नहीं था, पर नेताजी जनसंपर्क के लिए निकल पड़े। काफिले में सबसे आगे सौ मोटरसाइकिलें धूल उड़ा रही थीं। इसके ठीक पीछे पचासेक गाड़ियां धूल साफ करते हुए आगे बढ़ रही थीं। क्षेत्र के विकास की तरह इनकी गति भी मद्धम थी। इन गाड़ियों में नेताजी की अपनी एक भी गाड़ी नहीं थी। इस कमी को उनके परिवारी जनों ने पूरा किया। नेताजी ने उन्हें सड़कें और खदानें दीं, पुल दिए। बदले में उन्हें 'मिशन' पूरा करने के लिए मशीनरी मिली और जनता को मिले ढेर सारे वादे। वादों की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वे एक्सपायरी डेट के साथ आते हैं। नए वादे आते ही पुराने स्वतः पूरे हुए मान लिए जाते हैं। आज ऐसे ही नए वादों का जन्मदिन था।

गांव की सीमा आते ही नेताजी पैदल हो गए। कई कार्यकर्ता पीछे छूट गए, पर मीडिया के दिव्य नेत्रों से वह नहीं बच सके। बड़ी मुश्किल से नेताजी एक खेत में प्रकट हुए। वहां फसल कट रही थी। यह देखकर नेताजी को धक्का लगा। उनके रहते दूसरा कोई फसल कैसे काट सकता है। उन्होंने झट से एक हाथ से हंसिया झटक लिया। अगले पल गेहूं की दो-तीन बालियां जमीन पर थीं। साथ में खून भी। हंसिया के मालिक की चीख निकल गई। सरकार जख्मी हो गए हैं। इस खबर से घटनास्थल पर हड़कंप मच गया। नेताजी लहूलुहान थे, पर चेहरे पर तनिक भी शिकन नहीं थी। हंसिया पूरी तरह निर्दोष था। फसल की पत्तियों ने ही उनके हाथ को छलनी कर दिया था। मैंने नेताजी को आश्वस्त देखकर सवाल किया, 'फसल काटते हुए आपको गंभीर चोट लगी है। इससे आपके मंसूबों पर पानी तो नहीं फिरेगा?' 'अरे बंधु, यही मेरी जीत का टीका है। रक्त की एक-एक बूंद से जनता इसका जवाब देगी।' कहते हुए नेताजी ने हंसिया उसके मूल स्वामी को सौंप दिया। 'सरकार, आप भूखे होंगे। ऊपर से इतना रक्तपात हो गया। मैं बहुत बड़ा पापी हूं।' कहते हुए किसान बिलख उठा। नेताजी ने उसे गले लगा लिया। वह किसान के गले पड़े ही थे कि सहसा एक साथ कई आवाजें आईं, 'खच्च! खच्च! खच्च!' उनकी धड़ाधड़ फोटो खिंच रही थीं। सबकी आंखें चौंधिया गईं। नेताजी ने अपनी मशीनरी को संकेत दिया। वे सब अगले 'टारगेट' की तरफ धुंआ छोड़ते हुए बढ़ चले। अगले दिन सभी अखबारों में सचित्र खबर छपी, 'नेताजी ने अपने क्षेत्र में श्रमदान में भाग लिया और रक्तदान का शुभारंभ किया। उनसे मिलकर किसान खूब रोए!'

response@jagran.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

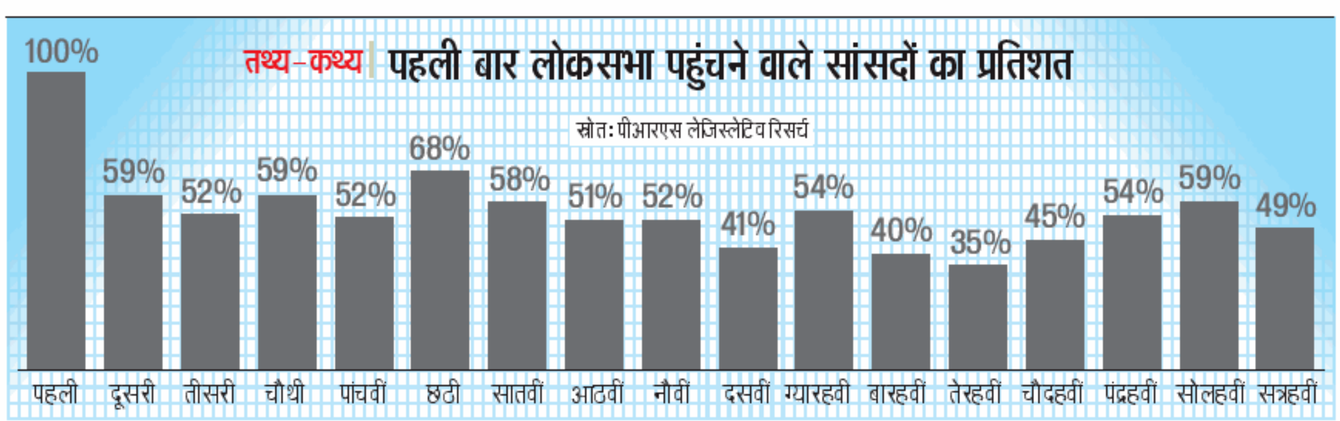

तथ्य-कथ्य | पहली बार लोकसभा पहुंचने वाले सांसदों का प्रतिशत

स्रोत: पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च

ऊर्जा

मौन की शक्ति

इंद्रिय अनुभूत विषयों के प्रकटीकरण का माध्यम वाणी है। इसके आवेग से भावनाएं मुखरित होकर शब्दों का रूप धारण करती हैं। जबकि वाणी के आवेग पर पूर्ण नियंत्रण मौन कहलाता है जिसमें भावों का प्रकटीकरण बाह्य न होकर आभ्यंतरिक होता है। मौन भी एक भाषा है जिसमें शब्दों के बिना भी अभिव्यक्ति होती है। इसीलिए विद्वानों के अनुसार आचरण की भाषा मौन है। मौन वाणी का तप है, जो मन एवं चित्तवृत्तियों का नियंत्रक भी है। इससे मनुष्य वाणी के दोषों से मुक्त होकर शारीरिक और मानसिक शांति प्राप्त करता है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में साधना की दो प्रवृत्तियां हैं-अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी। ईश्वर का गुणानुवाद बहिर्मुखी साधना का अंग है जबकि मौन अंतर्मुखी साधना का आधार है। इससे साधक जगत के प्रपंचों से मुक्त होकर एकाग्र हो जाता है। मन-मस्तिष्क में सकारात्मक भावों का उदय होता है। इसीलिए मौन एकनिष्ठ भक्ति का अनिवार्य तत्व है तथा साधना के पथ पर परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति कराने वाला साधक का अभिन्न सहचर है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं, 'मैं ही प्राणियों में गोपनीय भावों का रक्षक मौन हूं।'' अतिवक्तृता सामाजिक बुराई है तथा शारीरिक एवं मानसिक ऊर्जा के क्षरण का कारण भी। रक्तचाप, अनिद्रा, तनाव जैसे रोग इसी से उत्पन्न होते हैं। शांति प्रदायक होने से मौन इनका श्रेष्ठतम निदान है। लौकिक जीवन में भी मौन का अनपेक्षित महत्व है। यद्यपि मौन को दैन्य और अज्ञानता के आच्छादन का कारण भी कहा जाता है, किंतु यह बौद्धिक शक्ति में वृद्धि कर चिंतन को परिशुद्ध करता है जिससे विचारों पर नियंत्रण होता है। अतः जीवन को तनाव ग्रस्त करने वाले वैचारिक प्रदूषण के इस दौर में मौन जीवन के लिए सर्वोत्तम औषधि है। मौन के महत्व को इंगित करते हुए गांधी जी ने भी कहा है, ''यदि बोलना एक कला है तो मौन उससे भी बड़ी कला है।''

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

बैंगनी रंग के भी हो सकते हैं एलियंस

मुकुल व्यास

मंद रोशनी वाले लाल तारों की परिक्रमा करने वाले ग्रहों पर जीवन का रूप वास्तव में बैंगनी हो सकता है

एलियंस हरे नहीं, बल्कि बैंगनी हो सकते हैं। अभी तक हम पृथ्वी के जीवन को पैमाना मान कर दूसरे ग्रहों पर जीवन की तलाश कर रहे थे, लेकिन बहुत से विज्ञानी अब यह कहने लगे हैं कि दूसरे ग्रहों पर जीवन के रूप-रंग पृथ्वी से एकदम अलग हो सकते हैं। इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने हरे रंगों से परे पारलौकिक जीवन की खोज का विस्तार कर दिया है। अमेरिका के कार्ल सागन इंस्टीट्यूट और कार्नेल यूनिवर्सिटी के विज्ञानियों के शोध से पता चला है कि बैंगनी जीवाणु विभिन्न परिस्थितियों में पनप सकते हैं। उनके अनुसार इस तरह के जीवाणु पृथ्वी पर पहले से ही कुछ खास जगहों पर पनप रहे हैं। एक लाल सूरज (रेड ड्वार्फ) उन्हें प्रकाश संश्लेषण के लिए सबसे अनुकूल परिस्थितियां दे सकता है। इसका मतलब हुआ कि मंद रोशनी वाले लाल तारों की परिक्रमा करने वाले ग्रहों पर जीवन का रूप वास्तव में बैंगनी हो सकता है। अतः सुदूर ग्रहों पर जीवन खोजने के लिए विज्ञानियों को बैंगनी रंग के चिह्नों की तलाश करनी चाहिए।

नए शोध में बाहरी ग्रहों से आने वाले प्रकाश संकेतों का राजफाश किया गया है। जिन ग्रहों पर आक्सीजन और सूर्य के प्रकाश की आपूर्ति कम है, वहां से आने वाले प्रकाश संकेत अलग तरह के होंगे। अब तक खोजे गए कई बाहरी ग्रह इसी श्रेणी में आते हैं। पृथ्वी पर जीवन के लिए प्रमुख रंग संकेत हरा है। इसका श्रेय बैक्टीरिया और पौधों को जाता है, जो सूर्य के दृश्यमान प्रकाश को ऊर्जा में बदलने के लिए हरे क्लोरोफिल का उपयोग करते हैं, लेकिन एक छोटे, मंद तारे की परिक्रमा करने वाले ग्रह पर जीवों के पनपने की अधिक संभावना होगी, बशर्ते वे अदृश्य इंफ्रारेड प्रकाश से अपना मेटाबोलिज्म (चयापचय) चला सकें। इंफ्रारेड प्रकाश से ऊर्जा लेने वाले जीवाणु पृथ्वी पर कई जगहों पर मौजूद हैं। ऐसे जीवाणु खासकर उन जगहों पर पाए जाते हैं जहां सूरज की रोशनी प्रवेश नहीं करती। ऐसी जगहों में दलदल या गहरे समुद्र में हाइड्रोथर्मल वेंट (जलतापीय छिद्र) शामिल हैं।

विज्ञानियों ने इन जीवाणुओं द्वारा परावर्तित प्रकाश के आधार पर इस बात का अंदाजा लगाया है कि दूर-दराज के ग्रहों से आने वाले प्रकाश संकेत कैसे दिखेंगे। शोधकर्ताओं के माडल दिखाते हैं कि विभिन्न प्रकार के स्थलीय ग्रह बैंगनी बैक्टीरिया के संकेत दिखा सकते हैं। हालांकि यह अभी अज्ञात है कि क्या किसी अन्य ग्रह पर जीवन विकसित हो सकता है। सतही जीवन की खोज में बैंगनी पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करना चाहिए। चिली में निर्माणाधीन एक्सट्रीमली लार्ज टेलीस्कोप और प्रस्तावित हैबिटेबल वर्ल्ड्स आब्जर्वेटरी जैसे नए टेलीस्कोप इन प्रकाश संकेतों की खोज करने में सक्षम होंगे।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

चैन कहां

पहले चरण में जिन लोकसभा सीटों पर चुनाव हो गया, माना जा रहा है कि वहां के उम्मीदवार निश्चिंत हो गए होंगे, लेकिन यह ऐसा खेल है जिसमें चैन किसी को नहीं। यह सच है कि रोज सुबह से रात तक वोटरों की खोज-खबर लेनी बंद हो गई, लेकिन इसका दूसरा पहलू यह है कि अब उम्मीदवारों के हाथ में कुछ नहीं बचा। किस्मत तो ताले में बंद हो गई, लेकिन अब उनको लग रहा है कि कुछ मुद्दों और क्षेत्रों में थोड़ा और परिश्रम बाकी रह गया। दो दिन का वक्त और मिल जाता तो कुछ और वोटरों को साध लेते। एक दिन का मौका अभी भी मिल जाए तो फलां बात को कुछ दूसरे अंदाज में कहेंगे। वहीं जिनके यहां मतदान नहीं हुआ है उनकी परेशानी यह है कि किस-किस को साधें, कितनी देर तक दरवाजा खोले बैठे रहें।

राजरंग

अभी तो गर्मी शुरू हुई है

आम चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने को लेकर चुनाव आयोग दो वर्षों से मशक्कत में जुटा था। इसके लिए देश भर में जागरूकता अभियान चलाए गए। बड़े-बड़े चेहरों को ब्रांड एंबेसडर बनाया गया। उन क्षेत्रों में यह अभियान प्रमुखता से चलाया गया, जहां पिछले चुनाव में राष्ट्रीय औसत से कम मतदान हुआ था, लेकिन ये सारे जतन पहले चरण के मतदान में ही रंग नहीं दिखा पाए। उम्मीद से कम मतदान को देख आयोग की भी चिंताएं बढ़ी हुई हैं। अब इसके कारणों को भी खोजने में वह जुट गया है। फिलहाल गर्मी को इसका बड़ा कारण बताया जा रहा है। यदि कम मतदान के पीछे का कारण गर्मी है, तो अभी तो यह शुरू हुई है, जो दिनों-दिन और बढ़नी ही है।

कौन बनेगा हमारा मंत्री

फिर मोदी सरकार के नारे के साथ ही अंदरूनी तौर पर यह चर्चा भी तेज है कि मोदी सरकार का कैबिनेट कैसा दिखेगा? क्या तीसरे कार्यकाल में उसका पूरा कायाकल्प होगा? अगर काम में तेजी लाने की बात होगी तो फिर उससे ऐसे कितने चेहरे जुड़ेंगे, जो राजनीति में नए हैं, लेकिन सरकार में कामकाज का अनुभव लंबा है, पर यह भी तो संभव नहीं कि कैबिनेट का गठन करते समय राजनीतिक समीकरण को छोड़ दिया जाएगा। लिहाजा हर राज्य के भाजपा उम्मीदवार वहां के जातिगत समीकरण से खुद के लिए आकलन भी लगा रहे हैं और परोक्ष तौर पर मतदाताओं को यह संदेश दे रहे हैं कि वे सांसद नहीं, मंत्री चुनने जा रहे हैं।

डाइट पर चर्चा

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की जेल में डाइट पर चर्चा क्या छिड़ी आम लोग भी अपनी डायबिटीज और उसके उपचार को लेकर असमंजस में पड़ गए हैं। पूरी कहानी यह है कि जांच एजेंसी ईडी ने कहा है कि केजरीवाल जानबूझकर आम और मिठाई खा रहे हैं, ताकि उनका शुगर लेवल बढ़े और उन्हें मेडिकल ग्राउंड पर जमानत मिल जाए। आम आदमी पार्टी कह रही है कि उन्हें यह डाइट तो डाक्टरों ने ही दी है। वह यह आरोप भी लगा रही है कि जेल में केजरीवाल को इंसुलिन नहीं दी जा रही है। गली-मोहल्लों में शुगर के मरीज इस पर चर्चा कर रहे हैं कि अगर वे दो दिन इंसुलिन लेना छोड़ देते हैं तो बिना कुछ खाए-पिए भी उनके शुगर का स्तर बढ़ जाता है। सुबह-शाम टहलना छोड़ दें तो भी एक सप्ताह में शुगर लेवल बढ़ जाता है। फिर डाक्टरों ने केजरीवाल को ऐसी डाइट क्यों दी? चर्चा का निचोड़ यह निकल रहा है कि सही डाक्टर की परख भी जरूरी है।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****

बिना निराश हुए असफलता सह लेना साहस की बड़ी परीक्षा है

चुनावी चंदे पर चर्चा

यह अच्छा हुआ कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने यह स्पष्ट किया कि सभी पक्षों से बात करके चुनावी चंदे की कोई नई व्यवस्था लाई जाएगी। यह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है, क्योंकि यदि चंदे की कोई नई व्यवस्था नहीं बनाई जाती या फिर चुनावी बांड की पुरानी योजना में वांछित परिवर्तन कर उसे नए रूप में नहीं लाया जाता तो देश की राजनीति फिर से कालेधन से संचालित होने लगेगी। विडंबना यह है कि न तो कोई यह बता रहा है कि क्या चुनावी बांड की खत्म की गई योजना में कुछ बदलाव कर उसे पारदर्शी बनाया जा सकता है और न ही यह कि चंदे की नई पारदर्शी व्यवस्था क्या होनी चाहिए? यह तो स्वीकार्य नहीं कि चंदे का लेन-देन उसी तरह होने लगे, जैसे चुनावी बांड योजना के पहले होता था और जिसमें किसी को पता नहीं चलता था कि किसने किसको कितना पैसा दिया? यदि विपक्षी दलों को वित्त मंत्री के कथन पर आपत्ति है तो फिर उन्हें यह बताना चाहिए कि चुनावी चंदे की कोई नीर-क्षीर व्यवस्था क्या हो सकती है? क्या यह विचित्र नहीं कि सुप्रीम कोर्ट की ओर से चुनावी बांड योजना खत्म किए जाने पर विपक्षी नेताओं समेत अन्य अनेक लोगों ने खुशी तो खूब जताई, लेकिन किसी ने भी यह नहीं बताया कि भविष्य के लिए चंदे के लेन-देन का कौन सा तरीका उपयुक्त रहेगा और कैसे राजनीति में कालेधन के इस्तेमाल को रोका जा सकता है? कई विपक्षी नेताओं ने चुनावी बांड योजना को लूट और उगाही तो करार दिया, लेकिन वे इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके कि आखिर जिन कंपनियों ने भाजपा को चंदा दिया, उन्होंने उन्हें भी क्यों दिया? क्या वे यह कहना चाहते हैं कि भाजपा को मिला चंदा बुरा था और उनके दलों को मिला अच्छा? निःसंदेह कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि राजनीति का काम बिना पैसे यानी चंदे के चल जाएगा। प्रत्येक लोकतांत्रिक देश में राजनीति चंदे के पैसे से ही चलती है, लेकिन विकसित देशों ने उसके लेन-देन की प्रक्रिया एक हद तक पारदर्शी बना रखी है। इससे जनता को यह पता चलता है कि राजनीतिक दलों को कौन और कितना चंदा देता है। चुनावी बांड योजना भी इसी उद्देश्य से लाई गई थी, लेकिन वह इसलिए पूरा नहीं हो सका, क्योंकि इस योजना में वांछित सुधार नहीं किए गए। वास्तव में इसीलिए सुप्रीम कोर्ट ने उसे रद कर दिया। अब इसके बाद इस पर विचार तो होना ही चाहिए कि चंदे की नई व्यवस्था कैसे बने? यह तभी संभव होगा, जब सभी राजनीतिक दल इस पर गंभीरता से चर्चा करेंगे। उन्हें यह बुनियादी बात समझनी होगी कि चुनावी बांड योजना के खत्म होने पर खुश होना भर पर्याप्त नहीं है। चंदे की कोई नई पारदर्शी व्यवस्था जितनी जल्दी बने, उतना ही बेहतर।

मतदान के प्रति उदासीनता

बिहार में लोकसभा चुनाव के प्रथम चरण में चार सीटों पर 50 प्रतिशत से भी कम मतदान होना चिंता का विषय है। यह मतदाताओं की उदासीनता दर्शा रहा है, जहां वे मताधिकार के प्रति सजग नहीं दिखे। 2019 में हुए चुनाव में यही मतदान प्रतिशत 53.47 प्रतिशत था, जो इस बार लगभग छह प्रतिशत कम हो गया है। चुनाव आयोग द्वारा दी गई अद्यतन जानकारी में यह 47.49 प्रतिशत रहा है। लोकतंत्र में जनता के मत से ही प्रतिनिधि चुने जाते हैं, सरकार चुनी जाती है। इस प्रक्रिया में अधिक से अधिक भागीदारी ही लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूती प्रदान करती है। पहले चरण में गया, नवादा, औरंगाबाद और जमुई की जिन चार सीटों पर चुनाव हुए, वहां ग्रामीण क्षेत्रों में तो मतदाता थोड़े उत्साह में दिखे, लेकिन शहरी क्षेत्रों में लोग उदासीन बने रहे। लोकतांत्रिक साक्षरता की बात करें तो ग्रामीण कहीं अधिक सजग रहे, जिन्होंने अपने अधिकार को समझ मत का प्रयोग किया। ऐसे भी दृश्य रहे, जहां जंगल-पहाड़ लांघकर करीब 40 किलोमीटर तक की दूरी पांव-पैदल ही तय की। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में ऐसे मतदाताओं की आस्था प्रणम्य है, वे प्रेरणा के स्रोत हैं। 80 से 100 वर्ष तक की उम्र के बुजुर्गों ने भी जो उत्साह दिखाया, वह वैसे लोगों के लिए एक प्रेरणा हैं, जो मतदान से दूर रहे। यह एक सकारात्मक पक्ष है, पर मत प्रतिशत घटने के कारण की समीक्षा जरूर की जानी चाहिए कि ऐसा क्यों हुआ। यह सभी का समेकित प्रयास होना चाहिए कि अधिक से अधिक मतदान हो, ताकि पहले चरण में जो कमी रह गई, उसकी भरपाई की जा सके। बिहार राजनीतिक रूप से एक जागरूक प्रदेश है। यहां के मतदाता जागरूक रहे हैं। गर्मी का मौसम है, पर इसी समय पहले भी चुनाव होते रहे हैं और लोगों ने बढ़-चढ़कर मतदान में भाग लिया है। उसी उत्साह के साथ लोकतंत्र के महापर्व में भाग लेने की तैयारी अभी से करनी होगी, ताकि इस तरह की स्थिति नहीं रहे।

अभी अगले चरणों के चुनाव बाकी हैं। सभी का समेकित प्रयास होना चाहिए कि अधिक से अधिक मतदान हो।

कह के रहेंगे माधव जोशी

जागरण जनमत कल का परिणाम

क्या रोहित शर्मा का यह कहना सही है कि इंपैक्ट प्लेयर नियम से आलराउंडर खिलाड़ियों की महत्ता घटी है?

आज का सवाल
क्या लोकसभा चुनाव के पहले चरण का मतदान प्रतिशत संतोषजनक है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

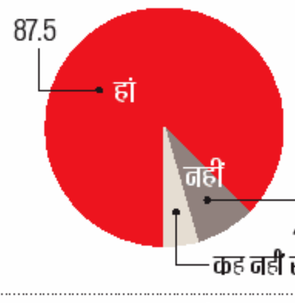

वैकल्पिक एजेंडे का अभाव

संजय गुप्त

मोदी सरकार की नीतियों का विरोध कर रहे विपक्षी दल अपने घोषणा पत्रों में देश को आगे ले जाने वाला कोई कारगर खाका नहीं खींच सके

सभी प्रमुख दलों के घोषणा पत्र सामने आ चुके हैं। यह कहना तो कठिन है कि मतदाता इन घोषणा पत्रों को देखकर ही अपने मत का निर्धारण करेंगे, लेकिन उनमें किए गए वादों की अनदेखी भी नहीं की जा सकती। जहां भाजपा अपने दस साल के कार्यों और नीतियों को आगे बढ़ाते हुए अपने चुनावी वादों को मोदी की गारंटी बता रही है, वहीं कांग्रेस ने यह भरोसा दिलाया है कि यदि वह सत्ता में आई तो अग्निवीर योजना समाप्त करने के साथ जीएसटी कानून बदलने का काम करेगी। उसने विभिन्न समुदायों के पर्सनल कानून जारी रखने का वादा भी किया है। कांग्रेस का एक प्रमुख वादा एमएसपी की गारंटी वाला कानून बनाने का भी है। उसने कर्ज माफी का भी वादा किया है। उसने जातिगत जनगणना कराने और आरक्षण सीमा 50 प्रतिशत से अधिक बढ़ाने का भी वचन दिया है। उसके घोषणा पत्र में ऐसे भी वादे हैं, जिन्हें रेवड़ी कहा जा रहा है। कांग्रेस ने गरीबी खत्म करने के साथ सरकारी नौकरियों पर भी जोर देते हुए 30 लाख सरकारी पदों को भरने की बात कही है, लेकिन उसने पुरानी पेंशन योजना और नागरिकता संशोधन कानून यानी सीएए पर चुप्पी साध ली है।

कांग्रेस के अलावा उसके सहयोगी दलों ने भी अपने घोषणा पत्रों में भाजपा की नीतियों का विरोध करते हुए लोक-लुभावन वादों पर जोर दिया है। कांग्रेस के साथ खड़े डीएमके, सपा, राजद और वामदलों के भी ऐसे वादों से यह साफ है कि उन्होंने राज्यों की वित्तीय स्थिति की परवाह नहीं की है। वे यह देखने को तैयार नहीं कि समृद्ध माने जाने वाले केरल, तमिलनाडु, पंजाब आदि की वित्तीय हालत खराब हो रही है। इन दलों के चुनावी वादों में उस वामपंथी सोच की छाप दिख रही है, जो अब एक बड़े वर्ग को आकर्षित नहीं करती। कांग्रेस और उसके साथी दल गरीबी हटाने, नौकरियां देने, सरकारी आर्थिक सहायता देने के वादे तो खूब कर रहे हैं, लेकिन देश में आर्थिक समृद्धि लाने की कोई ठोस योजना उनके घोषणा पत्रों में नहीं दिखती। कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों को घोषणा पत्रों में विरोधाभास भी दिखता है, जैसे माकपा परमाणु हथियार खत्म करने की बात कह रही है। उसने पीएमएलए जैसे कानून खत्म करने का वादा करते हुए अमीरों पर टैक्स बढ़ाने की भी घोषणा की है। आम आदमी पार्टी का दावा है कि हम दिल्ली और पंजाब में रामराज्य की अवधारणा पर जो काम कर रहे हैं उसे ही देश भर में फैलाएंगे।

जिन मुद्दों पर कांग्रेस और साथी दल अपने को कठघरे में खड़ा पाते हैं या भाजपा के निशाने पर हैं, उन पर वे मोदी सरकार को घेर रहे हैं, जैसे कि भ्रष्टाचार। विपक्षी दल ईडी यानी प्रवर्तन निदेशालय की शक्तियों में कटौती चाह रहे हैं। यह तब है, जब ईडी की कार्रवाई का सामना करने वालों में महज तीन प्रतिशत नेता हैं। क्या विपक्षी दल यह नहीं चाहते कि भ्रष्ट नेताओं के खिलाफ कार्रवाई हो? क्या वे जांच एजेंसियों के हाथ बांध देंगे? क्या वे इसकी अनदेखी कर सकते हैं कि बीते दस साल में ईडी ने संप्रग शासन की तुलना में भ्रष्ट तत्वों के खिलाफ कहीं अधिक व्यापक कार्रवाई की है? विपक्षी दल चुनावी बांड पर मोदी सरकार को घेर रहे हैं और कांग्रेस ने तो यहां तक कहा है कि वह इस योजना की जांच कराएगी, लेकिन उसके पास इस सवाल का जवाब नहीं कि आखिर उन अनेक कंपनियों ने उसके समेत अन्य विपक्षी दलों को चंदा क्यों दिया, जिन्हें लेकर वे भाजपा को घेर रहे हैं? विपक्ष दल जिस तरह सीएए और यूसीसी का विरोध कर रहे हैं, उससे यह साफ है कि वे अल्पसंख्यकों और विशेष रूप से मुस्लिम तुष्टीकरण की अपनी नीति नहीं छोड़ पा रहे हैं, जबकि सीएए का किसी भारतीय नागरिक से कोई लेना-देना नहीं। यह भी अल्पसंख्यकों को बरगलाने-डराने वाली बात है कि यूसीसी से उनके अधिकार कम होंगे। कांग्रेस और उसके अनेक सहयोगी दलों के घोषणा पत्रों से यही झलकता है कि रोजगार का मतलब सरकारी नौकरियां हैं और सरकार का काम उद्योग-धंधे चलाना है। किसी ने यह स्पष्ट नहीं किया कि वह इतनी संख्या में नौकरियां कैसे देगा? शायद वे इस तथ्य से अनजान रहना चाहते हैं कि जब भी कहीं सरकारों ने उद्योग चलाने की कोशिश की, तब उनकी गुणवत्ता और सेवा में कमी आई और ऐसे उद्योग घाटे की चपेट में आए।

कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने मोदी सरकार की आर्थिक-सामाजिक मोर्चे पर हासिल उपलब्धियों को तो नकारा ही है, यह देखने से भी इन्कार किया है कि बीते दस वर्ष में किस तरह देश का कद बढ़ा और भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि निखरी। क्या यह सामान्य बात है कि दस वर्ष में देश पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया और अब तीसरे स्थान पर पहुंचने वाला है? विपक्षी दल राष्ट्रवाद के उभार और भारतीय संस्कृति के प्रति लोगों के जुड़ाव के साथ इसे भी अनदेखा कर रहे हैं कि लोग अब विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति को लेकर आशान्वित हैं। विपक्षी दल मोदी सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों की सफलता और आर्थिक प्रगति के साथ आधारभूत ढांचे के उल्लेखनीय निर्माण का भी महत्व नहीं समझ रहे हैं। कांग्रेस और सहयोगी दलों ने सामाजिक और आर्थिक प्रगति का अपना जो खाका पेश किया है, वह पहले भी कई दल पेश कर चुके हैं और सत्ता भी हासिल कर चुके हैं। सब जानते हैं कि उससे न तो सामाजिक-आर्थिक न्याय का लक्ष्य हासिल किया जा सका और न ही देश को आगे ले जाया जा सका।

विपक्षी दलों के चुनावी वादे देश को 1970-80 के दशक वाले उसी दौर में ले जाने वाले हैं, जिससे देश बड़ी मुश्किल से बाहर निकला और मोदी सरकार ने अपनी नीतियों और योजनाओं से उसे एक नई दिशा और गति दी। इन्हीं नीतियों और कार्यक्रमों से भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। इसके विपरीत विपक्षी दल के वादे लोगों की सरकार पर निर्भरता बढ़ाने वाले हैं। एक तरह से वे देश की प्रगति की दिशा को पलटने की कवायद करते दिख रहे हैं। इसीलिए उनके चुनावी वादों को देखकर यह कहना कठिन है कि वे देश की जनता के सामने कोई ठोस वैकल्पिक एजेंडा रख सके।

response@jagran.com

अवधेश राजपूत

वादे करने का सुनहरा अवसर

हास्य-व्यंग्य

संतोष त्रिवेदी

चुनावी वादों की खासियत यह होती है कि नए वादे करते ही पुराने स्वतः पूरे हुए मान लिए जाते हैं

मेरे पड़ोस में एक बड़का नेताजी रहते हैं। आमतौर पर उनकी हरकतें सामान्य नहीं होती हैं, पर जैसे ही चुनाव की घोषणा हुई, उनकी काया में अजीब-सी हरकत होने लगी। आंखें सुनने लगीं और कान देखने लगे। उनकी जुबान में मिसरी-सी घुल गई। उन्होंने एलान कर दिया कि बहुत हुआ। अब वह जनता से मिले बिना नहीं रह सकते। पांच साल हो गए, जब वह आखिरी बार लोगों के बीच गए थे। देश-सेवा में ऐसा फंसे कि जेल जाने तक की नौबत आ गई थी। यह तो कहो समय रहते वह सही समय पर जाग गए और साथ ही उनकी किस्मत भी। जागते ही मंत्री-पद की कसम उठा ली और फिर उसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस व्यस्तता में उनका चुनाव क्षेत्र भी लपेटे में आ गया। फिर किस्मत ने पलटी खाई। चुनावी-शंखनाद होते ही वह अब उसी क्षेत्र के लोगों से मिलने की चाहत में छटपटा उठे।

अपने वातानुकूलित कक्ष से बाहर आकर उन्होंने फौरी तौर पर मुआयना किया। गर्मी तो थी, पर सत्ता की गर्मी के आगे कुछ भी नहीं। उन्होंने तुरंत अपने करीबी कार्यकर्ताओं को नसीहत दी कि वे मैदानी-कार्यकर्ताओं से तमीज से पेश आएं। उन्होंने पहला संकल्प यही लिया कि किसानों, गरीबों, पीड़ितों और शोषितों से भरी-दुपहरी में मिलना चाहते हैं। उनके दौरे का इंतजाम फौरन किया जाए। वह अपना जीवन देश के लिए पहले ही समर्पित कर चुके हैं। उसी 'समर्पण' को फिर से ऊंचे रेट पर 'रिडीम' करवाने का 'टैम' आ गया है। उन्हें खुद से ज्यादा अपनी जनता पर भरोसा है। यही सोचकर नेताजी को बड़ा सुकून मिला और वह मिशन 'बेड़ा पार' के लिए जुट गए।

सूरज अभी निकला नहीं था, पर नेताजी जनसंपर्क के लिए निकल पड़े। काफिले में सबसे आगे सौ मोटरसाइकिलें धूल उड़ा रही थीं। इसके ठीक पीछे पचासेक गाड़ियां धूल साफ करते हुए आगे बढ़ रही थीं। क्षेत्र के विकास की तरह इनकी गति भी मद्धम थी। इन गाड़ियों में नेताजी की अपनी एक भी गाड़ी नहीं थी। इस कमी को उनके परिवारी जनों ने पूरा किया। नेताजी ने उन्हें सड़कें और खदानें दीं, पुल दिए। बदले में उन्हें 'मिशन' पूरा करने के लिए मशीनरी मिली और जनता को मिले ढेर सारे वादे। वादों की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वे एक्सपायरी डेट के साथ आते हैं। नए वादे आते ही पुराने स्वतः पूरे हुए मान लिए जाते हैं। आज ऐसे ही नए वादों का जन्मदिन था।

गांव की सीमा आते ही नेताजी पैदल हो गए। कई कार्यकर्ता पीछे छूट गए, पर मीडिया के दिव्य नेत्रों से वह नहीं बच सके। बड़ी मुश्किल से नेताजी एक खेत में प्रकट हुए। वहां फसल कट रही थी। यह देखकर नेताजी को धक्का लगा। उनके रहते दूसरा कोई फसल कैसे काट सकता है। उन्होंने झट से एक हाथ से हंसिया झटक लिया। अगले पल गेहूं की दो-तीन बालियां जमीन पर थीं। साथ में खून भी। हंसिया के मालिक की चीख निकल गई। सरकार जख्मी हो गए हैं। इस खबर से घटनास्थल पर हड़कंप मच गया। नेताजी लहूलुहान थे, पर चेहरे पर तनिक भी शिकन नहीं थी। हंसिया पूरी तरह निर्दोष था। फसल की पत्तियों ने ही उनके हाथ को छलनी कर दिया था। मैंने नेताजी को आश्वस्त देखकर सवाल किया, 'फसल काटते हुए आपको गंभीर चोट लगी है। इससे आपके मंसूबों पर पानी तो नहीं फिरेगा?' 'अरे बंधु, यही मेरी जीत का टीका है। रक्त की एक-एक बूंद से जनता इसका जवाब देगी।' कहते हुए नेताजी ने हंसिया उसके मूल स्वामी को सौंप दिया। 'सरकार, आप भूखे होंगे। मैं आपका पेट भी नहीं भर सकता। ऊपर से इतना रक्तपात हो गया। मैं बहुत बड़ा पापी हूं।' कहते हुए किसान बिलख उठा। नेताजी ने उसे गले लगा लिया। वह किसान के गले पड़े ही थे कि सहसा एक साथ कई आवाजें आईं, 'खच्च! खच्च! खच्च!' उनकी धड़ाधड़ फोटो खिंच रही थीं। सबकी आंखें चौंधिया गईं। नेताजी ने अपनी मशीनरी को संकेत दिया। वे सब अगले 'टारगेट' की तरफ धुंआ छोड़ते हुए बढ़ चले। अगले दिन सभी अखबारों में सचित्र खबर छपी, 'नेताजी ने अपने क्षेत्र में श्रमदान में भाग लिया और रक्तदान का शुभारंभ किया। उनसे मिलकर किसान खूब रोए!'

response@jagran.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

ऊर्जा

मौन की शक्ति

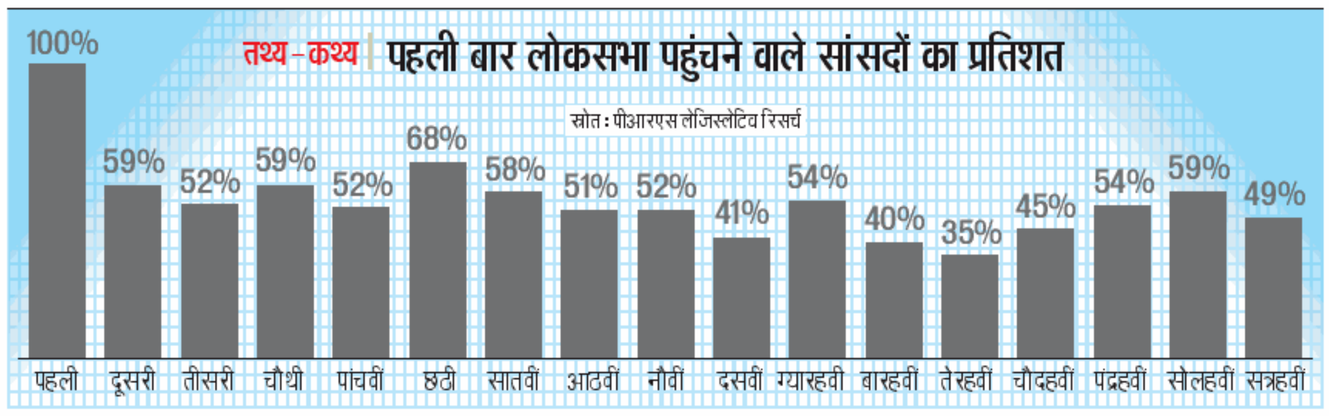

इंद्रिय अनुभूत विषयों के प्रकटीकरण का माध्यम वाणी है। इसके आवेग से भावनाएं मुखरित होकर शब्दों का रूप धारण करती हैं। जबकि वाणी के आवेग पर पूर्ण नियंत्रण मौन कहलाता है जिसमें भावों का प्रकटीकरण बाह्य न होकर आभ्यंतरिक होता है। मौन भी एक भाषा है जिसमें शब्दों के बिना भी अभिव्यक्ति होती है। इसीलिए विद्वानों के अनुसार आचरण की भाषा मौन है। मौन वाणी का तप है, जो मन एवं चित्तवृत्तियों का नियंत्रक भी है। इससे मनुष्य वाणी के दोषों से मुक्त होकर शारीरिक और मानसिक शांति प्राप्त करता है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में साधना की दो प्रवृत्तियां हैं-अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी। विविध रूप में ईश्वर का गुणानुवाद बहिर्मुखी साधना का अंग है जबकि मौन अंतर्मुखी साधना का प्रबल आधार है। इससे साधक जगत के प्रपंचों से मुक्त होकर एकाग्र हो जाता है। मन-मस्तिष्क में सकारात्मक भावों का उदय होता है। इसीलिए मौन एकनिष्ठ भक्ति का अनिवार्य तत्व है तथा साधना के पथ पर परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति कराने वाला साधक का अभिन्न सहचर है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं, "मैं ही प्राणियों में गोपनीय भावों का रक्षक मौन हूं।"

अतिवक्तृता सामाजिक बुराई है तथा शारीरिक एवं मानसिक ऊर्जा के क्षरण का कारण भी। रक्तचाप, अनिद्रा, तनाव जैसे रोग इसी से उत्पन्न होते हैं। अपूर्व शांति प्रदायक होने से मौन इनका श्रेष्ठतम निदान है। अतः लौकिक जीवन में भी मौन का अनपेक्षित महत्व है। यद्यपि मौन को दैन्य और अज्ञानता के आच्छादन का कारण भी कहा जाता है, किंतु यह बौद्धिक शक्ति में वृद्धि कर चिंतन को परिशुद्ध करता है जिससे विचारों पर नियंत्रण होता है। अतः जीवन को तनाव ग्रस्त करने वाले वैचारिक प्रदूषण के इस दौर में मौन जीवन के लिए सर्वोत्तम औषधि है। मौन के महत्व को इंगित करते हुए गांधी जी ने भी कहा है, "यदि बोलना एक कला है तो मौन उससे भी बड़ी कला है।"

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

चैन कहां

पहले चरण में जिन लोकसभा सीटों पर चुनाव हो गया, माना जा रहा है कि वहां के उम्मीदवार निश्चिंत हो गए होंगे, लेकिन यह ऐसा खेल है जिसमें चैन किसी को नहीं। यह सच है कि रोज सुबह से रात तक वोटरों की खोज-खबर लेनी बंद हो गई, लेकिन दूसरा इसका पहलू यह है कि अब उम्मीदवारों के हाथ में कुछ नहीं बचा। किस्मत तो ताले में बंद हो गई, लेकिन अब उनको लग रहा है कि कुछ मुद्दों और क्षेत्रों में थोड़ा और परिश्रम बाकी रह गया। दो दिन का वक्त और मिल जाता तो कुछ और वोटरों को साध लेते। एक दिन का मौका अभी भी मिल जाए तो फलां बात को कुछ दूसरे अंदाज में कहेंगे। वहीं जिनके यहां मतदान नहीं हुआ है उनकी परेशानी यह है कि किस-किस को साधें, कितनी देर तक दरवाजा खोले बैठे रहें।

अभी तो गर्मी शुरू हुई है

आम चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने को लेकर चुनाव आयोग दो वर्षों से मशक्कत में जुटा था। इसके लिए देश भर में जागरूकता अभियान चलाए गए। बड़े-बड़े चेहरों को ब्रांड एंबेसडर बनाया गया। उन क्षेत्रों में यह अभियान प्रमुखता से चलाया गया, जहां पिछले चुनाव में राष्ट्रीय औसत से कम मतदान हुआ था, लेकिन ये सारे जतन पहले चरण के मतदान में ही रंग नहीं दिखा पाए। उम्मीद से कम मतदान को देख आयोग की भी चिंताएं बढ़ी हुई हैं। अब इसके कारणों को भी खोजने में वह जुट गया है। फिलहाल गर्मी को इसका बड़ा कारण बताया जा रहा है। यदि कम मतदान के पीछे का कारण गर्मी है, तो अभी तो यह शुरू हुई है, जो दिनों-दिन और बढ़नी ही है।

राजरंग

कौन बनेगा हमारा मंत्री

फिर मोदी सरकार के नारे के साथ ही अंदरूनी तौर पर यह चर्चा भी तेज है कि मोदी सरकार का कैबिनेट कैसा दिखेगा? क्या तीसरे कार्यकाल में उसका पूरा कायाकल्प होगा? अगर काम में तेजी लाने की बात होगी तो फिर उससे ऐसे कितने चेहरे जुड़ेंगे, जो राजनीति में नए हैं, लेकिन सरकार में कामकाज का अनुभव लंबा है, पर यह भी तो संभव नहीं कि कैबिनेट का गठन करते समय राजनीतिक समीकरण को छोड़ दिया जाएगा। लिहाजा हर राज्य के भाजपा उम्मीदवार वहां के जातिगत समीकरण से खुद के लिए आकलन भी लगा रहे हैं और परोक्ष तौर पर मतदाताओं को यह संदेश दे रहे हैं कि वे सांसद नहीं, मंत्री चुनने जा रहे हैं।

डाइट पर चर्चा

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की जेल में डाइट पर चर्चा क्या छिड़ी आम लोग भी अपनी डायबिटीज और उसके उपचार को लेकर असमंजस में पड़ गए हैं। पूरी कहानी यह है कि जांच एजेंसी ईडी ने कहा है कि केजरीवाल जानबूझकर आम और मिठाई खा रहे हैं, ताकि उनका शुगर लेवल बढ़े और उन्हें मेडिकल ग्राउंड पर जमानत मिल जाए। आम आदमी पार्टी कह रही है कि उन्हें यह डाइट तो डाक्टरों ने ही दी है। वह यह आरोप भी लगा रही है कि जेल में केजरीवाल को इंसुलिन नहीं दी जा रही है। गली-मोहल्लों में शुगर के मरीज इस पर चर्चा कर रहे हैं कि अगर वे दो दिन इंसुलिन लेना छोड़ देते हैं तो बिना कुछ खाए-पिए भी उनके शुगर का स्तर बढ़ जाता है। सुबह-शाम टहलना छोड़ दें तो भी एक सप्ताह में शुगर लेवल बढ़ जाता है। फिर डाक्टरों ने केजरीवाल को ऐसी डाइट क्यों दी? चर्चा का निचोड़ यह निकल रहा है कि सही डाक्टर की परख भी जरूरी है।

पोस्ट

केरल में मुख्य लड़ाई कांग्रेस और लेफ्ट के बीच है। देश के अन्य राज्यों में स्थिति अलग है, लेकिन राहुल गांधी ईडी से केरल के मुख्यमंत्री को गिरफ्तार करने की मांग कर रहे हैं, जबकि दिल्ली और झारखंड के मुख्यमंत्रियों की गिरफ्तारी का विरोध कर रहे हैं।
जे गोपालकृष्णन@jgopikrishnan70

कम मतदान के लिए ज्यादा गर्मी की बात करना एक बेकार बहाना है। लोग इसी गर्मी में हर दिन काम करने या व्यवसाय के सिलसिले में बाहर जाते हैं, जबकि उन्हें पांच साल में एक दिन मतदान केंद्र जाना होता है और मतदान के दिन छुट्टी भी होती है।
यूसुफ ऊंझावाला@YusufDFI

जो लोग पहले चरण में कम मतदान का हवाला देकर उसे भाजपा के खिलाफ बता रहे हैं उन्हें यह भी ध्यान रखना होगा कि यह भी मुमकिन हो सकता है कि विपक्ष का वोटर यह सोचकर घर से न निकला हो कि भाजपा जब सत्ता में वापसी कर ही रही है तो क्यों विरोध का संदेश दें।
अंकित गुप्ता@ReporterAnkitG

पढ़ाई-लिखाई का स्तर बढ़ गया, जीवनशैली सुधर गई, संचार के साधन बेहतर हो गए, नई-नई तकनीक आ गई, फिर भी अपराध कम नहीं हो रहे। इसका क्या अर्थ निकाला जाए?
आरके विज@ipsvijrk

जनपथ

खाते लोग तिहाड़ में बढ़िया हापुस आम,
फिर उनके साथी करें जेलर को बदनाम।
जेलर को बदनाम खाइए आप मलाई,
अगर शुगर बढ़ जाय करे क्या कोई भाई!
भारत में कुछ लोग न रोटी सूखी पाते,
आप जेल में बैठ आम प्रतिदिन हैं खाते!!
- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त
जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प. बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073
E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 25 अंक 10

****

यदि आप पक्षियों की देखभाल करते हैं, तो दुनिया की अधिकांश पर्यावरण समस्याओं का ध्यान रखते हैं।
-डॉ. थॉमस लवजॉय

बढ़ती मानवीय आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए जो वन काटे जा रहे हैं, क्या आपने कभी सोचा है कि मनुष्य की जिंदगी के समानांतर चलने वाले पक्षियों के संसार पर इसका क्या असर पड़ता है? पक्षियों के घोंसलों का अपना एक वास्तु होता है, जिसे समझकर हर संवेदनशील इंसान को पक्षियों के आवास को बसाने का हरसंभव प्रयास करना चाहिए।

पक्षी अपने घर को लौट रहे हैं

घोंसले बनाकर पक्षियों को पालना एक जिम्मेदारी है और जब आप ऐसा कर रहे होते हैं, तो आपको खुद के भीतर संवेदनशीलता के अब तक अनछुए आयाम तक पहुंचने का अहसास होगा।

मार्गरेट रेन्कल
न्यूयॉर्क टाइम्स

The New York Times

जिन पक्षियों के बगैर पर्यावरण की कल्पना भी अधूरी है, जिन पक्षियों की जिंदगी मनुष्य की जिंदगी के समानांतर बिल्कुल शांति से चलती रहती है और जिन पर वह बिल्कुल भी ध्यान नहीं देता, जाने-अनजाने उन्हीं शांतिप्रिय पक्षियों के साथ वह कितना बुरा कर रहा है, शायद उसे इसका अहसास तक नहीं होता है। दरअसल, जंगलों और घर के आस-पास बगीचों में लगे पेड़-पौधों को रौंदने से पहले शायद ही वह विचार करता होगा कि वह सिर्फ पेड़ों को ही नहीं, बल्कि उन तमाम जगहों को रौंद रहा है, जहां उन पक्षियों ने अपने परिवार के लिए एक महफूज आशियाना बनाया था। मैं अमेरिका में रहती हूं और शुरुआत से ही पक्षियों के लिए प्राकृतिक आवास बनाने में मेरी विशेष दिलचस्पी थी। मेरी इस इच्छा को मेरे पड़ोस में रहने वाली एक बुजुर्ग विधवा महिला ने बखूबी समझा, क्योंकि उनका घर जंगल के एक छोटे-से भाग के बीचोबीच बना हुआ था, इसलिए हम लोग उस जंगल में पक्षियों के लिए एक छोटा-सा पक्षी अभयारण्य बनाने में कामयाब रहे।

■ टीटमाउस जो बनाता है बालों से घोंसला

मैं वसंत ऋतु में अक्सर वहां बैठा करती थी, जहां कई बार पत्तियों, काई, घास और कभी-कभी जीवित स्तनधारियों के शरीर से बाल तोड़कर कप के आकार का घोंसला बनाने वाले टीटमाउस पक्षी मेरे बाल खींचकर बड़ी ही होशियारी से आंगन में बने अपने घोंसले में ले जाते थे। पक्षियों को उनके घोंसले में खुश देखना मेरे लिए सुखद अनुभव था। लेकिन मेरी ये खुशी ज्यादा वक्त तक बरकरार नहीं रह सकी। दरअसल पिछले साल बुजुर्ग महिला की मृत्यु के बाद प्रशासन ने उनके घर और आस-पास के सभी पेड़ों को बुरी तरह से तबाह कर दिया। जिन पक्षियों के आशियाने को हमने इतने प्यार से संजोया था, उन्हें ध्वस्त होते हुए मैं बहुत ही करीब से देख रही थी। मुझे बस बार-बार एक ही चिंता खाए जा रही थी कि अब उन मासूम बेजुबान पक्षियों का क्या होगा, जिन्होंने वहां अपने रहने का ठिकाना बनाया था। पड़ोस में लगातार पेड़ों के काटे जाने का सिलसिला थम नहीं रहा था, जिसकी वजह से इस साल पूरे वसंत हमारे घर के चारों तरफ बिना पक्षियों के बस सन्नाटा पसरा रहा।

■ घोंसलों की इंजीनियरिंग

इसके एक वर्ष बाद कार्डिनलो ने मेरे घर के बाहर एक घोंसला बनाया, जो मेरे बेडरूम की खिड़की को छूता था। कार्डिनलो एक मादा पक्षी है, जिसका पूरा शरीर लाल और चेहरा काला होता है। उन पक्षियों को परेशान न करने की मंशा से मैंने अपनी खिड़की के पर्दे बंद कर दिए और इस तरह मैं अपने ही घर में पक्षी को महफूज रखने में कामयाब रही। इन पक्षियों के घोंसले की बात की जाए, तो ये किसी वास्तुकला और इंजीनियरिंग से कम नहीं होते हैं। ब्लूबर्ड्स पक्षी को खुशी व सकारात्मकता के प्रतीक के रूप में जाना जाता है, जो

टेक्सास, अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको के पूर्वी हिस्से में प्रजनन करते हैं। ब्लूबर्ड्स अपने लिए घोंसला घास और भूसे से बनाते हैं। कैरोलिना रेन्स पक्षी जंगली इलाके में रहना पसंद करते हैं और यह प्रजाति मूल रूप से मैक्सिको के पूर्वोत्तर कोने और यूकाटन प्रायद्वीप के साथ-साथ मध्य अमेरिका के कुछ स्थानों में भी पाई जाती है। कैरोलिना रेन्स सूखी पत्तियों से गुंबदाकार घोंसले बनाते हैं, लेकिन मुझे टिटमाउस के द्वारा बनाए गए घोंसले सबसे अधिक पसंद हैं, क्योंकि टिटमाउस अपने बच्चों की खातिर व उनका सही पालन-पोषण करने के लिए रैकून, ओपोसम्स, कुत्तों, गिलहरियों, ग्राउंडहॉग इत्यादि पशुओं के जीवित शरीर से घोंसले की सामग्री इकट्ठा करके अपने बच्चों के लिए घर बनाने का साहस करते हैं।

■ बक्सेनुमा घोंसलों का प्रयोग

इन सबके बावजूद मुझे यह देखकर बहुत ही दुख हो रहा था कि इस वर्ष हमारे घर के पास एक भी घोंसला नहीं है। चिकडीज मूल रूप से उत्तरी अमेरिका में पाई जाने वाली पक्षी प्रजाति को कहा जाता है और यह अपने लिए घोंसला बनाने में अग्रणी होते हैं, लेकिन हाउस राइटर्स पक्षी, जो सर्दियां अक्सर दक्षिण में बिताते हैं, वे उस क्षेत्र में मिलने वाले चिकडीज के घोंसले को नष्ट कर देते हैं। पक्षियों को पनाह देने की मेरी सारी कोशिशें कामयाब हो रही थीं, क्योंकि मैंने यह अनुभव किया कि हाउस राइट्स पक्षी अपना घोंसला लकड़ियों से बनाते हैं और मैंने जो चिकडीज के लिए बक्सेनुमा घोंसला बनाया था, उसमें से लकड़ी निकली हुई थी। लेकिन अब पुराने घोंसलों को हटाने का समय आ गया था। जब मैंने पहला बक्सा खोलकर देखा, तो केवल पिछले साल के घोंसलों में मौजूद तिनकों की छड़ियां ही थीं और दूसरे बक्से में एक घरेलू चींटी का घोंसला भी था।

{ धूप आने दो

■ पक्षियों को घर देने की जिम्मेदारी

दरअसल, पक्षियों के लिए बक्सेनुमा घोंसले बनाना इंसानों के लिए एक जिम्मेदारी भरा काम होता है। यह एक मानवीय आविष्कार की तरह है। मेरा मानना है कि हर संवेदनशील इंसान को पक्षियों के लिए घोंसला बनाने का हरसंभव प्रयास करना चाहिए। पक्षियों के लिए घोंसला बनाने वाले इंसानों की यह भी जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वह समय-समय पर जांच करते रहें कि क्या उनके द्वारा बनाए गए घोंसले में पक्षी पूरी तरह से महफूज हैं, क्योंकि केवल पक्षियों के लिए एक घोंसला बनाने भर से आपकी जिम्मेदारी पूरी नहीं हो सकती है। शिकार के मौसम के दौरान मैं समय-समय पर अपने बक्सों की जांच करती रहती हूं कि कहीं मेरे द्वारा पाले गए पक्षियों का स्थान किसी और पक्षी ने तो नहीं ले लिया है। मैं यह जरूर सोचती हूं कि क्या मेरे द्वारा बनाए गए बक्से के घोंसले प्रकृति में हुए बदलावों, यानी पेड़ों को नष्ट किए जाने की भरपाई कर रहे हैं और क्या यह बदलाव उन मासूम पक्षियों को खतरनाक जगह, जहां वह पूरी तरह से सुरक्षित नहीं है, पर घोंसला बनाने के लिए मजबूर तो नहीं कर रहे हैं।
हालांकि मैं इतना जरूर जानती हूं कि मेरे आंगन में मेरे द्वारा बनाए गए बक्से के घोंसलों में पक्षी आ चुके हैं और मुझे इस बात की बेहद खुशी है और मैं इस खुशी का उत्सव मनाना कभी बंद नहीं करूंगी।

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

कालकेय समुद्र-तल में रहने लगे। वे रात्रि के अंधकार में बाहर निकलकर आश्रमों में सोते हुए ऋषियों की हत्या कर देते और दोबारा पानी में जा छिपते थे। ऋषि-समुदाय के लिए यह चिंता की बात थी।

महर्षि अगस्त्य क्यों पी गए सारा समुद्र

वृत्रासुर ने देवताओं और ऋषि-मुनियों पर इतना अत्याचार किया कि उसका वध करना अनिवार्य हो गया। अंततः, देवराज इंद्र ने महर्षि दधीचि की अस्थियों से निर्मित वज्र से वृत्रासुर को मार डाला। वृत्रासुर के वध से कालकेय नाम के राक्षसों ने ऋषियों से प्रतिशोध लेने की योजना बनाई।

कालकेय समुद्र-तल में रहने लगे। वे रात्रि के अंधकार में बाहर निकलकर आश्रमों में सोते हुए ऋषियों की हत्या कर देते और दोबारा पानी में जा छिपते थे। कालकेयों ने बड़ी संख्या में ऋषियों की हत्या कर दी। ऋषि-समुदाय के लिए यह चिंता की बात थी। वे सब मिलकर भगवान विष्णु के पास गए।

विष्णु ने ऋषियों से कहा, 'आपकी इस समस्या का समाधान केवल महर्षि अगस्त्य के पास है। अगस्त्य, अग्निदेव के अवतार हैं। उनके पास असाधारण शक्तियां हैं और वह अत्यंत दयालु भी हैं। वह किसी को निराश नहीं करते। आप उनके पास अपनी समस्या लेकर जाएंगे, तो वह अवश्य ही सहायता करेंगे।' यह कहकर विष्णु फिर ध्यान में लीन हो गए।

ऋषिगण समझ गए कि भगवान विष्णु उनकी इससे अधिक सहायता नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने अगस्त्य मुनि के पास जाने का निश्चय किया। सारे ऋषि-मुनि मिलकर महर्षि अगस्त्य के पास पहुंचे और उन्होंने अगस्त्य को अपनी समस्या बताई।

'महर्षि, हम पर भारी संकट टूट पड़ा है। समुद्र में बड़ी संख्या में कालकेय असुर छिपे हुए हैं। वे रात्रि के समय बाहर निकलकर सोते हुए ऋषि-मुनियों की हत्या कर देते हैं और सुबह होने से पूर्व फिर समुद्र में छिप जाते हैं। इस कारण ऋषियों की संख्या घटती जा रही है। कालकेय रात्रि में आक्रमण करते हैं, इसलिए उन्हें कोई देख भी नहीं पाता। रात्रि में उनकी शक्ति भी कई गुना बढ़ जाती है। भगवान विष्णु ने कहा है कि केवल आप हमारी सहायता कर सकते हैं। हम आपके पास बहुत आशा लेकर आए हैं। ऋषियों की सहायता करना आपका धर्म है।'

यह सुनकर महर्षि अगस्त्य सोच में डूब गए। फिर कुछ देर बाद उन्होंने कहा, 'कालकेयों को समुद्र से बाहर निकाले बिना उन्हें मारना संभव नहीं है। परंतु आप सब चिंता न करें। मैं आपकी सहायता अवश्य करूंगा। मेरे साथ चलिए!'

यह कहकर अगस्त्य सभी ऋषि-मुनियों को साथ लेकर समुद्र-तट पर पहुंच गए। इस बीच उन्होंने देवराज इंद्र से देवताओं की सेना के साथ समुद्र-तट पर तैयार रहने को कह दिया। ऋषि-मुनि यह देखने को उत्सुक थे कि दिन के प्रकाश में अगस्त्य निशाचर कालकेयों को कैसे नियंत्रित करने वाले थे। महर्षि अगस्त्य तट पर बैठ गए। उन्होंने अपने योगबल से देखा कि सचमुच बहुत बड़ी संख्या में कालकेय समुद्र तल में छिपे हुए थे। इसके बाद महर्षि अगस्त्य ने एक मंत्र का उच्चारण आरंभ कर दिया।

● मंत्र के प्रभाव से कुछ ही देर में समुद्र में ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगीं, जिन्हें देखकर तट पर खड़े ऋषि-मुनि घबराकर पीछे हट गए। परंतु अगस्त्य अपने स्थान पर डटे रहे।

अगस्त्य मुनि ने समुद्र का जल अंजुलि में भरकर पीना शुरू कर दिया। समुद्र-जल की अटूट धारा अगस्त्य की अंजुलि में भरती गई और अगस्त्य उसे पीते गए। ऋषियों को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। कुछ ही देर में समुद्र का जल-स्तर घटने लगा और पानी में छिपे कालकेय असुर दिखाई देने लगे। आखिरकार, अगस्त्य ने समुद्र का सारा पानी पी लिया! कालकेयों के छिपने के लिए अब कोई स्थान नहीं बचा था। विवश होकर वे सब समुद्र से बाहर निकल आए।

अगस्त्य की योजनानुसार, समुद्र-तट पर देवताओं की सेना पहले से तैयार खड़ी थी। कालकेयों के बाहर निकलते ही देवताओं ने उन्हें घेर लिया। कालकेयों और देवताओं में घमासान युद्ध हुआ, जिसमें कालकेय परास्त हुए और उनमें से अधिकतर मारे भी गए।

इस तरह महर्षि अगस्त्य ने समुद्र का जल पीकर कालकेयों से संसार को मुक्ति दिलाई।

दुष्ट और सज्जन की मित्रता जानने में भर्तृहरि का यह श्लोक बहुत सहायक है, पढ़िए और पहचानिए दोनों के अंतर को -

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमुपैति पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्थभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्॥

दिन के पूर्वाह्न में सूर्य की छाया छोटी होती है, लेकिन बाद में बढ़ती है, उधर अपराह्न की छाया बड़ी तो होती है, पर धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है। ऐसे ही सज्जन की मित्रता पहले हल्की, पर आगे प्रगाढ़ होती है, वहीं दुष्ट की मित्रता प्रारंभ में बहुत प्रगाढ़, लेकिन धीरे-धीरे समाप्त होती जाती है।

प्रस्तुति : शास्त्री कोसलेंद्रदास

एआई आपके दिमाग को पढ़ सकता है ?

जो अदेतुंजी
संपादक,
द कन्वर्सेशन यूके

जिन गतिविधियों का आपके दिमाग में पैटर्न बनता है, एआई उन्हें ही पढ़ सकता है।

साल की शुरुआत में एलन मस्क की कंपनी न्यूरालिंक ने 29 वर्षीय अमेरिकी नोलैंड अरबॉ, जो कंधे से नीचे तक पूरी तरह लकवाग्रस्त हैं, के दिमाग के अंदर एक चिप बैठा दी। यह चिप ह्यूमन ब्रेन और कंप्यूटर के बीच सीधा कम्युनिकेशन चैनल बनाएगी। जरा सोचिए, अगर यह टूल पूरी तरह से विकसित हो गया, तो लकवाग्रस्त मरीज और दिव्यांगों के लिए यह किसी वरदान से कम होगा क्या?

जाहिर तौर पर दिमाग की गतिविधियों को कोड करके और दिमाग में क्या चल रहा है, इसका पता लग जाए, तो ऐसे में लकवाग्रस्त लोगों की दुनिया निश्चित रूप से काफी आसान बन सकती है। हालांकि कंपनी ने चिप के माध्यम से अरबॉ को माउस पॉइंटर की तरह स्क्रीन पर घूमने की कल्पना करने में सक्षम बना दिया। मई, 2023 में अमेरिकी शोधकर्ताओं ने जेनेरिक एआई की मदद से व्यक्ति के मस्तिष्क को स्कैन करके उसके द्वारा सोचे गए शब्दों को 'डीकोड' करने के लिए एक अद्भुत तरीके की भी घोषणा की। तो क्या वास्तव में न्यूरल इम्प्लांट्स और जेनरेटिव एआई 'दिमाग पढ़ सकते हैं?' क्या वह दिन अब दूर नहीं, जब कंप्यूटर हमारे विचारों की सटीक प्रतिलिपि तैयार कर सकेंगे?

जाहिर है कि ऐसी तकनीकी के कुछ लाभ हो सकते हैं, लेकिन यह हमारे अपने दिमाग की गोपनीयता को खत्म भी कर सकता है। इससे घबराएं नहीं और यह सोचें कि क्या न्यूरल इम्प्लांट्स और जेनरेटिव एआई वास्तव में 'मन को पढ़ने' का काम कर सकते हैं? जहां तक हम सभी जानते हैं कि मनुष्य का सचेत अनुभव उसकी दिमाग की गतिविधियों से उत्पन्न होता है। सचेत मानसिक स्थिति के लिए आप चाहे रोमन साम्राज्य के बारे में सोच रहे हों या कर्सर को हिलाने की कल्पना कर रहे हों, आपके दिमाग में इन गतिविधियों का एक सही पैटर्न बन रहा होता है। यदि कोई उपकरण हमारे दिमाग की स्थिति को ट्रैक कर सकता है, तो जाहिर है कि वह हमारे दिमाग को आसानी से पढ़ने में भी सक्षम होगा। लेकिन चेहरे के बदलते भाव भी काफी कुछ कहते हैं। सवाल यह है कि क्या एआई इन भावों को पढ़ सकेगा। एआई हमारे दिमाग व विचारों को पूरी तरह से पढ़ सके, इसके लिए उसे हमारे चेहरे के भावों को भी पढ़ना होगा, जो फिलहाल संभव नहीं है। न्यूरल इंप्लांट्स आमतौर पर किसी मरीज के किसी खास कार्य को करने में मदद करता है, उदाहरण के लिए स्क्रीन पर कर्सर ले जाना। न्यूरल इंप्लांट्स वही काम कर सकते हैं, जिनके लिए उन्हें अनुकूलित किया गया है। अन्य किसी भी तरह की मानसिक गतिविधि को यह नहीं पढ़ सकता।

अध्ययन कक्ष

हाउ टू विन एन इनफॉरमेशन वार
लेखक : पीटर पोमरेन्स्तेव
प्रकाशक : फेबर ऐंड फेबर
मूल्य : 1849 रुपये
हार्डकवर

प्रोपेगैंडा : हिटलर से पुतिन तक

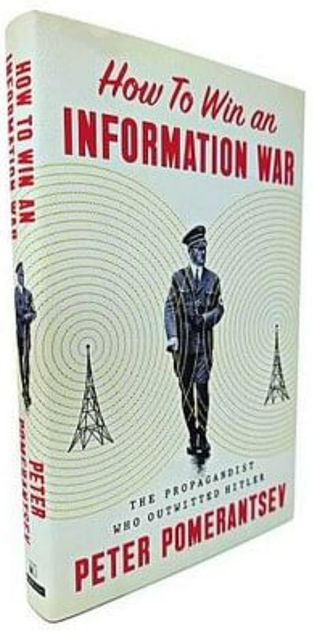

द्वितीय विश्वयुद्धकालीन ब्रिटिश पत्रकार सेफ्टन डेल्मर ने हिटलर का इंटरव्यू लेने के क्रम में उसके झूठ को जिस तरह पकड़ा था, आठ दशक बाद एक दूसरे ब्रिटिश पत्रकार पीटर पोमरेन्सतेव ने यूक्रेन हमले पर रूस के झूठ को ठीक उसी तरह पकड़ा है। यह किताब हिटलर से पुतिन तक की प्रोपेगैंडा मशीन के बारे में बताती है।

पीटर पोमरेन्सतेव की यह पुस्तक दूसरे विश्वयुद्ध में रेडियो प्रोपेगैंडा को नई पहचान देनेवाले सेफ्टन डेल्मर की कहानी के जरिये मौजूदा दौर के प्रोपेगैंडा की कलई खोलती है।

सेफ्टन डेल्मर की कहानी के जरिये लेखक पाठकों को दूसरे विश्वयुद्ध के दौर में ले जाते हैं, जब यूरोप में अटलांटिक से लेकर काला सागर तक हिटलर की तूती बोलती थी। हिटलर की प्रोपेगैंडा मशीन से लड़ पाने में ब्रिटेन खुद को अक्षम पाता था। तभी रेडियो पर नाजी जर्मनी के झूठ के समानांतर डेर शेफ नाम के एक जर्मन के रेडियो प्रोग्राम ने खलबली मचा दी, क्योंकि वह नाजी सिद्धांतों की धज्जियां उड़ाता था। जर्मन सेना के रहस्यों तक तो उसकी पहुंच थी ही, वह उसके आंतरिक विद्रोह का भी खुलासा कर रहा था। जर्मन सेना और नागरिक तो इस रेडियो प्रोग्राम के श्रोता थे ही, युद्ध में उतरने के बारे में सोच रहे अमेरिका के शीर्ष राजनेता भी इसके श्रोता थे। डेर शेफ एक काल्पनिक नाम था, और इस किरदार को डेल्मर ने गढ़ा था। डेल्मर की प्रोपेगैंडा मशीन ने आखिरकार जर्मनी को उसके ही खेल में मात दी।

डेल्मर की कहानी के जरिये पीटर पोमरेन्सतेव यूक्रेन हमले पर रूस के झूठ को कसौटी पर कसते हैं। वह 1930 की फासिस्ट ताकतों की तुलना आज के लोकप्रिय नेताओं से करते हुए कहते हैं कि हिटलर से लेकर पुतिन व जिनपिंग तक-हर दौर में तानाशाह नेता अपनी खतरनाक भावुकता से जनता को बेवकूफ बनाते रहते हैं, जिससे निपटने में तर्क ही हमारी मदद कर सकते हैं। किताब में एक जगह लेखक डेर शेफ की तुलना निजी लड़ाकों के सरगना प्रिगोझिन से करते हैं, जिसने पुतिन के खिलाफ विद्रोह कर दिया था, और जो बाद में प्रत्याशित रूप से ही संदिग्ध मौत मरा। डेर शेफ की तरह प्रिगोझिन ने भी रूस के सेनाधिकारियों पर उंगली उठाई और उन्हें गालियां दीं। नतीजतन वह रूस में उसी तरह लोकप्रिय हुए, जिस तरह डेर शेफ हुए थे।

ब्रिटिश पत्रकार डेल्मर ने हिटलर का इंटरव्यू लेने के क्रम में उसके झूठ को जैसे पकड़ा था, आठ दशक बाद एक दूसरे ब्रिटिश पत्रकार पीटर पोमरेन्सतेव ने यूक्रेन हमले के संदर्भ में पुतिन के झूठ को ठीक उसी तरह पकड़ा है। 2022 में यूक्रेन का बूचा शहर एक साल बाद जब रूसी कब्जे से आजाद हुआ, तब उसका दौरा करते हुए पीटर ने हर कदम पर रूसी प्रोपेगैंडा के सबूत देखे, जहां डरे हुए यूक्रेनी रूसी नागरिकता लेना चाहते थे।

कीव में पले-बढ़े यूक्रेन के विद्रोही नेता के बेटे पीटर यूक्रेन हमले से जुड़े पुतिन के झूठ इसलिए भी पकड़ पाए, क्योंकि यूक्रेन हमले के समय वह न केवल मास्को में टीवी प्रोड्यूसर के रूप में कार्यरत थे, बल्कि यूक्रेन में रूस के युद्ध अपराध पर बने एक टीवी कार्यक्रम का भी हिस्सा रहे हैं। हालांकि जहां डेल्मर ने हिटलर को उसी के हथियारों से मात दी थी, वहीं पीटर बताते हैं कि सच के जरिये झूठ से न निपट सकने का अर्थ हार कतई नहीं है, क्योंकि झूठ का सहारा लेकर भी रूस इस युद्ध में किसी तरह घिसट रहा है।

अभियान

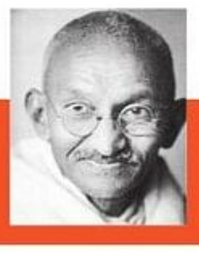

"मुट्ठी भर संकल्पवान लोग, जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं।
- महात्मा गांधी

amarujala.com
अमर उजाला

गोल चबूतरा

Hindi@mithelesh

▪ मिथिलेश बारिया

आज नहीं है मेरा ये बात सच है लेकिन,
जरा-जरा सा वो, मेरे शेरों में रह गया है...

उसकी मैली मुट्ठी में
उसके अपने कुछ रुपये थे,
मेरे महंगे बटुए में किसी बैंक
का क्रेडिट कार्ड था...

आखिरी मैच में रन आउट हुए लारा

झरोखा
21 अप्रैल

वेस्ट इंडीज के महान बल्लेबाज ब्रायन लारा ने आज ही के दिन सन 2007 में आखिरी अंतरराष्ट्रीय वनडे क्रिकेट मैच खेला था। बारबाडोस की राजधानी ब्रिजटाउन में आयोजित हुए इस मुकाबले में वेस्ट इंडीज के सामने इंग्लैंड की टीम थी। मेहमान टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया था। क्रिस गेल, ड्वेन स्मिथ और मार्लोन सैम्युल्स की अर्ध शतकीय पारी के दम पर मेजबान टीम 49.5 ओवर में 300 रन बनाने में सक्षम हुई थी। अपने आखिरी वनडे मुकाबले में ब्रायन लारा 17 गेंदों में 18 रन बनाकर रन-आउट हो गए थे। इस दौरान उन्होंने 3 चौक्के मारे थे। रन चेज करने उतरी इंग्लैंड की टीम ने यह मैच 1 विकेट शेष रहते जीत लिया था। उनकी तरफ से बल्लेबाज केविन पीटरसन ने 91 गेंदों पर 100 रनों की शानदार पारी खेली थी। लारा को आधुनिक युग के महानतम बल्लेबाजों में से एक माना जाता है। साल 1994 में एंटीगुआ में खेले गए टेस्ट मैच में उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ 375 रन बनाए थे, जिसे संयोगवश उन्होंने ही लगभग एक दशक बाद उसी स्थान पर तोड़ा था। अपनी पारी में लारा ने नाबाद 400 रन बनाए थे।

▪ दिल्ली से मुकेश राय

पिछले चुनाव की तुलना में कई राज्यों में वोट प्रतिशत में गिरावट देखने को मिली है। क्या यह संकेत है कि जनता को नेताओं के वादों पर विश्वास नहीं रह गया है? लोकतंत्र को मजबूती तो चुनाव में मतदाताओं की शत-प्रतिशत भागीदारी से ही मिलेगी।

'मत' के जरिये कहें अपनी बात

बढ़ानी होगी भागीदारी

चिट्ठी 1

दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में लोकसभा चुनाव का पहला चरण हो गया, लेकिन पहले चरण में कम मतदान की खबरें आई हैं। मतदान कम से कम 80 प्रतिशत के पार होना चाहिए। पहले चरण में जो कम मतदान हुआ, उस पर हर बुद्धिजीवी और अन्य लोगों के अलग-अलग विचार हो सकते हैं, लेकिन यह लोकतंत्र, देशहित और जनहित के लिए उचित नहीं है। इससे देश की राजनीति में गंदगी और सरकारों में भ्रष्टाचार बढ़ सकता है। लोकतंत्र की शान हर चुनाव में शत-प्रतिशत मतदाताओं के भाग लेने से बढ़ेगी। हर चुनाव, चाहे लोकसभा, विधानसभा या फिर स्थानीय निकाय के हों, मतदाताओं को अपने कीमती मत का इस्तेमाल करने के लिए विभिन्न तरह के जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं। फिर भी बहुत से चुनावों में मतदाताओं का आंकड़ा संतोषजनक नहीं होता। दरअसल, वोट इस उम्मीद से किया जाता है कि चुने हुए प्रतिनिधि, लोगों की समस्याओं की तरफ ध्यान देंगे, लेकिन अफसोस कि नेता उनकी भावनाओं की कद्र न करते हुए कुर्सी पर बैठते ही उन्हें भूल जाते हैं। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में हो रहे लोकसभा चुनाव में उम्मीद के मुताबिक मतदान न होना लोकतंत्र के लिए उचित न होने के साथ-साथ राजनेताओं के लिए भी शर्मनाक और निंदनीय है, क्योंकि उनके झूठे वादों और जुमलेबाजी से मतदाता का विश्वास मतदान में कम हुआ है। यह लोकतंत्र, देशहित और जनहित के लिए जरा भी उचित नहीं है। देश के बुद्धिजीवियों और अन्य लोगों को चाहिए कि वे अशिक्षित, लोकतंत्र के अज्ञानी और लालच में आकर अपने कीमती मत का उपयोग करने वालों को लोकतंत्र की परिभाषा समझाएं और उन्हें जागरूक करें।

▪ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

आखिर कब ध्यान देंगे हम?

चिट्ठी 2

काफी समय से छात्रों को स्कूल ले जाने वाले वाहन सड़कों पर दुर्घटनाग्रस्त हो रहे हैं। ऑटो और बसों के हादसों में कई छात्रों की जान तक चली गई। बगैर लाइसेंस के बस चलाना, जरूरत से ज्यादा बच्चे ऑटो में बिठाना, सीट बेल्ट का उपयोग न करना, अग्निशमन यंत्रों का प्रबंध न होना और वाहन चालकों द्वारा ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करना इन हादसों की सबसे बड़ी वजहें हैं। इसमें कहीं न कहीं शासन-प्रशासन की भी गलती है। अगर समय-समय पर स्कूल यातायात के साधनों की चैकिंग की जाती, तो ऐसे हादसों को आसानी से टाला जा सकता था और छात्रों की कीमती जान को बचाया भी जा सकता था। माता-पिता न जाने किन-किन परेशानियों को सहकर अपने बच्चों की स्कूल बसों की भारी- भरकम फीस देते हैं। अगर बस नहीं मिल पाती तो प्राइवेट गाड़ी या ऑटो करके बच्चों को स्कूल पहुंचाते हैं। परिवहन विभाग को सख्ती से स्कूल बसों, ऑटो और वैन की चैकिंग करनी चाहिए। जो ड्राइवर नियम अनुसार वाहन नहीं चला रहे हैं, उनके लाइसेंस रद्द करने चाहिए और कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए। माता-पिता को भी ध्यान रखना चाहिए कि वे अपने बच्चों को किसी ऐसे वाहन में स्कूल न भेजें, जो सुरक्षा मापदंडों पर खरे न उतरते हों। छात्रों को भी यातायात नियमों की जानकारियां दें, ताकि मुसीबत की घड़ी में वे सही निर्णय ले पाएं।

▪ अभिलाषा गुप्ता, मोहाली

प्राकृतिक एसी कूलर बचाएं

चिट्ठी 3

तेज धूप के चलते एयर कंडीशनर (एसी) और कूलर के बिना रह पाना संभव नहीं हो पाता। विद्युत संचालित ये उपकरण बिजली चले जाने पर जब बंद हो जाते हैं, तब ज्यादा परेशानी होती है। यह स्थिति मौसम को अनुकूल बनाए रखने वाले पेड़ों के लगातार कम होने के चलते हो रही है। पेड़-पौधे प्राकृतिक एसी और कूलर होते हैं। दिनों-दिन बढ़ती आबादी के साथ पेड़ों की संख्या भी बढ़नी चाहिए। पर्यावरणविदों के अनुसार, जब देश स्वतंत्र हुआ था, तब की आबादी और पेड़ों की स्थिति में काफी अंतर आ गया है। वृक्षों की सर्वाधिक कटाई विकास कार्यों के दौरान होती है। लंबी-चौड़ी सड़कों के निर्माण के समय लंबे-घने और अत्यंत मजबूत पेड़ काट दिए जाते हैं। इन पेड़ों की जगह डिवाइडर पर जो पेड़ लगते हैं, वे प्रथमतः तो सूर्य की घातक किरणों से संघर्ष करने वाले पेड़ नहीं होते और द्वितीय प्रायः पानी के अभाव में ये पेड़ सूख जाते हैं। सामाजिक संस्थाओं द्वारा पौधरोपण अभियान चलाया जाता है, लेकिन देखभाल के अभाव में रोपित वृक्ष प्राकृतिक वर्षा पर ही आश्रित होते हैं। पर्यावरण असंतुलन से वर्षा भी कम हो रही है। स्थिति यह है कि सावन और भादौ माह में भी भीषण धूप एवं गर्मी होती है, जिसके चलते पौधरोपण के तहत लगे पौधों का पूरा विकास नहीं हो पा रहा है। होना तो यह चाहिए जिस क्षेत्र में कोई परियोजना लागू होनी हो, वहां पहले ही पौधरोपण अभियान चलाया जाए। ध्यान रहे कि पृथ्वी को बचाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

▪ सलिल पांडेय, मिर्जापुर

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

रुड़की से डॉ. श्रीगोपालनारसन, बरेली से दिलीप कुमार गुप्ता, बड़वानी से नरेंद्र तिवारी, मेरठ से डॉ नरेन्द्र टोंक, औरंगाबाद से पुरुषोत्तम सिंह, अंबाला से मनीषा पांडे, बाड़मेर से मुकेश बोहरा अमन, बदायूं से विवेक चतुर्वेदी, बाड़मेर से कपिल मालू, मेरठ से रचना रस्तोगी, मोहाली से पवनदीप सिंह, इंदौर से डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', लखनऊ से निखिल रस्तोगी, सोलन से मुकेश विग।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

54 साल में पूरी हुई मैराथन...

ओलंपिक खेलों के इतिहास में मैराथन का सबसे लंबा समय 54 साल है। जापान के एक एथलीट ने यह कारनामा किया था।

जापान ने पहली बार सन 1912 के स्टॉकहोम ओलंपिक में हिस्सा लिया था। स्वीडन में आयोजित हुए ओलंपिक खेलों में हिस्सा लेने के लिए जापान ने अपने दो एथलीट याहिको मिशिमा और शिजो कनाकुरी को भेजा था। लेकिन उनके लिए जापान से स्वीडन तक का सफर आसान नहीं था। दोनों खिलाड़ियों को अपनी यात्रा पूरी करने में करीब 18 दिनों का समय लगा था। वे सबसे पहले पानी के जहाज से रूस पहुंचे, इसके बाद एक हफ्ते से ज्यादा समय की रेल यात्रा की। लिहाजा दोनों ही खिलाड़ियों को तैयारी करने का पर्याप्त समय नहीं मिल पाया था। प्रतियोगिता के दिन शिजो कनाकुरी शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार नहीं थे। उन्होंने खूब जोर लगाकर मैराथन की शुरुआत की, मगर आधे रास्ते में ही वह बेहोश हो गए। मैराथन देख रहे कुछ स्थानीय लोग उन्हें अपने घर ले गए, जहां अगली सुबह उन्हें होश आया। शिजो अपने प्रदर्शन से बहुत निराश थे। दुख में डूबे वह बगैर स्टॉकहोम ओलंपिक अधिकारियों को बताए जापान वापस लौट गए। इसलिए एसोसिएशन ने उनके नाम के आगे 'मिसिंग', यानी 'गुमशुदा' लिख दिया। स्वीडन नेशनल ओलंपिक खेलों की किताबों में वह कई सालों तक गुमशुदा रहे। हालांकि, इसके बाद भी उन्होंने साल 1920 और 1924 में आयोजित हुए ओलंपिक खेलों में हिस्सा लिया था। साल 1967 में स्वीडिश नेशनल ओलंपिक कमेटी ने उन्हें ढूंढ निकाला। उन्होंने शिजो कनाकुरी से स्टॉकहोम वापस आकर अपनी अधूरी मैराथन पूरी करने का आग्रह किया। 75 साल की उम्र में वह वापस आए और अपनी अधूरी रेस पूरी की। मैराथन पूरा करने का समय था - 54 साल, 8 महीने, 6 दिन, 5 घंटे, 32 मिनट और 20.3 सेकंड्स। यह इतिहास की सबसे लंबी मैराथन है।

▪ मोनिका रावत, कांगड़ा

शशि की बात पर निकल गई हंसी

यह तस्वीर अपने समय के मशहूर अभिनेता शशि कपूर, जितेंद्र और ओम प्रकाश की है। शशि कपूर की किसी बात पर जितेंद्र और ओम प्रकाश ठहाका लगा रहे हैं।

▪ दिल्ली से ओम वर्मा

छायानट

गिरवी था राज कपूर का आरके स्टूडियो

सिनेमा को लेकर राज कपूर का जुनून ऐसा था कि फिल्मों से की हुई सारी कमाई वह फिल्मों में ही लगा देते थे। फिल्म 'मेरा नाम जोकर' के बाद आरके स्टूडियो गिरवी रखा जा चुका था।

राज कपूर के पास अपना घर भी नहीं था। फिल्म 'बॉबी' की सफलता के बाद उन्होंने अपना घर खरीदा था। 'बॉबी' आरके बैनर को उभारने के लिए बनाई गई थी। यह फिल्म हीरोइन पर केंद्रित थी। जब हीरोइन (डिंपल) की तलाश पूरी हो गई तब ऋषि कपूर को बाय डिफॉल्ट हीरो चुन लिया गया था। यह बात और है कि सारा क्रेडिट ऋषि कपूर को मिल गया, क्योंकि डिंपल की शादी हो गई थी। कहते हैं कि 'बॉबी' बनाते वक्त इंडस्ट्री के बड़े-बड़े लोग धर्मेंद्र, प्राण और राजेंद्र कुमार ने राज साहब से कहा था कि आरके बैनर को फिर से खड़ा करने के लिए वे लोग बिना पैसे लिए काम करेंगे, लेकिन राज कपूर ने सबका शुक्रिया अदा करते हुए कहा था, "इस वक्त मेरी फिल्में फ्लॉप हो चुकी हैं। हम तब साथ काम करेंगे, जब हमारा और आपका लेवल बराबर हो जाएगा।" राज कपूर ने ऐसा करके भी दिखाया।

▪ पंकज सिंह, देहरादून

1977 को दोहराया जाए!

अधिनायकवादी शासन प्रजातंत्र के लिए खतरनाक है। इसके लिए जरूरी है कि हम अपने वोट का प्रयोग सोच-समझकर करें।

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

देश के 18वें आम चुनाव में भारतीयों ने मतदान करना शुरू कर दिया है। पिछले 17 आम चुनावों में दो विशेष रूप से महत्वपूर्ण थे। पहला आम चुनाव 1952 में हुआ था। संदेहवादियों ने उसका व्यापक रूप से मजाक उड़ाया था, जो यह मानते थे कि भारतीय इतने गरीब, बंटे हुए और अशिक्षित हैं कि उन्हें अपना नेता चुनने का अधिकार नहीं दिया जा सकता। फिर भी यह जुआ काम कर गया। विभिन्न विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करने वाले दलों ने चुनाव लड़ा। वयस्क पुरुषों और महिलाओं ने स्वतंत्र रूप से उनके बीच चयन किया। उस पहले चुनाव का सफल आयोजन भारतीय इतिहास में मील का पत्थर था। इसका फायदा 1957, 1962, 1967 एवं 1971 के चुनावों में दिखा।

हमारे इतिहास का दूसरा महत्वपूर्ण आम चुनाव मार्च, 1977 में हुआ था। जब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने जून, 1975 में आपातकाल लगा दिया था, तो कई लोगों ने यह मान लिया कि इससे खुली, प्रतिस्पर्धी राजनीति का अंत हो गया है। भारत भी उन असंख्य एशियाई और अफ्रीकी देशों में शामिल हो गया है, जो अधिनायकवादी शासन के अधीन आ गए थे। इंदिरा गांधी के शासन को कोई चुनौती या खतरा नहीं था, उन्हें आपातकाल हटाने और नए सिरे से चुनाव कराने की कोई मजबूरी नहीं थी। फिर भी उन्होंने ऐसा किया। इतिहासकारों ने 1977 के उन चुनावों के तीन पहलुओं पर प्रकाश डाला है, जो उन्हें विशेष रूप से उल्लेखनीय बनाते हैं। पहला तो यह कि उन्हें आयोजित किया गया था। दूसरा यह कि उनके नतीजों ने सर्वेक्षणकर्ताओं को भ्रमित कर दिया, क्योंकि आम तौर पर उम्मीद थी कि इंदिरा गांधी जीतेंगी। माना जाता था कि 1971 में पाकिस्तान के खिलाफ जीत की आभा अब भी उनके आसपास मंडरा रही थी। इसके अलावा, उनकी पार्टी की स्थिति अच्छी थी। दूसरी तरफ, विपक्ष बिखरा हुआ था। विपक्षी नेताओं और कार्यकर्ताओं को जेल में समय बिताना पड़ा था। फिर भी, कांग्रेस बहुमत से काफी पीछे रह गई और श्रीमती गांधी अपनी सीट भी नहीं जीत सकीं। इसका मतलब था कि स्वतंत्र भारत में पहली बार कांग्रेस के अलावा कोई दूसरी पार्टी सत्ता में आएगी और यह कि भारत अब एक दलीय देश नहीं रहेगा। 1977 के चुनाव की इन विशेषताओं में यह भी जोड़ा जाना चाहिए कि लंबे समय तक प्रभुत्व रखने वाली कांग्रेस पार्टी विभिन्न पार्टियों के गठबंधन, जो एक ही चुनाव चिह्न पर लड़ रहे थे, से हार गई थी। कथित जनता पार्टी में व्यापक रूप से अलग-अलग उत्पत्ति और विश्वास वाले चार दल शामिल थे, जो निरंकुशता को हराने और लोकतंत्र को बहाल करने के उद्देश्य से एकजुट हुए थे। 1977 से 2014 के बीच कोई भी एक पार्टी या गठबंधन केंद्र में दो बार से अधिक सत्ता में नहीं रहा। सत्ता का यह परिवर्तन भारतीय लोकतंत्र के लिए अच्छा था। एक ही पार्टी के दीर्घकालिक प्रभुत्व के डर से मुक्त उन वर्षों में प्रेस, सिविल सेवाएं और न्यायपालिका अधिक स्वतंत्र और मुखर थीं। एक प्रतिस्पर्धी राजनीति भारतीय संघवाद के लिए अच्छी थी, जिसमें राज्यों को अपने आर्थिक और सामाजिक एजेंडे को आगे बढ़ाने की छूट थी। क्या मौजूदा चुनाव इस प्रवृत्ति को उलट देंगे? अधिकांश सर्वेक्षणकर्ता ऐसा ही सोचते हैं। उनका मानना है कि नरेंद्र मोदी और भाजपा को लगातार तीसरी बार बहुमत मिलना लगभग तय है। फिर क्या होगा?

एक टिप्पणीकार परकला प्रभाकर को यह कहते हुए उद्धृत किया गया है कि यदि मोदी और भाजपा तीसरी बार जीतते हैं, तो 'देश में और कोई चुनाव नहीं होगा।' यह सच है कि इंदिरा गांधी की तरह मोदी में सत्तावादी प्रवृत्ति और पूर्ण प्रभुत्व की इच्छा है। हालांकि, एक महत्वपूर्ण अंतर है। 1977 में कांग्रेस सिर्फ एक राज्य (तमिलनाडु) को छोड़कर सभी में सत्ता में थी, जबकि 2024 में भाजपा पूरे दक्षिण भारत में सत्ता से बाहर है और पूर्वी तथा उत्तरी भारत के कई राज्यों में भी। लोकतांत्रिक विपक्ष को पूरी तरह चुप कराना, मोदी और भाजपा के लिए ज्यादा कठिन होगा, भले ही वे 370 सीटें जीतने में कामयाब रहें।

तमिलनाडु, केरल, पश्चिम बंगाल और तेलंगाना आदि में अब भी विपक्षी सरकारें होंगी। मोदी और शाह उनके साथ क्या करेंगे? क्या अनुच्छेद 356 लागू करेंगे या विधायकों को खरीद लेंगे? कोई भी उपाय लालच देने वाला होगा और उनके अनैतिक तरीकों के अनुरूप होगा, फिर भी उन राज्यों के लाखों नागरिकों द्वारा हर उपाय का कड़ाई से विरोध होगा, जो भाजपा को वोट नहीं देते हैं। चूंकि भाजपा का आधिपत्य देश के एक बड़े हिस्से में नहीं है, इसलिए आपातकाल की तरह भारत के पूर्णतः अधिनायकवाद की तरफ लौटने की आशंका नहीं है। इसलिए चिंतित होने की जरूरत नहीं है, लेकिन लापरवाह भी नहीं होना चाहिए। क्योंकि भाजपा अपने साथ हिंदुत्व और विभाजनकारी विचारधारा लाती है। मोदी शासन के 10 वर्षों में अल्पसंख्यकों को राजनीति के हाशिये पर धकेल दिया गया है। उन्हें रोजमर्रा की जिंदगी में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। भाजपा के सांसद और मंत्री उनका मजाक उड़ाते हैं। छात्रों को अपने गैर हिंदू साथियों के प्रति शत्रुता की भावना सिखाने के लिए पाठ्यपुस्तकों को फिर से लिखा जाता है।

यदि नरेंद्र मोदी और भाजपा तीसरी बार सत्ता में आते हैं, तो मुस्लिमों को कलंकित करने का अभियान संभवतः और तेज हो जाएगा। प्रचंड बहुमत के साथ एक और जीत मोदी और उनकी पार्टी को मीडिया पर शिकंजा कसने, सिविल सेवकों, न्यायपालिका और सार्वजनिक विनियामक संस्थानों की स्वतंत्रता को कमजोर करने, केंद्रीय विश्वविद्यालयों, आईआईटी, आईआईएम को हिंदुत्व प्रचार का केंद्र बनाने और भारतीय संघवाद के ढांचे को कमजोर करने के लिए प्रेरित करेगी। आबादी के अनुसार, लोकसभा सीटों का पुनर्गठन इस प्रकार किया जाएगा कि उत्तर भारत का जनसांख्यिकीय लाभ (जहां भाजपा मजबूत है) दक्षिण की स्थायी राजनीतिक अधीनता में बदल जाएगा, जहां भाजपा कमजोर है। हालांकि ऐसी संभावना नहीं है कि दक्षिण उनके दमन के आगे झुक जाएगा, लेकिन मोदी और भाजपा इसकी परवाह किए बिना अपनी योजनाओं पर आगे बढ़ सकते हैं। भाजपा को लगातार तीसरी बार बहुमत लोकतंत्र की गिरावट को और तेज कर देगा, जिसके हमारे सामाजिक ताने-बाने, आर्थिक संभावनाओं और अजन्मे भारतीयों की पीढ़ियों के भविष्य के लिए हानिकारक परिणाम होंगे। 1970 के दशक में इंदिरा गांधी ने अधिनायकवाद को पारिवारिक शासन के प्रति समर्पण से जोड़ दिया था, अब नरेंद्र मोदी अधिनायकवाद को हिंदू बहुसंख्यकवाद के प्रति समर्पण से जोड़ रहे हैं। बेशक परिवारवाद बुरा है, लेकिन बहुसंख्यकवाद तो उससे भी बुरा है, जैसा कि हमारे पड़ोसी देशों की स्थिति से पता चलता है। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि हिंदू बहुसंख्यकवाद का नतीजा उससे कोई अलग होगा। अधिनायकवाद आत्मा को कुचल देता है, जबकि बहुसंख्यकवाद मन और हृदय में जहर घोलता है। इससे पैदा होने वाली नफरत और कट्टरता राजनीति में कैंसर की तरह फैलती है, जो व्यक्तियों और समाज से सभ्यता, शालीनता, करुणा और मानवता को छीन लेती है। इसीलिए इसके उत्थान को ऐसे लोकतांत्रिक तरीकों से रोका जाना चाहिए, जो अब भी हमारे पास उपलब्ध हैं। इसीलिए 1977 के बाद यह सबसे महत्वपूर्ण आम चुनाव है।

हर मिठाई की एक उम्र होती है!

अमिताभ स.

खुला आकाश

इन्सानों की तरह मिठाइयों की भी उम्र होती है। कलाकंद, मिल्क केक और कुछ मिठाइयां चंद दिनों की अवधि तक ही ठीक रहती हैं, जबकि कुछ की उम्र दस या बीस दिन तक होती है।

हर तीज-त्योहार से किसी न किसी मिठाई का जुड़ाव रहता है। अब तो होली पर गुझिया एक नहीं, बल्कि केसर, मीठी, खजूर, समोसा, चंद्रकला, फीकी और न जाने कौन-कौन से प्रकार में बनने लगी है। खाने में सभी नरम होती हैं, फीकी गुझिया तो सबसे खास है। चाशनी के बगैर होने के बावजूद इसे खाते-खाते हल्की मिठास भीतर भरे मावा और मेवों से उभरती है, जो बड़ी स्वादिष्ट लगती है। माना जाता है कि गुझिया काफी दिनों कर खराब नहीं होती और खाने लायक रहती है, लेकिन ऐसा है नहीं। हलवाइयों की मानें तो खरीदने के 4 दिनों में गुझिया खा लेनी चाहिए, अन्यथा खाने लायक नहीं रहती। इन्सानों की उम्र की तरह मिठाइयों की भी एक उम्र होती है। कलाकंद, मिल्क केक और बर्फी जैसी दूध-खोये से बनी मिठाइयां चंद दिनों के लिए ही अच्छी रहती हैं, भले ही इन्हें हिफाजत से फ्रिज में रखा जाए, या नहीं।

सबसे कम उम्र कलाकंद की है। कलाकंद एक दिन में खा लिया जाए, तो उत्तम है, वरना खराब हो जाता है। यह दानेदार होने के साथ दूध से लिपटा होता है और इस पर ड्राई फ्रूट की टॉपिंग भी होती है। आमतौर पर राजभोग, चम-चम, पिस्ता बर्फी, खोया बर्फी, खोया रोल और तिल बुग्गा दो दिन के बाद खाने लायक नहीं रहते। पंजाब में खाई जाने वाली सर्दियों की खास मिठाई तिल बुग्गा खोये-चीनी को भूनकर, तिल और मेवे मिलाकर लड्डुओं की शक्ल में बनाते हैं। मोहन भोग, रसकदम, रसो माधुरी, संदेश वगैरह जैसी बंगाली मिठाइयों की उम्र भी दो दिन ही है। बंगाली मिठाइयां गाय के खालिस दूध के छेना से बनाई जाती हैं।

हलवाई बताते हैं कि दल पिन्नी, बूंदी या मोतीचूर लड्डू, छेना मुरकी, रसगुल्ला, गुलाब जामुन और शाही पिन्नी की उम्र तीन दिन है। बेशक आप ज्यादा दिनों तक खाते रहें, लेकिन इन मिठाइयों की आदर्श उम्र चार दिन ही है। काजू कतली, बेसन लड्डू और बालू शाही की उम्र सात दिनों की है। तब तक बेशक इन्हें खाते रहिए, स्वाद नहीं बिगड़ता। इसलिए त्योहारी मौसम में इसकी मांग अधिक रहती है। उधर पेठा, अंगूरी पेठा और डोडा बर्फी की उम्र दस दिन है। मिठाइयों की सबसे लंबी उम्र बीस दिन है। इतनी लंबी उम्र नवाजी गई है पतीसा, पंजीरी और कराची हलवा को। पतीसा बेसन से बनता है। सोन पापड़ी नाम की मिठाई को पतीसे का भाई-बहन कह सकते हैं, इसीलिए सोन पापड़ी की आदर्श उम्र भी बीस दिन ही है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

देश में जारी लोकसभा चुनाव के पहला चरण का मतदान हो चुका है। पहले चरण में 21 राज्यों की 102 संसदीय सीटों और अरुणाचल प्रदेश व सिक्किम विधानसभा के लिए वोटिंग हुई है। ये चुनाव ईवीएम से हुए हैं। इस दरम्यान जहां विपक्षी नेता ईवीएम से चुनाव को लेकर आरोप मढ़ रहे हैं, इस पर सवाल उठा रहे हैं, इस पर सियासत कर रहे हैं, वहीं इस मामले पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई भी हो रही है। सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ता जानेमाने वकील प्रशांत भूषण के भ्रमित तथ्यों के चलते उन्हें तीखे शब्द भी कहे हैं। कोर्ट ने अभी फैसला सुरक्षित रख लिया है। चुनाव आयोग ने सुप्रीम कोर्ट में दोहराया है कि ईवीएम सुरक्षित है, इसे हैक करना संभव नहीं है, इसमें किसी भी प्रकार से गड़बड़ी नहीं की जा सकती है। वर्ष 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने भी ईवीएम को सुरक्षित माना है। खास बात है कि ईवीएम को लेकर टीका-टिप्पणी विपक्ष में रहने वाले नेता ही करते रहे हैं। चूंकि ईवीएम स्टैंड अलोन मशीन है, जिसे हैक नहीं किया जा सकता है, इसलिए जब विपक्ष के नेता ईवीएम पर प्रश्न खड़ा करते हैं, तो इसमें सियासत दिखती है। पहले चरण के चुनाव व ईवीएम पर पेश है आजकल का यह अंक...

अपने 45 साल के इतिहास में ईवीएम को शंकाओं, आलोचनाओं और आरोपों का सामना करना पड़ा है। ईवीएम का मतलब है इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन, साधारण बैटरी पर चलने वाली एक ऐसी मशीन, जो मतदान के दौरान डाले गए वोटों को दर्ज करती है और वोटों की गिनती भी करती है। ये मशीन तीन हिस्सों से बनी होती है। एक होती है कंट्रोल यूनिट (सीयू), दूसरी बैलेटिंग यूनिट (बीयू)। तीसरा हिस्सा होता है- वीवीपैट (वोटर वेरिफ़ायबल पेपर ऑडिट ट्रेल)। ईवीएम के साथ छेड़छाड़ नहीं किया जा सकता है, क्योंकि ईवीएम मशीन कंप्यूटर से कंट्रोल नहीं होती हैं, ये स्टैंड अलोन मशीन होती हैं जो इंटरनेट या किसी दूसरे नेटवर्क से कनेक्ट नहीं होती हैं, इसलिए ये हैकिंग से पूरी तरह सुरक्षित हैं। ईवीएम में डेटा के लिए फ्रीक्वेंसी रिसीवर या डिकोडर नहीं होता है, इसलिए किसी भी वायरलेस डिवाइस, वाई-फाई या ब्लूटूथ डिवाइस से इसमें छेड़छाड़ करना संभव नहीं है। 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने भी ईवीएम को चुनावों के लिए विश्वसनीय माना है।

खामोश चुनाव, ईवीएम पर प्रलाप

विश्लेषण
सुशील राजेश
वरिष्ठ पत्रकार

कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने दावा किया है कि यदि ईवीएम में गड़बड़ी नहीं की गई है, तो भाजपा को 180 से कम सीटें मिलेंगी। राहुल गांधी तो भाजपा के हिस्से 150 सीट मान कर बहुत खुश हैं। विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' मुग़ालते में है कि ईवीएम के जरिए जो मतदान होगा, उससे जनादेश उन्हें ही मिलने वाला है। तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, केरल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और पंजाब आदि राज्यों में गैर-भाजपा दलों की आज भी सरकारें हैं, जो ईवीएम के जरिए ही बनी हैं। एक बार फिर यह मामला सर्वोच्च अदालत के विचाराधीन है। कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा है। सवाल यह है कि विपक्ष इतना दोहरा क्यों है? वह संवैधानिक व्यवस्थाओं के ही खिलाफ क्यों सक्रिय है?

आम चुनाव के लिए प्रथम चरण का मतदान हो चुका है। देश के 21 राज्यों और संघशासित क्षेत्रों की 102 लोकसभा सीटों पर जनादेश का एक हिस्सा उन ईवीएम में दर्ज हो चुका है, जिन पर अधिकतर विपक्षी दल प्रलाप कर रहे हैं। वे दल चुनावी दौड़ में भी शामिल हैं, उनके सांसद और विधायक चुने जाने हैं, लेकिन वे ईवीएम पर अब भी संदेह कर रहे हैं। कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने यहां तक दावा किया है कि यदि ईवीएम में गड़बड़ी नहीं की गई है, तो भाजपा को 180 से कम सीटें मिलेंगी। राहुल गांधी तो भाजपा के हिस्से 150 सीट मान कर बहुत खुश हैं। विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' मुग़ालते में है कि ईवीएम के जरिए ही जो मतदान होगा, उससे जनादेश उन्हें ही मिलने वाला है। तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, केरल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और पंजाब आदि राज्यों में गैर-भाजपा दलों की आज भी सरकारें हैं, जो ईवीएम के जरिए ही बनी हैं। चुनावी पराजय से पूर्व राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में भी 2018 में कांग्रेस सत्तारूढ़ हुई थी। तब भी मतदान ईवीएम के जरिए ही हुआ था। एक बार फिर यह मामला सर्वोच्च अदालत के विचाराधीन है। दो न्यायाधीशों की खंडपीठ ने सुनवाई के बाद फैसला सुरक्षित रखा है, लेकिन शीर्ष अदालत चाहती है कि चुनाव आयोग जैसी संवैधानिक संस्था की गरिमा और ईमानदारी बरकरार रहे, लिहाजा उसने फटकार भी लगाई है और वकीलों के डाटा पर सवाल भी किए हैं। दरअसल सवाल यह है कि विपक्ष इतना दोहरा क्यों है? वह संवैधानिक व्यवस्थाओं के ही खिलाफ क्यों सक्रिय है? ईवीएम का इस्तेमाल छोड़ कर मतपत्रों वाले मतदान के पाषाणकाल की ओर वह क्यों लौटना चाहता है? हालांकि बूथ छापने, लूटने और फर्जी मतदान के उस दौर को सर्वोच्च अदालत खारिज कर चुकी है।

कांग्रेस ने की थी ईवीएम की शुरूआत

ईवीएम की शुरुआत कांग्रेस नेतृत्व की यूपीए सरकार के ही दौरान हुई थी। 2004 के उस दौर से लेकर आज तक करीब 340 करोड़ मतदाता अपने संवैधानिक मताधिकार का इस्तेमाल कर चुके हैं और 4 लोकसभा चुनाव ईवीएम के जरिए सम्पन्न कराए जा चुके हैं। 26 विधानसभा चुनावों और एक लोकसभा चुनाव में करोड़ों मतदाता वीवीपैट पर्ची का भी इस्तेमाल कर चुके हैं। एक आम चुनाव में 55 लाख से अधिक ईवीएम का इस्तेमाल किया जाता है और करीब 1.5 करोड़ चुनावकर्मी मतदान प्रक्रिया में हिस्सा लेते हैं। सभी एक विशेष पार्टी के पक्षधर हो जाएं या ईवीएम का प्रोग्राम एक ही पार्टी के पक्ष में तय कर दिया जाए और इतने चुनावकर्मी एक साथ 'भ्रष्ट' हो जाएं, यह बिल्कुल भी संभव नहीं है। ईवीएम किसी लैपटॉप, कम्प्यूटर अथवा इंटरनेट नेटवर्क से जुड़ी हुई नहीं है, उसे हैक करना या छेड़छाड़ करना भी संभव नहीं है, अलबत्ता मशीन में तकनीकी खराबी जरूर आ सकती है। उस स्थिति में ईवीएम बदलने की पारदर्शी व्यवस्था है। चुनाव आयोग ने अदालत में अपना समूचा पक्ष रखा है। वीवीपैट पर्ची और वोटिंग के आपसी मिलान पर भी स्पष्टीकरण दिया है। मतदान के बाद पर्ची 7 सेकंड के लिए दिखती है। उसके बाद पर्ची मशीन में ही चली जाती है। न्यायिक पीठ को बताया गया कि पर्ची को मतदाता को देना ज़ोख़िम का काम है। इससे गोपनीयता भंग हो सकती है और बाहर निकालने पर पर्ची का दुरुपयोग भी किया जा सकता है। याचिकाकर्ता एडीआर ने मतदान और पर्ची की 100 फीसदी क्रॉस चेकिंग की मांग की है। अब चुनाव की निष्पक्षता, ईमानदारी बरकरार रहे, मतदाताओं के ज़ेहन में लेशमात्र भी संदेह नहीं होना चाहिए और आयोग की संवैधानिक स्वायत्तता भी बनी रहे, उस संदर्भ में अदालत को निर्णय देना है। ईवीएम को लेकर अक्सर प्रलाप मचाया जाता रहा है और चुनाव आयोग को भी कटघरे में खड़ा किया जाता रहा है, यह प्रवृत्ति दुराग्रहपूर्ण है।

ईवीएम की विश्वसनीयता कायम

चुनाव आयोग ने ईवीएम को हैक करने या उसके सिस्टम से छेड़छाड़ करने के मद्देनजर सभी प्रमुख राजनीतिक दलों को आमंत्रित किया था, कुछ दल गए भी, लेकिन कोई भी आपत्ति नहीं उठा सका या गड़बड़ी को साबित नहीं कर सका। अपने पक्ष के विजयी जनादेशों को विपक्ष शानदार हुंकार के साथ स्वीकार भी करता रहा। क्या एक संवैधानिक व्यवस्था ऐसे काम कर सकती है? न्यायिक पीठ के सामने चुनाव आयोग ने खुलासा किया है कि 4 करोड़ ईवीएम वोट और वीवीपैट पर्चियों के अभी तक मिलान कराए जा चुके हैं, जिनमें एक भी मामला मिसमैच नहीं पाया गया है। सर्वोच्च अदालत 2019 में भी इसी मामले पर फैसला दे चुकी है, लेकिन इस बार आम चुनाव शुरू हो चुके हैं और विपक्ष का बेहद गंभीर आरोप है कि ईवीएम को सैट किया जा सकता है। नतीजतन किसी भी पक्ष को वोट डाला जाए, वह भाजपा के 'कमल' के पक्ष में ही जाएगा। यदि ऐसा ही है, तो देश के विभिन्न राज्यों में विपक्ष की सरकारें क्यों हैं? लोकसभा में विपक्ष के करीब 100 सांसद कैसे चुने गए थे? दरअसल ये अनर्गल आरोप हैं। लोकतंत्र का मतलब निरंकुशता नहीं होता। बहरहाल अदालत के फैसले की प्रतीक्षा करें और इसे प्रलाप का मुद्दा न बनाएं, क्योंकि इससे राष्ट्रीय छवि और प्रतिष्ठा जुड़ी हैं। भारत में सिर्फ दो कंपनियां ही ईवीएम बनाती हैं। उन्हें भी यह जानकारी नहीं होती कि मशीन को भाजपा के पक्ष में सैट किया गया है अथवा कांग्रेस-वामदलों के पक्ष में प्रोग्राम तय किया गया है। तकनीकी संरचना मैं भी नहीं जानता हूं, लेकिन इतना विश्वास है कि चुनाव को लेकर चुनाव आयोग देश के 97 करोड़ मतदाताओं के साथ छल नहीं कर सकता। मतदाता के संवैधानिक मताधिकार का हरण नहीं किया जा सकता। ईवीएम की अंतरराष्ट्रीय ख्याति ऐसी है कि कई देश अपने यहां चुनाव के लिए भारत के निर्वाचन आयोग को आमंत्रित करते हैं। आज भारतीय ईवीएम की विश्वसनीयता की साख बन चुकी है।

मतदान उत्साहजनक

प्रथम चरण का मतदान कई मायनों में अप्रत्याशित रहा है। कुल मतदान शुक्रवार की रात्रि 11 बजे तक करीब 64 फीसदी रहा। यह 2019 की तुलना में करीब 2 फीसदी कम रहा। बिहार में सबसे कम 48.8 फीसदी मतदाता पोलिंग स्टेशन तक गए। सबसे अधिक मतदान त्रिपुरा में 81.5 फीसदी और सिक्किम में 80 फीसदी किया गया। उत्तराखंड, उप्र, राजस्थान और मिज़ोरम आदि राज्यों में अपेक्षाकृत कम मतदान हुआ। इनसे भाजपा के 370 और 400 पार वाले लक्ष्यों को ठेस पहुंच सकती है, क्योंकि भाजपा उत्तरी भारत में ही शानदार जनादेश के भरोसे है। दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में सब कुछ अनिश्चित है। हालांकि मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में करीब 70 फीसदी मतदान हुआ है। बंगाल की जलपाईगुड़ी सीट पर भी 79 फीसदी से अधिक मतदान हुआ है। बंगाल में औसत मतदान भी सकारात्मक रहा है। पूर्वोत्तर में दो विरोधाभास उभर कर सामने आए हैं। मणिपुर में हिंसा के बावजूद 70.8 फीसदी लोगों ने मताधिकार का इस्तेमाल किया, लेकिन टूटी ईवीएम, लुटे बूथ, फटी वीवीपैट पर्चियों के चित्र मणिपुर में ही देखे गए हैं, जिनसे मतदान के दौरान हालात के अनुमान लगाए जा सकते हैं। पूर्वोत्तर में ही नगालैंड राज्य में 4 लाख मतदाताओं से अधिक, राज्य के करीब 30 फीसदी वोटरों ने, 6 जिलों की 20 विधानसभा सीटों पर, बहिष्कार के कारण एक भी वोट नहीं डाला। वे अधिक स्वायत्तता वाले अलग क्षेत्र की मांग करते रहे हैं और केंद्र सरकार फिलहाल उसमें नाकाम रही है, लिहाजा उन्होंने चुनाव के बहिष्कार का आह्वान किया था। जम्मू-कश्मीर में 65 फीसदी से अधिक मतदान एक उम्मीद जगाता है कि लोगों ने भारतीय लोकतंत्र और संविधान के प्रति विश्वास जताया है।

वोटिंग से विमुख क्यों

समग्रता में देखें, तो आम चुनाव के प्रथम चरण में 16 करोड़ से अधिक मतदाताओं को मताधिकार का इस्तेमाल करना था, लेकिन 6.12 करोड़ भारतीयों ने वोट ही नहीं डाले। यह चुनाव के प्रति उदासीनता है या मतदाताओं को चुनाव दिशाहीन, अर्थहीन लगते हैं? यह सोच लोकतंत्र और संविधान के खिलाफ भी है। जितना मतदान किया गया है, वह न तो सरकार के खिलाफ माना जा सकता है और न ही विपक्ष को चुनने के प्रति उत्साही और उत्सुक लगता है। यानी प्रधानमंत्री मोदी के पक्ष या विरोध में कोई 'चुनावी लहर' महसूस नहीं हुई। ऐसा लगता है मानो औसत मतदाता ने यह धारणा बना ली है कि मोदी को ही आना है! यह सोच कर ही मतदाता पोलिंग स्टेशन से तटस्थ रहा है। कुछ मुस्लिम बहुल इलाकों की ख़बरें सामने आई हैं कि उन्होंने भी मोदी को ही तीसरी बार प्रधानमंत्री मान लिया है, लिहाजा न तो कोई ध्रुवीकरण दिखाई दिया और न ही मतदान करना मुनासिब समझा। यह भी मतदान और संवैधानिक अधिकार को लेकर नकारात्मक सोच है। मैंने मतदान के इस चरण को 'खामोश और भ्रमित चुनाव' माना है। अभी तो मतदान के छह और चरण शेष हैं। गर्मी का मौसम भी ज्यादा गर्म और लू वाला होना है। कई जगह मई में ही बारिश की शुरुआत हो सकती है, लिहाजा मौसम के कारण इतना मतदाता घर से न निकले, समझ में नहीं आता। चूंकि इस बार पूरा चुनाव प्रधानमंत्री मोदी पर ही केंद्रित है, लिहाजा मतदाताओं की कुछ उदासीनता दिख सकती है। प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट लिख कर मतदाताओं को 'शुक्रिया' कहा है। प्रधानमंत्री का फीडबैक शानदार रहा है, क्योंकि लोगों ने रिकॉर्ड संख्या में एनडीए को वोट दिए हैं। बहरहाल मैं इसके पक्ष में नहीं हूं। सत्ता-पक्ष मतदान के बाद ऐसे ही बयान देता रहा है। मतदान किसके पक्ष में है इसका पता तो चार जून को ही लगेगा। लेकिन वोटरों को खुलकर अपने मतों का प्रयोग करना चाहिए, लोकतंत्र को सब मजबूत करें।

ईवीएम पर संदेह की सियासत बंद हो

मुद्दा
डॉ. आशीष वशिष्ठ
राजनीतिक विश्लेषक

मोदी विरोधी मोर्चे के नेता आजकल एक और कैंपेन कर रहे हैं। वो कह रहे हैं कि मोदी इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन यानी ईवीएम की वजह से जीतते हैं। वैसे ईवीएम को गलत ठहराने वाला राग तो पुराना है। बीती 17 अप्रैल को कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी ने उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में चुनाव प्रचार करते हुए दावा किया कि अगर ईवीएम से छेड़छाड़ न हो तो भाजपा 180 सीटों पर सिमट जाएगी। जो राजनीतिक दल और नेता पिछले पांच साल तक जमीन पर उतरे नहीं, आज जब उन्हें अपनी हार साफ तौर पर दिख रही है तो उन्होंने ईवीएम की हार में पेशबंदी शुरू कर दी है। आखिरकार अपनी गलतियों, कमियां और कमजोरियों का ठीकरा किसी के सिर तो फोड़ना ही है, ऐसे में बेजुबान ईवीएम से बेहतर विकल्प दूसरा नहीं हो सकता।

विपक्ष की सरकारें भी ईवीएम से

आम चुनाव के पहली चरण में 102 लोकसभा सीटों पर 19 अप्रैल को मतदान हो चुका है। करोड़ों देशवासियों ने उन्हीं ईवीएम का बटन दबाकर अपना वोट दिया है, जिन पर अधिकतर विपक्षी दल प्रलाप कर रहे हैं। वे दल चुनावी दौड़ में शामिल हैं, उनके सांसद और विधायक चुने जाने हैं, लेकिन वे ईवीएम पर अब भी संदेह कर रहे हैं। ईवीएम की शुरुआत कांग्रेस नेतृत्व की यूपीए सरकार के ही कार्यकाल में हुई थी। इसी ईवीएम के दम पर आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में तीन बार और पंजाब में एक बार चुनाव जीता, 2012 में समाजवादी पार्टी को उत्तर प्रदेश में पूर्ण बहुमत मिला, बहुजन समाज पार्टी को 2007 में उत्तर प्रदेश में पूर्ण बहुमत मिला और कांग्रेस ने 2023 में तेलंगाना जीता। वर्तमान में तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, केरल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना और पंजाब आदि राज्यों में गैर-भाजपा दलों की सरकारें हैं, जो ईवीएम के जरिए ही सत्तासीन हुई हैं।

ईवीएम हैक संभव नहीं

ईवीएम को लेकर अक्सर होहल्ला मचाया जाता रहा है और चुनाव आयोग को भी कटघरे में खड़ा किया जाता रहा है, यह प्रवृत्ति दुराग्रह पूर्ण है। चुनाव आयोग ने कई बार दोहराया है कि ईवीएम को हैक नहीं किया जा सकता है, इसके सिस्टम से छेड़छाड़ करना संभव नहीं है, यह फुलप्रूफ मशीन है। एक बार फिर यह मामला सर्वोच्च न्यायालय के विचाराधीन है। दो न्यायाधीशों की खंडपीठ ने निर्णय सुरक्षित रखा है।

हारने पर ही विरोध क्यों

2009 के आम चुनावों में जब बीजेपी के नेता ईवीएम पर सवाल उठा रहे थे, ठीक उसी वक्त ओडिशा कांग्रेस के नेता जेबी पटनायक ने भी राज्य विधानसभा में बीजू जनता दल की जीत की वजह ईवीएम को ठहराया था। 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी की जीत के बाद कांग्रेस के नेता और असम के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई ने भी ईवीएम पर सवाल उठाए थे और कहा था कि बीजेपी की जीत की वजह ईवीएम है। ऐसे में ये कहा जा सकता है कि भारत में जब तक

पार्टियां चुनाव नहीं हारने लगतीं तब तक उन्हें ईवीएम मशीन से कोई शिकायत नहीं होती। मौजूदा समय में भारत का प्रत्येक राजनीतिक दल कभी ना कभी ईवीएम का विरोध कर चुका है। ऐसे में संसद की संयुक्त संसदीय समिति को ईवीएम के इस्तेमाल की जांच करनी चाहिए।

आयोग की स्वायत्तता बनी रहे

चुनाव आयोग ने न्यायिक पीठ को बताया गया कि पर्ची को मतदाता को देना जोखिम का काम है। इससे गोपनीयता भंग हो सकती है और बाहर निकालने पर पर्ची का दुरुपयोग भी किया जा सकता है। याचिकाकर्ता एडीआर ने मतदान और पर्ची की 100 फीसदी क्रॉस चेकिंग की मांग की है। न्यायिक पीठ के सामने चुनाव आयोग ने खुलासा किया कि 4 करोड़ ईवीएम वोट और वीवीपैट पर्चियों के मिलान कराए गए हैं। बहरहाल अदालती फैसले की प्रतीक्षा है। अब चुनाव की निष्पक्षता, ईमानदारी बरकरार रहे, मतदाताओं के जेहन में लेशमात्र भी संदेह नहीं होना चाहिए और आयोग की संवैधानिक स्वायत्तता भी बनी रहे, उस संदर्भ में अदालत को निर्णय देना है।

बैलेट पेपर युक्तिसंगत नहीं

वोटर वेरिफिएबल पेपर ऑडिट ट्रेल यानी वीवीपैट से निकलने वाली सभी पर्चियों का मिलान इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) से पड़े वोटों के साथ कराने की मांग वाली याचिका पर मंगलवार को सुनवाई हुई। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस संजीव खन्ना और दीपांकर दत्ता की बेंच ने एडीआर की याचिका पर सुनवाई के दौरान 1960 के दशक में बैलेट पेपर से चुनाव के दौर को याद किया और कहा कि देश में फिलहाल मतदाताओं की संख्या 96 करोड़ से अधिक है। ऐसे में बैलेट पेपर या वीवीपैट की 100 फीसदी गिनती की व्यवस्था से चुनाव कराना बहुत चुनौती वाला काम होगा। सुप्रीम कोर्ट ने कहा, कि हम सभी जानते हैं कि जब बैलेट पेपर थे तो क्या होता था। आप जानते होंगे, लेकिन हम भूले नहीं हैं। वैसे बैलेट पेपर से चुनाव कराए जाने की स्थिति में भारत की चुनावी प्रक्रिया लंबी भी होगी और खर्च भी बढ़ेगा।

विपक्ष के वादों पर भरोसा नहीं

सच्चाई यह है कि देश की जनता ने जातिवाद, वंशवाद, भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण की राजनीति के लिए विपक्षी दलों को खारिज कर दिया है और देश के लोगों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अलावा किसी भी नेता पर भरोसा नहीं है। आज विपक्ष के ज्यादातर नेता भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे हैं। पिछले दस सालों में मोदी सरकार ने जो विकास और कल्याण के कार्य किये हैं, उससे देश की जनता का भरोसा मोदी सरकार पर पहले से ज्यादा बढ़ा है। आज मोदी की गारंटी के सामने विपक्ष की सारी गारंटियां और वादे कोरी जुमलेबाजी लगते हैं। देश की जनता विपक्ष के वादों पर भरोसा नहीं करती, जिसके चलते विपक्ष लगातार सत्ता से बेदखल है।

ईवीएम पर भ्रम न फैलाए विपक्ष

इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि तुष्टिकरण की राजनीति करने वाले भ्रष्ट और परिवारवादी दलों और नेताओं के दिन भारतीय राजनीति में लद चुके हैं। जनता अब यह समझने लगी है कि कौन उनका सच्चा हितेषी और हमदर्द है। कौन उनका विकास और कल्याण कर सकता है। देश की जनता समझने लगी है कि कौन सकारात्मक राजनीति कर रहा है और कौन डर, भय और भ्रम के जरिये जनादेश पाना चाहता है। किसने उन्हें उनका हक दिया है। ऐसे में बेहतर होगा विपक्ष ईवीएम पर संदेह करने और जनता में भ्रम फैलाने की बजाय अपने आचरण को सुधारे।

व्यवस्था संचालन के सूत्रधार लोक सेवक

सिविल सेवा दिवस
डॉ. आलोक शुक्ला
पूर्व आईएएस अधिकारी

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस प्रतिवर्ष 21 अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य सिविल सेवकों द्वारा आम लोगों के हित के लिए स्वयं को समर्पित करना और फिर से प्रतिबद्धता व्यक्त करना है। यह दिन सिविल सेवकों को नई चुनौतियों से निपटने के लिए आत्मनिरीक्षण और भविष्य की रणनीतियों के बारे में सोचने का अवसर प्रदान करता है। 21 अप्रैल, 1947 को स्वतंत्र भारत के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने प्रशासनिक सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों को दिल्ली के मेटकॉफ हाउस में संबोधित किया था। यह दिन इसी की याद में मनाया जाता है।

इस अवसर पर, प्रधानमंत्री जी के हाथों 'लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार' प्रदान किये जाते हैं। यह पुरस्कार वर्ष 2006 में स्थापित किये गये थे। ये पुरस्कार तीन श्रेणियों में दिये जाते हैं। पहली श्रेणी व्यक्तिगत पुरस्कार की है, दूसरी श्रेणी दल के रूप में काम करने के लिये है और तीसरी श्रेणी संगठन की है। पुरस्कार में एक पदक, एक स्क्रॉल और एक लाख रुपये की कर मुक्त नकद राशि शामिल है। मुझे यह बताते हुये खुशी है इस लेखक को भी छत्तीसगढ़ में सार्वजनिक वितरण प्रणाली और धान खरीदी का उत्कृष्ट सिस्टम विकसित करने के लिये दल पहल के रूप में यह पुरस्कार अपने 2 अन्य साथियों गौरव द्विवेदी और सोमसेखर के साथ वर्ष 2010 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के हाथों से मिला था। भारत की सिविल सेवाओं में अखिल भारतीय सेवाएं, केन्द सरकार की सेवाएं और राज्य सरकारों की सेवाएं शामिल हैं।

अखिल भारतीय सेवाओं तथा केन्द्रीय सिविल सेवाओं के लिये चयन संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से होता है राज्यों की सिविल सेवाओं के वरिष्ठ पदों पर चयन राज्यों के लोक सेवा आयोगों द्वारा किया जाता है। भारत के संविधान में सिविल सेवकों को निष्पक्षता बनाये रखने के लिये अनुच्छेद 309, 310 तथा 311 के प्रावधानों के तहत सुरक्षा प्रदान की गई है। सिविल सेवक देश की स्थाई कार्यपालिका हैं। वे चुने हुये जनप्रतिनिधियों के अधीन कार्य करते हैं। देश के नीति निर्धारण और योजनाओं के क्रियान्वयन में उनका बहुत बड़ा रोल होता है।

भारत में सिविल सेवा की आधारशिला ब्रिटिश समय में रखी गई थी। इसे गर्वनर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने प्रारंभ किया और बाद में कार्नवालिस ने इसमें अनेक सुधार किये। कॉर्नवालिस ने भारतीय सिविल सेवा के दो भागों में बांटा। पहला था अनुबंधित सिविल सेवक और दूसरा बिना अनुबंध वाले सिविल सेवक। अनुबंधित सिविल सेवक केवल यूरोपियन ही होते थे, जबकि दूसरे प्रकार के सिविल सेवक, जो कनिष्ठ पदों पर कार्य करते थे, उनमें भारतीयों की नियुक्ति भी की जाती थी। भारत सरकार अधिनियम 1919 में, भारत की इंपीरियल सिविल सेवा को दो भागों में बांट दिया गया। पहली, अखिल भारतीय सेवाएँ और दूसरी, केंद्रीय सेवाएँ। यह सिविल सेवाएं सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया के अधीन थीं। अखिल भारतीय और केंद्रीय सेवाओं (समूह ए)

को 1924 में केंद्रीय सुपीरियर सेवाओं का नाम दिया गया। 1924 से 1934 तक, भारत में 10 अखिल भारतीय सेवाएँ थीं और 5 केंद्रीय विभाग थे जो सभी सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया के नियंत्रण में थे। इसके अतिरिक्त 3 और केंद्रीय विभाग थे, जो प्रांतीय और केन्द्रीय दोनों के संयुक्त नियंत्रण में थे। प्रारंभ में अनुबंधित सिविल सेवक में कंपनी के डायरेक्टरों द्वारा अपनी मर्जी से भर्ती की जाती थी। वे केवल योरोपियन लोगों की भर्ती करते थे। वर्ष 1954 में लंदन में सिविल सर्विस कमीशन का गठन किया गया। वर्ष 1864 में सिविल सर्विस परीक्षा पास करने वाले पहले भारतीय सत्येन्द्र नाथ टैगोर थे, जो रवीन्द्रनाथ टैगोर के भाई थे। 1867 तक 4 अन्य भारतीयों का सिलेक्शन भी हुआ। 1883 तक भारत की सिविल सर्विस में भारतीयों की संख्या केवल 12 थी, जो 1915 तक बढ़कर केवल 63 हो गई। 1920 की परीक्षा में सुभाष चंद्र बोस को चौथी रैंक मिली, उन्होंने देश के लिये काम करना बेहतर समझा और सिविल सर्विस से इस्तीफा दे दिया।

1922 से सिविल सर्विस परीक्षा भारत के भीतर इलाहाबाद में ली जाने लगी। बाद में दिल्ली में भी एक परीक्षा केन्द्र बनाया गया। इसे इंडियन सिविल सर्विस कहा जाता था, परन्तु इसके अधिकांश सदस्य न तो भारतीय थे, न भारतीयों के प्रति सिविल थे और न ही उनमें कोई सेवा भावना थी। उनका उद्देश्य केवल भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को कायम रखना था। स्वतंत्रता प्राप्ति के ठीक पहले अविभाजित भारत में 980 सिविल सेवा अधिकारी थे, जिनमें से 468 योरोपियन थे।

संविधान सभा में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा था कि वर्तमान प्रशासनिक प्रणाली का कोई विकल्प नहीं है। अच्छी अखिल भारतीय सेवाओं के बिना भारत को एकजुट रखना संभव नहीं है। उन्होंने भारत की सिविल सेवाओं को स्टीली फ्रेम ऑफ इंडियन एडमिनिस्ट्रेशन कहा था। भारत में इंपीरियल सिविल सेवा के स्थान पर भाारतीय प्रासनिक सेवा का गठन 1947 में स्वतंत्रता पाप्ति के बाद किया गया। सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और योग्यता के मूल्य भारतीय सिविल सेवाओं के मार्गदर्शक सिद्धांत हैं।

नई दिल्ली में स्थित कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, सिविल सेवा का नियंत्रण करता है। यह मंत्रालय भारत में सिविल सेवा प्रणाली के लिए प्रशिक्षण, सुधार और पेंशन के लिए जिम्मेदार है। संविधान के अनुच्छेद 312 (13) के तहत राज्यसभा को दो-तिहाई बहुमत से नई अखिल भारतीय सेवाएं स्थापित करने का अधिकार है। वर्तमान में तीन अखिल भारतीय सेवाएं हैं - भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा और भारतीय वन सेवा। भारत में सर्वोच्च सिविल सेवक कैबिनेट सचिव होता है। वह सिविल सेवा बोर्ड का पदेन अध्यक्ष भी है। भारत में प्रोटोकॉल के वरीयता क्रम में कैबिनेट सचिव 11वें स्थान पर हैं। राज्य स्तर पर सिविल सेवा का प्रमुख, मुख्य सचिव होता है। उनकी यह जिम्मेदारी है कि सिविल सेवक प्रशिक्षित और सक्षम हों और निष्पक्ष वातावरण में काम करें।

देश में नीति निर्माण से लेकर योजनाओं के क्रियान्वयन तक में सिविल सेवाओं का बहुत बड़ा योगदान है। चाहे कोविड-19 की महामारी से निपटना हो, या देश में आने वाली बाढ़ या सुनामी, तूफान या सूखा जैसी प्राकृतिक आपदायें हों, देश के सिविल सेवक अपने प्राणों की परवाह किये बिना अपनी ड्यूटी में लगे रहते हैं।

देश में चुनाव कराने का जिम्मा भी सिविल सेवकों पर ही है। गरीबी हटाओं के कार्यक्रम हों, या औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाना, कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति के लिए गांव-गांव में काम करना हो या घर-घर बिजली-पानी पहुंचाने के लक्ष्य की पूर्ति करना हो, सारे ही काम सिविल सेवाओं द्वारा किये जाते हैं। देश में हर बच्चे का टीकाकरण कराने से लेकर, हर क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाये रखने की जिम्मेदारी भी सिविल सेवकों पर ही है। भूमि के रिकार्डों का संधारण से लेकर देश की सुचारू व्यवस्था के संचालन के लिए हमारी सिविल सेवाएं रात दिन काम में लगी रहती हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid